राधास्वामी दयाल की दया राधास्वामी सहाय ।

राधास्वामी गाय कर जनम सुफल कर ले ।
यही नाम निज नाम है मन अपने घर ले ।।

प्रेमपत्र राधास्वामी

पांचवीं जिल्द

राधास्वामी मौज से प्रेमपत्र जारी ।
दृढ़ बिस्वास होय चरन में और प्रीति गाढ़ी ।।
सुमिरन ध्यान और भजन में नित नया आनंद पाय ।
सतसंगी सब उमंग २ राधास्वामी महिमा गाय ।।

जिसको कि

परम संत सतगुरु हुज़ूर महाराज साहब ने
ज़बान मुबारक से फ़रमाया

राधास्वामी ट्रस्ट
स्वामी बाग़, आगरा-२८२ ००५

प्रकाशक
राधास्वामी ट्रस्ट
स्वामीबाग़, आगरा-२८२ ००५

पहली बार	सन्	१९०३	ईसवी	१०००	प्रतियाँ
दूसरी बार	सन्	१९५४	ईसवी	१०००	प्रतियाँ
तीसरी बार	सन्	१९७५	ईसवी	१०००	प्रतियाँ
चौथी बार	सन्	१९८४	ईसवी	१०००	प्रतियाँ
पाँचवीं बार	सन्	१९९३	ईसवी	२०००	प्रतियाँ

सर्वाधिकार प्रकाशक द्वारा सुरक्षित

34/

पांचवीं बार २००० | सन् १९९३ ई० | मूल्य अजिल्द २२.५० सजिल्द २६.००

मुद्रक
राष्ट्रीय आर्ट प्रिंटर्स
मोतीलाल नेहरू रोड
आगरा-३

प्रेमपत्र जिल्द पांचवीं जो कि सन् १८९७ ई० पहिली मई से सन् १८९८ ई० ३० अप्रेल तक ख़तम हुआ उसके बचनों का

सूचीपत्र

नम्बर बचन	सुरख़ी यानी ख़ुलासा मज़मून बचन	नम्बर सफ़ा
१	जिसके दिल में सच्चा ख़ौफ़ मौत और दुनिया और नरकों के दुक्खों और चौरासी का, और सच्चा फ़िकर अपने जीव के कल्यान का पैदा हुआ है ...	१
२	दुनियां में जो कोई दुखिया होता है, वह अपने सच्चे प्यारे या हितकारी के सामने अपना हाल बयान करके, थोड़ी बहुत समझौती या शान्ती या मदद हासिल करता है ...	६
३	जो कोई तीनों गुन यानी सत, रज, तम के चक्कर और घेर में रह कर परमार्थ की कार्रवाई करे, तो वह किसी	

नम्बर बचन	सुरखी यानी खुलासा मज़मून बचन	नम्बर सफ़ा
	न किसी अस्थान पर माया के घेर में रहेगा	१५
४	आदि में शब्द प्रघट हुआ, शब्द से से ही कुल्ल रचना हुई	२०
५	सुरत का जगत में उतार और फंसाव और जुगत उसके उद्धार	२५
६	दुनिया की मान बड़ाई और भोग बिलास देख कर हर कोई उनकी चाह उठाता है	३५
७	जगत उपदेश	४२
८	और मतों में वास्ते जीव के उद्धार के करम धरम यानी बाहर मुखी कार्रवाई पर ज़्यादह ज़ोर दिया है ...	६६
९	परमार्थी कार्रवाई इस देह और इस देश में बग़ैर मदद मन के नहीं हो सकती	७३
१०	चित्त की सम्हाल हर एक को करना ज़रूरी है	८१
११	बर्णन भेद और सबब देरी का मन	

नम्बर बचन	सुरखी यानी खुलासा मज़मून बचन	नम्बर सफ़ा
	और सुरत के चढ़ने और अस्थानों के खुलने में	८८
१२	जो कोई अपना सच्चा उद्धार चाहता है ..	९३
१३	परमार्थी जीवों को भक्ती अंग में सदा बर्ताव करना चाहिये	११९
१४	बग़ैर गुरु भक्ती और बिना गुरु चरन पकड़ के चलने और चढ़ने के निज धाम की तरफ़ सच्चा और पूरा उद्धार हरगिज़ मुमकिन नहीं है ...	१२८
१५	और मतों में उद्धार के वास्ते मेह-नत और तकलीफ़ ज़्यादा और फ़ायदा बहुत कम	१४४
१६	जीवों को इस ज़िंदगी में क्या सामान इकट्ठा करना चाहिये	१४९
१७	कलजुग करम धरम नहिं कोई। नाम बिना उद्धार न होई ...	१५७
१८	लेना देना पकड़ना और छोड़ना ...	१६४
१९	सतगुरु बचन सुनो और मानो गुरु चरन प्रीत पालो और चालो ...	१७३

नम्बर बचन	सुरखी यानी खुलासा मज़मून बचन	नम्बर सफ़ा
२०	जागो भागो और तोड़ो जोड़ो ...	१७६
२१	पहिले जीव संसार में बसा, रसा, धसा, फँसा और ग्रसा	१८६
२२	जाँचो सम्हालो और होशियार हो	१६१
२३	मन भूले को समझाओ शैतानी अंग हटाओ	१६६
२४	उगलो निगलो देओ और लेओ	२०१
२५	बर्णन हाल सुरत के उतार का संसार और पिंड में	२०५
२६	रचो भजो हटो तजो मरो जीवो और बसो	२१६
२७	निरखो और छोड़ो परखो और पकड़ो	२२१
२८	समेटो और चढ़ाओ मत बिखरो और मत उतारो	२२५
२६	बचो सजो चलो और मिलो ...	२३१
३०	दुनिया में ज़रूरत के मुवाफ़िक़ दिल लगाना	२३७
३१	चलो चलो घर घंट पुकारे ॥ रलो मिलो संग दयाल पियारे ॥	२४४

नम्बर बचन	सुरख़ी यानी ख़ुलासा मज़मून बचन	नम्बर सफ़ा
३२	निरबंधी बंधन बंधा बँध निर बंधी होय	२४६
३३	सच्चे परमार्थी के भक्ती की कार्रवाई का बर्णन	२५७
३४	सहज उपदेश	२७३
३५	मालिक अपने निज बच्चों से गहरी प्रीत और प्रतीत चाहता है ॥ ...	३८०
३६	सुरत का आंखों के मुक़ाम से अंतर में ऊपर की तरफ़ सुरत शब्द मारग के अभ्यास से चलाना और चढ़ाना ...	३६३
३७	दाता से दाता ही को मांगे और दात का आशिक़ न होवे ...	४००
३८	बर्णन सबब डिगमिग हो जाने जीव का	४०५
३६	मालिक कहता है कि जो चीज़ मेरे धाम में नहीं आसक्ती और नहीं ठहर सक्ती, उसको और उसके ख़्याल और याद को छोड़ कर आओ ...	४१५

नम्बर बचन	सुरख़ी यानी ख़ुलासा मज़मून बचन	नम्बर सफ़ा
४०	सब रचना प्रेम से पैदा हुई और प्रेम से ही ठहरी हुई है ...	४२५
४१	मालिक कुल्ल की तरफ़ से बावजूदे कि वह घट में मौजूद है, और कभी २ बोलता भी है, जीव बेपरवाह और भूले हुए हैं	४३५

राधास्वामी दयाल की दया
राधास्वामी सहाय

बचन–१

जिस के दिल में सच्चा ख़ौफ़ मौत और दुनिया और नरकों के दुक्खों और चौरासी का और सच्चा फ़िक्र अपने जीव के कल्यान का पैदा हुआ है उसी को सतगुरु और उनका दर्शन और बचन और प्रेमीजन प्यारे लगेंगे। और सच्चे मालिक राधास्वामी दयाल के दर्शनों का शौक़ पैदा होगा। फिर उसी शख़्स की परमार्थी हालत रोज़ बरोज़ बदलेगी और वही एक दिन धुरधाम में पहुँच कर परम आनंद को प्राप्त होगा॥

१—जिस किसी को दुनिया का हाल और देहियों की नाशमानता और दुख सुख का भोग और मौत का

सिर पर खड़ा होना देखकर, सच्चा ख़ौफ़ और फ़िकर अपने जीव के कल्यान का पैदा हुआ है, उसी को संत सतगुरु और उनका सतसंग प्यारा लगेगा। क्योंकि वहां उस को भेद सच्चे मलिक और उसके धाम का, जहां से जीव आदि में आया है और जुगत वहां चल कर पहुंचने की मालूम होवेगी, और उन से रास्ता तै करने में मदद मिलेगी ॥

२—संत सतगुरु के सतसंग और बचन से यह फ़ायदे हासिल होंगे-(१) संसै और ग़लती और भरम दूर होवेंगे, (२) फज़ूल तरंगें और दुनियां के सामान में पकड़ हलकी होवेगी, (३) सतसंग करने वाले की समझ और बूझ बढ़ेगी, (४) प्रीत और प्रतीत कुल्ल मालिक और सतगुरु के चरनों में पैदा होकर बढ़ती जावेगी, (५) भेद रास्ते का और जुगत उसके तै करने और कुल्ल मालिक के धाम में पहुंचने की दरियाफ़्त होवेगी, (६) दुनिया की असलियत और उसकी नाशमानता और धोखे की जगह होने की ख़बर पड़ेगी, (७) अंतर अभ्यास और रास्ता तै करने में मदद मिलेगी, (८) जब बचन सुनकर और अन्तर अभ्यास करके मन और बुद्धि निर्मल होवेंगे, तब सतसंगी जीव की रहनी भी दुरस्त होती जावेगी और परमार्थी रंग

चढ़ता जावेगा, (६) सुरत शब्द मारग का निश्चै आवेगा और अभ्यास दुरस्ती से बन पड़ेगा और अन्तर में कुछ रस भी मिलता जावेगा, (१०) राधास्वामी दयाल के दर्शन की उमंग और शौक़ पैदा होकर बढ़ेंगे, (११) मन के बिकारी अङ्ग घटते जावेंगे, (१२) और निर्मलता और सकारी यानी शुभ अङ्ग पैदा होते जावेंगे ॥

३—खुलासह यह है कि जो कोई सच्चा दर्द और सच्ची तलाश लेकर संत सतगुरु के सतसंग में शामिल होवेगा, उस की हालत चंद रोज़ में बदलनी शुरू होगी, यानी (१) अङ्ग (२) ढङ्ग (३) सङ्ग (४) रङ्ग बदल जावेंगे, यानी (१) अंग दीन और प्रेमी जैसा सच्चे परमार्थी का चाहिये हो जावेगा और दुजन्मा तिजन्मा चौजन्मा और पचजन्मा यानी पशु से मनुष्य और फिर देवता और ईश्वर कोटी और फिर हंस और परमहंस यानी संतगती को प्राप्त हो जावेगा (२) ढंग और स्वभाव बजाय संसारी के भक्तों का सा हो जावेगा, (३) संग संसारी और कपटी और अहंकारियों का छूट कर प्रेमी और सज्जनों को प्राप्त होगा, (४) और चौथे संसारी मलीन रंग उतरता और निर्मल प्रेम का रंग चड़ता जावेगा ॥

४—जिस किसी के मन में सच्चा ख़ौफ़ और सच्चा

शौक़ पैदा हुआ है, वह संत सतगुरु और प्रेमी जन का संग पाकर, और उनके बचन बिलास सुन कर, और रात दिन की रहनी और बर्ताव निरख परख कर, ज़रूर अपनी संसारी समझ बूझ और रहनी और हालत पर अफ़सोस करके उनको बदलना शुरू करेगा, और अंतर अभ्यास की मदद से वह नई हालत और रहनी उस की मज़बूत और क़ायम होती जावेगी ॥

५—जो कोई कि सतसंग में शामिल होते हैं एप चित्त देकर बचन नहीं सुनते, और न उनके मानने का इरादह रखते हैं, उनका स्वभाव और रहनी और समझ बूझ जैसा कि चाहिए नहीं बदलेगी और संसारी आदतें और स्वभाव ज़बर रहे आवेंगे, और बर्ताव उनका सतसंग में विशेष करके संसारियों का सा रहेगा, और भक्ती अंग और कार्रवाइयों में उपरी बर्तेंगे ॥

६—इस क़िसम के आदमी जब सतसंग में कोई ज़बर काम या रीत प्रेम और भक्ती की बर्तते देखते हैं, उनकी उनको बरदाश्त नहीं होती क्योंकि उनके हिरदे में उस दरजे का प्रेम नहीं है। लेकिन सतसंग में कुछ बोल नहीं सक्ते, पर बाहर निकल कर दुनिया-दारों के सामने, जिन के साथ उनका ज़बर मेल रहा

आता है, उस चाल ढाल की बुराई और निंद्या करते हैं, और प्रेमियों को नादान और बेहोश समझते हैं, बल्कि सतगुरु को भी दोष लगाते हैं, कि वे प्रेमियों को ऐसी कार्रवाई से क्यों नहीं रोकते और उनके साथ बाज़ी २ कार्रवाई में आप भी क्यों शामिल हो जाते हैं ।।

७—इसी सबब से बुद्धिमान और विद्यावान जो कि अहंकारी और असल में निपट संसारी होते हैं, और मालिक के चरनों में प्रेम से ख़ाली, संतों और उनके प्रेमी जनों के सतसंग में शामिल होने के क़ाबिल नहीं समझे जाते हैं । क्योंकि यह अपनी ओछी और संसारी मलीनता की सनी हुई बुद्धि से, सतसंग की कार्रवाई और भक्ति अंग के बर्ताव को देख कर ताने मारते हैं, और प्रेमियों को नादान या अज़ख़ुदरफ़्ता समझते हैं, और सिर्फ़ गुफ़्तगू ज़बानी या पोथी के पाठ को या अभ्यास करने को परमर्थी कार्रवाई समझते हैं, और इस बात से बे-ख़बर हैं कि जब तक मन और इन्द्रियां निर्मल और निश्चल न होवेंगी तब तक जो कुछ ऊपर की लिखी हुई परमार्थी कार्रवाई उन से बनेगी वह ऊपरी होगी । और जब तक प्रेम मन में न आवेगा, तब तक असर उस कार्रवाई का क़ायम नहीं रहेगा, और न सुरत यानी रूह

तक पहुंचेगा। और यह प्रेम और निर्मलता सतगुरु के दर्शन और बचन और सेवा और भजन और भक्ती अंगों में बर्ताव करने से हासिल होवेंगे और तब भजन और अभ्यास भी दुरुस्ती से बन पड़ेगा, और मन के बिकारी अंग भी दूर होवेंगे ॥

८—विद्यावान और बुद्धिमान और ज़ात पाँत और बड़े घराने और धन के अभिमानी लोग जो कभी इत्तफ़ाक़ से संतों के सत्संग में शामिल भी हो जावें तो वह चाहे जिस क़दर सतसंग और अभ्यास करें, उनकी हालत सिवाय ज़ाहिर में बातें बनाने के अंतर में बहुत कम या बिलकुल नहीं बदलेगी। क्योंकि कुल्ल कार्रवाई उनकी मान और अहंकार लिये हुए होवेगी, और उनके मन में सच्ची दीनता और सच्चा भाव और प्यार सतगुरु और कुल्ल मालिक के चरनों में और भी प्रेमी जनों में कभी नहीं आवेगा। इसी वजह से वे लोग हमेशा ख़ाली रहेंगे, बल्कि मान और अहंकार ज़्यादा हो जावेगा। लेकिन इस क़िसम के लोगों का सतसंग में ठहरना मुश्किल है, उन से प्रेमियों की हालत नहीं देखी जा सकी है, और न प्रेमियों के भक्ती अंग की कार्रवाई की बरदाश्त हो सकी है ॥

९—सच्चे प्रेमी का विद्यावान और बुद्धिवान और

मानी और अहंकारी लोगों से मेल और मुहब्बत बहुत कम यानी सिर्फ़ ज़रूरत के मुवाफ़िक़ क़ायम रहेगी, और उसकी नज़र में दुनिया और उसके सामान, और उसके बड़े आदमियों की इज़्ज़त और क़द्र दिन २ घटती जावेगी, और उनका संग करने में अपना नुक़सान और अकाज मालूम पड़ेगा ॥

१०—सच्चे और प्रेमी परमार्थी के मन में हमेशा यही चाह बनी रहेगी, कि मन मत छोड़ कर जिस क़द्र जल्दी बन सके गुरुमुख अंग में बर्ताव करूं, और कुल्ल मालिक सत्त पुर्ष राधास्वामी दयाल और सतगुरु की मौज के साथ मुवाफ़क़त करूँ और रज़ा में बरतूं, और इस आसा के पूरन करने के वास्ते उसकी कोशिश बराबर जारी रहेगी ।

११—सच्चे प्रेमी के मन और सुरत की चाल अंतर में भी सहज बढ़ती जावेगी, और प्रीत और प्रतीत कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और सतगुरु के चरनों में दिन २ गहरी होती जावेगी, और उनकी मेहर से एक दिन उसका काम बन जावेगा, यानी धुरधाम में पहुंच कर अमर और परम आनंद को प्राप्त होगा ॥

१२—कुल्ल जीवों को मुनासिब और लाज़िम है, कि जहां तक मुमकिन हो सच्चे प्रेमी यानी गुरुमुख का

संग करें, और उसी के पैतरों पर चलें। यानी संत सतगुरु के सतसंग में शामिल होकर, जिस क़द्र बन सके सुरत शब्द मारग का उपदेश लेकर कमाई करें, और उनके चरनों में थोड़ा बहुत प्रेम लावें, तो उनके जीव का भी गुज़ारा सहज में हो जावेगा ॥

१३—जो जीव कि संसारी परमार्थ कर रहे हैं, यानी सिवाय राधास्वामी मत के और मतों की चालों में चल रहे हैं, और थोड़ा बहुत अभ्यास भी (जिस को वे अंतरमुख समझते हैं) करते हैं, उनको ख़बरदार किया जाता है, कि उस कार्रवाई से सच्चा और पूरा उद्धार हासिल नहीं होगा, और न घर की तरफ़ का रास्ता तै होगा, क्योंकि बिना सुरत शब्द मारग के अभ्यास के यह रास्ता तै होना ना मुमकिन है। और प्राणों का खींच कर चढ़ाना और रोकना ख़ास कर इस वक़्त में किसी जीव से दुरुस्ती के साथ बनना ना मुमकिन है। इस वास्ते मुनासिब और लाज़िम है कि जिस क़द्र तहक़ीक़ात उनको मंजूर है, राधास्वामी संगत में करके सुरत शब्द का अभ्यास जिस क़द्र बने जारी करें और अपना जनम सुफल करें। यानी सच्चे उद्धार के रास्ते पर आजावें, नहीं तो जनम मरन के चक्कर से छुटकारा नहीं होगा ॥

१४—संसारी जीवों से भी दया करके कहा जाता है, कि दुनिया के हाल पर नज़र करके और कुल्ल रचना की हालत डावाँडोल और अनअस्थिर यानी नाशमान समझ कर, थोड़ी बहुत करनी राधास्वामी मत के मुवाफ़िक़, वास्ते अपने आइंदा के फ़ायदा यानी जीव के कल्यान के लिये ज़रूर शुरू करें, और इसी ज़िंदगी में अपनी हालत बदलती हुई देखें, ताकि आइंदा की बेहतरी का यक़ीन आजावे, और फिर थोड़ा बहुत शौक़ और उमंग के साथ कार्रवाई जारी करके, एक दिन परम धाम और परम आनंद को प्राप्त होजावें ॥

बचन--२

दुनिया में जो कोई दुखिया होता है वह अपने सच्चे प्यारे या हितकारी के सामने अपना हाल बयान करके थोड़ी बहुत समझौती या शान्ती या मदद हासिल करता है। लेकिन जो वह संत सतगुरु के सनमुख जावे, और उनके बचन सुनकर थोड़ी बहुत उनकी

पहिचान करे, तो उसको परम शान्ती प्राप्त हो सक्ती है। और कोई असँह सतसंग और अभ्यास से दुख सुख के चक्कर और घेरे से निकल सक्ता है ॥

१—दुनिया में हर शख़्स अपने दुख और दर्द का हाल किसी अपने प्यारे के सामने कह कर अपने मन और चित्त को हलका करता है। और जो मुमकिन होता है तो उस प्यारे से कुछ मदद वास्ते कम करने या दूर करने उस दुख के लेता है। लेकिन हमेशा हर हालत और हर सूरत में मदद, या किसी क़िसम की शान्ती नहीं मिलती। और बाज़े ऐसे सख़्त दुख हैं कि वह किसी जुगत से दूर नहीं हो सकें ॥

२—लेकिन जो कोई सन्त सतगुरु या साधगुरू के सतसंग में जाकर अपना हाल अर्ज़ करे, तो वे अपने अमृत रूपी बचनों से थोड़ी बहुत शान्ती फ़ौरन् बख़्शते हैं। और जो सतसंग जारी रक्खे तो यक़ीन है, कि किसी क़िसम का दुख और कलेश उसके हिरदे में न रहे और हर वक़्त थोड़ा बहुत कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में लौलीन रहे, और संसार की तरफ़ से उदासीनता उसके मन में छाई रहे ॥

३—सन्त सतगुरु की ऐसी महिमा है, कि जो उनके सतसंग में कोई सच्चा दुखिया या स्वार्थी आजावे, और कोई काल हाज़िर रह कर चित्त देकर उनके बचन सुने, तो उनकी मेहर और दया से उसका दुख और कलेश भी दूर हो जावे, और उसका मतलब भी या तो पूरा हो जावे, या उसके मन में वह ख़्वाहिश बिल्कुल दूर हो जावे और परमार्थ की दात मुफ़्त में अलावा इसके बख़्शिश मिले ॥

४—सन्तों का परमार्थ बहुत भारी है, और हर किसी को प्राप्त नहीं हो सक्ता। जिन पर धुर की मेहर है, वही सन्तों के सन्मुख आते हैं, और प्रीत के साथ उनके सतसंग में ठहर सक्ते हैं। हर एक जीव की ताक़त नहीं है कि सतसंग में ठहर सके ॥

५—सन्तों के सतसंग में कुल्ल-मालिक राधास्वामी दयाल की महिमा, और उनके निज धाम का भेद और रास्ते और मंज़िलों का हाल बर्णन किया जाता है, और जुगत चलने की सुरत शब्द मारग के वसीले से बराबर प्रघट करके सुनाई जाती है, और दुनिया और दुनियादारों के परमार्थ का हाल भी खोल कर समझाया जाता है, कि जिस्से जीवों की आंख खुलती

जाती है और सच्चे मालिक से मिलने का सच्चा रास्ता मालूम होता है ॥

६—जो जीव कि सच्चा दर्द अपने निज घर में यानी कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में पहुंचने का रखते हैं, और संसार और उसके सामान से किसी क़दर सेरी और उदासीनता मन में पैदा हुई है, वेही संतों के बचन को आदर भाव के साथ सुनेंगे, और जहां तक मुमकिन होगा, उनकी दया का बल लेकर, उनके मुवाफ़िक़ कारवाई करेंगे ॥

७—जिन जीवों के हिरदे में परमार्थ का ख़ास शौक़ नहीं है, लेकिन इत्तफ़ाक़ से संतों के सतसंग में आ जावें, तो कोई दिन की हाज़िरी के बाद उनके दिल में सच्चे परमार्थ का सच्चा शौक़ पैदा हो जावेगा। और फिर वे मुवाफ़िक और प्रेमी जन के भक्ती के अंगों में बर्ताव करेंगे, और उपदेश लेकर अंतर अभ्यास में भी लग जावेंगे। इस तरह उनके जीव का कारज भी सहज में बन जावेगा ॥

८—ख़ुलासा यह है कि संत सतगुरु के दर्शन और सतसंग की बड़ाई और महिमा कोई बर्णन नहीं कर सक्ता है, यानी जो जीव साधारन तौर पर उनके सनमुख आ जावेंगे, उनके भी उद्धार का सिलसिला जारी

हो जावेगा। और चौरासी का चक्कर बन्द होकर उनको बराबर नरदेही मिलेगी, जब तक कि वे सत्तलोक में न पहुँचें। जब कि आम जीवों पर संत सतगुरु ऐसी दया फ़रमाते हैं, तो फिर सच्चे परमार्थियों की हालत और बख़्शिश का, जिस क़दर कि उनको मिलेगी, क्या बयान हो सक्ता है। यानी वे जीव जल्द माया के घेर से निकाल कर दयाल देश में पहुंचाये जावेंगे। और उनके करम बहुत जल्द काट कर निर्मल कर लिए जावेंगे। यह फ़ायदा नित्त के सतसंग और अंतरमुखी सुरत शब्द मारग के अभ्यास से हासिल होवेगा॥

९—सुरत शब्द मारग से मतलब यह है कि रूह यानी जीवआत्मा को बाहर से उसका रुख़ फेर कर शब्द की धुन में जो हरदम घट २ में हो रही है लगावें। और उसको सुनते हुये ऊपर को चढ़ाना, यानी जिस मुक़ाम से आवाज़ आ रही है, वहां पहुंचाना॥

१०—शब्द की धुन से मतलब चेतन्य की धार से है, जो कि आदि में कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों से निकली, और नीचे उतरकर कई ठेके यानी मंज़िलों पर ठहरती हुई, और मंडल बांध कर रचना करती हुई, इस लोक में और पिंड में आई है। आदि में शब्द प्रघट हुआ यानी जो चेतन्य धार

कुल्ल मालिक के चरनों से निकली, उसके साथ आवाज़ हुई, और वही धार और आवाज़ कुल्ल रचना की करतार है, इस वास्ते जो कोई आवाज़ को पकड़ कर अन्तर में चलेगा, वही धुर धाम में पहुंचेगा ॥

११—शब्द के बराबर कोई रास्ता दिखाने वाला और अन्धेरे में प्रकाश करने वाला नहीं है, और शब्द ही ज़हूरा और निशान कुल्ल मालिक यानी चेतन्य का है । इसी वजह से शब्द सब को प्यारा लगता है, और शब्द ही से कुल्ल रचना की कार्रवाई और जीवों के कारोबार जारी है ॥

१२—कुल्ल मालिक का स्वरूप शब्द है, और जितने पद यानी अस्थान रचे गये हैं, जैसे सत्त नाम और ब्रह्म व पारब्रह्म और आत्मा और परमात्मा वग़ैरह सब शब्द स्वरूप हैं, और कुल्ल जीव भी शब्द स्वरूप हैं । इस सबब से बग़ैर शब्द की उपाशना और ध्यान के, कोई रास्ता तै करके निज घर में नहीं पहुंच सक्ता है ॥

१३—इस वास्ते कुल्ल जीवों को जो अपना पूरा और सच्चा उद्धार चाहते हैं, मुनासिब और लाज़िम है, कि बाहर संत सतगुरु का सतसंग और उनके चरनों में सेवा और प्रीत करें और अंतर में शब्द गुरू के चरनों

में, जो सन्त सतगुरु का निज रूप है प्रीत लाकर, अभ्यास शब्द के सुन्ने का करें, तब काम दुरुस्त बनेगा ॥

बचन--३

जो कोई तीनों गुन यानी सत रज तम के चक्कर और घेर में रहकर परमार्थ की कार्रवाई करे, तो वह किसी न किसी अस्थान पर माया के घेर में रहेगा। लेकिन जो प्रेम और भक्ति के साथ संत सतगुरु से उपदेश लेकर करनी करेगा, तो उसको संतों का सिद्धान्तपद यानी कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल का धाम एक दिन प्राप्त हो सक्ता है।

१--जिन मतों का सिद्धान्त माया के घेर में है, उन मतों के पैरोकार यानी मानने वाले हमेशा माया के घेर में रहेंगे ॥

२--जो कोई उन में से अभ्यास अंतर मुख वास्ते प्राप्ती अपने मत के सिद्धान्त पद के करेंगे, वे कुछ काल

सुख अस्थान में बासा पावेंगे, लेकिन जनम मरन का चक्कर चाहे बहुत देर के बाद होवे, नहीं छूटेगा। और बाक़ी जीव जो सिर्फ़ टेकी होंगे, और कुछ अभ्यास अन्तर मुख वास्ते समेटने और चढ़ाने मन और सुरत या प्राण वग़ैरह के नहीं करेंगे, वे अपने करम अनुसार नीचे ऊंचे लोक और जोन में बासा पावेंगे, और इनका जनम मरन बनिस्बत अभ्यासी जीवों के जल्द होता रहेगा ॥

३—मालूम होवे कि जहां तक तीन गुन और पांच तत्त की दौड़ है, वहां तक माया का घेर है, चाहे अति सूक्षम होवें और चाहे महा अस्थूल, इस वास्ते ऐसा जतन करना मुनासिब है, कि जिस्से सुरत इस घेर के पार पहुंचे। और वह जतन सुरत शब्द का अभ्यास है ॥

४—इस अभ्यास का उपदेश सिर्फ़ राधास्वामी मत में (जो कि संत मत है) जारी है। जो कोई उस की कमाई करेगा, वह एक दिन माया के घेर से निकल जावेगा ॥

५—राधास्वामी मत कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल ने आप सन्त सतगुरु रूप धारन करके जारी फ़रमाया है। और उस में मुफ़स्सिल भेद रास्ते और मंज़िलों

का मैं शब्द हर एक मुक़ाम के खोल कर सिलसिलेवार वर्णन किया है। और जुगत अभ्यास की दया करके ऐसी आसान कर दी है, कि जिसको लड़का जवान बूढ़ा और स्त्री और पुर्ष बे तकलीफ़ सहज में कमा सक्ते हैं। और वास्ते दुरुस्ती से करने इस अभ्यास के कोई ज़रूरत घर बार और रोज़गार छोड़ने की नहीं है, यानी ग्रहस्त में बैठ कर यह अभ्यास दुरुस्ती से बन सक्ता है, बशर्ते कि थोड़ा बहुत शौक़ दर्शन मालिक कुल्ल और अपने जीव के कल्यान का दिल में मौजूद होवे ॥

६—राधास्वामी मत में जो अभ्यास मुक़र्रर है, वह अपने घट में करने का है। बाहर मुख कार्रवाई सिवाय सतगुरु और प्रेमी जन के सतसंग और बानी के पाठ के किसी क़िस्म की जारी नहीं है ॥

७—अंतर मुख कार्रवाई दो क़िसम की है, एक मन और सुरत का समेटना और जमाना सुरत के असली मुक़ाम पर पिंड में, और दूसरे चढ़ाना मन और सुरत का शब्द को सुन कर। पहिली कार्रवाई को सुमिरन और ध्यान कहते हैं, और दूसरी को भजन। इन दोनों की तरकीब उपदेश के वक़्त समझाई जाती है ॥

८—राधास्वामी मत में प्रेम की मुख्यता है, यानी जब तक कि परमार्थी के हिरदे में थोड़ा बहुत प्रेम कुल्ल मालिक के चरनों का, और संत सतगुरु में, न होगा, तब तक सतसंग बाहर का और शब्द का अभ्यास अंतर में दुरुस्ती से नहीं बनेगा ॥

९—राधास्वामी दयाल की बानी और बचन में बराबर प्रेम की महिमा, और प्रेम की हालत का अपने अपने दरजे के मुवाफ़िक़, ज़िकर है। उसके पढ़ने और सुन्ने से थोड़ा बहुत प्रेम हिरदे में जागता है, और ज़्यादातर सतगुरु के दर्शन और बचन और सेवा से, और भी सच्चे प्रेमियों की हालत और भक्ती की कार्रवाई देख कर प्रेम बढ़ता है, और दिन २ नवीन शौक़ पैदा होता है ॥

१०—जिस मत में कि मालिक के चरनों का प्रेम नहीं है, वह मत ख़ाली है, और जिस घाट में कि प्रेम नहीं, वह भी ख़ाली है ॥

११—बग़ैर प्रेम या शौक़ के कोई शख़्स कुछ काम संसारी या परमार्थी नहीं कर सक्ता, और न बग़ैर प्रेम के किसी के हिरदे में पूरी सफ़ाई हो सक्ती है ॥

१२—मालिक के चरनों का प्रेम बड़ी भारी दौलत है। जिस किसी को यह दौलत थोड़ी सी भी मिली

वही मालिक का मंज़ूर नज़र हो गया और उसी का परमार्थी भाग जागा और उद्धार का रास्ता जारी हुआ ॥

१३—जहां प्रेम है वहां हमेशा ख़ुशी और आनंद है, और जहां प्रेम की हान है, वहां सदा दुख और कलेश और बिरोध का बासा है ॥

१४—जहां सच्चा प्रेम है, वहीं सच्ची दीनता और सेवा है, और वहीं हर तरह की ताक़त और शक्ती हर वक़्त मौजूद है ॥

१५—माया और माया के पदार्थ सुरत और मन की धार को अपनी तरफ़ खैंच कर सोख जाते हैं, और जो उनमें प्रीत आती है उसका नाम मोह है। यह परमार्थ की तरफ़ से हटाने वाला, और माया के जाल में फँसाने वाला है ॥

१६—मान और अहंकार और ईर्षा परमार्थी प्रेम के सुखाने वाले हैं, और क्रोध और बिरोध को पैदा करते हैं। सच्चे परमार्थी को इन बिकारों से बचते रहना चाहिये ॥

१७—यह प्रेम कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु की दात है। जिस किसी को वे दया करके इसका किनका बख़्शें वही जीव बड़भागी है,

और उसी से सुरत शब्द मारग का अभ्यास आसानी से बन पड़ेगा ॥

१८—इस वास्ते सब जीवों को लाज़िम है, कि पहिले संत सतगुरु और उनके प्रेमी सेवकों का खोज लगावें। जब वे मिल जावेंगे तो सब काम परमार्थ का आहिस्ते २ बन जावेगा ॥

बचन--४

आदि में शब्द प्रघट हुआ, शब्द से ही कुल्ल रचना हुई, और शब्द ही सब की रक्षा और सम्हाल कर रहा है। शब्द से ही सब कारज सिद्ध होते हैं ॥

१—आदि में शब्द प्रघट हुआ और शब्द से ही कुल्ल रचना हुई, यानी जैसे कि शब्द की धार उतर कर, रास्ते में जगह २ ठहरती और मंडल बांध कर रचना करती आई, वैसे ही रचना का बिस्तार होता गया ॥

२—पहिले दरजे में हंस और परम हंस और दूसरे दरजे में ब्रह्मसृष्टी यानी ईश्वर कोटि और तीसरे दरजे में देवता और मनुष्य और चारखान की रचना हुई ॥

३—शब्द से मतलब उस आवाज़ से है जो चेतन्य की धार के साथ हो रही है। वही आवाज़ हुक्म और नाम और आकाशबानी और आवाज़ आसमानी और कलाम इलाही यानी मालिक की आवाज़ कहलाती है ॥

४—इस आवाज़ का बहुत भारी असर है, यानी वही चेतन्य की शक्ती और उसका ज़हूरा और निशान है। जहां शब्द है वहीं चेतन्य प्रघट है, और ज़हां शब्द गुप्त है वहीं चेतन्य भी गुप्त है ॥

५—हर एक मुक़ाम का शब्द उस लोक या मंडल की रचना में व्यापक है, और उसी के असर से कुल्ल कार्रवाई उस लोक या मंडल के रचना की जारी है ॥

६—बच्चा जब पैदा होता है तब वह अपने हमजिन्स यानी माता पिता भाई बहन और कुल कुटम्बी और रिश्तेदार और दोस्त आशना और 'बिरादरी वग़ैरह का शब्द सुनकर, उन्हीं के मुवाफ़िक़ कार्रवाई सीखता और करता है। इसी तरह जानवरों के बच्चे भी अपने मा बाप और हमजिन्स की बोली सुनकर सीखते हैं, और उसके मुवाफ़िक़ कार्रवाई करते हैं ॥

७—अब समझना चाहिये कि मा बाप का शब्द सुनकर और मानकर, बच्चे क़ाबिल इसके होते हैं कि

उस्ताद के पास जाकर उसका शब्द सुनें और मानें ताकि बिद्या अच्छी तरह आजावे और बुद्धी जाग उठे ॥

८—इसी तरह जिस किसी ने उस्ताद के शब्द को चित्त से सुना और माना, वह पढ़ लिख कर होशियार और क़ाबिल इस बात के हो गया, कि राजा और हाकिम का संग करके बन्दोबस्त देशों और बहुत से जीवों का कर सके। और मुल्क का और घरों का इन्तज़ाम इसी क़ायदे के मुवाफ़िक़ दुनिया में जारी है ॥

९—इसी तरह इन लोगों में से जो कोई सच्चे गुरु के सतसंग में गया, और उनका बचन सुना और माना, वह प्रेम की दौलत पाने का मुस्तहक़ हुआ यानी दिन २ प्रीत और प्रतीत उसकी मालिक के चरनों में बढ़ती जावेगी, और सुरत शब्द मारग का अभ्यास करके, जिस क़द्र फ़ासला कि माबैन इस जीव और कुल्ल मालिक के धाम के वाक़ै है, तै होता जावेगा। यानी एक दिन वह ऊंचे से ऊंचे देश में पहुंच कर परम आनंद को प्राप्त होगा, और काल और माया के जाल से निकल कर, कष्ट और कलेश और जनम मरन और दुख सुख के चक्कर से क़तई छुटकारा उस का हो जावेगा ॥

१०—सुरत शब्द के अभ्यास से मतलब यह है, कि

अंतर में ऊंचे देश के चेतन्य का शब्द सुनता हुआ अभ्यासी निज धाम में जहां से कि आदि में शब्द प्रगट हुआ पहुंच जावे। यानी शब्द की डोरी को पकड़ कर एक मुक़ाम से दूसरे मुक़ाम पर चढ़ता चला जावे ॥

११—हर जगह रचना में कार्रवाई शब्द यानी चेतन्य की है। शब्द से ही प्रेम और ज्ञान यानी समझ बूझ और प्रीत प्रतीत हासिल होती है, और शब्द से ही ईर्षा बिरोध और बिकारी अंग पैदा होते हैं, क्योंकि कुल्ल रचना दयाल और काल की शब्द ही के वसीले से पैदा हुई है और जारी है ॥

१२—जिस किसी का मन दुनिया का हाल नाशमानता का देख कर ठंढा हुआ है, और दुख सुख और जनम मरन के चक्कर से बच कर परम आनंद के धाम में बिश्राम चाहता है, उस को मुनासिब है कि संत सतगुरु की सरन लेकर उनके सतसंग में शामिल होवे, और काल और दयाल का भेद समझ कर काल अंग और काल देश को त्यागता हुआ दयाल देश की ओर चले और दयाल शब्द की डोरी पकड़ कर कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के निज धाम में पहुंच कर अमर आनंद को प्राप्त होवे। यानी इस

लोक के शब्द को जो माया के पदार्थों में लुभाने-वाला और फँसाने और अटकाने वाला है, छोड़ कर दयाल देश यानी अपने निज घर की सुध ले कर माया के घेर से निकलने का जतन शुरू कर देवे तो संत सतगुरु की मेहर से एक दिन निज धाम में बासा पा जावेगा ॥

१३—मालूम होवे कि हर मुक़ाम और हर एक हालत और सूरत में कुल्ल कार्रवाई शब्द की है, चाहे दयाल का होवे या काल का। इस वास्ते सच्चे परमार्थी लोगों को चाहिये, कि शब्द २ का भेद समझ कर और मन और माया की कार्रवाई से बच कर दयाल देश में पहुंचने का इरादह करें ॥

दयाल देश में पहुंचाने वाली धार जुदी है और काल देश में भरमाने और भटकानेवाली धार जुदी है। इनका भेद संत सतगुरु के सतसंग में मिलेगा, और उन्हीं की मेहर और दयाः से जीव काल और माया के जाल से निकल कर पार जावेगा, और कोई जतन और जुगत बचने की नहीं है ॥

१४—इस वास्ते कुल्ल जीवों को मुनासिब और लाज़िम है, कि पहिले खोज संत सतगुरु या उन की संगत का करके उस में शामिल होवें, और सुरत शब्द

मारग का उपदेश लेकर अभ्यास शुरू करें तब उनका काम आहिस्ते २ संत सतगुरु की मेहर से बन जावेगा, नहीं तो माया के घेर में पड़े रहेंगे, और चौरासी में भरमते रहेंगे ॥

बचन--५

सुरत का जगत में उतार और फंसाव और जगत उस के उद्धार यानी चढ़ाव की घर की तरफ़ ॥

१—आदि में कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों से शब्द की धार प्रघट हुई, उसी धार का नाम आदि सुरत है। यह धार जगह २ मंडल बांध कर रचना करती हुई नीचे उतरी, और तीसरी दरजे यानी मलीन माया के देश में पिंड के नाके पर जिस को छठा चक्र और तीसरा तिल कहते हैं ठहरी। और फिर वहां से एक धार नीचे के चक्रों में उतर कर गुदा चक्र के अस्थान पर ठहरी और दो धारें दोनों आंखों में आईं और वहां बैठ कर देह और दुनिया का काम देने लगीं और इंद्रियों द्वारा भोगों और अनेक पदार्थों में रसी और फंसी ॥

२—जो कि क़ानून क़ुदरत का सब जगह यकसां

जारी है, इस वास्ते बाहर और पिंड के अंतर रचना एक ही तौर पर हुई। और सुरतें इस लोक में देहियों में बस कर, कुटम्ब परिवार और अनेक भोगों और पदार्थों में फंस गईं और जहां २ उन के मन का बंधन हो गया, वहां से दुख सुख का भोग करने लगीं ॥

३—जहां मन की प्रीत या तवज्जह होती है वहीं इस की धार आती जाती है, और जब २ उस के प्यारे जीव या वस्तु में कुछ ख़लल या बदल पैदा होता है उस वक़्त जो वह मन के मुवाफ़िक़ है तो सुख, और जो नामुआफ़िक़ है तो दुख, मालूम होता है। और जहां मन की तवज्जह और लाग नहीं है या पहिले थी और फिर हट आई, वहां चाहे जैसी हालत बदले उसका असर नहीं मालूम होता ॥

४—इस्से ज़ाहिर है कि जिस क़दर मनके बंधन या मोह या पकड़ें हैं, उसी क़दर उसकी लाग या मानन के मुवाफ़िक़ हालत बदलने पर, एक दूसरे को दुख या सुख का असर पहुंचता है, यानी विशेष करके इस दुनियां में दुख सुख मानन का है ॥

५—कुल्ल जीव अपने रोज़मर्रह के बर्ताव से इस बात की जांच कर सक्ते हैं, कि संसार में दुख सुख का भोग बिशेष करके मन के मानन का है। यानी

जहां २ और जिस २ में मन की लाग या बंधन है, सो जब २ वहां और उस में किसी क़िसम की नई हालत पैदा होवे कि जिस के सबब से दुख या सुख व्यापे, तो प्रीत करने वाले को भी उस क़िसम का दुख सुख ब्यापेगा। और हाल यह है कि लगन वाले की देह या सामान में किसी क़िसम का हर्ज मर्ज़-वाक़े नहीं हुआ, वह हालत उसी शख़्स या चीज़ पर गुज़री कि जिस में उसकी लाग थी ॥

६—देह का दुख सुख असली माना जाता है मगर जो ग़ौर करके देखा जावे, तो यह भी जिस क़दर मन की धार उस अंग में आती जाती है, उसी क़दर उस अंग में लाग है, और उसी क़दर वक़्त तकलीफ़ या आराम के उसका दुख सुख मन और सुरत को ब्यापता है, यानी यहां भी बहुत से मुआमलों में दुख सुख मानन ही का है। जैसे एक शख़्स बुख़ार या कोई और बीमारी से बीमार है और चारपाई में पड़ा हुआ है, लेकिन इसी वक़्त उसके किसी ख़ास प्यारे की तबिअत सख़्त बीमार हो गई, तो उस वक़्त वह शख़्स अपनी बीमारी को भूल कर फ़ौरन उठ बैठता है, और अपने प्यारे के मुआलजे में तवज्जह और मदद करता है। सख़्त बीमारी या निहायत दरजे

की ज़ोफ़ की हालत में, शायद यह बात किसी २ से जिसका बंधन देह में बिशेष है, न बन पड़े ॥

७—सिवाय इस के ऐसी सूरत में कि जब किसी का कोई मतलब ख़ास या काम बनता होवे, या कोई सख़्त तकलीफ़ और बला दूर होनी मुमकिन होवे, तो जो कोई तकलीफ़ कम दर्जे की आन कर पड़े, तो लोग उसको सहज में बरदाश्त करते हैं, और कोई शिकायत किसी क़िसम की नहीं करते। या कोई शख़्स कुछ बीमार है और उस पर सख़्त और भारी मुसीबत या सदमा नाज़िल होवे, तो अपनी बीमारी को फ़ौरन भूल कर, उस सदमे के रंज में शामिल और गिरिफ़्तार हो जाता है। इन सब सूरतों में साफ़ नज़र आता है कि दुख सुख मन का मानन है, और मन की धार के लाग और बंधन का नतीजा है, और जब जहां से लाग घट गई या दूर हो गई, यानी मन का बंधन नहीं रहा और धार की आमदरफ़्त मौक़ूफ़ हो गई, या कि तवज्जह दूसरी तरफ़ हो गई, फिर वहां कैसा ही दुख या सुख पैदा होवे, उसका असर प्रीत और लाग छोड़ देने वाले शख़्स को बिल्कुल नहीं पहुंचता ॥

८—और भी देखने में आता है कि जब किसी के मन की धार को जो एक तरफ़ जा रही है बदल दिया-

जावे, तो फ़ौरन उसकी हालत भी बद्ल जाती है। जैसे कोई बालक खेलते हुए गिर पड़ा और ख़फ़ीफ़ चोट भी आई और रोनेलगा, मा बाप ने फ़ौरन कोई खिलौना या बाजा उसको दिखला कर उसकी तवज्जह या धार को खींच लिया, तब फ़ौरन रोना बंद् हो गया, और उस खिलौने या बाजे को देखकर बालक मगन हो गया ॥

९—इसी तरह जब कोई शख़्स फ़िकर या रंज या चिन्ता में बैठा हुआ है, और उसी वक़्त कोई ख़ास ख़ुशी की ख़बर आई, तो वह फ़ौरन उस दुख या चिन्ता को भूल जाता है और ख़ुशी मनाता है, यानी मन की धार फ़ौरन बद्ल जाती है, और उसी मुवा-फ़िक़ लाग का भी फल बद्ल जाता है ॥

१०—अब ग़ौर करना चाहिये कि इस दुनिया में सब जीवों की लाग कुटम्ब परिवार और बिराद्री और अनेक तरह के दुनिया के सामाना में हो रही है, और यह सब नाशमान हैं यानी हमेशह बद्लते रहते हैं। फिर जो कोई इन में प्रीत करेगा जब २ उनकी हालत बद्लेगी या अभाव हो जावेगा, तब तब उस शख़्स को अपनी लगन यानी मन की धार के मुवा-फ़िक़ सुख या दुख ब्यापेगा ॥

११—अक़्लमंद् और बिचारवान को चाहिये कि ऐसे पद् या बस्तू में चित्त लगावे, कि जो हमेशा एक रस क़ायम रहे, और जिस्से मेल करने से दम दम रस और आनंद् और शौक़ बढ़ता जावे। और एक दिन उस्से मिलने या उसके निकट पहुंचने पर महा चेतन्य महा प्रेम महा आनंद् और महा सुख का भंडार खुल जावे, और जिसकी तरफ़ तवज्जह करने से दुनिया और देह के दुख सुख आहिस्ते २ बिसरते जावें ॥

१२—ऐसा पद् कुल्ल मालिक राधास्वामी द्याल और उनका धाम है जो सब रचना के परे और निर्मल चेतन्य देश है। और जोकि सब जीव आदि में उसी पद् से आये हैं, इस वास्ते जब तक कि अपने निज घर में उलट कर न जावेंगे, तब तक सच्चा और हमेशह का सुख प्राप्त नहीं होगा ॥

१३—जोकि कुल्ल रचना की कार्रवाई धारों के साथ है, और देहियों की कार्रवाई भी मन और इन्द्रियों की धार के साथ होती है, इस वास्ते जिस कार्रवाई के फल या नतीजे को बद्लना मंज़ूर है, तो उस धार का जिसके वसीले से वह कार्रवाई होती है, रुख़ बद्-लना चाहिये ॥

१४—इस दुनिया में कुल्ल कार्रवाई जीवों की मन

और इन्द्रियों की धार के वसीले से होती है, और जोकि यह सब रचना बाहर है, इस वास्ते सब धारों का रुख़ बाहर की तरफ़ है, और इनकी कारवाई से दुख सुख का फल मिलता है। और जो इससे बचना मंज़ूर है तो इन धारों का रुख़ बदलना चाहिये, यानीं अन्तर में अपने घर की तरफ़ मोड़ना चाहिये क्योंकि वह घर सुख का भंडार है और जो सुरत की धार वहां से आई है, वह भी सुख और आनंद स्वरूप है। जो इस धार का रुख अंतर में ऊपर की तरफ़ मोड़ा जावे, तो जिस क़दर चाल चलेगी ज़्यादह से ज़्यादह सुख मिलता जावेगा, और एक रोज़ महा सुख के भंडार में पहुंचकर हमेशह को बिश्राम मिलेगा ॥

१५—इस बात का इमतहान अपनी हालत की जांच से हो सक्ता है, यानीं एक उस हालत को देखो, कि जब धारें मन और इन्द्रियों की बाहर के कामों में बिखर रहीं हैं, और दोनों क़िस्म की कारवाई एक मनके मुवाफ़िक़ और दूसरी नामुवाफ़िक जारी है, और दूसरी हालत को परखो कि जो इन धारों का रुख़ फेरने, और मन और सुरत की धार के साथ शामिल करके, अंतर में ऊपर कीं तरफ़ चढ़ाने से पैदा होतीं है। पहिलीं हालत में दुख सुख का भोग होता

है, और दूसरी हालत आनंद और सरूर की है, जो स्वरूप या रोशनी का दर्शन करके और शब्द को सुनकर हासिल होती है ॥

१६—जो कोई इस तरह पर धार को बदलने की तरकीब जानता है और उसका अभ्यास करता है, वह संसार और उसके दुख सुख से जब चाहे अपना थोड़ा बहुत बचाव कर सक्ता है, और अंतरी आनंद ले सक्ता है। इसी का नाम सच्चा परमार्थ है, यानी देह और दुनिया के बंधन और दुख सुख से आहिस्ते २ छुटकारा होना और घट में आनंद का प्राप्त होना ॥

१७—यह परमार्थ सब जीवों को कमाना चाहिये, बग़ैर इसके किसी का सच्चा और पूरा उद्धार नहीं होगा। इसके सिवाय जितनी कारवाई परमार्थ के नाम से संसार में जारी है और जिस का तअल्लुक़ अंतर सुरत और शब्द की धार से नहीं है, चाहे वह किसी क़िसम की मुद्रा या प्राणायाम का ही साधन होवे, शुभ करम का फल यानी कोई अर्सह तक सुख देवेगी, लेकिन घर की तरफ़ चाल नहीं चलेगी, और न उद्धार की सूरत नज़र आवेगी ॥

१८—यह निर्मल और सच्चा परमार्थ सिर्फ़ संत सतगुर या उनके सच्चे और प्रेमी सेवक से मिल सक्ता है,

और आज कल उसकी कार्रवाई राधास्वामी मत की संगत में, जहां तहां बहुत आसान तौर के साथ जारी है। और किसी मत में उसका भेद और तरीक़ा अभ्यास का ज़िकर भी नहीं है, बल्कि कुल्ल मत वाले बाहर मुखी परमार्थ की कार्रवाई कर रहे हैं, जोकि शुभ कर्म में दाख़िल है ॥

१६—राधास्वामी मत में सच्चे और कुल्ल मालिक का भेद और उसके धाम की महिमा और वहां से सुरत की धार का उतार माया देश में मैं शरह अस्थानों के जहां २ वह रास्ते में ठहरती, और मंडल बांध कर रचना करती आई है, मुफ़स्सिल बयान किया है। और इसी तरह से सुरत के उलटाने का तरीक़ा बहुत आसान जुगत, यानी शब्द मार्ग के बसीले से (जिस को लड़का जवान बूढ़ा औरत और मर्द ग्रहस्त और विरक्त बिला किसी क़िसम की तकलीफ़ या ख़तरे के कमा सक्ते हैं) उपदेश किया है ॥

२०—जो कोई सच्चा परमार्थी प्रेम और दर्द लेकर राधास्वामी मत में शामिल होवे, और भजन और ध्यान का अभ्यास करे, तौ उसको बहुत जल्द अपने अंतर में, थोड़ा बहुत रस और परचा मिल सक्ता है, कि जिस से उसको इस बात का निश्चय हो जावेगा,

कि इसी अभ्यास से उसका काम दुरुस्त बनेगा, और एक दिन निज घर में पहुंच कर वहां बिश्राम पावेगा, और हमेशा के वास्ते सुखी हो जावेगा। इस वास्ते सब जीवों को मुनासिब और लाज़िम है, कि अपने जीव के कल्यान के वास्ते, कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु की सरन लेकर राधास्वामी मत के अभ्यास में शामिल हों। अगर सुरत शब्द मारग की कमाई जिस क़दर बन सके दिलोजान से करें, तो उनको चन्दरोज़ में ही बहुत कुछ तजर्बा इसी जिंदगी में हासिल होगा, कि जिससे उनको पूरा यक़ीन हो जावेगा, कि उनके उद्धार में क़तई शक नहीं है, चाहे दर्शन कुल्ल मालिक का ज़िन्दगी में हासिल होवे या नहीं पर उसका जलवह और प्रकाश, और शब्द जोकि निज रूप का निशान है ज़रूर नज़र आवेगा और सुनाई देगा और अख़ीर वक़्त पर मौज से संत सतगुरु आप दर्शन देकर अपने जीवों की सुरतों को गोद में बैठाकर सुख अस्थान में बासा देंगे ॥

———————

बचन—६

दुनियां की मान बड़ाई और भोग बिलास देखकर हर कोई उनकी चाह उठाता है, और अपनी ताक़त के मुवाफ़िक़ जतन करता है, और उसमें थोड़ी बहुत कामयाबी होती है, लेकिन दुनिया और उसके सामान की नाशमानता और अनेक तरह के दुक्ख और मौत सब के सिर पर खड़ी देखकर बहुत कम जीव ख़ौफ़ लाते हैं, और इनमें से भी निहायत ही कम जीव कोई जतन अपने बचाव का करते हैं॥

१—दुनिया में दौलत और लियाक़त और हुनर और गुन और हकूमत और भोग बिलास वग़ैरह देख कर उनकी चाह हर कोई उठाता है, और उनके हासिल करने के वास्ते जतन करता है, जिसमें अक्सर थोड़ी बहुत कामयाबी भी होती है॥

२—लेकिन बहुत कम ऐसे जीव हैं कि दुनिया और उसके सामान की नाशमानता, और अनेक तरह के दुक्खों की तकलीफ़ और सब के सिर पर मौत को खड़ा हुआ देख कर, ख़ौफ़ मनमें लाते हैं। और इनमें से भी निहायत कम ऐसे जीव है, कि जो कुछ जतन जैसा कि अपने २ मत में जारी है करने को तैयार होते हैं, या दरियाफ़्त करके करते हैं ॥

३—पहिले तो कुल्ल जीवों की लाग और चाह मन और इन्द्रियों के भोगों में ज़बर धरी हुई है, और उनके निमित्त जो जतन कर रहे हैं, उस्से उनको फ़ुर्सत ही नहीं होती कि दूसरे काम की तरफ़ मुतवज्जह होवें ॥

४—जब २ किसी को सख़्त दुखी देखा या सुना या कहीं कोई सख़्त सदमा या बला नाज़िल हुई, या यकायक और बेवक़्त या ग़ैरमामूली मौत वाक़ै हुई, तब कुछ मन में ख़ौफ़ आता है, और इरादह भी करते हैं कि कोई जतन उनके दूर होने के वास्ते, या उनका असर कम ब्यापने के लिये करें। मगर जहां दो चार रोज़ गुज़रे और वह ख़ौफ़ हलका पड़ा, फिर कोई शख़्स खबर भी नहीं लेता कि वह जतन सच्चा क्या

है और किस्से दरियाफ़्त हो सक्ता है, और कैसे उनकी कार्रवाई की जा सक्ती है ॥

५—बाज़े जीव जो भोले और थोड़े प्रेमी हैं, उनके दिल में दुनिया का नाक़िस और उलटा हाल देखकर सच्चा ख़ौफ़ पैदा होता है, और वे वास्ते रफ़ा करने उसके, अपने मज़हब के मामूली पेशवाओं से सलाह लेकर, मामूली कार्रवाई मुताबिक़ पुरानी चाल और दस्तूर के, जैसे नाम का सुमिरन ज़बान से, और मानसी ध्यान बेठिकाने, और दान पुन्न और ब्रत और तीर्थ और पोथियों का पाठ वग़ैरह करते हैं, पर ऐसी कार्रवाई करके ज़रा भी ग़ौर नहीं करते, कि ज़िन्दगी में कुछ इसका फ़ायदा नज़र आया या नहीं और जो ज़िन्दगी में नहीं मालूम हुआ तो बाद मरने के उसके प्राप्ती की कैसे उम्मीद हो सक्ती है ॥

६—सबब इस भूल और ग़फ़लत का यह है, कि जीवों की तबिअत का सर्व अंग करके झुकाव दुनिया की तरफ़ हो रहा है, और उसके कारोबार के करने और सोचने और बिचारने से उनको बहुत कम फ़ुर्सत मिलती है कि वे दूसरी बात का ख़्याल करें ॥

७—इस में कुछ शक नहीं कि दुख और मौत वग़ैरह का चक्कर हर रोज़ प्रत्यक्ष चल रहा है और हर एक

जीव को अपनी मौत की याद दिलाता है, लेकिन यह याद भी रोज़मर्रह के हिसाब से साधारन हो जाती है, और सिवाय दस पांच मिनट के ज़्यादह देर तक उसका असर नहीं रहता ॥

८–जब कोई भारी वारदात या मुसीबत या मरी या सख़्त अकाल वाक़ै होता है, उस वक़्त जीवों के मन में भारी ख़ौफ़ और चिंता और फ़िकर अपने २ बचाव की पैदा होती है, और कोई दिन उसका ठहराव भी होता है, और इस अरसे में हर कोई जिस क़दर बन सक्ता है, ख़ैरात और दान वग़ैरह देता है और थोड़ी बहुत मालिक की याद भी करता है, और बाज़े लोग ख़ोज और तलाश निसबत मालिक और तरकीब और रास्ता उसके मिलने के करते हैं, और कोई २ दुनिया की नाशमानता और सख़्त वाक़ै देख कर ज़्यादह डर जाते हैं और जीते जी मालिक से मिलने या मौत से निचिंत हो जाने का जतन जैसा कुछ कि दरियाफ़्त होवे करते हैं ॥

९––पिछली क़िसम के लोगों में से जिस किसी को भाग से संत सतगुरु या साध गुरू मिल जावे तो उनसे पूरा भेद कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और उनके धाम का और भी रास्ते की मंज़िलों का और जुगत

चलने की अपने घट में दरियाफ़्त करके सीधे रास्ते पर उस की चाल चल सक्ती है और फिर वही जीव एक दिन निज धाम में पहुंच कर मौत से निचिन्त और जन्म मरन के चक्कर से रहित हो कर परम आनंद को प्राप्त हो सक्ते हैं ॥

१०—बाक़ी जीवों को जो २ जिस क़दर कार्रवाई दान पुन्य और नाम का सुमिरन और ध्यान और पोथियों का पाठ और तीर्थ व्रत वग़ैरह करेंगे वह शुभ कर्म में दाखिल होकर उस के फल के एवज़ में सुख पावेंगे, पर जन्म मरन नहीं छूटेगा और इस वास्ते सच्चा उद्धार भी नहीं होवेगा ॥

११—सच्चे उद्धार से मतलब यह है कि सुरत यानी रूह माया देश को छोड़ कर अपने निज देश यानी कुल्ल मालिक के धाम में पहुंच कर अमर आनंद को प्राप्त होवे। और माया देश की हद्द तीन लोक तक है जिस में पिंड और ब्रह्मंड दोनों शामिल हैं और कुल्ल मालिक का धाम पिंड ब्रह्मंड के परे है, जिस को निर्मल चेतन्य देश अथवा संत और दयाल देश भी कहते हैं, वहां काल और करम और मन और माया नहीं है, और इस सबब से कष्ठ और कलेश और दुख सुख और जनम मरन का चक्कर भी नहीं है ॥

१२—इस ऊंचे से ऊंचे धाम और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल का पता और भेद सिर्फ़ संतों के पास है पर उनका मिलना दुर्लभ है। बड़भागी जीवों को अपनी दया से दर्शन देते हैं, और भेद समझाकर और जुगत चलने की बताकर उनसे रास्ता तै कराते हैं, और परम धाम में बासा देते हैं ॥

१३—इस ज़माने में कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल ने जीवों को निहायत दुखी और बल हीन देख कर अति दया करके संत सतगुरु रूप धारन फ़रमाया, और भेद अपने निज धाम और उस के रास्ते और मंज़िलों का खोल कर समझाया, और जुगत चलने की इस क़दर आसान कर दी, कि हर कोई लड़का जवान बूढ़ा और मर्द चाहे विरक्त होवे या ग्रहस्त उस को बे ख़तरे और बेतकलीफ़ सहज में कमा सकें, और थोड़े दिन के अभ्यास में अपना सच्चा उद्धार होता हुआ इसी ज़िंदगी में देखलें, और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल की दया और रक्षा के परचे अंतर और बाहर परख लेवें ताकि पूरा इतमीनान और तसल्ली अपने सच्चे उद्धार की निसबत इसी ज़िंदगी में हो जावे ॥

१४—जो कोई सच्चा खोजी और दर्दी है, उस को यह भेद और तरीक़ा अभ्यास का आज कल राधास्वामी

संगत से आसानी से मिल सक्ता है और यही सच्चा रास्ता सच्चे और पूरे उद्धार का है। और तरीक़े रास्ते में थक कर रह गये, धुर धाम का भेद सिवाय राधास्वामी मत के और किसी मत में पाया नहीं जाता ॥

१५—ग़ौर करने की बात है कि जब सुरत रूह की बैठक जाग्रत अवस्था में आंख के मुक़ाम पर है, और वहीं से धार ऊंचे देश की तरफ़ अंतर में वक़्त सोने या मौत के खिंच जाती है, और देह और इन्द्रियां और मन फ़ौरन वक़्त खिंचने धार के बेकार हो जाते हैं, तो फिर रास्ता मुक्ती और उद्धार का इसी मुक़ाम से अंतर में जारी हो सक्ता है। बाहर जिस क़दर कार्रवाई की जावे, जो उसका सिलसिला रूह की धार से अंतर में नहीं लगा हुआ है, यानी सुरत और मन की चढ़ाई में कुछ मदद उस कार्रवाई से नहीं मिलती है, तो वह करतूत शुभ करम का फल देगी। और उस मुक़ाम पर जहां माया और मन और काल और कर्म नहीं हैं, नहीं पहुंचावेंगी और इस सबब से पूरा उद्धार नहीं होवेगा ॥

१६—इस वास्ते कुल्ल जीवों को जो देह के दुख सुख और मौत की सख़्त तकलीफ़ से बचना चाहें, मुनासिब और लाज़िम है कि राधास्वामी संगत में

सब जानदार उस्से नीचे और उसकी ताबेदारी करते हैं, तो जरूर उसके घट में कुल्ल मालिक का जलवह और प्रकाश ज़्यादह से ज़्यादह प्रघट है ॥

२—(१) ऐसे कुल्ल मालिक के चरनों में प्रतीत सहित प्यार और प्रीत करना हर एक जीव पर फ़र्ज़ है। (२) और जब हम देखते हैं कि हम कोई काम अपनी ताक़त से अपनी मर्ज़ी के मुवाफ़िक़ वास्ते अपने सुख के नहीं कर सके, और जब दुख आता है तो उसको भी फ़ौरन नहीं हटा सके तो उस मालिक का दिल में ख़ौफ़ रखना भी ज़रूर चाहिये, ताकि हम ख़िलाफ़ उसकी मौज और मरज़ी के किसी काम में कोशिश न करें, और उदूल हुकमी की सज़ा के भागी न होवें और कोई काम ऐसा न करें कि उसके नापसंद होवे। (३) और जोकि वह सब से बड़ा और सब का मालिक और सब का हितकारी और कारसाज़ है, इस वास्ते उसके चरनों में हमेशा दीनता रखना, और जिस क़दर बने उसकी सेवा और ख़िदमत करना भी ज़रूर चाहिये ॥

३—दुनिया में जो राजा महाराजा अमीर और धनवान और हकूमतवान और विद्यावान और गुनवान और स्वरूपवान वग़ैरह होते हैं, उन की तरफ़

कुल्ल जीवों के मन में तवज्जह और दर्शनों का इरादह और दीनता और शौक़ सेवा का आपही आप पैदा होता है, फिर कुल्ल मालिक के चरनों में जो सब का रचनेवाला और पालन करनेवाला है, किस क़दर दीनता और सेवा करना मुनासिब और ज़रूरी है ॥

४—निशान प्रीत और प्रतीत का यह है, कि कुल्ल मालिक की महिमा और उस की क़ुद्रत और लीला के विलास और बानी को निहायत तवज्जह और प्यार और शौक़ के साथ पढ़े और सुने। और जो कोई उस की महिमा और लीला सुनावे वह प्यारा लगे, और दिन २ शौक़ उस के दर्शन का बढ़ता जावे ॥

५—निशान दीनता और सेवा का यह है, कि कुल्ल मालिक को सर्ब समर्थ जान कर, सच्ची दीनता उसके चरनों में लावे, और जब तब वास्ते प्राप्ती दर्शनों के अंतर में प्रार्थना करता रहे, और सेवा की उमंग उठती रहे, और जो कि मालिक आप किसी चीज़ का मुहताज नहीं है, तो जो कोई उसके बच्चों में से भूखा नंगा या बीमार होवे, उस की मदद अपनी ताक़त और फ़ुर्सत के मुवाफ़िक़ करे और जो उस के आशिक़ और प्रेमी है उनकी ख़िद्मत उमंग के साथ करे।

६—कुल्ल मालिक के दर्शनों के शौक़ के साथ ही,

लीफ़ पहुँचे, न करना चाहिये, बल्कि ऐसी कार्रवाई करना मुनासिब है कि जिस्से सब सुख पावें, और जो ऐसा न कर सके तो अपने मतलब के लिये दुख देना भी मुनासिब नहीं है ॥

१२—जो कुछ ऊपर लिखा गया है यह हर एक शख़्स की ख़ास कार्रवाई से तअल्लुक़ रखता है। और जहां से जमाअत और गिरोह या कोई ख़ास क़ौम या मुल्क के बाशिंदों से तअल्लुक़ रखता है, वहां कुल्ल कार्रवाई वास्ते आम बन्दोबस्त और आम नफ़ा और नुक़सान और आम मसलहत के मुवाफ़िक़ की जावेगी। वहां एक २ आदमी के नफ़े और नुक़ासान का जुदा २ ख़्याल रखना मुमकिन नहीं है ॥

१३—परमार्थी शख़्स को ख़ास कर मुनासिब है, कि जो कार्रवाई दूसरों के साथ करे उस में दया और मित्र भाव पेश नज़र रक्खे, और अपने मन की हालत और ख़्वाहिश जो बरख़िलाफ़ उसके न होवे, जहां तक मुमकिन होवे ग़ालिब न होने देवे ॥

३—तीसरा भाग अपने निज आपे यानी निज रूप के साथ बर्ताव ॥

१४—मालूम होवे कि निज आपा जीव का सुरत यानी रूह है, और उसकी बैठक पिंड के नाके पर

तीनों शरीर अस्थूल सूक्ष्म और कारन और तीनों अवस्थाओं के परे है। यह आपा कुल्ल मालिक की अंस सत् चित् आनंद स्वरूप है, और असल में सदा निरलेप और निरबंध रहता है, पर मन और इन्द्री और देहियों और पदार्थों का संग करके, इस का रुख़ बाहर और नीचे की तरफ़ मुड़ गया है, और इस सबब से दुख सुख भोगता है ॥

१५—जो कोई कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और उनके निजधाम का भेद लेकर, अपने निज आपे यानी सुरत को जो उनकी अंस है, संतों की जुगत लेकर निज घर की तरफ़ चढ़ावेगा, वही देहियों के बंधन से छूटता जावेगा, और उसी का रुख़ जो औंधा हो रहा है, सीधा होकर ऊंचे देश की तरफ़ को बदल जावेगा, और रफ़्तः २ एक दिन निज धाम में पहुंच कर बासा पावेगा, और देहियों के बंधन और दुख सुख और जनम मरन के चक्कर से छुटकारा हो जावेगा। और जो इस तरह की कार्रवाई नहीं की जावेगी, यानी मन और सुरत का झुकाव और फंसाव संसार और उसके पदार्थों ही में रहा आवेगा, तो सुरत हमेशह ऊँच नीच देही के बंधन में गिरिफ़्तार रह कर, दुख सुख और जनम मरन के चक्कर में पड़ी

रहेगी । यह निहायत दरजे का ज़ुल्म अपने आपे पर है, कि जो उसको देहियों बंधन और दुख सुख के भोग से बचाया और छुड़ाया न जावे, और ऐसे ही शख़्स आतम घाती कहलाते हैं, क्योंकि जो उमर भर संसारी करतूत वास्ते प्राप्ती धन और भोग बिलास के करते रहे, और उसी की ज़बर बासना चित्त में रही, और अपने सच्चे मालिक और निज घर का भेद न जाना, तो संसारी बासना और स्वाभाविक संसारी करतूत के मुवाफ़िक़, बारम्बार देह धरकर, अपनी करनी का फल दुख सुख भोगना पड़ेगा। और यह बड़ा भारी अपराध अपनी सुरत के निसबत किया जावेगा, कि वह बजाय अपने ऊंचे देश की तरफ़ चलने के, नीचे के माया देश में गिरिफ़्तार रही आवेगी, और देहियों के साथ जनम मरन का दुख सुख भोगती रहेगी ॥

४–चौथा भाग अपने मन और देह रूप आपे के साथ बर्ताव ॥

१६—देह रूप आपा मतलब मन से है, जोकि कुटम्ब परवार और अनेक तरह के भोगों और पदार्थों और माल और असबाब में अपना बंधन ठान कर, उनके हानि लाभ में दुख सुख सहता है ॥

१७—इस दुख सुख की दो क़िसमें हैं, एक असली यानी जो अपने देह और माल से तअल्लुक़ रखता है, दूसरा मानन का कि जो दूसरे से तअल्लुक़ रखता है, और बसबब मुहब्बत के अपने को भी उसका असर पहुंचता है ॥

१८—असल में दोनों क़िसम के दुख सुख बसबब तवज्जह अपने मन की पैदा होते हैं यानी जो अपने मन की धार किसी शख़्स या किसी चीज़ में शौक़ और मुहब्बत के साथ आवे जावे, तो उस से बंधन पैदा होता है, और उस शख़्स या चीज़ की हालत बदलने में, उसका असर इस शख़्स के मन पर भी पहुंचता है ॥

और जब वही धार कोई वजह से उस शख़्स या चीज़ से दुखी या नाराज़ या नफ़रत खाकर हट आवे, तो उस शख़्स की हालत बदलने में यानी उस पर दुख सुख का चक्कर आने के वक़्त, इस शख़्स के मन पर कोई असर नहीं पहुंचता। इस्से साफ़ ज़ाहर है कि यह दुख सुख का असर सिर्फ़ मन की धार के तअल्लुक़ यानी आमद रफ़्त के सबब से है। इसी को बंधन कहते हैं, और यह असर जो पैदा होता है सिर्फ़ मानन है, यानी जो उस शख़्स या चीज़ में प्यार है, तो उस

की हालत बद्लने पर असर होगा, और जो प्यार या तअल्लुक़ नहीं है, यानी आमद् रफ़्त धार की बंद् है, तो कोई असर नहीं होगा ॥

१६—अब ग़ौर करो कि जिस क़द्र जीवों और चीज़ों में जिस किसी के मन का बंधन है, उसी क़द्र उसका मन उनके सबब से दुख या सुख का असर सहता रहेगा। और जितना जिसका मन सिमट कर अपने अंतर में ऊंचे देश् की तरफ़ लगता है, और दुनिया के दूसरे जीवों और चीज़ों में तवज्जह उसकी बहुत कम है या बिल्कुल नहीं है, तो उसको उसी क़द्र रस अंतर में आवेगा और दुनियां का दुख सुख उसको बहुत कम बल्कि बिल्कुल नहीं ब्यापेगा ॥

२०—असल में दुनिया के दुख सुख की जड़ बहुत कमज़ोर है, यानी उसका असर सिर्फ़ आंख के अस्थान पर बैठते वक़्त होता है, और यहां से ज़रा सरकने पर उसका ज़रा भी असर नहीं रहता। बल्कि उस शख़्स और चीज़ की, जिसके सबब से दुख सुख का चक्कर आया सुध भी नहीं रहती, कि कौन है और अपना है, या बेगाना, और ऐसे ही जिस किसी से अपना मन हट जावे, उसके दुख सुख का भी असर बिल्कुल नहीं होता। इस वजह से संतों ने संसार के

दुख सुख को भरम कहा है, यानी इस शख़्स की नाक़िस समझ से पैदा होता है, और जब हक़ीक़त मालूम हो गई तब वह आपही आप जाता रहता है ॥

२१—परमार्थी शख़्स को मुनासिब है कि जहां तक मुमकिन होवे, अपने मन को किसी शख़्स या चीज़ में ज़्यादह न बांधे, और प्रीत लगाते वक़्त भी अपने मन में समझ ले, कि इस बंधन से दुख सुख का थोड़ा बहुत असर सहना पड़ेगा। सो जब ऐसा चक्कर आवे उस वक़्त उस शख़्स की जिस क़दर मदद या सहायता हो सके कर देवे, और फिर अपने मन को चरनों में लगाकर न्यारा कर लेवे, ताकि उस में दुख सुख का ज़्यादह असर ठहरने या धसने न पावे और मालिक की मौज का ख़्याल करके, उसी का आसरा और भरोसा रक्खे, कि जो कुछ होगा वही मुनासिब और मसलहत से ख़ाली नहीं होगा ॥

२२—कुल्ल जीवों को अपने मन के निरबंध रखने की, जहां तक मुमकिन होवे कोशिश रखना चाहिये, क्योंकि बंधन से दुख सुख पैदा होता है, और यह दुख सुख परमार्थी कार्रवाई में बहुत बिघन डालना है, और संसारी ऐश और मज़े को भी कड़वा और

फीका कर देता है, और परमार्थ में भी चित्त को बिकल और गद्‌ला रखता है ॥

२३—जो कोई ऐसा नहीं करता यानी अपने मन की सम्हाल नहीं रखता, और जल्दी हर एक शख़्स या चीज़ में बंध जाता है, तो वह उपरी दुख सुख के झटके बहुत सहता है, और फ़ज़ूल और बेफ़ायदह अपने मन को खटाई में डालता है ॥

५—पांचवां भाग कुल्ल मालिक का खोज और पता लगाना, और उस के धाम में पहुंचने और दर्शन करने की जुगत दरियाफ़्त करना ॥

२४—जब कि मनुष्य को आसमानी और ज़मीनी रचना और क़ुदरत देख कर यह यक़ीन होगया कि कोई सच्चा और कुल्ल मालिक और करता इस रचना का ज़रूर है, और वह सब से बड़ा और सर्व समर्थ और महा आनंद और महा चेतन्य सरूप है, तो सिर्फ़ उस्से मिलने की चाह सब को उठाना चाहिये ॥

२५—दुनिया में राजा और महाराजा और अमीर और साहूकार और ज़रा २ से हाकमों से मिलने और उनके देखने के वास्ते, निहायत शौक़ के साथ लोग

जतन करते हैं और धन भी ख़र्च करते हैं, और जब मुलाक़ात हो जाती है, तब निहायत खुश होते हैं, फिर कुल्ल मालिक से मिलने के वास्ते किस क़दर तद्बीर और कोशिश करना हर एक जीव पर लाज़िम है ॥

२६—उस कुल्ल मालिक का पता और भेद सिर्फ़ संतों से या उनके प्रेमी सेवक से मालूम हो सक्ता है, इस वास्ते संतों को या उनकी संगत को तलाश करके उनसे भेद रास्ते का और जुगत चलने की दरियाफ़्त करना ज़रूर चाहिये, ताकि जीव जतन में लग जावें और आहिस्तः २ रास्ता तै करते जावें ॥

२७—जतन और जुगत संतों की यह है कि सुरत को शब्द में जिसकी धुन घट २ में ही रही है लगाकर अपने घट में ऊँचे देश की तरफ़ लगाना, और स्वरूप का ध्यान करके मन और सुरत को समेट कर एक अस्थान से दूसरे और दूसरे से तीसरे पर चढ़ाना ॥

२८—शब्द की बराबर कोई गुरू नहीं है यानी अंतर में रास्ता दिखाने वाला और प्रकाश करने वाला इस्से बढ़कर कोई नहीं है ॥

२९—जो कोई शख़्स अपना बासा मृत्यु लोक में न चाहे, और देहियों के साथ बंधन और जो उनके

साथ दुख सुख लाज़मी है, बार २ भोगने से बेज़ार हो गया है, और कुल मालिक के धाम में पहुंच कर उसके दर्शन का बिलास और परम आनंद की प्राप्ती चाहता है, उसको चाहिये कि जिस क़दर जल्द हो सके, संत सतगुर या उनकी संगत से मिल कर और उपदेश लेकर चलना शुरू करे, तो एक दिन धुर धाम में पहुँच कर परम आनंद को प्राप्त होगा ॥

३०–और जो ऐसी कार्रवाई नहीं की जावेगी, तो जनम मरन और चौरासी के चक्कर से उसका छुट-कारा हरगिज़ नहीं होगा ॥

६–छठा भाग अभ्यास करना सुरत शब्द मारग का कुल्ल जीवों को चाहे औरत होवे या मर्द वास्ते अपने जीव के कल्यान के फ़र्ज़ और लाज़िम है ॥

३१—मालूम होवे कि सब जीवों की सुरत यानी रूह की बैठक जाग्रत समय आंख में है, और इसी अस्थान पर बैठ कर देह और दुनिया को कार्रवाई की जाती है, और दुख सुख और चिंता और फ़िकर ब्यापता है ॥

३२–जब आंख के अस्थान से सुरत की धार

अंतर में खिंच जाती है, उस वक़्त देह और दुनिया की ख़बर नहीं रहती, जैसे सोते वक़्त या जबकि किसी फोड़े या ज़ख़्म के काटने को डाक्टर लोग शीशी सुंघाते हैं, या जब कि ग़श आ जाता है, या किसी सख़्त बीमारी के सबब से आंखें या पुतली चढ़ जाती हैं, और मरने के वक़्त भी इसी तरह पुतली खिंच जाती हैं ॥

३३—इस्से साफ़ ज़ाहर है कि सुरत की धार का खिंचाव, अंदर में पहिले आंख के मुक़ाम से होता है, और फिर सब देह में से सिमटाव शुरू होता है और मरने के वक़्त भी सुरत आंख के मुक़ाम से हट कर, और कुछ दूर तक अंतर में खिंचाव और चढ़ाई के बाद, देह छोड़ जाती है, जिसका नाम मौत है ॥

३४—जबकि पैदायश के वक़्त से सुरत का उतार मस्तक से पिंड में, ख़ास कर आंख के मुक़ाम पर, और मरने के वक़्त सिमटाव और खिंचाव कुल्ल देह ख़ास कर आंख के मुक़ाम से, साफ़ नज़राई देता है, तो हर शख़्स पर चाहे इस्त्री होवे या पुर्ष फ़र्ज़ और लाज़िम है, कि जीते जी इस रास्ते को जिस क़दर बन सके खोले और तै करे, ताकि अख़ीर वक़्त पर

हाथ पैर पीटना और सिर धुन्ना न पड़े, यानी जम दूतों के हाथ से चोट खानी न पड़े ॥

३५—इन आंखों से साफ़ दिखलाई देता है कि जब कोई शख़्स स्त्री या पुरुष चोला छेड़ता है, तो वह कैसा ही खूबसूरत होवे चंद मिनट मरने के बाद उसकी सूरत ऐसी बिगड़ जाती है और भयानक हो जाती है, कि उसकी तरफ़ देखा नहीं जाता। यह सबूत इस बात का है, कि वक़्त चोला छोड़ने के उस शख़्स को सख़्त तकलीफ़ हुई और सख़्त चोटें खानी पड़ीं, कि जिनके सबब से चेहरे का रंग रूप बिगड़ गया और डरावना हो गया ॥

३६—बरख़िलाफ़ इसके जिस शख़्स ने राधास्वामी मत का उपदेश लेकर, थोड़ा बहुत अभ्यास शौक़ के साथ इस ज़िंदगी में किया है, उस का चेहरा और रंग रूप वक़्त मौत के बदल कर ऐसा सुहावना और खिला हुआ और चमकता मालूम होता है कि जाने वह शख़्स ज़िंदह और निहायत ख़ुशी से भरा हुआ है ॥

३७—सबब इसका यह है कि उसके मुवाफ़िक़ हुकम सत्तपुर्ष राधास्वामी दयाल और संतों के आंख के मुक़ाम से सुरत को अंतर में ऊंचे यानी निज घर की तरफ़ चढ़ाने का अभ्यास किया। और जिस क़दर

उसकी चाल अंतर में चली, उसी क़दर आवाज़ आसमानी उसको सुनाई दी और नूर और प्रकाश नज़र आया, कि जिस को सुनकर और देख कर वह मगन होता था और ज़्यादह कोशिश वास्ते बढ़ाने अपनी चाल के करता था और जब कि अखीर वक़्त पर कुल्ल सिमटाव और खिंचाव, मन और सुरत का ऊपर की तरफ़ को हुआ, तब शब्द भी ज़ोर शोर से गाजने लगा और नूर का भी भंडार नज़र आया, कि जिस को देख कर और सुनकर महा आनंद प्राप्त हुआ, और उस गहरी ख़ुशी का निशान चेहरे और रंग रूप पर बाक़ी रहा ॥

३८—अब मालूम होवे कि राधास्वामी अथवा संत मत का मतलब यही है कि सुरत को जो सच्चे मालिक के धाम से शब्द यानी चेतन्य की धार के साथ उतर कर, पिंड में आंख के मुक़ाम पर ठहरी है, और यहां से बवसीले और चक्रों और रगों के अंग २ में फैली है, आसमानी आवाज़ सुनकर और उँचे मुक़ाम की रोशनी दिखाकर, घर की तरफ़ को उलट कर चलाना और चढ़ाना ताकि मरने से पहिले उस रास्ते को थोड़ा बहुत साफ़ और तै करले, और आवाज़ आसमानी और क़ुदरती स्वरूप नूरानी

में उसका प्यार आजावे, और अख़ीर वक़्त पर इन दोनों की पहिचान कर के शौक़ के साथ इनकी तरफ़ को चले और परम आनंद को प्राप्त होवे ॥

३९—जो जीव कि संतों का बचन नहीं मानते और दुनियां के कामों और भोग बिलास में अपनी उमर ख़र्च करते हैं, वह अख़ीर वक़्त पर दुनिया की मुहब्बत के सबब से बारम्बार इस तरफ़ को यानी पिंड में नीचे की तरफ़ झोका खाते हैं, और काल उनकी सुरत को ऊपर को खींचता है, सो इस खैंचातानी और कशाकशी में बहुत झटके और कलेश सहते हैं, और अपने करमों और ख़्वाहिशों के मुवाफ़िक़ जम दूतों के हाथों से बहुत तकलीफ़ उठाते हैं, इसी सबब से उनका चेहरा और उसका रूप रंग मौत के वक़्त बिगड़ जाता है, और निहायत भयानक हो जाता है ॥

४०—अब ग़ौर करो कि कुल्ल जीवों को यह बात लाज़िम है कि नहीं, कि मरने से पहले उस रास्ते पर जहां कि काल ले जावेगा चलना शुरू करें और जीते जी थोड़ा बहुत क़ुदरत का खेल अपनी आंखों से देखें और अपने और कुल्ल मालिक के निज रूप का, जोकि नूरानी और चेतन्य शब्द स्वरूप है, थोड़ा-बहुत जलवह और प्रकाश देखकर मगन होवें, ताकि अख़ीर

वक़्त पर जब वह स्वरूप अपना प्रकाश ज़्यादहतर दिखलावे और सुरत को खींच कर अपने चरनों में लगावे, तब यह शख़्स भी निहायत मगन हो कर और निहायत शौक़ के साथ अपने मालिक के चरनों में लिपट कर ऊँचे धाम की तरफ़ चले, और पिंड को ख़ुशी के साथ छोड़ देवे ॥

४१—सुरत के चढ़ाने का अभ्यास जो राधास्वामी मत में जारी है, उसको सुरत शब्द योग कहते हैं, यानी सुरत को आवाज़ के वसीले से ऊँचे देश में चढ़ाना और धुर मुक़ाम में जो कुल्ल मालिक का धाम है और जहां से आदि शब्द प्रघट हुआ, पहुंचा कर, परम आनंद को प्राप्त कराना। सिवाय इस के और कोई तरीक़ा कुल्ल मालिक के चरनों में पहुंचने का ऐसा आसान और रसीला नहीं रचा गया है ॥

४२—जो जीव यह अभ्यास करेंगे, यहां भी और वक़्त मौत और उसके पीछे सुख पावेंगे, और जो यह अभ्यास नहीं करेंगे, वह यहां भी दुखी रहेंगे और अख़ीर वक़्त पर और बाद मरने के महा दुख और कलेश पावेंगे, और उनके जनम मरन का चक्कर कभी नहीं छूटेगा ॥

७—सातवां भाग जरूरी उपदेश ॥

४३—अब सब को आम तौर पर समझाया जाता है, कि अपने जीव के फ़ायदे के वास्ते, थोड़ा बहुत अंतर अभ्यास सुरत और मन के चढ़ाने का शब्द के वसीले से हर एक शख़्स को, चाहे मर्द होवे या औरत ज़रूर करना चाहिये। जो किसी को ज़्यादह फ़ुर्सत न मिले तो दिन रात में दो दफ़े एक २ घंटा करके, ज़रूर राधास्वामी मत के मुवाफ़िक़ अभ्यास यानी ध्यान और भजन करना चाहिये ॥

४४—यह अभ्यास कुछ मुशकिल नहीं, बल्कि इस क़दर आसान है, कि दस बारह वर्ष का लड़का और जवान और अस्सी वर्ष का बूढ़ा, बिला तकलीफ़ बैठे २ और लेटे २ कर सक्ता है ॥

४५—संजम इस अभ्यास में सिर्फ़ इस कदर हैं (१) कि मांस अहार और नशे की चीज़ खाना या पीना नहीं चाहिये (२) अपने मतलब के वास्ते किसी को दुख देना या उसका हक़्क़ मारना नहीं चाहिये (३) रोज़मर्रह खाना खाने में इस क़दर एहतियात रखना चाहिये कि भूख से दो चार लुक़मे[1] कम खावे (४) और संत सतगुर और कुल्ल मालिक राधास्वामी

१—ग्रास ।

दयाल के चरनों में सच्चा भाव और प्यार, और उनके दर्शनों की प्राप्ती के वास्ते सच्चा शौक़ और दर्द और तड़प, चाहे वह शुरू में थोड़ा ही होवे फिर दया से बढ़ता जावेगा (५) फ़ज़ूल ख़्वाहिश तरक़्क़ी दुनियां की यानी ज़्यादती धन और माल और कुटम्ब परिवार और मर्तबह और हकूमत और दुनिया की नामवरी की न उठावे (६) दुनियादारों और अमीरों और धनवालों का संग ज़रूरत के मुवाफ़िक़ करे, ज़्यादह वक़्त अपना इनकी सोहबत में जहां तक मुमकिन होवे ख़र्च न करे (७) परमार्थ की कार्रवाई में दुनिया दारों की, जो कि असली परमार्थ से निपट बेख़बर और नादान हैं, निंद्या अस्तुत का ख़्याल न करे (८) सच्चे परमार्थ के हासिल करने के वास्ते, तन मन धन के लगाने में (जिस क़दर कि अपनी ताक़त होवे और बन सके) दरेग़ न करे, यानी कुछ सोच विचार मन में न लावे, लेकिन पहिले कोई दिन सतसंग और अंतर अभ्यास करके जांच कर ले कि यह परमार्थ सच्चा है और सच्चे मालिक और संत सतगुरु की दया उसके साथ है ॥

४६—यह उपदेश संत सतगुरू निहायत दया और जीवों का हित करके फ़रमाते हैं, और कोई मतलब

अपनी मान बड़ाई या पूजा प्रतिष्ठा या धन और सेवा लेने का नहीं। तन और धन की सेवा जो किसी क़दर जारी है, वह भी वास्ते बढ़ाने प्रेम और भक्ति जीवों के कराई जाती है, और उसमें भी इस क़दर एहतियात् रहती है, कि हर एक अपनी उमंग और ताक़त के मुवाफ़िक़, अपनी ख़ुशी से जिस क़दर चाहे सेवा करे, किसी क़िस्म का ज़ोर या दबाव नहीं डाला जाता और न हुकम किया जाता है ॥

४७—जीवों को यह बात अच्छी तरह समझ लेना चहिये, कि उनकी देह कुल्ल रचना का नमूना है, यानी जो कुछ कि बाहर रचना में है, वह सब छोटे पैमाने के हिसाब से उनके अन्तर में मौजूद है, और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल का तख़्त भी घट में है, और उसका रास्ता भी घट में जारी है, बल्कि ब्रह्म और परमेश्वर और परमात्मा और ख़ुदा और गौड का मुक़ाम भी घट में मौजूद है। संत सतगुरु सिर्फ़ तरकीब घट में झांकने और चलने की बताते हैं, और बाक़ी कारख़ाना माया और क़ुद्-रत का, जिस क़दर सुरत रास्ता तै करती जावेगी आपही नज़र आवेगा, और सब मुक़ामों और दरजों को आहिस्ते २ तै करती हुई, अख़ीर में सुरत अपने

सच्चे माता पिता कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के सनमुख पहुंच कर, परम आनंद को प्राप्त होगी ॥

४८—अब जीवों को इख़्तियार है कि चाहे इस उपदेश को मानें या न मानें, लेकिन इस क़दर याद रखना चाहिये, कि जो इसी ज़िंदगी में अपनी सुरत को आँख के मुक़ाम से सरकाने और अंतर में ऊँचे देश की तरफ़ चढ़ाने का जतन नहीं करेंगे तो वे काल पुर्ष और जमदूतों के हाथ से, बहुत कष्ट और कलेश मरने के वक़्त सहेंगे, और बारम्बार देह धर के दुख सुख भोगते रहेंगे, और माया देश में ऊँच नीच देश और ऊँच नीच जोनों में, अपनी बासना और करमों के मुवाफ़िक़ भरमते रहेंगे ॥

४९—जो जीव संत बचन को मान कर सुरत शब्द मारग का थोड़ा बहुत अभ्यास इसी जिन्दगी में जारी कर देंगे, तो उनका परमार्थी भाग दया से बढ़ता जावेगा, और इस दुनिया में, और भी मौत के वक़्त, और बाद मरने के उनकी सहायता होवेगी, और जब तक धुरधाम में न पहुंचेंगे तब तक सुख स्थान में बासा पावेंगे, और दो या तीन उत्तम जनम धारन करके, वही कमाई पूरी करेंगे ॥

५०—जो राधास्वामी मत के मुवाफ़िक़ अभ्यास नहीं

करेंगे, वे अपना परमार्थी भाग घटावेंगे, और माया के देश में नीच ऊँच जोन में भरमते रहेंगे। उनका बचाव दुख सुख और जनम मरन के चक्कर से कभी नहीं होवेगा। इस कष्ट और कलेश और अभागता के भागी, वे आप अपनी ग़फ़लत और बे परवाही के सबब से होवेंगे। संत सतगुरु जहां तक मुमकिन है पुकार कर ख़बर देते हैं, पर जो जीव न मानें तो वे क्या करें ॥

बचन-८

और मतों में वास्ते जीव के उद्धार के करम धरम यानी बाहर मुख कार्रवाई पर ज़्यादः ज़ोर दिया है, लेकिन संतों ने सिर्फ़ प्रेम और शब्द अभ्यास की मुख्यता रक्खी है, इससे सब कारज पूरा और दुरस्त बन सक्ता है ॥

१—जितने मत कि दुनिया में जारी हैं, उन सब में बहुत करके बाहर मुख कार्रवाई पर वास्ते प्राप्ती मुक्ती या उद्धार के ज़ोर दिया है, और उस कार्रवाई

का कुछ भी तअल्लुक़ सुरत की धार से, जिस की बैठक जाग्रत अवस्था में आंख के मुक़ाम पर है, नहीं है ॥

२—ऐसी कार्रवाई चाहे जिस क़िसम की होवे, उस का फ़ायदा सिर्फ़ शुभ करम का मिल सक्ता है, और मुक्ती की प्राप्ती यानी बंधनों का ढीला होना या छूटना उस कार्रवाई से मुमकिन नहीं है ॥

३–और मतों में मुक्ती का भेद कि किस मुक़ाम पर पहुंचने से, और कौन से रास्ते और किस जुगत से चलकर हासिल होगी, बहुत कम बयान किया है, बल्कि बाहर मुख कार्रवाई का ही फल मुक्ती कहा है ॥

४—राधास्वामी दयाल ने दया करके सब भेद बहुत खोल करके सुनाया है, और मुक्ती का अस्थान और जुगत उसके प्राप्ती की घट में चढ़कर और चलकर बर्णन की है, और सिवाय इसके कुल्ल मालिक के धाम का भेद मुक्त पद के परे सुनाया है। क्योंकि जब तक कि जीव अपने निज घर में जहां से कि वह आदि में आया है न पहुंचेगा, तब तक सच्चा सुखी नहीं होवेगा। इस धुर मुक़ाम का ज़िकर या भेद किसी मत में नहीं है। यह कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल ने, जीवों पर अति दया करके, इसी ज़माने में प्रघट

किया है। और जो रास्ता तै करने की जुगत राधास्वामी दयाल ने अब बताई है, उसका भी ज़िकर या भेद और मतों में नहीं है। इस सबब से सब मतों में बाहर की कार्रवाई जारी है, और अंतर का भेद बहुत कम बल्कि बिल्कुल नहीं है ॥

५—सब मतों का सिद्धान्त माया देश यानी संतों के तीसरे और दूसरे दरजे में ख़तम हो जाता है, इस सबब से उनमें जीव का सच्चा और पूरा उद्धार नहीं हो सक्ता ॥

६—संतों का सिद्धांत पद माया देश के पार यानी अव्वल दरजे में है। जोकि वहां माया और काल नहीं है, इस सबब से वहां कष्ट और कलेश और किसी क़िसम का दुक्ख और जनम मरन भी नहीं है। वहां पहुंचने पर सुरत को सच्चा और पूरा आनंद हमेशः का प्राप्त होता है ॥

७—उस अस्थान के पहुंचने का रास्ता घट में है, और आंख के मुक़ाम से जारी होता है। जिस धार पर कि सुरत उतरी है, उसी धार को पकड़ कर उलटेगी।

८—वह धार चेतन्य यानी जान और शब्द की धार है। चेतन्य यानी जान का ज़हूरा और निशान शब्द

यानी आवाज़ है, और शब्द की बराबर कोई रास्ता दिखाने वाला, और अंधेरे में रोशनी करने वाला नहीं है। इस वास्ते जो कोई शब्द की धुन को सुनता हुआ चलेगा, वही शब्द यानी चेतन्य की धार पर सवार होकर, और इधर से उलट कर निज घर में जा सक्ता है। और कोई तरकीब से यह रास्ता तै नहीं हो सक्ता ॥

९—कुल्ल मतों में शब्द की महिमां बर्णन करी है, और यह कि वही कुल्ल रचना की आदि और सब का करतार है। पर भेद मुक़ामों और हर एक मुक़ाम के शब्द का और जुगत उसके अभ्यास की किसी मत में साफ़ तौर पर नहीं बयान की है। इस सबब से शब्द का अभ्यास किसी मत में जारी नहीं है ॥

१०—जो किसी मत में थोड़ा बहुत अन्तर अभ्यास जारी भी है, तो वह उन धारों का है जिनका निकास और भी ख़तम होना माया देश में है, जैसे प्राण की धार रोशनी की धार वग़ैरः, और भी शब्द की धार जो कि काल के घर में जारी है ॥

११—इन धारों के अभ्यास से कोई जीव माया के देश के पार नहीं जा सक्ता, और इस वास्ते उसका पूरा उद्धार भी नहीं हो सक्ता। सिवाय इसके इन धारों

का अभ्यास ऐसा कठिन और ख़तरनाक है कि हर एक से बन्ना मुशकिल है, और ग्रहस्ती तो उसको बिलकुल नहीं कर सक्ते, क्योंकि संजम उसके बड़े सख़्त हैं ॥

१२–शब्द का अभ्यास बग़ैर रोकने प्राणों के बहुत आसानी के साथ बन सक्ता है, और चाहे ग्रहस्त होवे या विरक्त, मर्द होवे या औरत, जवान होवे या बूढ़ा, निहायत आराम और आसानी के साथ उसको कर सक्ते हैं। लेकिन शर्त यह है कि थोड़ा प्रेम यानी शौक़ कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के दर्शन का उनके मन में पैदा होवे ॥

१३—कोई काम दुनिया का बग़ैर शौक़ या प्रेम के नहीं बन सक्ता है, ऐसे ही परमार्थ की कार्रवाई भी बिला[1] सच्चे इरादे और प्रेम के दुरस्त नहीं बन सक्ती, यानी जब तक कि कोई मुहब्बत में भर कर कुछ मिहनत नहीं करेगा, तब तक रास्ता नहीं खुलेगा ॥

१४—मुहब्बत कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में चाहिये, और शौक़ उनके दर्शनों का मन में पैदा होना चाहिये ॥

१५–जब तक कि किसी के मन में किसी से मिलने

१ बिना।

का इरादा नहीं होता है, तब तक वह उसकी तरफ़ नहीं खिंचता और मिलना नहीं होता ॥

१६—जो कि कुल्ल मालिक का धाम ऊंचे से ऊंचा है, और सुरत और मन नीचे पिंड में ठहरे हुए हैं, इस वास्ते जब तक कि इनके अंतर में चाह, उस ऊंचे देश में चढ़कर पहुंचने की ज़बर पैदा न होगी, तब तक पिंड के अस्थान से सरकना मुमकिन नहीं है। और सच्ची जुगत चलने की भी मालूम होना चाहिये, और वह जुगत वही सुरत शब्द मारग का अभ्यास है ॥

१७—जिस क़दर कि मन और सुरत प्रेम अंग लेकर अभ्यास में लगेंगे, उसी क़दर रास्ता तै होता जावेगा, और थोड़ा बहुत रस मिलेगा, फिर शौक़ बढ़ेगा, इसी तरह आहिस्तः २ प्रेम और अभ्यास बढ़ते जावेंगे, और निर्मल भी होते जावेंगे ॥

१८–ऐसा अभ्यासी और प्रेमी शख़्स सतगुरु की दया से एक दिन धुर घर में पहुंच कर बिश्राम पावेगा और हमेशः को सुखी हो जावेगा ॥

१९–इस क़िसम के अभ्यास से जो संतों ने जारी फ़रमाया है, परमार्थी जीव को अपने प्रेम और अभ्यास की तरक़्क़ी का हाल जब तब मालूम होता जावेगा, और राधास्वामी दयाल की मेहर से रास्ता तै हो कर, एक दिन धुरधाम में बासा मिलेगा ॥

२०—सिवाय नेत्र के मुक़ाम के घट में सुरत शब्द मारग के वसीले से चलने के, और कोई जतन या रास्ता घर की तरफ़ जाने का नहीं है। इस वास्ते जो कोई और २ काम परमार्थी बाहर मुख कर रहे हैं, जिन का तअल्लुक़ सुरत की धार के आंख के मुक़ाम से सरकने और चलने का नहीं है, वे सिर्फ़ शुभ करम का फल दे सक्ते हैं, पर मुक्ती और सच्चे उद्धार की कार्रवाई जुदी है, और उस में वे बाहर मुखी काम कुछ मदद नहीं दे सक्ते ॥

२१—इस बात की तसदीक़ यानी जांच मरने के वक़्त की हालत सुरत के खिंचाव और पुतली के उलटाव के देखने से साफ़ हो सक्ती है, यानी उस वक़्त सुरत की धार अंदर और ऊंचे की तरफ़ को खिंचती है, और जो उस तरफ़ चलने का ज़िंदगी में कुछ अभ्यास नहीं बना है, तो अपने स्वभाव और बासना के मुवाफ़िक़, बारम्बार संसार और देह की तरफ़ सुरत झोके खाती है, और काल ज़बरदस्ती उसको ऊपर की तरफ़ खींचता है, और इस खैंचातानी में बहुत दुख और कलेश मरनेवाले को होता है, जैसा कि उसके चेहरे की हालत से, जो मरने पर बदल जाती है, ज़ाहर है ।।

२२—यह बात सब को अच्छी तरह से मामूल होनी

चाहिये, कि जब तक इस ज़िंदगी में घर की तरफ़ चलने का अभ्यास, राधास्वामी मत की जुगत के मुवाफ़िक़ अपने घट में कोई नहीं करेगा, तब तक उसका बचाव दुख और कलेश से वक़्त मौत के और भी बाद मरने के हरगिज़ नहीं होगा। और यह अभ्यास आजकल सिर्फ़ राधास्वामी संगत में जारी है, और वहीं से सच्चे परमार्थी को मिल सक्ता है ॥

बचन-६

परमार्थ की कार्रवाई इस देह और देश में बग़ैर मदद मन के नहीं हो सक्ती है, और यह चार तरह क़ाबू में आता है, (१) ख़ौफ़ (२) लालच (३) प्यार और (४) रीस और शरम से, और या सतगुरु के संग से जो सच्चा हो कर करे, और या सरन से जो सच्चे मन से पूरे गुरू और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल की लेवे, और जो कोई दुनिया

के हाल को देखकर आपही चेते वह उत्तम अधिकारी है ॥

१—यह देह और देश यानी दुनिया दोनों नाशमान हैं, और बहुत कम काम यहां ख़्वाहश के मुवाफ़िक़ बन्ते हैं, और सुख दुख भी यहां का तुच्छ और छिन भंगी है, चाहे जैसा सामान कोई जमा करे, पर जीव के संग कुछ नहीं जाता, सब यहां ही पड़ा रहता है ॥

२—समझवार आदमी ऐसी हालत दुनिया की देख कर, ज़रूर दरियाफ़्त और खोज करेगा कि इस रचना का करता कौन है और कहां हैं, और कोई परम सुख अस्थान भी है, जो सदा एक रस क़ायम रहे, और वह कहां है और कैसे मिले ॥

३—ऐसे खोजी को सिवाय संतों की बानी और बचन के और कहीं शान्ती नहीं आवेगी, और उन्हीं की संगत में उसको भेद कुल्ल मालिक और निज घर का, और उसका रास्ता अपने घट में, और तरीक़ा उस के तै करने का, मालूम पड़ेगा ॥

४—जब ऐसा खोजी संतों की संगत यानी कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के सतसंग में आवेगा, उसको स्वार्थ और परमार्थ यानी दुनिया और दीन दोनों का हाल मुफ़स्सिल, और उनकी क़दर और

क़ीमत मालूम पड़ेगी, और यह भी ख़बर पड़ेगी कि सिवाय सुरत शब्द मारग के, और कोई जुगत या तरीक़ा रास्ते को तै करके, निज घर यानी कुल्ल मालिक के धाम में पहुंचने का मुतलक़ नहीं है, और यह कि इस अभ्यास के साथ कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल की दया हर वक़्त शामिल है, और अभ्यासी की हर तरह से सम्हाल और रक्षा धुर से होती है ॥

५—बड़भागी वह जीव हैं जो सच्चे मन से अपने परमार्थ के बनाने के वास्ते, राधास्वामी संगत में दाख़िल होकर अभ्यास में लग गये हैं, और थोड़ा बहुत अंतर में रस लेते है, और दिन २ चरनों में राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु के प्रीत और प्रतीत बढ़ाते जाते हैं ॥

६—ऐसे परमार्थी जीवों को उत्तम अधिकारी कहते हैं। उनके मन में संसार की सख़्ती और सुस्ती और नाशमानता और ख़ौफ़नाक और सख़्त मुसीबत की कार्रवाई क़ुदरत की देखकर, आपही आप बिचार और दुनिया से बैराग, और कुल्ल मालिक के चरनों में अनुराग पैदा होता है। और संत सतगुरु का संग भी उनको जल्द प्राप्त होता है, और उनके बचनों के

मुवाफ़िक़ कार्रवाई भी, वेही अधिकारी जीव बहुत ख़ुशी और उमंग के साथ करते हैं, और उस में उनको थोड़ी बहुत कामयाबी भी जल्द होती जाती है ॥

७—दूसरी क़िसम के जीव वे हैं कि थोड़ी चाह परमार्थ की लेकर, मौज से संतों के सतसंग में शामिल होकर और बचन बानी को समझ कर, संतों और उनके प्रेमी भक्तों की दया और मदद लेकर, अपने मन और इंद्रियों की सफ़ाई और गढ़त जिस २ तरकीब से संत बतलावें करते हैं, और उनकी जुगती यानी सुरत शब्द मारग का अभ्यास करके, दिन २ उनके चरनों में प्रीत और प्रतीत बढ़ाते हैं, और परमार्थ की महिमा और क़द्र जानकर, उसकी प्राप्ती के लिये कोशिश करते हैं, और संसार और उस के सामान की तरफ़ से आहिस्ते २ हटते जाते हैं। इन जीवों पर भी संत सतगुरु दया फ़रमा कर, उन का परमार्थ आहिस्ते आहिस्ते बनाते हैं ॥

८—इन जीवों का मन संत सतगुरु और प्रेमी जन का संग करके, और उनकी रहनी बर्ताव देखकर थोड़ा बहुत क़ाबू में आता है, और उन्हीं के मुवाफ़िक़ आप भी कार्रवाई शुरू कर देता है। इस तरह स्वभाव और रहनी के बदलने में कुछ दिक़्क़त और तकलीफ़

नहीं होती, बल्कि ख़ुशी और उमंग के साथ संतों की रहनी के मुवाफ़िक़, हर कोई अपनी रहनी दुरुस्त करने को तइयार होता है। जो भाग से संग कोई दिन मिलता रहा, तो हालत जीव की बहुत बदलना मुमकिन है ॥

९—तीसरी क़िसम के जीव वे हैं जो किसी मतलब या दबाव से संतों के सतसंग में आ गये, और ब वजह ख़ौफ़ या लाचच या प्यार या मुहब्बत या दूसरों की रीस करके भक्ती के अंगों में बर्ताव करने लगे ॥

१०—हरचंद ख़ौफ़ और लालच और प्यार इन लोगों का संसारी मतलब और संसारी अंग लेकर पैदा हुआ था, पर कुछ अर्सह सतसंग में रहने और प्रेमी जन के साथ मेल और सेवा करने से उन पर दया हो गई, और वह अंग उनका परमार्थी हो गया, यानी परमार्थी ख़ौफ़ और परमार्थ के प्राप्ती की चाह और परमार्थी मुहब्बत दिल में पैदा हो गई। और उसके मुवाफ़िक़ सच्ची कार्रवाई सच्चे परमार्थ की जारी होगई, यानी उनके मन में परमार्थी भाव पैदा होगया ॥

११—इस क़िसम के जीवों को अपने परमार्थ के बनाने में दिक़्क़त और तकलीफ़ बहुत होती है, क्योंकि

शुरू में बहुत दिन तक उनकी कार्रवाई स्वार्थी होती है, और जब बचन सुन कर और प्रेमी जनकी मदद और संत सतगुरु की दया से उनका असली मतलब समझ कर, उनका संसारी अंग साथ परमार्थी ख़्वाहिश के बदलता है, तब से उनकी कार्रवाई निर्मल परमार्थी समझी जाती है, और उसका फल भी यानी निर्मल प्रेम कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में दया से मिलता जाता है, और जिस क़दर सच्चे परमार्थ और संत सतगुरु और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल की पहिचान होती जाती है, उसी क़दर प्रीत और प्रतीत चरनों में बढ़ती जाती है, और सरन दृढ़ होती जाती है, कि जिसके वसीले से सहज में उद्धार जीव का हो जाता है ॥

१२—ऊपर जो लिखा गया कि ख़ौफ़ और लालच और प्यार और रीस या शरम से जीव परमार्थ में शामिल होते हैं, सो इस का हाल यह है कि क्या स्वार्थ और क्या परमार्थ दोनों सूरत में यह अंग जीव से कार्रवाई शौक़ और मिहनत के साथ कराते हैं। और जब तक यह अंग न होवें यानी ख़ौफ़ और लालच वग़ैरः न दिखलाये जावें, और थोड़ी बहुत मुहब्बत और एक दूसरे के साथ रीस पैदा न

की जावे, तब तक जीव परमार्थ के सीधे रास्ते और सहज जुगत को क़बूल नहीं करते, यानी उनका मन सचौटी के संग बर्ताव नहीं करता ॥

१३—कोई दिन सतसंग और अंतर अभ्यास करके इन जीवों के मन में सच्चा ख़ौफ़ चौरासी और नरकों के दुक्खों का और जनम मरन के कष्ट और कलेश का पैदा होता है, और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और उनके धाम और शब्द की महिमां सुनकर, सच्ची चाह उनके दर्शन और अभ्यास के आनंद के प्राप्ती की उपजती है, और संत सतगुरु और प्रेमी जन से प्रीत दिन २ बढ़ती जाती है, और प्रेमी सत संगियों की अंतर और बाहर हालत देख कर, मन में सच्ची चाह या रीस उन के मुवाफ़िक़ कारवाई करने की पैदा होती है, इस तरह दिन २ मन की परमार्थी गढ़त होकर वह जीव संत सतगुरु की दया और मेहर का अधिकारी बनता जाता है ॥

१४—कुल्ल जीव चाहे किसी क़िसम के हों सरन के अधिकारी हैं, यानी बिना कुल्ल मालिक और सर्ब समर्थ राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु के सरन के किसी जीव का कारज नहीं बन सक्ता ॥

१५—उत्तम अधिकारी के मन में शुरू से ही प्रीत

और प्रतीत सतगुरु और सत्तपुर्ष राधास्वामी दयाल की पैदा होगी, और उस के साथ ही सरन भी दृढ़ होती जावेगी ॥

१६–दूसरे दरजे के अधिकारी जीवों को कोई दिन सतसंग करके, थोड़ी बहुत पहिचान संत सतगुरु की आवेगी, और महिमा कुल्ल मालिक सत्तपुर्ष राधास्वामी दयाल की चित में बसेगी, तब वह आहिस्ते २ सरन में आवेंगे, और प्रीत और प्रतीत चरनों में लावेंगे ॥

१७––बाक़ी जीवों को ख़ास कर ज़रूरत सरन की है, क्योंकि उनसे जैसा चाहिये मन की गढ़त और सफ़ाई जल्द नहीं हो सकेगी। इस वास्ते इधर अपनी कम लियाक़ती और निबलता और उधर मन और माया का ज़ोर और शोर देखकर, वास्ते अपने बचाव के समर्थ पुर्ष का दामन पकड़ना और उसकी ओट में आजाना बहुत ज़रूरी है, पर ऐसी सरन लेने के वास्ते भी कोई दिन सतसंग और अंतर अभ्यास दरकार है, और कुछ सहायता और रक्षा के परचे भी, कुल्ल मालिक और संत सतगुरु दयाल की तरफ़ से मिलने चाहियें, तब प्रतीत आवेगी, और सच्चे मन से सरन ली जावेगी।

१८––कुल्ल जीवों का सरन में गुज़ारा है, मगर इस का यह मतलब नहीं है, कि भरोसा दया का रखकर

किसी क़िस्म की कार्रवाई परमार्थ की न करें। बल्कि हर एक जीव को चाहिये कि जिस क़द्र बन सके सतसंग और अंतर अभ्यास करे और अपने मन और इन्द्रियों को जहां तक मुमकिन होवे रोकता और सम्हालता रहे। और संसारी पदार्थों और भोगों में ज़रूरी और मुनासिब तौर पर बर्ताव करे, तब दया आवेगी और उसका कारज सब तरह से दुरुस्त बनावेगी, और काल और करम और मन और माया के जाल से छुड़ा लेगी ॥

बचन--१०

चित्त की सम्हाल हर एक को करना ज़रूर है, यानी चित्त को समझ बूझ और जांच कर लगावे, तो बंधन और तकलीफ़ नहीं होगी। मुख्यता मालिक के चरनों में रक्खे जो हमेशा का संगी है, और गौन अंग से जीवों और पदार्थों में बर्ते, जिनका संग कारज मात्र या देह के साथ है, और हमेशः ठहर नहीं सक्ता ॥

१–मनुष्य का चित्त उसकी सुरत का सीस है। जिधर यह जाता है, उधर ही उसका आपा मुतवज्जह हो जाता है॥

२—जहां मनुष्य की प्रीत है वहीं उसके चित्त का बंधन है, और वहीं से जब २ प्यारे की हालत बदले दुख सुख का असर पहुंचता है॥

३—बंधनों की दो क़िस्में हैं–एक कारजमात्र यानी ज़रूरत के मुवाफ़िक़ थोड़े दिन का, दूसरा देह का संगी।

४—जो बंधन कारज मात्र हैं उनसे वक़्त ज़रूरत के काम लिया जाता है, और फिर कुछ मतलब नहीं। और जो बंधन देह के संगी हैं, उनके साथ रोज़मर्रह बर्ताव या ज़िंदगी भर रहता है॥

५–पहिला यानी थोड़ी देर का बंधन हलका है, और उस्से जल्दी छुटकारा हो सक्ता है, लेकिन दूसरा बंधन भारी और मज़बूत है, और इस्से छुटकारा किसी क़दर कठिन है॥

६—दुनिया के कुल्ल बंधन अपने २ मुवाफ़िक़ दुख सुख का असर पहुँचाते हैं। जो कोई इन बंधनों के असर से बचना चाहे, उस को चाहिये कि अपने चित्त को कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में, जो हमेशह एक रस क़ायम हैं, लगावे। और रास्ते का

भेद और चलने की जुगत संत सतगुरु अथवा राधा स्वामी संगत से दरियाफ़्त करके, उनके धाम की तरफ़ चलना शुरू करे, ताकि निर्बंध और निचिन्त होकर एक दिन परम आनंद और महा सुख को प्राप्त होवे।

७—दुनिया और उसके भोगों और पदार्थों में चित्त उसी क़द्र लगाना चाहिये कि जिस क़द्र उनसे कारज लेना या फ़ायदह उठाना मंज़ूर है, ज़्यादह बंधन में ज़्यादह दुख मिलने और हमेशह की गिरिफ़्तारी का ख़ौफ़ है ॥

८—कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में, जिस क़द्र जिस किसी का बंधन होगा, यानी जिस क़द्र जो कोई भाव और प्रीत करेगा, उसी क़द्र और बंधन उसके ढीले होते चले जावेंगे, और उनका असर भी कम व्यापेगा। और जिस क़द्र अभ्यास घट में वास्ते प्राप्ती दर्शन, और पहुंचने निज धाम के बढ़ता जावेगा, उसी क़द्र अंतर में रस और आनंद मिलता जावेगा, और शौक़ बढ़ता जावेगा ॥

९—जिस क़द्र यह शौक़ बढ़ेगा, उसी क़द्र चरनों में प्रीत और प्रतीत ज़्यादह होती जावेगी, और दुनिया और उसके सामान की तरफ़ से चित्त हटता जावेगा, यानी बंधन ढीले होते जावेंगे ॥

१०—आहिस्तह २ एक दिन गहरा आनंद चरनों में प्राप्त होगा, और उन्हीं के साथ सुरत का पूरा बंधन यानी प्रेम हो जावेगा, और बाक़ी के सब बंधन जो संसारी होंगे, ख़ारिज या ढीले हो जावेंगे ॥

११—अब मालूम करो कि चित्त का अटकाव दुनिया और उसके सामान और ख़ुद दुनियांदारों में दुख और क्लेश का पैदा करनेवाला है, और जब वही चित्त मालिक के चरनों में प्रेम के साथ लग जावे, तब कुल्ल दुखदाई बंधनों को आहिस्तह २ काट कर परम आनंद को प्राप्त कराता है ॥

१२—अब जो कोई अपने चित्त की सम्हाल रक्खे यानी उसको मुनासिब जगह से ज़रूरत के मुवाफ़िक़ लगावे, और बाक़ी तवज्जह अपनी कुल्ल मालिक के चरनों में रक्खे, तो उसको संसार का बंधन बहुत कम होगा और दुख सुख कम ब्यापेगा, और चरनों का आनंद दिन २ बढ़ता हुआ, एक दिन सब बंधनों से छुड़ाकर, चरनों में यानी धुरधाम में बासा देगा ॥

१३—कुल्ल जीव दुनिया में इस क़दर होशियारी से बर्त रहे हैं, कि ख़ास जगह ज़्यादह मुहब्बत, और बाक़ी जगह थोड़ी मुहब्बत या बिलकुल ज़ाहरी और ऊपरी प्यार से कार्रवाई कर रहे हैं, फिर परमार्थी

जीव भी जो चाहें और फ़ायदह उनकी समझ में आ जावे, तो संसार में थोड़ी या ज़ाहरी प्रीत के साथ, और मालिक के चरनों में अंतरी और गहरी प्रीत के साथ, बर्ताव कर सकें हैं, इसीका नाम गुरु मुखता है ॥

१४—जिस किसी को भाग से ऐसी दौलत यानी गुरु मुखता प्राप्त होवे, वही जीव महा बड़भागी और सब से ऊँचा और कुल्ल मालिक का महा प्यारा है। उसके वसीले से बहुत से जीव तर सकें हैं ॥

१५—दुनिया में देखने में आता है, कि लोग राजा और महाराजा और अमीरों के साथ बेमतलब और बेसबब प्यार और सेवा करने को तइयार रहते हैं, और जब २ मौक़ा मिलता है, तब अपनी मुहब्बत को ज़ाहर करते हैं, और सेवा करके बहुत खुश होते हैं ॥

१६—अब ख़्याल करो कि कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु के चरनों में, जो उनके निज प्यारे पुत्र और मुसाहब हैं, किस क़द्र मुहब्बत और सेवा करना फ़र्ज़ और लाज़िम है ॥

१७—इस मुहब्बत के वसीले से जीव का सच्चा कल्यान, यानी पूरा उद्धार होना मुमकिन है, और जब

से कि चरनों से लगे, तब से घट में रस और आनंद मिलना शुरू हो जाता है ॥

१८–और दुनिया के राजों और अमीरों से मुहब्बत करने से, चाहे दुनिया का कोई ख़ास काम बन जावे, लेकिन परमार्थी फ़ायदह किनका भर भी हासिल नहीं हो सक्ता, बल्कि जो फ़ायदह हासिल होता हो, उस में नुक़सान आनेका ख़ौफ़ है ॥

१९—हर एक जीव अपने दुनियावी और परमार्थी फ़ायदह की जांच कर सक्ता है, और यह भी ख़ूब समझता है, कि कहां और किस क़दर मुहब्बत सचौटी के साथ करनी चाहिये ॥

२०–इस वास्ते परमार्थी जीवों को कहा जाता है कि अपने जीव का सच्चा फ़ायदह यानी उद्धार ख़्याल में रख कर, जिस क़दर बन सके गहरी प्रीत कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु के चरनों में करें। गहरी प्रीत से मतलब यह है, बनिसबत और सब संसारी प्रीतों के यह परमार्थी प्रीत कुल्ल मालिक और संत सतगुरु के चरनों में किसी क़दर ज़ादह होवे ताकि गुरुमुखता का दरजा हासिल हो जावे ॥

२१—राधास्वामी मत में छोड़ना घर बार या रोज़गार

का ज़रूर नहीं है, जैसे ग्रहस्ती अपने स्त्री पुत्र धन माल से गहरी प्रीत और बंधन रखता है, और नज़दीक और दूरके रिश्तेदार और बिरादरी और बहुत से लोगों से भी प्रीत करता है, और ब्योहार का बर्ताव रखता है, पर इनमें से कोई भी उस के ग्रहस्त आश्रम की कारवाई में हर्ज या बिघ्न नहीं डालते। इसी तरह परमार्थी जीव सतसंग करके पूरी समझ बूझ लेकर कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु के चरनों में विशेष, और बाक़ी सब के साथ दरजे बदरजे कम यानी समान प्रीत, बग़ैर डालने किसी क़िस्म के हर्ज या विघ्न के अपने परमार्थ में कर सक्ता है, और थोड़ी होशियारी के साथ दोनों काम यानी ग्रहस्त और भक्ती अच्छी तरह से अंजाम दे सक्ता है॥

२२—जो जीव कि निदान और बेख़बर हैं यानी सतसंग और कुल्ल मालिक सत्तपुर्ष राधास्वामी दयाल की महिमा नहीं जानते, और दुनिया को धोखे का अस्थान नहीं समझते, वे संसार और कुटम्ब परिवार और संसार के भोगों और पदार्थों में, सर्व अंग करके अपना चित्त लगाते हैं, और उन्हीं को अपने सुख का सबब और वसीला मानते हैं। इस सबब

७—बिना मौज और आज्ञा राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु के कोई नया काम या नई बात के कहीं जारी करने का इरादा न करे ॥

८—किसी क़िस्म या किसी देश के जीवों पर वास्ते मान्ने किसी बात के किसी किस्म का दबाव न डाले और जीवों की दया हमेशह पेश नज़र रहे ॥

९—जो थोड़ी बातें सफ़ाई की ऊपर लिखी गई हैं सिर्फ़ उनके ही मुवाफ़िक़ करनी और रहनी नहीं बल्कि कुल्ल बर्ताव में अंतर और बाहर ऐसी ही सफ़ाई और रहनी दरकार है, तब क़ाबिल चढ़ाई ऊंचे देश के और खुलने अंतर दृष्टि के समझा जावे ॥

१०—यह हालत आहिस्तह २ सतसंग और अंतर अभ्यास से आवेगी, और जिस क़दर कि उसके साथ नशा पैदा होगा, वह भी हज़म होता जावेगा ॥

११—संत सतगुरु अपनी दया से हर एक सच्चे परमार्थी की सुरत को, गौन अंग से नित्त चढ़ाते जाते हैं। मुख्य अंग से इस वास्ते नहीं चढ़ाते कि फिर अभ्यासी से दूसरा काम यानी संसारी कार नहीं बनेगा, और न दुनिया के लोगों से मिलाप या मुवाफ़क़त बन सकेगी, बल्कि अपनी देह की भी ख़बरगीरी, जैसा चाहिये, नहीं कर सकेगा ॥

१२—निशान गौन अंग से चढ़ाई मन और सुरत का यह है, कि अभ्यासी की चाह और पकड़ संसारी पदार्थों में, और संसारी ब्यौहारों में, हलकी और ढीली होती जावेगी, और राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु के चरनों में और भी सतसंग और अंतर अभ्यास में प्रीत और प्रतीत आहिस्तह २ बढ़ती जावेगी ॥

१३—फिर जो किसी को मुख्य अंग से पेश्तर सफ़ाई से चढ़ाया भी जावे, तो उसको कुछ फ़ायदह नहीं होगा, क्योंकि वह शख़्स फिर देह में कम उतरेगा और इसकी कार्रवाई बहुत कम और बेतरतीब करेगा ॥

१४—इस वास्ते लाज़िम यह है कि संत सतगुरु जो कुल्ल रचना के हाल से बख़ूबी वाक़िफ़ हैं, जैसे चढ़ाना जीव का मुनासिब समझें, उसी मुवाफ़िक़ कार्रवाई करना चाहिये, और उसी को दुरुस्त समझना चाहिये। और जब अभ्यास करके पूरी सफ़ाई मन और इन्द्रियों की हो जावेगी, और दृष्टि में ताक़त दर्शनों की, और हिरदे में ताक़त हाज़मह और बरदाश्त गहरे नशे और आनंद की, हासिल हो जावेगी, तब वे दया करके आप उस जीव की सुरत को मुख्य अंगके साथ चढ़ावेंगे, और आंख भी खोल देंगे। उस वक़्त ऊंचे

देश की कैफ़ियत और दर्शनों का आनंद और बिलास देख कर चित्त बहुत मगन होगा, और अपने भागों को सराहेगा, और सच्चा शुकराना बजा लावेगा ॥

१५—इस बख़्शिश का नाम पूरन दया है। जिस जीव पर ऐसी दया होवे वही बड़भागी है, पर कुल्ल सतसंगियों को जो सच्चे मन से परमार्थ में लगे हैं, उम्मेदवार रहना चाहिये कि इस हालत और इस दरजे की बख़्शिश उन पर भी एक दिन ज़रूर होगी। इस वास्ते धीरज धरकर और दया का भरोसा पूरा रख कर, अपना अभ्यास नेम और प्रेम के साथ रोज़मर्रह करे जावें और दिन २ दया और मेहर की परख करते जावें ॥

१६—जो कोई जल्दी और शिताबज़दगी यानी उचलाचाल मचावेंगे, तो उनको नाहक़ तकलीफ़ और निरासता पैदा होगी, और दूसरों की हालत को देख कर, बिला समझने उनके अधिकार के ईर्षा और जलन पैदा होगी, और कुल्ल मालिक और संत सतगुरु के चरनों में किसी क़दर अभाव आजावेगा, कि जिसके सबब से अभ्यास रोज़ बरोज ढीला और तरक़्क़ी बंद हो जावेगी, और फिर दया और मेहर भी उसी क़दर कम होती जावेगी, और अचरज नहीं कि पूरे उद्धार के होने में कई जनम का फेर पड़ जावे ॥

बचन–१२

जो कोई अपना सच्चा उद्धार चाहता है उसको चाहिये कि नीचे की लिखी हुई बातों की निरनै करके प्रतीत करे और उसी मुवाफ़िक़ चरनों में प्रीत लाकर करनी करे ॥

१—इन सात बातों की हर एक परमार्थी को निरनै करके प्रतीत करना ज़रूर और मुनासिब है ॥

(१) पहिले यह कि राधास्वामी दयाल कुल्ल मालिक और सर्वसमर्थ हैं ॥

(२) दूसरे यह कि जीव कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल की अंस है ॥

(३) तीसरे यह कि राधास्वामी धाम सब का निज घर है, और आदि में वहीं से शब्द की धार प्रघट हुई, और नीचे उतर कर ठेके २ पर मंडल बांध कर रचना करती आई ॥

(४) चौथे यह देश माया और काल पुर्ष का है, जहां हमेशह अदलबदल होता रहता है, और कोई चीज़ एक हालत पर हमेशह क़ायम नहीं रहती । इस

वास्ते इस जगह रहने की आसा बांधना, और इसको अपना वतन समझना, नहीं चाहिये ॥

(५) पांचवें राधास्वामी धाम के बासी और भेदी की ज़रूरत, वास्ते बताने रास्ते और जुगत चलने के सच्चे परमार्थी को, जो सच्चे मालिक के चरनों में पहुंचना चाहे, और इनको संत सतगुरु कहते हैं ॥

(६) छठे संत सतगुरु और उनके प्रेमी सेवकों के संग की ज़रूरत, वास्ते मिलने मदद अंतरी और बाहरी सच्चे परमार्थी को अभ्यास की हालत में ॥

(७) सातवें यह कि बिना अभ्यास सुरत शब्द मारग के, सच्चा उद्धार किसी सूरत में मुमकिन नहीं है, क्योंकि सुरत शब्द की धार के संग उतरी है, और उसी धार के संग उलट सक्ती है। और धारें माया देश से निकली हैं और वहीं ख़तम हो जाती हैं ॥

२—और सच्चे परमार्थी को इन चार बातों की भी पूरी समझ लेकर कार्रवाई करना मुनासिब है ॥

(१) पहिले यह कि जब तक संत सतगुरु की, सतसंग करके थोड़ी बहुत पहिचान न आवे, तबतक उनको अपने से बड़ा और रास्ते में पेशरो यानी आगे चलनेवाला मान कर, प्रीत और दीनता के साथ उनका सतसंग करे और बचन माने ॥

(२) दूसरे सुरत का बहाव मन और इन्द्रियों के द्वारे संसार के भोगों और पदार्थों में जारी रहता है, सो मुनासिब है कि उसका फ़ज़ूल ख़र्च न होने दे, यानी बेज़रूरत और बेफ़ायदह सुरत की धार को इन्द्रियों द्वारे बाहर की तरफ़ फैलने से रोकता रहे ॥

(३) तीसरे मन का ख़मीर संसारी मसाले का है, सो सच्चे परमार्थी को अहतियात और होशियारी रखना चाहिये, कि मन में फ़ज़ूल ख़्वाहशें संसारी तरक़्क़ी और इन्द्रियों के भोग बिलास की न उठें, और जो ऐसी तरंगें पैदा होवें, तो उनको रोकता रहे ॥

(४) चौथे सच्चे मालिक राधास्वामी दयाल बेपर-वाह हैं, वे किसी से कुछ नहीं चाहते, पर जो जीव उनका दर्शन उनके निज धाम में पहुंच कर करना चाहे, उसको लाज़िम और मुनासिब है, कि उन के चरनों में सच्ची दीनता यानी ग़रज़मंदी और सच्ची लगन यानी सच्चा प्रेम लावे, तब रास्ता सहज में तै होगा, यानी अभ्यास रसीला बन पड़ेगा, और चाल आहिस्ते २ बढ़ती जावेगी ॥

३—वास्ते दुरुस्ती से समझने उन सात बातों के जिनकी निरनय करके जीवों का प्रतीत करना चाहिये, थोड़ा बयान हर एक बात का जुदा २ लिखा जाता है ॥

४–(१) पहिले यह कि राधास्वामी दयाल कुल्ल मालिक और सर्बसमर्थ हैं ॥

सब जीव इस बात के क़ायल हैं कि कोई कुल्ल मालिक इस रचना का ज़रूर है, और वह सर्बसमर्थ है, लेकिन वास्ते दूर करने शक और संदेह किसी क़िस्म के यहां बयान किया जाता है, कि जैसे इस लोक की रचना सूरज की धार के आसरे है, ऐसे ही यह सूरज दूसरे सूरज का आधीन है, और वह सूरज तीसरे का, और वह सूरज सत्तनाम, सत्तपुर्ष का, और सत्तनामरूपी सूरज कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के आधीन है। राधास्वामी पद अनंत और अपार है यानी उसके परे और कोई पद नहीं है।

५–(२) दूसरे यह कि यह जीव कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल की अंस है ॥

इसका सबूत भी ज़ाहर है। ज़रा ग़ौर करने से मालूम होगा, कि कुल्ल रचना इस लोक की और इसी तरह से कुल्ल लोकों की सुरतों यानी रूहों की की हुई है, और उन्हीं के आसरे ठहरी हुई है। और जब वे पिंड को छोड़ देती हैं, उस वक़्त पिंड यानी देह का अभाव हो जाता है, जैसे बीज से दरख़्त पैदा होता है, ऐसे ही मनुष्य के बीर्य से मनुष्य और यही हाल सब ज़ानदारों

का है हर एक जिस्म में एक २ रूह बैठ कर कार्रवाई उसकी करती है, और कुल्ल शक्तियां क़ुदरत और माया की, सुरत यानी जीव के हुकम के मुवाफ़िक़ आपस में रलमिल कर कार्रवाई पालन पोषन वग़ैरः उस देह की करती हैं। और जब कोई सुरत देह को छोड़ देती है, उस वक़्त वही शक्तियां आपस में लड़भिड़ कर उस देह को बिगाड़ देती हैं, यानी उसका अभाव हो जाता है। इस्से साबित है कि सुरत चेतन्य की शक्ती से सब रचना हो रही है, और उसी की ताक़त से ठहरी हुई है, और उसी के बियोग से उसका अभाव हो जाता है। और यह सुरत चैतन्य कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल की अंस यानी किरन या बूंद है॥

६-(३) तीसरे यह कि राधास्वामी धाम सब का निज घर है, और आदि में वहीं से शब्द की धार प्रघट हुई, और नीचे उतर कर ठेके २ पर मंडल बांध कर रचना करती आई॥

कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल का अस्थान आदि धाम कहलाता है। वहीं से आदि धार सुरत और शब्द की निकली, और उसी धार ने कुल्ल रचना दरजे बदरजे करी। जैसे दरख़्त के बीज में से जो कुला

यानी आदि धार प्रघट होती है, वही कुल्ल दरख़्त की करतार है, और उसी धार की मार्फ़त दरख़्त की रूह यानी अर्क़ सब जगह नसों में होकर पहुंचता है। इसी तरह मनुष्य और कुल्ल जानदारों की रचना का हाल, और उस के ठहराव और सम्हाल और सुरत के बियोग में अभाव की कैफ़ीयत, समझ लेना चाहिये। यानी वही आदि धार जो कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों से निकली, वही सब मंडलों और अस्थानों की करतार है, और वही शब्द और नूर और अमृत और जान और चेतन्य की धार है॥

७—(४) चौथे यह देश माया और काल पुर्ष का है जहां हमेशह अदल बदल होता रहता है, और कोई चीज़ एक हालत पर हमेशह क़ायम नहीं रहती। इस वास्ते इस जगह रहने की आसा बांधना और इस को अपना वतन समझना नहीं चाहिये॥

यह हाल तग़इयुर और तबद्दुल और नाशमानता इस लोक और उसकी रचना का साफ़ इन आंखों से दिखलाई देता है। फिर समझवार आदमी को मुनासिब और लाज़िम है, कि अपने वतन यानी निज घर का जो राधास्वामी धाम है, पता और भेद

लेकर उस तरफ़ को चलना शुरू करे, और इस दुनिया को अपना वतन या हमेशः ठहरने का अस्थान न समझे, नहीं तो धोखा खावेगा। क्योंकि मौत सब के सिर पर गाज रही है, और एक दिन यह देह और देश और इसका सब सामान और कुटुम्ब परवार वग़ैरः ज़रूर छोड़ना पड़ेगा॥

८—(५) पांचवें राधास्वामी धाम के बासी और भेदी की ज़रूरत, वास्ते बताने रास्ते और जुगत चलने के, सच्चे परमार्थी को जो सच्चे मालिक के चरनों में पहुंचना चाहे—और इन को संत सतगुरु कहते हैं॥

ज़ाहर है कि कोई काम या इल्म दुनिया का बग़ैर सिखाये उस्ताद् के नहीं आता है, फ़िर सच्चा परमार्थ जो अंतर के अंतर गुप्त है, और जिस की चाल शुरू से घट में चलती है, बग़ैर समझाये और बुझाये संत सतगुरु और उन की दया और मेहर के कैसे हासिल हो सक्ता है। यह सच्चा मत जिस को राधास्वामी पंथ कहते हैं, कोई बाहर मुखी करतूत या बानी पढ़ने और पढ़ाने का काम नहीं है। पहिली चाल इस की मन और सुरत का घट में समेटना है, और दूसरी चाल मन और सुरत का निज धाम की तरफ़ चढ़ाना है। फिर सिर्फ़ बिद्यावान लोग इस मत की कारवाई

और महिमा और बड़ाई को क्या समझ सकें हैं। यह लोग तो पोथी पढ़ना और पढ़ाना और उसके मतलब को बतौर लेक्चर के लोगों को सुनाना परमार्थ समझ रहे हैं, और इतनी बात बिद्यावान गुरू से हासिल हो सकती है। फिर संत सतगुरु की महिमा को जो कि रूह की धार पर सवार होकर कुल्ल मालिक के धाम में आते जाते हैं, क्या समझ सकें हैं। सच्च तो यह है कि सिवाय संत या साध या सच्चे प्रेमी के, जोकि सच्चा खोज और दर्द परमार्थ का दिल में रखता है, और किसी की ताक़त नहीं कि संत सतगुरु की कुछ भी पहिचान करसके या उन की बड़ाई समझ सके; इस सबब से तमाम दुनिया के जीव निगुरे हैं। और जो कोई रसम और टेक के बमूजिब बंसीवली या बिद्यावान या भेषी या पंडित को गुरू मान रहे हैं, ऐसे गुरू आप निगुरे हैं, और सच्चे गुरू की महिमा से बेख़बर। इसी सबब से इन जीवों को कुछ फ़ायदह सच्चे परमार्थ का हासिल नहीं होता, और न उन के हिरदे पर सच्चे मालिक और संत सतगुरु के प्रेम का रंग चढ़ता है। सच्च तो यह है कि बिना संत सतगुरु के किसी जीव का, चाहे किसी मत में होवे, सच्चा उद्धार होना मुमकिन नहीं है ॥

६-(६) छठे संत सतगुरु और उनके प्रेमी सेवकों के सत संग की ज़रूरत, वास्ते मिलने मदद् अंतरी और बाहरी सच्चे परमार्थी को अभ्यास की हालत में ॥

जैसे संत सतगुरु की ज़रूरत, वास्ते हासिल करने उपदेश और दया के है, ऐसीही ज़रूरत संत सतगुरु और उनके प्रेमीजन के सतसंग की है। बग़ैर सतसंग के मत की समझ बूझ नहीं आती है, और न दुनिया और उसके सामान की हक़ीक़त मालूम पड़ती है, और न परमार्थ और उसके फ़ायदे की क़द्र और महिमा समझ में आती है, और न संसारी स्वभाव बदलते हैं, और न भक्ती की रीत की ख़बर पड़ती है, और न उस के मुवाफ़िक़ बर्तावा बर्त सक्ता है, और न अभ्यास दुरुस्ती और आसानी के साथ बन सक्ता है, और न प्रीत और प्रतीत की जल्द तरक़्क़ी हो सक्ती है। खुलासह यह कि बग़ैर संत सतगुरु और प्रेमीजन के संग के, प्रेम का रंग जैसा चाहिये नहीं चढ़ सक्ता, और न संत सतगुरु की पहिचान जिस तरह आनी चाहिये हो सक्ती है, और न उनकी सेवा जैसी चाहिये बन सक्ती है, और फिर उनकी मेहर भी जिस क़दर दरकार है कैसे हासिल हो सक्ती है ॥

१०-(७) सातवें यह कि बिना अभ्यास सुरत सब्द मारग के सच्चा उद्धार किसी सूरत में मुमकिन नहीं है, क्योंकि सुरत शब्द की धार के संग उतरी है, और उसी धार के संग उलट सक्ती है। और धारें माया देश से निकली हैं और वहीं ख़तम हो जाती हैं॥

शब्द की धार से मतलब चेतन्य की धार से है। कुल्ल कार्रवाई रचना वग़ैरः की इसी धार से हुई और हो रही है। इस वास्ते जब तक कि यह धार उलट कर, अपने भंडार यानी कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में न पहुंचेगी, तब तक घट की पिंडी और ब्रह्मान्डी रचना का कारख़ाना बदस्तूर जारी रहेगा, घट बदलते रहेंगे। पर सुरत की धार जब तक भेद पाकर और जुगत समझ कर अभ्यास करके यानी शब्द को सुनती हुई उलटेगी नहीं, तब तक उसका बंधन ब्रह्मान्डी और पिंडी देशों में रहा आवेगा। इस वास्ते कुल्ल जीवों को जो देह धारन करने और उसके संग दुख सुख और जनम मरन के कष्ट और कलेश से बचना चाहते हैं, सुरत शब्द का अभ्यास करना जरूर और लाज़िम है। क्योंकि सिवाय इसके दूसरा रास्ता और तरीक़ा सुरत रूह के चढ़ाने का माया देश के पार, और पहुंचाना उसका राधास्वामी धाम में,

रचा नहीं गया। जो कोई इस अभ्यास को नहीं करेंगे, वह माया के घेर में नीच ऊंच जोनों में भरमते और दुख सुख और जनम मरन का कलेश सहते रहेंगे ॥

११—अब उन चार बातों का ज़िकर किया जाता है, जो सच्चे परमार्थी को अच्छी तरह से समझ कर भक्ति भाव में बर्तना चाहिये ॥

१२—(१) पहिले यह कि जब तक संत सतगुरु की सतसंग करके थोड़ी बहुत पहिचान न आवे, तब तक उनको अपने से बड़ा और रास्ते में पेशरो यानी आगे चलने वाला मानकर, प्रीत और दीनता के साथ उनका सतसंग करे और बचन माने ॥

गुरु भक्ती के बयान में सब मतों में ख़ासकर संत मत में हुकम है, कि सच्चा और पूरा गुरू खोजकर धारन करें, और उनको परमेश्वर और सत्तपुर्ष की समान मानें। मतलब इस्से यह कि जब इस क़द्र बड़ाई उनकी सेवक के चित्त में समावेगी, तब उनका बचन माना जावेगा, और भाव और प्यार बिशेष उनके चरनों में आवेगा, और सेवा तन मन धन की बन आवेगी, जैसा कि इन कड़ियों में लिखा है ॥

कड़ी

सेवा कर तन मन धन अरपे ॥ सत्तपुर्ष सम सतगुरु थरपे

श्लोक

गुरु ब्रह्मा गुरु बिष्णू गुरु देवो महेश्वरः ॥
गुरु रेव परं ब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः ॥

शेर

चूंकि करदी ज़ात मुर्शद रा क़बूल ।
हम ख़ुदा दर ज़ातश आमद हम रसूल ॥ १ ॥
मसजिदे हस्त अंदरूने औलिया ।
सिज्दहगाहे जुमलह हस्त आंजा ख़ुदा ॥ २ ॥
इन्ना तम्मुल फ़क़्र फ़हो अल्लाहू ॥
ब्रह्मवित् ब्रह्मैव भवती ॥

और ईसाई लोग भी पोप साहिब को कमोबेश ऐसा ही बड़ा मानते हैं ॥

ज़बान से कहना और लिखे हुए को पढ़ना और उसके मुवाफ़िक़ तक़रीर करना और बात है, और सच्चे मन से यक़ीन करना इस बात का, कि सतगुरू परमेश्वर और सत्तपुर्ष हैं, और फिर इस समझ के मुवाफ़िक़ उनके चरनों में भक्ती और सेवा करना और बात है, यानी हर वक़्त और हर हालत और हर सूरत में ऐसे यक़ीन का क़ायम रहना बहुत मुशकिल है। अलबत्तह जब अन्तर और बाहर बारम्बार परचे मिलेंगे, तब यह यक़ीन पकता जावेगा, और जिस

क़दर ज़्यादः सतसंग मिलता जावेगा उसी क़दर ऐसे यक़ीन की धारना बढ़ती और मज़बूत होती जावेगी ॥

रू में आम परमार्थियों को मुनासिब है, कि ने और सब से बड़ा और पर-मार्थ के परा जानकार और रास्ते में अ नता के साथ उन का र कर बचन मालिक

वक़्त उनके अंतर में शान्ती और सीतलता प्राप्त होती है, कि जिस्से वे फ़ौरन पहिचान सतगुरु की कर लेते हैं, कि इनकी दया और मदद से हमारा कारज बनेगा। यह पहिचान पहिले ही दिन आ जाती है, और इसके मुवाफ़िक़ वे भक्ती में लग जाते हैं, और दिन २ प्रीत और प्रतीत चरनों में बढ़ाते जाते हैं ॥

सिवाय इसके जिस पर सतगुरु दयाल होवें थोड़ी पहिचान अपनी मेहर और दया से फ़ौरन जैसे कि जीव दर्शनों को आया बख़्श देते हैं, और अपने चरनों की प्रीत और प्रतीत उसके हिरदे में बसादेते हैं, कि वह आइंदः सतसंग और अभ्यास करके दिन २ बढ़ती जाती है ॥

१३-(२) दूसरे सुरत का बहाव मन और इंद्रियों के द्वारे संसार के भोगों और पदार्थों में जारी है, सो मुनासिब है कि उनका

है, वह ज़रूर बिघन कारक समझनी चाहिये। लेकिन जो कि जीवों का अहार इसी देश के मसाले का बना हुआ है, इस वास्ते उसके खुलासे का भी जो मन इंद्री और देह को ताक़त पहुंचाता है असली झुकाव बाहर की तरफ़ है। इस सबब से सुरत और मन की धार को बाहर और नीचे की तरफ़ से बिल्कुल रोकना मुनासिब नहीं है, यानी जिस क़दर कि वास्ते कार्रवाई रोज़गार और ग्रहस्त के कारोबार के, सुरत और मन की धार का बाहर की तरफ़ मुतवज्जह होना ज़रूर है, वह बदस्तूर जारी रखना चाहिये। ताकि जिस क़दर मसाला बाहर मुखी अंतर में अहार करने से जमा हुआ है, वह धारों के वसीले से निकल जावे, और जो खुलासः का खुलासः क़ाबिल चढ़ने कुछ दूर तक ऊंचे देश की तरफ़ के है ठहरा रहे। इस वास्ते प्रेमी अभ्यासी जीवों को लाज़िम है, कि फ़ज़ूल बहाव अपने मन और सुरत का बाहर की तरफ़ रोकते रहें। और जिस क़दर कि अभ्यास ज़्यादः, और ब्योहार और रोज़गार का काम कम होता जावे, उसी क़दर अहार भी कम करते जावें, और उसी मुवाफ़िक़ बाहर मुख संसारी कार्रवाई भी हलकी होती जावेगी, यानी सुरत और मन की धार का बहाव बाहर की तरफ़ कम होता जावेगा॥

अभ्यास के वक़्त ख़ास कर इस बात का ख़्याल रखना चाहिये, कि जो गुनावन संसारी या परमार्थी बाहर मुख कार्रवाई की उठेगी और इस क़िसम के ख़्याल और तरंग पैदा होंगी, तो वह मन और सुरत की चढ़ाई में ख़लल डालेंगी, यानी धार का रूप बंधने न देंगी, और न उसको ऊपर की तरफ़ सिमटने और चढ़ने देंगी, फिर अभ्यास का रस कैसे आवेगा, और आइंदः को शौक़ कैसे बढ़ैगा। इस वास्ते मन और सुरत की धार को बाहर की तरफ़ झुकाव और बहाव से रोकना निहायत ज़रूर और लाज़िम है ॥

१४—(३) तीसरे मन का ख़मीर संसारी मसाले का है, सो सच्चे परमार्थी को अहतियात और होशियारी रखना चाहिये, कि मन में फ़ज़ूल ख़्वाहशें संसारी तरक़्क़ी और इन्द्रियों के भोग बिलास की न उठें, और जो ऐसी तरंगें पैदा होवें, तो उनको रोकता रहे ॥

मालूम होवे कि अलावह मन के ख़मीर के संसारी होने के, वह जन्मान जनम और हाल के जनम में साल-हासाल से संसारियों का संग करके संसारी भोग बिलास और मान बड़ाई और तरक़्क़ी धन और माल और हकू-मत और कुटम्ब परवार की चाह उठाता चला आया है और उसी निमित्त करम करता रहा है। यहां तक कि कुल्ल

वक़्त अपना इसी क़िस्म की कार्रवाई और ऐसे ही लोगों के संग सोहबत में ख़र्च करता रहा है, फिर यकायक इसका रुख़ और स्वभाव बदलना, बग़ैर दया संत सतगुरु और उनके और प्रेमी जन के संग के मुमकिन नहीं है। कोई दिन बाहर का सतसंग और अंतर में अभ्यास करके इस क़दर ताक़त आ जावेगी, कि अपने मन की निगरानी और सम्हाल कर सकैगा, यानी मन में फ़ज़ूल और नामुनासिब तरंगों की हिलोर उठतेही उसको परख कर रोक संकैगा ॥

यह मन बड़ा ज़बरदस्त है और किसी के क़ाबू में नहीं आ सक्ता है, सिर्फ़ संत सतगुरु ने इसको जीता है, उनकी दया से उनके प्रेमी सेवक भी इसको किसी क़दर क़ाबू में ला सक्ते हैं, यानी इस्से परमार्थी कार्रवाई दुरुस्ती से ले सक्ते हैं। और बाक़ी रचना के सिर पर मन और माया सवार हैं, और जैसा चाहते हैं उस मुवाफ़िक़ उस रचना में कार्रवाई कराते हैं ॥

हर एक सच्चे परमार्थी को अपने मन की चौकीदारी या निगरानी करना ज़रूर है, और जब तक कि दसवें द्वार तक न पहुंचे, तब तक उसकी तरफ़ से बिल्कुल निःचिन्त और निर्भय होना नहीं चाहिये और कुल्ल कार्रवाई उसके रोकने और क़ाबू में लाने

की, संत सतगुरु और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल की दया का आसरा और बल लेकर, मज़बूती के साथ करनी चाहिये, यानी ढीले होना या घबराना नहीं चाहिये ॥

१५–(४) चौथे सच्चे मालिक राधास्वामी दयाल बे परवाह हैं, वे किसी से कुछ नहीं चाहते पर जो जीव उनका दर्शन (उनके निज धाम में पहुंच कर) करना चाहे, उसको लाज़िम और मुनासिब है कि उनके चरनों में सच्ची दीनता यानी ग़र्ज़मंदी और सच्ची लगन यानी सच्चा प्रेम लावे, तब रास्ता सहज में तै होगा यानी अभ्यास रसीला बन पड़ेगा, और चाल आहिस्ते २ बढ़ती जावेगी ॥

जो कोई सच्चा परमार्थी है उसके हिरदे में ज़रूर सच्ची दीनता और सच्चा प्रेम, कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु के चरनों में पैदा होगा, पर दीनता और प्रेम में दरजे हैं, सो सतसंग और अभ्यास करके दिन २ तै होते जावेंगे ॥

सच्ची दीनता यानी ग़र्ज़मंदी का स्वरूप यह है–(१) जैसे बीमार को साथ हकीम या डाक्टर के, (२) और निरधन को साथ धनवान के, (३) और नौकरी या ख़िदमत के चाहनेवाले को साथ राजा और हाकिम

के; और सच्ची और ज़बर लगन का स्वरूप यह है– (१) जैसे माता को पुत्र प्यारा है, (२) और कामी को कामिन प्यारी है, (३) और मछली को पानी, (४) और पपिहा को स्वांति की बूंदें ॥

१६–अब थोड़ा सा बयान उन दृष्टान्तों का जो सच्ची दीनता की बाबत ऊपर दिये हैं लिखा जाता है ॥

(१) पहिला बीमार आदमी डाक्टर और हकीम का मुहताज है, और उसको सच्ची ग़र्ज़मंदी हकीम और डाक्टर के साथ होती है। इसी तरह कुल्ल जीवों का मन बीमार है, यानी संसार के भोगों में फंसा और ग्रसा हुआ है, जो उसके बिकार दूर न किये जावेंगे, तो उसकी देह बिगड़ती चली जावेगी, यानी नीचे की जोनों में उतरता चला जावेगा। अब परमार्थ में संत सतगुरु हकीम और डाक्टर हैं और वे मन बीमार का इलाज ख़ूब कर सक्ते हैं कि जिस से यह मन भोगों और संसार की तरफ़ से हट कर अपने निज घर में जो त्रिकुटी का अस्थान है पहुंच कर तीन लोक का राज पावे और सुखी हो जावे। दवा उसकी बीमारी के दूर करने की बाहर से सतसंग सतगुरु और प्रेमीजन का, और अंतर में अभ्यास सुरत शब्द मारग का, और परहेज़ यह है कि इन्द्री भोगों और मान

बड़ाई की तरंगों से जहां तक मुनासिब और मुमकिन होवे बचाव रखना ॥

(२) दूसरे सब जीव निरधन हो रहे हैं, यानी भक्ती और प्रेम का धन गंवा बैठे हैं और इस क़दर माया के झूठे धन के मुहताज हो गये हैं, कि अपनी चेतन्यता भी दिन २ खोते जाते हैं, और अनेक तरह के करम करते हैं और कष्ट और कलेश सहते हैं और कोई सूरत निकासी की नज़र नहीं आती ॥

फिर संत सतगुरु पूरे धनवान हैं, यानी भक्ती और प्रेम का भंडार उनके इख़्तियार में है, और माया भी उनकी ताबेदार है। जो कोई उनके चरनों में प्रीत और प्रतीत के साथ सतसंग करे और उनका बचन माने, और उपदेश लेकर सुरत शब्द मारग का अभ्यास करे, तो वे प्रसन्न होकर उनको प्रेम का धन दान देवेंगे, और माया के सामान की बेक़दरी उसके चित्त में जताकर उसकी तरफ़ से बे परवाह कर देंगे ॥

प्रेम की दौलत अपार है, जिस क़दर चाहे ख़र्च करे उसका भंडार कभी घटता नहीं है, और यह धन बिरले बड़ भागियों को दया से मिलता है ॥

(३) जो कोई नौकरी या ख़िदमत का चाहनेवाला है, वह राज दरबार में या हाकिमों के संग निहायत

दीनता के साथ बर्ताव करता है, और बहुत शौक़ के साथ ख़िद्मत करने को तइयार रहता है ॥

अब समझो और बूझो कि संत सतगुरु महाराजाओं के महाराजा और शाहनशाहों के शाहनशाह हैं, उनकी ख़िद्मत और सेवा और सतसंग किसी बड़भागी को मिलता है, और फिर उसी को सब से बड़ा और भारी दरजा, कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के धाम में पहुंचने और बिश्राम करने का बख़्शिश होता है। यह दरजा ब्रह्मा विष्णु महादेव और ईश्वर परमेश्वर तक को मुयस्सर नहीं हो सक्ता ॥

गुरु पूरे का सेवक बरतर। क्या जो हुकम करे राजों पर ॥
कौन करे आरत सतगुरु की ॥

ब्रह्मादिक सब तरस रहे हैं। मिली नहीं यह पदवी ॥ १ ॥
कोट तेंतीसो राग बैरागी। इंद्र मुनिंदर भटकी ॥ २ ॥
सतगुरु बिन खोज नहिं पाया। करम भरम बिच अटकी ॥ ३ ॥
बड़े भाग जानो अब उनके। जिनको सरन परापत गुरु की ॥ ४ ॥
गुरु समान समर्थ नहिं कोई। जिन धुरघर की आन ख़बरदी ॥ ५ ॥

१७—अब उन दृष्टान्तों का बयान किया जाता है जो प्रेम प्रीत के बारे में दिये हैं ॥

(१) अव्वल माता और पुत्र की प्रीत—यह प्रीत बहुत निर्मल और बेग़र्ज़ है, और इस क़दर ज़बर है

कि माता पुत्र की बीमारी और तकलीफ़ में अपना खाना पीना सोना और ज़रूरी हाजात वग़ैरः को भी किसी क़दर बिसर जाती है, और बच्चे के आराम और ख़िदमत को सब कामों पर मुक़द्दम रखती है। ऐसेही परमार्थी और प्रेमी जीव संत सतगुरु की सेवा में सरगरम रहते हैं, और अपने तन के आराम और इन्द्रियों के भोग वग़ैरः को बिसराये रहते हैं; यानी जब जो मुयस्सर आया वही बहुत ख़ुशी के साथ ग्रहन करते हैं, और जब वक़्त मिला और थोड़ी फ़ुर्सत पाई उस वक़्त अपनी हाजात रफ़ा करते हैं और आराम करते हैं। ख़ुलासह यह कि संत सतगुरु की प्रीत ऐसी ज़बर उनके हिरदे में बसी हुई है कि उनकी सेवा और सतसंग के मुक़ाबल में, किसी चीज़ और किसी काम की बल्कि अपनी भूख प्यास और आराम तक की सुध नहीं आती, और हरदम कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु की याद और ख़्याल हिरदे में बसा रहता है॥

(२) दूसरे कामी की कामिन के साथ—यह प्रीत भी बहुत ज़बर है, और इसके मुक़ाबलह में कोई और मुहब्बत नहीं ठहरती, यानी दुनिया भर की प्रीतें इस प्रीत के तले रहती हैं, और तन मन धन भी कामी

पुर्ष कामिन पर नौछावर करता है, और चाहे जैसी दुनिया में बदनामी होवे उसको सहज में सहता है, और निन्दकों और ताने मारने वालों के बचन का बिल्कुल ख़्याल नहीं करता है, और न अपने नफ़े और नुक़सान पर नज़र करता है ॥

परमार्थ में भी ऐसी ही प्रीत अव्वल नम्बर समझी जाती है, कि अपने प्रीतम के मुक़ाबलह में कोई प्रीत किसी क़िसम की, और कोई चीज़ की क़द्र या बड़ाई नहीं रहती है। संत सतगुरु या कुल्ल मालिक के प्रीत का ऐसा पक्का रंग प्रेमीजन के हिरदे में चढ़ जाता है, कि फिर कोई दूसरा रंग उसके सामने नहीं ठहरता। प्रेमी को प्रीतम के दर्शन और बचन और सेवा ऐसी प्यारी लगती है, कि दूसरे काम की उसको सुध भी नहीं रहती ॥

ऊपर के दोनों बयान से यह मतलब नहीं है, कि प्रेमी दुनिया के कारोबार सब छोड़ देवे, और सर्ब अंग करके रात दिन परमार्थी कार्रवाई में ख़र्च करे। उस बयान का मतलब यह है, कि प्रेमी के मुख्यता प्रीतम की याद और सतसंग और सेवा की हिरदे में रहेगी, और दूसरे दरजह पर दुनिया के कारोबार भी करता रहेगा, मगर उनमें पकड़ और बंधन बहुत

कम होगा, ज़रूरत के वक़्त प्रेमी सब से न्यारा होने को तइयार रहेगा ॥

(३) तीसरे मछली की प्रीत जल के साथ–इस प्रीत की महिमां साफ़ ज़ाहर है कि जल मछली का आधार है, बग़ैर उसके उसकी ज़िंदगी क़ायम नहीं रह सक्ती ॥

इसी तरह प्रेमीजन को संत सतगुरु और राधास्वामी दयाल की प्रीत का आधार रहता है यानी जब तक कि गुरु स्वरूप का ध्यान करके और सुरत को शब्द में लगाकर मामूली रस न लिया जावे, तब तक प्रेमी को निहायत दरजे की बेचैनी और बेकली रहती है, और कोई काम या चीज़ या कोई दूसरा ख़्याल उसको नहीं सुहाता, और न उसके मन को चैन और आराम मिलता है ॥

(४) चौथे पपीहा की प्रीत स्वांतिबूंद के साथ–यह जानवर साल भर में सिर्फ़ एक दो बार स्वांति बूंद को पीकर त्रिप्त रहता है, और जब तक वह न मिले उसकी रटना लगाये रहता है। मगर चाहे जैसी गरमी पड़े वह दूसरे जल को नहीं छूता या पीता है। इसी तरह प्रेमी जन अपने सच्चे और कुल्ल मालिक के दर्शनों की आसा में उनके नाम को रटते रहते हैं, और जब भाग से दर्शन मिल जाय तब मगन हो जाते

हैं। लेकिन और कोई पदार्थ उनकी लाग और लगन को हलका या ढीला नहीं कर सक्ता, यानी तमाम रचना के भोग और बिलास पेश किये जावें, या सिवाय धुरधाम के और कोई पद या अस्थान रास्ते का उनको फ़तह हो जावे, तो भी पूरी शान्ती किसी तरह हासिल नहीं हो सक्ती, और न प्यास और तड़प दर्शन जमाल कुल्ल की दूर हो सक्ती है ॥

उपदेश

१८—कुल्ल परमार्थी जीवों को मालूम होवे कि कोई काम संसारी या परमार्थी बग़ैर इन सब अंगों में या बाज़ों में (जहां जैसी ज़रूरत है) बर्ताव करने के दुरुस्ती के साथ नहीं बन सक्ता, और सच्ची दीनता और सच्ची लगन यानी शौक़ या मुहब्बत तो हर काम में दरकार है। इस वास्ते मुनासिब और लाज़िम है कि परमार्थ के मुआमलह में बेपरवाही और सुस्ती छोड़कर, इन सब अंगों में दुरुस्ती के साथ बर्ताव करे, तब कुछ फ़ायदह नज़र आवेगा, नहीं तो बग़ैर सुरत और मन के संग के जो करतूत बन आवेगी, वह शुभ करनी का फल देगी। पर सच्चे परमार्थ का फ़ायदह जो कि सुरत का निज धाम में पहुंच कर बिश्राम पाना, और हमेशः को परम आनंद का प्राप्त होना, और जनम

मरन के चक्कर से छूटना है, कभी नहीं हासिल होगा ।

जिस क़दर बाहर मुख करनी है वह शुभकरम में दाख़िल हो सक्ती है ॥

सिर्फ़ अंतर मुख अभ्यास सुरत और मन की चढ़ाई का जीव के उद्धार में मदद दे सक्ता है, और वह सुरत शब्द मारग का अभ्यास है ॥

१९—अब जो कोई इस बचन के मुवाफ़िक़ कार्रवाई करेगा, वह अपनी हालत चढ़ाई की वक़्तन् फ़वक़्तन् यानी जब तब जांच सक्ता है, और इसी ज़िंदगी में अपनी मुक्ति होती हुई परख सक्ता है, और अख़ीर वक़्त की तकलीफ़ को बचा सक्ता है ॥

२०—जो कोई रसमी परमार्थ में अटका रहेगा और सच्चे मालिक राधास्वामी दयाल का खोज और पता लगाकर, उनके धाम की तरफ़ चलने और चढ़ने का जतन सुरत शब्द योग के मुवाफ़िक़ नहीं करेगा, वह हमेशः माया देश में ऊंच नीच देश और ऊंची नीची जोनों में भरमता रहेगा ॥

बचन–१३

परमार्थी जीवों को भक्ती अंग में सदा बर्ताव करना चाहिये, और उसके साथ थोड़ा बैराग भी रखना चाहिये, और दुनिया के कामों में साधारन तौर पर बर्तना चाहिये–बहुत मोह और आशक़ी दुखदाई है ॥

१—परमार्थी जीवों को भक्ती अंग हमेशः क़ायम रखना चाहिये, और उसके साथ थोड़ी बहुत बैराग की भी धारना चाहिये, और अंतर अभ्यास थोड़ा बहुत बिला नाग़ह जारी रखना चाहिये ॥

२—भक्ती में तीन बातें दरकार हैं–पहिले अपने भगवंत यानी कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल को हर वक़्त हाज़िर और नाज़िर समझना, और दूसरे अपने मालिक को सर्ब समर्थ मानना, और तीसरे इस बात का यक़ीन करना कि जो कुछ होता है मालिक की मौज से होता है, बिना उसकी मौज के कुछ नहीं हो सक्ता, और जिस क़दर बने मौज के साथ हो मुवाफ़क़त करना ॥

३—इसी तरह बैराग की सम्हाल के वास्ते भी तीन बातों का ख़्याल रखना चाहिये—पहिले यह कि सिवाय मामूली और मुक़र्ररह बर्ताव के मन और इन्द्रियों को रस देने के वास्ते भोगों की चाह और तरंग न उठावे। दूसरे जो भोग अनिच्छित या परिच्छित प्राप्त होवें, तो उनमें अहतियात के साथ बर्ताव करे, पर शर्त यह है कि यह भोग नाजायज़ और ममनूअ न होवें[१]। तीसरे जो भोग कि अनिच्छित या परिच्छित या मामूली तौर पर प्राप्त होवें, उनकी त्रिश्ना यानी ज़्यादह तलबी न करे, क्योंकि इसमें बंधन और फिर बंधन के सबब से दुख प्राप्त होगा, और वह भक्ती में ख़लल डालेगा ॥

४—भक्ती में यह क़ायदह मुक़र्रर है कि भक्त जो काम करे, वह अपने भगवंत की मौज के आसरे करे, और जैसा कुछ कि उसका नतीजा यानी फल होवे, उसको मंज़ूर और क़बूल करे, और शिकायत न करे, क्योंकि जो शिकायत करी और नाराज़ हो गया तो भक्ती के बर्ताव में ख़लल पड़ेगा, यानी प्रीत और प्रतीत जब तब रूखी और फीकी हो जावेगी। ख़ुलासह यह कि जो मौज के साथ राज़ी रहा तो उत्तम दरजा है, और जो साधारन तौर पर रहा यानी न राज़ी और न नाराज़

१—जिस के वास्ते हुकम नहीं है।

वह मध्यम दरजा, और जो नाराज़ हुआ और कुछ देर तक रूखा फीका रहा, और फिर आपही सोच समझ कर सम्हल गया, तो तीसरे दरजे की भक्ती रही ॥

५–अब थोड़ा बयान उन तीन बातों का जो भक्ती अंग क़ायम रखने के वास्ते ज़रूर हैं लिखा जाता है ॥

६—(१) पहिले अपने स्वामी को हाज़िर और नाज़िर समझना–कुल्ल मालिक सत्तपुर्ष राधास्वामी दयाल घट २ में शब्द स्वरूप और प्रकाश स्वरूप से हर वक़्त मौजूद हैं। और जो कुछ कि करनी जीव से बनती है, वह देख रहे हैं। इसी तरह संत सतगुरु भी अपने सूक्षम स्वरूप से, अपने निज सेवकों के घट में मौजूद रहते हैं, और उनकी कार्रवाई पर नज़र रखते हैं। जो बात नापसंद होती है (तो जो मौज हो) सेवक को जता देते हैं, या अंतर में प्रेरना करके या बाहर से कोई मौज करके उसकी कार्रवाई बंद कर देते हैं, नहीं तो अपनी गम्भीरता के स्वभाव से चुप्प हो रहते हैं।

७–(२) दूसरे अपने मालिक को सर्ब समर्थ मानना-मालूम होवे कि चेतन यानी रूह की धार सब जगह देह में फैली हुई है, और हर जगह कार्रवाई उसी की शक्ती से जारी है। जब कोई तरंग उठती है, तो पहिले हिलोर मन के अस्थान पर होती है, और फिर

वहां से धार रवां होकर उस इन्द्री के मुक़ाम पर आती है, जिसके वसीले से उस तरंग की कार्रवाई होनी चाहिये, और फिर वह इंद्री काम करती है। इस तरह जिस क़द्र कि कार्रवाई अंग २ की देह में होती है, वह सब चेतन्य यानी सुरत की धारों की शक्ती से, जो कंवलों और चक्रों से जारी हैं, होती है ॥

८—इसी तरह बाहर ब्रह्मान्ड में कार्रवाई चेतन्य की धारों से हो रही है, जो बजाय कंवलों और चक्रों के सूरज और चांद और तारागण से जारी हैं ॥

९—(३) तीसरे जो कुछ होता है मालिक की मौज से होता है, जब कि यह बात साफ़ ज़ाहिर और साबित है, कि जिस क़द्र कार्रवाई रचना में हो रही है, वह चेतन्य शक्ती की धार से होती है ॥

१०—कोई २ कार्रवाई में जीवों के पिछले अगले करम भी अपना असर पैदा करते हैं, यानी जहां करम की मुख्यता है, या जो करम अपना आपा ठान कर अहंकार के साथ किये जावें, वहां प्रेरना और तरंग का रूप करम अनुसार बनता है ॥

११—जहां अपने स्वामी की मौज और दया का आसरा लेकर निर अहंकार करम किया जाता है, वहां प्रेरक मालिक की मौज है। फिर जो फल या नतीजा

ऐसी कार्रवाई से पैदा होवे वह मालिक का हुकम समझा जाता है, और उसके साथ सेवक बहुत ख़ुशी के साथ मुवाफ़क़त करता है ॥

१२—जब कभी मौज से कोई करम उलटा बन आता है, या किसी करम का फल उलटा हो जाता है, तो भी सेवक को उसे मालिक की मौज और मसलहत समझ कर, उसके साथ जैसे बने तैसे मुवाफ़क़त करना चाहिये ॥

१३—जैसे यह एक मनुष्य की कार्रवाई का हाल लिखा गया, इसी तरह देशों और लोकों की कार्रवाई की कैफ़ियत समझना चाहिये, यानी वहां क़ौम और क़ौमों या कुल्ल परजा के करम प्रेरक होते हैं, और प्रेमी जन के वास्ते कुल्ल कार्रवाई मालिक के हुकम और मौज से प्रघट होती है ॥

१४—अब थोड़ा बयान उन तीन बातों का जो बैराग से तअल्लुक़ रखती हैं, किया जाता है ॥

१५—पहिले ग़ैर मामूली और ग़ैर ज़रूरी भोगों की चाह न उठाना—भक्तिवान और प्रेमीजन को मुनासिब है, कि फ़ज़ूल और ग़ैर मामूली भोगों की चाह या गुनावन न उठावें, क्योंकि इसमें मन पुष्ट होता है और बारम्बार चाह उठाने की आदत उसको पड़ती

है, कि जो परमार्थी अभ्यास और सतगुरु के सतसंग में ख़लल डालेगी ॥

१६—ऐसा कहा है कि किसी एक भोग की बारम्बार चाह उठाने और गुनावन करने से, उसका एक बार भोग लेना बेहतर है, बशर्ते कि नाजायज़ और ना मुनासिब न होवे। क्योंकि हर बार गुनावन करने से उस भोग की आसा और त्रिश्ना मन में मज़बूत होकर बस जावेगी, यहांतक कि फिर उसका निकालना कठिन हो जावेगा। इसी तरह जब कितने ही भोगों का ख़्याल मन में बसे, या गुनावन रूप होकर मन को उसी ख़्याल में लगाए रक्खें, तो फिर रफ़्तह २ बहुत सा वक़्त इसी काम में सर्फ़ होगा, और भजन और सत संग के वास्ते फ़ुर्सत कम मिलेगी, और फिर परमारथी कार्रवाई बहुत कम होजावेगी, और संसारी स्वभाव भी नहीं बदलेगा ॥

१७—दूसरे अनिच्छित और परिच्छित भोगों में अहतियात के साथ बर्तना ॥

अनिच्छित भोग वह हैं जो बग़ैर इरादह के मौज से प्राप्त हों, और परिच्छित जो बग़ैर अपनी ख़्वाहिश के, दूसरा शख़्स मुहब्बत या मेहमानदारी के तौर से सनमुख लावै। इन भोगों में बशर्ते कि नाजायज़

और ना मुनासिब न होवें, अहतियात के साथ बर्ताव करना चाहिये, यानी थोड़ा इस्तेमाल उनका करे और लिप्त न होवे, और दो बारह उसके भोगने की चाह न उठावे। जिस किसी की जिभ्या इंद्री थोड़ी बहुत क़ाबू में है, उस्से ऐसी अहतियात बन पड़ेगी, और जो कोई होशियारी के साथ अपनी इंद्रियों को भोगों की तरफ़ से रोकता और सम्हालता रहता है, उसका बर्तावा भी दुरुस्ती और अहतियात के साथ जारी रहेगा, लेकिन इन दोनों हालत में संत सतगुरु की दया संग होनी चाहिये। बग़ैर दया के मन और इंद्रियाँ अपना ज़ोर दिखलाकर, जीव के इरादह को पूरा नहीं होने देंगी, और किसी न किसी क़िस्म का बिघन डालकर उसकी अहतियात को तोड़देंगी॥

१८—सच्चे परमार्थ की कमाई और उसके संजमों की सम्हाल बग़ैर मदद सत संग और दया संत सतगुरु के मुश्किल है। इस वास्ते पहिले संत सतगुरु का खोज और फिर उनका सतसंग चेत कर, और उनकी जुक्ती यानी सुरत शब्द मारग का अभ्यास करना ज़रूर है। नहीं तो जो कार्रवाई की जावेगी, वह हठ के साथ त्याग में दाख़िल होगी, और उसका फल बजाय भक्ती और प्रेम के सिर्फ़ शुभ करम का मिलेगा॥

१९—तीसरे भोगों की त्रिश्ना न करना ॥

मन का ऐसा अंग और स्वभाव है, कि जो भोग या काम इसको रसीला मालूम होता है, तो बार २ उस भोग के प्राप्ती या उस काम के करने की इच्छा और गुनावन उठाता है, और जो प्राप्ती नहीं होती है तो दुखी होता है। यह आदत और स्वभाव सच्चे परमार्थ की कमाई में बहुत ख़लल डालता है, क्योंकि परमार्थी के मन को अनेक भोगों और कामों में बाँध कर, गुनावन और तरंगों के चक्कर में डालता है, और उसके अभ्यास को गंदला और मलीन करता है, और दुरुस्ती के साथ बन्ने नहीं देता। इस वास्ते ऐसे स्वभाव का काटना बहुत ज़रूर है। और इसीं स्वभाव को भोगों में बंधन और आशक्ती कहते हैं, जिस्सें सच्चे परमार्थी को परहेज़ करना लाज़िम और मुनासिब है ॥

२०—सच्चे परमार्थी को सब कामों में, और ख़ास कर संसारी और ब्योहारी कामों में, साधारण तौर पर बर्तना चाहिये। ज़बर पकड़ या बंधन या अहंकार किसी ख़ास काम में नामुनासिब है। क्योंकि मनको जहां तक मुमकिन होवे, झगड़ों बखेड़ों से न्यारा रखने में परमार्थी का बड़ा फ़ायदह है, और लिप्त होने में नुक़सान है ॥

२१–अब मालूम होवे कि जिस किसी का भक्ती अंग में बर्ताव दुरुस्त है, यानी अपने स्वामी को हर दम हाज़िर नाज़िर जानता है, और उसकी मौज में राज़ी रहता है, या उसके साथ जैसे बने तैसे मुवाफ़क़त करने में कोशिश करता है, उसको बाक़ी के सब अंगों में दुरुस्ती के साथ बर्तने में कुछ दिक़्क़त नहीं होगी, यानी उसका बैराग भी सही, और प्रीत प्रतीत कुल्ल मालिक और संत सतगुरु के चरनों में भी दुरुस्त और मज़बूत होगी, और फिर वह भक्ती के सर्ब अंग में दया और मेहर से, साथ दुरुस्ती और अहतियात के बर्ताव करेगा ॥

बचन-१४

बग़ैर गुरुभक्ती और बिना गुरु चरन पकड़ के चलने और चढ़ने के निजधाम की तरफ़ सच्चा और पूरा उद्धार हरगिज़ मुमकिन नहीं है, और जिन मतों में यह भेद और भक्ती और अभ्यास नहीं जारी है, या इसकी ख़बर भी नहीं है, उनमें जीव का सच्चा कल्यान किसी सूरत में नहीं हो सक्ता ॥

१—मालूम होवे कि पिछले वक़्त में हिन्दुओं में उपाशना वालों, और मुसल्मानों में तरीक़तवालों के मत में गुरु की महिमा ज़्यादह थी। लेकिन जब से कि अंतर मुख अभ्यास चढ़ाई मन और सुरत का गुप्त और मौक़ूफ़ हो गया, और बजाय उसके पूजा मूरतों और क़बरों और किताबों और दूसरे निशानों वग़ैरह की बकसरत जारी हुई, तब से गुरु भक्ती की महिमा भी गुप्त हो गई ॥

२—हिंदुओं और मुसलमानों में गुरू की महिमां इस तौर पर बर्णन करी है ॥

हिंदुओं का क़ौल

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्बिष्णू गुरुर्देव महेश्वरः ॥
गुरुरेव परंब्रह्म तस्मई श्रीगुरवे नमः ॥

अर्थ

गुरु स्वरूप को ब्रह्मा बिष्णु और महेश और ख़ुद पारब्रह्म समान मान्ना चाहिये, और ऐसे गुरु को बारम्बार नमसकार है ॥

क़ौल दूसरा

ब्रह्मवित ब्रह्मैव भवती ॥

अर्थ

ब्रह्म का साक्षात जानने वाला आपही ब्रह्म है ॥

मुसल्मानों का क़ौल

मस्जिदे हस्त अंदरूने औलिया ।
सिजदगाहे जुम्ला हस्त आंजा ख़ुदा ॥

अर्थ

औलियाओं का हिरदा मसजिद है और वहां सब को चाहिये कि सिज्दा करें ॥

क़ौल दूसरा

चूंकि करदी ज़ाते मुर्शिद रा क़बूल।
हम ख़ुदा दर ज़ातश आमद हम रसूल ॥

अर्थ

जिसको तुम ने सतगुरु माना उसके अन्तर में ख़ुदा और पैग़म्बर दोनों आ गये ॥

क़ौल तीसरा

गुफ़्त पैग़म्बर कि हक़ फ़रमूदः अस्त।
मन न गुंजम हेच दर बाला व पस्त ॥
दर ज़मीनो आसमानो अर्श नीज़।
मन न गुंजम ईं यक़ीं दाँ ऐ अज़ीज़ ॥
दर दिले मोमिन बिगुंजम ईं अजब।
गर मरा ख़्वाही अज़ां दिलहा तलब ॥

अर्थ

पैग़म्बर साहब ने कहा है कि ख़ुदा ने फ़रमाया है, कि मैं ऊंचे नीचे देश में नहीं समाता, और न ज़मीन और आसमान और अर्श वग़ैरः में समाता हूं। लेकिन यह अचरज है कि प्रेमी जन के हिरदे में समाता हूं, और जो कोई मुझ को चाहे तो उनसे मांगे ॥

क़ौल चौथा

चूं तु ख़्वाही हमनशीनी बा ख़ुदा ।
रौ तो बिनशीं दर हज़ूरे औलिया ॥

अर्थ

जो कोई कि चाहे कि मालिक के सनमुख बैठे उसको चाहिये कि औलिया यानी महात्मा के रूबरू बैठे ॥

क़ौल पांचवां

अज़ा तम्मुल्फ़क़्र. फ़हू अल्लाहू ॥

अर्थ

जिसका फ़क़ीरी का दरजा पूरा हुआ है फिर वही अल्लाह है ॥

३—संतों ने भी गुरु की महिमां ऐसी ही बल्कि इस्से ज़्यादह कही है, और गुरु भक्ती पर वास्ते उद्धार जीव के ज़्यादह ज़ोर दिया है ॥

४—अब इस वक़्त. में कि बिद्या और बुद्धी का बिस्तार ज़्यादह से ज़्यादह हो रहा है, और बहुत से नये मत आलिमों और आक़िलों ने ज़ारी किये हैं, और जिन में अंतर मुख अभ्यास का कुछ ज़िकर भी नहीं है, गुरू की ख़ास ज़रूरत बिल्कुल नहीं समझी जाती है, बल्कि जहां कोई ख़ास और शाज़ जगह गुरु भक्ती थोड़ी बहुत जारी है, यह लोग और इन के बचन को मान्नेवाले, उस सच्ची भक्ती और प्रेम को देखकर

अचरज करते हैं, और बसबब बेख़बरी उसके भेद के गुरु भक्तों को नादान और ओछा समझते हैं, और उनकी चाल ढाल और गुरु के साथ दीनता और प्रीत के साथ बर्ताव पर तान मारते हैं, और हंसी उड़ाते हैं ॥

५—जो लोग कि करम कान्डी और शरीअत के पाबंद हैं, उनके मत में भी गुरू की कुछ ज़रूरत नहीं है। पंडित और मौलवी जो कि थोड़ी बहुत विद्या पढ़े होते हैं, किताब के मुवाफ़िक़ करम कराने के वास्ते काफ़ी समझे जाते हैं ॥

६—इसी तरह जो विद्यावान इस ज़माने में ज्ञानी और सूफ़ी बन गये हैं, और अपने तईं ब्रह्म और ख़ुदा मानते हैं, गुरू को कुछ नहीं समझते। यह लोग सच्चे ज्ञानी और सच्ची, सूफ़ियों की नक़ल करते हैं यानी उनके बचनों को पढ़कर और विद्या बुद्धि से उनका मतलब समझ कर, अपने तईं ब्रह्म और ख़ुदा मान बैठे हैं, और असल में एक कदम भी उस रास्ते पर, जहां होकर सच्चे ज्ञानी और सूफ़ी अभ्यास करके, ब्रह्म और ख़ुदा के मुक़ाम तक पहुंचे, नहीं चले। सिर्फ़ उनकी बातें सीखकर आप भी वैसी ही बातें बनाने लगे, और असल में मन और इन्द्रियों के क़ाबू में पड़े हैं ॥

७—जो कि बाहरमुख निशानों के पूजनेवाले लोग कसरत से हैं, और विद्यावानों में ज्ञानी और सूफ़ी कसरत से बन बैठे हैं, और कोई २ नास्तिक हैं, यानी मालिक की मौजूदगी के क़ायल नहीं हैं, इस सबब से बहुत थोड़े आदमी हैं कि जो मालिक से मिलने और उसके दर्शनों की चाह रखते हैं। और ऐसे शख़्सों को बग़ैर पूरे गुरू के चैन नहीं आवैगा, यानी रास्ता और तरीक़ा मिलने का और भेद कुल्ल मालिक और उसके धाम का, सिर्फ़ पूरे गुरु से ही मिल सक्ता है, दूसरा उस भेद और रास्ते और चलने की जुगत से वाक़िफ़ नहीं है ॥

८—अब आम तौर पर कुल्ल जीवों से पुकार कर कहा जाता है, कि जो अपने सच्चे उद्धार का रास्ता जारी करना चाहो, तो जो बचन कि आगे लिखा जाता है, उस के मुवाफ़िक़ थोड़ी बहुत कार्रवाई करो, नहीं तो जनम मरन और दुख सुख का चक्कर कभी नहीं मिटैगा, और कुल्ल मालिक का दर्शन और परम आनंद की प्राप्ती, यानी उसके आदि धाम में बासा, कभी नहीं मिलैगा ॥

९—पहिले गुरू शब्द का अर्थ यानी मतलब बयान किया जाता है, और वह यह है, कि गुरू उसको कहते

हैं जो कि अंधेरे में चाँद्‌ना करे, और धुर पद्‌ यानी कुल्ल मालिक के धाम का रास्ता और चलने की जुगत बता कर वहां पहुंचावे ॥

१०—अब मालूम करो कि जब तक कि रचना शुरू नहीं हुई थी, कहीं अंधकार और कहीं धुंधकार था और सब अपने हाल से बेख़बर थे, यानी ख़्वाब ग़फ़लत और अजान की नींद्‌ में सोये हुये थे, सिर्फ़ कुल्ल मालिक अनामी पुर्ष राधास्वामी, जो कि महा प्रकाश और महा प्रेम और महा ज्ञान और महा चेतन्यता और महा आनंद्‌ का भंडार है, जागता था, और अपने में आप मुतवज्जह और मगन था ॥

११—उस अनामी पुर्ष से आदि धार प्रघट हुई, जिसने चांद्‌ना किया और शोर ज़हूर का मचाया। इसी धार ने किसी फ़ासले पर ठहर कर, और मँडल बांध कर रचना करी। फिर वहां से दूसरी धार प्रघट होकर नीचे उतरी, और उसने बद्‌स्तूर रचना करी। ऐसे ही हर एक ठेके और मुक़ाम से धार उतरती और रचना करती चली आई, और इस देह में आंख के मुक़ाम पर ठहर कर, और यहां की रचना करके देह और दुनिया का कारोबार करने लगी, और मन और इन्द्री का संग करके, और भोगों और पदार्थों में

आशक्त होकर, दुख सुख भोगने लगी। और जो कि देह माया के मसाले की बनी हुई है, और हमेशह बदलती रहती है, इस सबब से एक देह को छोड़ना, और दूसरी पैदा करके उस में प्रवेश करना, यानी जनम मरन का चक्कर, जारी हो गया ॥

१२—जो धार कि आदि में प्रघट हुई वही शब्द और चेतन्य की धार है, और उसी का नाम राधा, और अनामी पुर्ष का नाम जिसमें से वह धार निकली, स्वामी है। जिस क़दर कि इस धार का बिस्तार होता गया, उसी क़दर शब्द और चेतन्यता रचना करती हुई फैलती गई ॥

१३—अब समझना चाहिये कि यही धार जो आदि में प्रघट हुई, और नीचे उतरती चली आई, अनामी पुर्ष राधास्वामी के चरन की धार है, और ख़ुद अनामी पुर्ष राधास्वामी गुरू हैं, यानी उन्हीं से आदि में चांदना हुआ, और जो चेतन्य और शब्द की धार उन से प्रघट हुई, और चांदना करती चली आई, गुरू का चरन है। यही धार उलट कर स्वामी के चरन में पहुंच कर समा सक्ती है ॥

१४—इस तरह तमाम रचना गुरू के चरन की चेतन्य शक्ती से प्रघट हुई, और उसी की ताक़त से

क़ायम है, और चरन की धार के खिंच जाने से उस का अभाव हो जाता है ॥

१५—यही चरन की धार कुल्ल शक्तियों और रसों और स्वादों और इल्मों और हुनरों और रूपों और सूरतों और रोशनी वग़ैरः २ और कुल्ल रचना की भंडार और करतार है ॥

१६—जो सुरत उलट कर इस धार से लगी वही एक दिन निज भंडार में पहुंचेगी यानी स्वामी से मिलेगी । और जो कोई सुरत और धारों से जो माया की मिलौनी के बाद जारी हुई हैं मिलैगी, वह हमेशह माया देश में भरमती रहेगी ॥

१७—अब ग़ौर करके बिचारो कि जब तक भेद निज घर और रास्ते का, और जुगत चलने की दरियाफ़्त करके, इस धार यानी गुरु चरन को पकड़ के न चलेगा, तब तक धुर धाम में पहुंचना और परम आनंद को प्राप्त होना किसी सूरत में मुमकिन नहीं है । और भेद और जुगत चलने की संत सतगुरु से मालूम होवेगी ॥

१८—संत सतगुरु उन का नाम है कि जो धुर धाम यानी अनामी पुर्ष के अस्थान से उतर कर, वास्ते उपकार और उद्धार जीवों के पिंड में आये, और

भेद् रास्ते का और तरकीब चलने की जीवों को समझा कर, और उसका अभ्यास कराकर अनामी पुर्ष राधास्वामी के धाम में पहुंचाते हैं ॥

१६—संत सतगुरु कुल्ल मालिक राधास्वामी द्याल के प्यारे पुत्र और मुसाहब ख़ास हैं। और कभी २ वह मालिक आप भी संत सतगुरु रूप धारन करके इस लोक में प्रघट होता है ॥

२०—जिस जीव या सुरत को कुल्ल मालिक या संत सतगुरु निज धाम में पहुंचाने की नज़र से उपदेश देकर अभ्यास करावें, और जब क़रीब निस्फ़ रास्ते के तै हो जावे, उसको साध गुरू कहते हैं, और जो धुर पहुंच जावे उसको संत कहते हैं ॥

२१—अब समझना चाहिये कि पहिले संत सतगुरु से मिलना और उनका सतसंग करना ज़रूर है, और फिर उनसे उपदेश लेकर अंतर में अभ्यास करना चाहिये, यानी शब्द् की धुन और धार को पकड़ के, निज देश की तरफ़ चलना और चढ़ना चाहिये। और जो शब्द् की धार है वही चरन की धार है ॥

२२—ऊपर के लिखे से ज़ाहर है कि जो कोई सच्चा और पूरा उद्धार चाहे, उसको गुरुभक्ती करना निहायत ज़रूर है। बाहर संत सतगुरु का सतसंग

और उनकी भक्ती और सेवा, और अंतर में कुल्ल मालिक की भक्ती जो आदि गुरू है, और जो संत सतगुरु का निज रूप है, और उसके चरन यानी शब्द की धार का संग और सेवा ॥

२३—संत सतगुरु की भक्ती बाहर के बंधन काटेगी और ढीला करेगी और अंतर में चलने और चढ़ने में मदद देगी, और अंतर में शब्दभक्ती झीने बंधन काटेगी और ढीला करेगी, और कुल्ल मालिक और संत सतगुरु के चरनों में प्रीत और प्रतीत बढ़ावेगी, और रास्ता तै करने में जल्दी और आसानी होवेगी ।

२४—यह दो क़िस्म की भक्ती यानी अंतर और बाहर, हर एक जीव को चाहे औरत होवे या मर्द शौक़ के साथ करनी चाहिये, तब जीव का सच्चा और पूरा कल्यान होना मुमकिन है । नहीं तो सब के सब माया के घेर में पड़े रहेंगे, और उस्से छुटकारा होना मुशकिल है ॥

२५—कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल फ़रमाते हैं, कि जिस मत में गुरु और शब्द भक्ती का उपदेश नहीं है, और सुरत और मन की चढ़ाई का अंतर मुख अभ्यास नहीं है, वह मत ख़ाली और थोड़ा है, और उस में किसी जीव का सच्चा और पूरा उद्धार नहीं होगा ॥

२६—जो कोई सिवाय सच्चे गुरु और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के और किसी की भक्ती करेगा, वह भक्ती शुभ करम में दाख़िल होगी, और उसका फल चंद रोज़ का सुख इस लोक में या स्वर्ग लोक वग़ैरः में मिल जावेगा। पर सच्चे मालिक का दर्शन और उसके धाम की प्राप्ती हरगिज़ नहीं होगी, और इस वास्ते सच्चा उद्धार भी नहीं होगा, और न कुल्ल मालिक के चरनों का सच्चा प्रेम मन में आवेगा ॥

२७—अब मालूम होवे कि सिर्फ़ राधास्वामी मत और संगत में यह दो क़िसम की भक्ती जारी है। जो कोई सच्चा खोजी और दर्दी होवे, उसको वहां से कुछ दिन सतसंग करके, भेद और उपदेश इस भक्ती का मिल सक्ता है। और उसके मुवाफ़िक़ अभ्यास करके, कोई दिन में अपने जीव का थोड़ा बहुत कारज बनता हुआ इसी ज़िन्दगी में देख सक्ता है, यानी कुल्ल मालिक सत्त पुर्ष राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु के चरनों की प्रीत उसके हिरदे में बस्ती और बढ़ती जावेगी। और संसार और उसके सामान का प्यार और भाव आहिस्तह २ घटता जावेगा, और अभ्यास में भी जब तब कुछ रस और आनंद मिलता जावेगा, और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल

और संत सतगुरु की दया और रक्षा के परचे अंतर और बाहर नज़र आवेंगे ॥

२८—सिवाय उन फ़ायदों के जो ऊपर की दफ़ा में लिखे गये, राधास्वामी मत के अभ्यासी को बहुत बड़ा फ़ायदा यह होगा कि ज़िन्दगी में जिस क़दर उसका अभ्यास बढ़ा हुआ होगा, देह और दुनिया के दुख सुख बनिस्बत दुनियादारों के कम ब्यापेंगे। और अख़ीर यानी मरने के वक़्त बजाय महा कष्ट और कलेश पाने के, उसको अंतर में निहायत दरजे का आनंद, शब्द के प्रघट होने और प्राप्ती दर्शन का हासिल होगा, कि जिसका थोड़ा बहुत निशान मरने के बाद भी उसके चेहरे से ज़ाहर होगा, यानी उसका चेहरा बजाय मुर्दनी छाये हुए और भयानक हो जाने के, किसी क़दर नूरानी और खिला हुआ और सुहावन दिखलाई देगा। यह फ़ायदा किसी जीव को बग़ैर थोड़ा बहुत अंतर अभ्यास सिमटाव, और चढ़ाई मन और सुरत के (जैसा कि राधास्वामी मत में जारी है) हासिल नहीं हो सक्ता ॥

२९—समझवार और बिचारवान जीवों को ग़ौर करना चाहिये, कि यह किस क़दर बढ़ की बात है, कि जिस्से जीते जी अपने उद्धार और एक दिन मालिक

के धाम में पहुंचने और दर्शन की प्राप्ती का थोड़ा बहुत सबूत इसी देह में मिल जाता है। किसी मत में ऐसा भारी फ़ायदह इस क़दर आसानी के साथ हासिल होना मुमकिन नहीं है ॥

३०—जिस किसी को इस बचन का यक़ीन न आवे यानी गुरू और शब्द भक्ती की महिमां और फ़ायदह उसके चित्त में न समावे, तो उसको समझाया जाता है, कि आंख के मुक़ाम में तुम्हारी जाग्रत के वक़्त बैठक है, और इस अस्थान से हर रोज़ नींद के बस सूक्षाम और कारन शरीर में सुपन और सुषोपति अवस्था का बर्ताव कर रहे हो और तीनों हालत यानी जाग्रत सुपन और सुषोपति की कैफ़ियत, और उनकी आपस में फ़र्क़ की जांच कर रहे हो। यानी देह और दुनिया की चिन्ता और दुख सुख और मुहब्बत और दुश्मनी सिर्फ़ जाग्रत अवस्था में ब्यापती है, और आंख के मुक़ाम से रूह की धार के सरकने पर ज़रा भी उसका असर नहीं रहता। और सुपन अवस्था में सुरत अपनी ताक़त से सामान पैदा करती है, और उनका रस लेती है, उस वक़्त बाहर कोई पदार्थ मौजूद नहीं होता, और अस्थूल मन और इन्द्रियां बेकार होते हैं। और जब कभी सख़्त बुख़ार आता है, या

हालत ग़श की या कोइ और सख़्त बीमारी होती है, उस वक़्त आंखों यानी पुतलियों का खिंचाव ऊपर और अंदर की तरफ़ होता है, और उसके साथही बेहोशी ग़ालिब हो जाती है। और इसी तरह अख़ीर वक़्त यानी मौत के समय, जब नीचे से खिंचाव होता हुआ आंखों की पुतलियां सिमटती और खिचती हैं तब मौत होती है॥

३१—अब इन सब हालतों से साफ़ ज़ाहर है, कि मरने के वक़्त रूह के जाने का रास्ता, आंख के अस्थान से भीतर और ऊंचे की तरफ़ है। और जब किसी बीमारी में थोड़ा खिंचाव रूह का होता है यानी कुछ आंखें चढ़ जाती हैं, तो फ़ौरन बेहोशी और ग़फ़लत पैदा हो जाती है, और ज़्यादह खिंचाव में देह और दुनिया की सुध बुध भी नहीं रहती, बल्कि शीशी सुंघाकर डाक्टर लोग देह को काट देते हैं, और उसकी जीव को ख़बर भी नहीं होती। इस वास्ते कुल्ल जीवों को मुनासिब और लाज़िम है, कि जिस रास्ते पर मरने के वक़्त काल ज़बरदस्ती घसीट कर दुख देता हुआ ले जावेगा उस रास्ते पर इसी ज़िंदगी में चलने का जतन शुरू करना चाहिये, ताकि अख़ीर वक़्त पर तकलीफ़ न होवे, बल्कि आनंद और सरूर प्राप्त होवे।

और तरकीब इस रास्ते पर चलने की सिर्फ़ राधास्वामी मत में मौजूद है, और उसका उपदेश आम तौर पर जारी है, और सच्चे खोजी और दर्दी को सहज में मिल सक्ता है, और उसका फ़ायदह चंद रोज़ के अभ्यास में देख सक्ता है ।

३२—जो कोई इस बचन को मानेंगे यानी बाहर से संत सतगुरु का सतसंग और भक्ती, और अंतर में शब्द का अभ्यास प्रेम के साथ करेंगे, वे इसी ज़िंदगी में थोड़ा बहुत उसका फ़ायदः देखेंगे, और मरने के वक़्त और भी बाद छोड़ने देह के सुख पावेंगे। और जो बेपरवाही और नादानी से इस बचन को नहीं मानेंगे, यानी अंतर और बाहर सच्चे मालिक और संत सतगुरु की भक्ती नहीं करेंगे, तो उनको इस ज़िंदगी में कोई सहारा और सहाई नहीं मिलैगा, और न मरने के वक़्त पर उनका महा कष्ट और कलेश से बचाव होगा, और न बाद मरने के सच्चा सुख अस्थान मिलैगा, यानी इन सब वक़्तों पर सख़्त तकलीफ़ और दुख भोगते रहेंगे, और जनम मरन का चक्कर बंद नहीं होगा ॥

बचन-१५

और मतों में उद्धार के वास्ते मिहनत और तकलीफ़ ज़्यादह और फ़ायदह बहुत कम, और राधास्वामी मत में थोड़ी मिहनत और तवज्जह से फ़ायदह बहुत हासिल हो सक्ता है और सच्चे उद्धार का रास्ता जारी हो जाता है ॥

१—जितने मत कि दुनिया में जारी हैं, उन सब में कोई न कोई साधन वास्ते प्राप्ती मुक्ती के बर्णन किया है, पर सच्ची मुक्ती की कैफ़ियत और उस के हासिल होने की जुगत से सब बे ख़बर हैं। और हर चंद बाज़े २ साधन, किसी २ मत में बहुत कठिन और सख़्त मिहनत तलब हैं, पर उनसे फ़ायदह बहुत कम होता है, और मुक्ति पद का रास्ता बिल्कुल नहीं चलता ॥

२—पहिले तो बहुत कम जीव उन कठिन साधनों को शुरू करते हैं, और उनमें से बहुत कम जीवों से वे साधन थोड़े बहुत बन पड़ते हैं, और फ़ायदह

उनको सिवाय थोड़ी सफ़ाई तन और मन के और कुछ मालूम नहीं होता ॥

३—दूसरे यह कि जिन जीवों से वह साधन थोड़े बहुत बन पड़ते हैं, वे निहायत अहंकारी और अभिमानी हो जाते हैं, और आइंदह उनको खोज सतगुरु और शौक़ तरक़्क़ी अपनी कारवाई का नहीं रहता ॥

४—तीसरे यह कि बाज़े मतों में जहां विद्या और बुद्धी का प्रचार ज़्यादह है, गुरू की कोई ख़ास ज़रूरत या क़दर नहीं समझी जाती और बाज़े साधारन तौर पर बर्ताव जारी रखते हैं। लेकिन जो महिमां और सिफत गुरू की संतों ने बर्णन की है वह किसी के चित्त में नहीं ठहरती, और इस सबब से पूरे गुरू में भाव उन लोगों को नहीं आता और सच्चे मालिक और सच्चे उद्धार के तरीक़े से बे ख़बर रहते हैं ॥

५—बरख़िलाफ़ इसके संत अथवा राधास्वामी मत में कुल्ल मालिक और संत सतगुरु की महिमां ज़्यादह से ज़्यादह बर्णन की है, और फिर भी उसका भेद और सिफ़त जैसा कि चाहिये बयान करने में नहीं आसक्ती। और इसी तरह सुरत शब्द योग की महिमां भी बहुत भारी की है, पर लोग उसके भेद से वाक़िफ़ नहीं हैं ॥

६—संत सतगुरु उनका नाम है कि जो धुर अस्थान से वास्ते उद्धार जीवों के आये, या अभ्यास करके धुर अस्थान पर पहुंचे हैं, और कुल्ल मालिक से मिले हैं ॥

७—सुरत शब्द योग मतलब उस अभ्यास से है, कि जिसमें अंतर में तवज्जह करके शब्द सुना जाता है, और उसकी धार को पकड़ करके सुरत ऊपर को चढ़ाई जाती है। और यह शब्द की धार धुर अस्थान से निकल कर, और जहां तहां रास्ते में ठेके लेती हुइ पिंड में उतर कर नेत्र के अस्थान पर ठहरी है, और संत सतगुरु से भेद और जुगत लेकर और उनकी मेहर और दया से अभ्यास करके धुर पद के शब्द को सुन्ती हुई उलट जाती है ॥

८—जो कि सुरत का उतार चेतन्य की धार के संग जो कि शब्द की धार है हुआ है, इस वास्ते उसी धार को पकड़ के यानी शब्द को सुन्ते हुये चल कर चढ़ाई मुमकिन है ॥

९—जो कि आदि में कुल्ल मालिक के चरनों से शब्द की धार प्रघट हुई, और वह धार उतरती हुई पिंड में आई, इस वास्ते उस शब्द या चेतन्य की धार को पकड़ के घर को उलट सक्ती है। और कोई रास्ता धुर घर में जाने का नहीं ॥

१०—सुरत शब्द मारग का अभ्यास बिना उपदेश और दया संत सतगुरु के, जो कि निज भेदी उस मुक़ाम और रास्ते के हैं, बन पड़ना बहुत मुशकिल बल्कि नामुमकिन है। इस वास्ते सब जीवों को जो सच्चा उद्धार चाहें मुनासिब और लाज़िम है, कि पहिले संत सतगुरु के सतसंग में जावें, और उनसे उपदेश लेकर अभ्यास शुरू करें, और बाहरमुख पूजा मूरत और निशानों वग़ैरः की न करें॥

११—जो और मतों में बाहर मुख साधन अनेक तरह के बर्णन किये हैं, उनका तअल्लुक़ या सम्बंध अंतर में सुरत की धार के साथ नहीं है, इस सबब से वह करनी सिर्फ़ शुभ करम का फल दे सक्ती है॥

१२—इस तरह जो साधन हठ जोग के बर्णन किये हैं, और उनके करने में जीवों को निहायत दरजे का कष्ट और कलेश होता है, उनका भी कोई सम्बंध घट में शब्द की धार के साथ नहीं मालूम होता। इस वास्ते यह सब साधन सिर्फ़ मन और इंद्रियों की सफ़ाई का फ़ायदह किसी क़दर देते हैं, पर सुरत और मन की चढ़ाई का फ़ायदह उनमें क़ितई नहीं है॥

१३—राधास्वामी या संत मत में साफ़ हिदायत है,

कि बग़ैर गुरू और शब्द भक्ती के किसी सूरत में सच्चा और पूरा उद्धार जीव का मुमकिन नहीं है, यानी बाहर संत सतगुरु का सत संग और सेवा और अंतर में भजन यानी शब्द का एकाग्र चित्त होकर सुनना ॥

१४—इस उपदेश के मुवाफ़िक़ कुल्ल जीवों को, जो अपने जीव का सच्चा कल्यान चाहें, कारंवाई करना मुनासिब और लाज़िम है ॥

१५—सुरत शब्द का अभ्यास इस क़द्र आसान है, कि लड़के जवान बूढ़े औरत और मर्द जो थोड़ा भी शौक़ रखते हों सहज में कर सक्ते हैं। और संजम भी उसके आसान हैं, कि जिनकी सम्हाल हर शख़्स बिला तक़लीफ़ कर सक्ता है ॥

१६—जो कि सुरत की बैठक जाग्रत अवस्था में आंखों के अस्थान पर है, और वहीं बैठ कर देह और दुनिया के काम किये जाते हैं, और दुख सुख और चिन्ता और फ़िकर के ब्यापने का यही अस्थान है, इस वास्ते जब तक कि सुरत इस अस्थान को नहीं छोड़ेगी, और शब्द के वसीले से चढ़ कर अपने निज घर में, जो कुल्ल मालिक का धाम है, न जावेगी, तब तक परम आनंद को प्राप्त न होवेगी, और जनम मरन का चक्कर नहीं छूटेगा, और यह चढ़ाई बग़ैर

संतों की जुगत यानी सुरत शब्द् मारग के अभ्यास के मुमकिन नहीं है ॥

१७—जो काम कि मन और सुरत की चढ़ाई में मदद् न देवे, वह जीव के उद्धार का साधन नहीं हो सक्ता। इस वास्ते जिस क़द्र बाहर मुख कार्रवाई हर एक मत में जारी है, वह सिर्फ़ शुभ करम का फल दे सक्ती है ॥

१८—जो जीव राधास्वामी मत के मुवाफ़िक़ सतगुरु का सत संग और घट में अभ्यास करेंगे वे एक दिन सच्चे मालिक के धाम में पहुंच कर हमेशह को सुखी हो जावेंगे। और जो अनेक तरह की बाहर मुख कार्रवाइयों में अटके रहेंगे उनका सच्चा उद्धार नहीं होगा, यानी सच्चे मालिक के धाम में नहीं पहुंचेंगे ॥

बचन–१६

जीवों को इस ज़िंदगी में क्या सामान इकट्ठा करना चाहिये कि जो अख़ीर यानी मौत के वक़्त काम देवे और संग चले ॥

१—जीव इस दुनिया में मेहनत करके अनेक तरह के पदार्थ और सामान, अलावह धन और माल के

इकट्ठा कर रहे हैं, इस नज़र से कि वक़्त ज़रूरत के काम आवे और आराम देवे ॥

२—उस सामान के जमा करने से मतलब यह है कि अपनी और अपने कुटम्बियों और रिश्तेदारों की देह और इन्द्रियों और मन को सुख पहुंचे और तकलीफ़ न ब्यापे ॥

३—यह कार्रवाई बड़े शौक़ और मिहनत के साथ हर कोई कर रहा है, लेकिन अपनी रूह यानी जीव आत्मा की, कि उसको किस तरकीब से आराम पहुंच सक्ता है, किसी को ख़बर भी नहीं है, और न कोई उसके लिये कुछ तहक़ीक़ात या जतन करता है ॥

४—मुक्ती की प्राप्ती के वास्ते जीव अनेक तरह के साधन करते नज़र आते हैं, पर जो ग़ौर करके देखा जावे, तो वह साधन सिर्फ़ शुभ करम के फल देने वाले हैं, और सच्ची मुक्ती और सच्चे उद्धार का फ़ायदह उन में ज़रा भी नज़र नहीं आता ॥

५—आम तौर से जीव सच्चे मालिक राधास्वामी दयाल और उसके धाम से बेख़बर हैं पूरे उद्धार का मुक़ाम यही राधास्वामी धाम है, और सच्चा मुक्ति पद संतों का दसवां द्वार है, और वही पार ब्रह्म का अस्थान है। यह सब मुक़ाम अंतर में हैं और रास्ता

भी वहां पहुँचने का घठ में जारी है, पर लोगों को इस भेद की ख़बर नहीं है ॥

६—संतों ने दया करके भेद लखाया है, और जो जीव कि चलना चाहें, उनको अपनी दया की मदद भी देते हैं, और धुर पद में पहुँचाते हैं ॥

७—जो कोई अपना पूरा उद्धार चाहे, उसको लाज़िम है कि संत सतगुरु का सत संग करे, और सेवा करके उनको अपने ऊपर मेहरबान करले, और उपदेश लेकर नित्त अभ्यास यानी रोज़मर्रह रास्ता तै करना शुरू करे, तो एक दिन उनकी दया से कुल्ल मालिक के हज़ूर में रसाई हो जावेगी, और देहियों के कष्ट और कलेश और जनम मरन के चक्कर से बचाव हो जावेगा ॥

८—दुनिया का जिस क़दर सामान जिस किसी ने इकट्ठा किया है, वह उसको इसी दुनिया में मदद दे सक्ता है, यानी उसके मन इंद्री और देह को उनसे आराम पहुंच सक्ता है, और तकलीफ़ किसी क़दर दूर हो सक्ती है। लेकिन यह सामान जीव के कल्यान और सच्चे उद्धार के लिए सिवाय इसके कि संत सतगुरु और प्रेमी जन की सेवा में काम आवे या ग़रीबों और मुहताजों को दिया जावे और कोई मदद ख़ास नहीं कर सक्ता है ॥

६—वह सामान कि जो वक़्त तकलीफ़ और मौत के सच्ची सहायता करे, और धुर पद का रास्ता आसानी से तै करने में मदद देवे, और बाद देह छोड़ने के सुरत के संग चले, कुल्ल मालिक के चरनों में सच्चा प्रेम और सच्ची दीनता है ॥

१०—जिस क़दर कि प्रेम जिस किसी के मन में है, उसी क़दर उसको अपने मन में ताक़त मालूम होती है, और अभ्यास में आसानी और रस मालूम होता है और उसी क़दर नज़दीकी मालिक के चरनों में होती जाती है ॥

११—इस अबिनाशी बस्तु यानी प्रेम की दौलत का हासिल करना, जिस क़दर बन सके हर एक जीव को ज़रूर और फ़र्ज़ है। बग़ैर इसके मनुष्य पशू से बदतर हो जाता है ॥

साखी-१

जा घट प्रेम न संचरे सो घट जान मसान।
जैसे खाल लुहार की स्वांस लेत बिन प्रान ॥

साखी-२

प्रेम बनिज नहिं कर सके चढ़े न नाम की गैल।
मानुष केरी खालरी ओढ़ फिरे ज्यों बैल ॥

साखी-३

प्रेम कारन जिसने कीन्हा खर्च माल ।
धन है वह जन उसको मिलिया प्रेम हाल ॥

साखी-४

प्रेम अग्नी अपने हिरदे बालिये ।
फ़िक्र भजन और बंदगी का जालिये ॥

साखी-५

वाह वाह हे प्रेम तू है निरमला ।
ग़ैर को प्यारे सिवा दीन्हा जला ॥

साखी-६

पहिले जिसने अपना घर दीन्हा उजाड़ ।
पाई फिर गुरु प्रेम की दौलत अपार ॥

साखी-७

जोगी जंगम सेवड़ा सन्यासी दरवेश ।
बिना प्रेम पहुंचे नहीं दुर्लभ सतगुरु देश ॥

शब्द प्रेम बानी जिल्द ३

अरी हे सहेली प्यारी-प्रेम की दौलत भारी
छिन २ भक्ति कमाओ ॥ टेक ॥

भक्ति बिना सब बिरथा करनी । थोथा ज्ञान ध्यान चित धरनी ॥ यह नहिं मुक्ति उपाओ ॥ १ ॥

प्रेम बिना कोइ जाय न पारा। पहुँचे नहिं सतगुरु दरबारा ॥ क्यों बिरथा बैस गँवाओ ॥ २ ॥

ऐसा प्रेम गुरू से पावे। जो कोइ उनकी कार कमावे ॥ उन चरनन पर सीस नवाओ ॥ ३ ॥

दीन ग़रीबी धारो मन में। प्रीत बसाओ तुम निज मन में घट में शब्द जगाओ ॥ ४ ॥

दया मेहर से सुरत चढ़ावें। धुर पद में वे लें पहुँचावें ॥ राधास्वामी चरन समाओ ॥ ५ ॥

१२—यह अनमोल पदार्थ यानी कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों का प्रेम संत सतगुरु के सतसंग से प्राप्त हो सक्ता है। और कहीं चाहे कोई जिस क़दर तलाश और मिहनत करे, सच्चे प्रेम का किनका भी नहीं मिल सक्ता है, और न हिरदे में ठहर सक्ता है और न बढ़ सक्ता है ॥

१३—जो कि बिना प्रेम कुल्ल मालिक के दरबार में पहुँचना मुमकिन नहीं है, और बिना वहाँ पहुंचे पूरा उद्धार यानी छुटकारा, काल और करम और मन और माया के जाल और घेरे से हो नहीं सक्ता, इस वास्ते कुल्ल जीवों को जो अपना निरवार चाहें, संत सतगुरु का खोज लगा कर उनके सतसंग में शामिल होना चाहिये और उपदेश लेकर अभ्यास शुरू करना चाहिये ॥

१४—संत सतगुरु का सतसंग इस दुनिया में निहायत दुर्लभ यानी मुशकिल है, पर सच्चे खोजी और दर्दी को दया करके सहज में मिल जाता है ॥

१५—संत सतगुरु के दर्शन और बचन से उन्हीं जीवों को शान्ती और सीतलता प्राप्त होगी जिनके हिरदे में सच्चा खोज और दर्द सच्चे मालिक के मिलने का है। और जो जीव संसार के भोग और बिलास चाहते हैं, और उन्हीं में उनको रस और आनंद आता है, वे संत सतगुरु के सतसंग में नहीं ठहर सकेंगे, और न उनको उसकी कुछ क़दर मालूम पड़ेगी ॥

१६—जो कोई संत सतगुरु के सतसंग में शामिल होगा, वे उसको महिमां धुर धाम और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल की (जो उनका निज रूप है) सुना कर, चरनों का प्रेम हिरदे में बसावेंगे, और उसी प्रेम के वसीले से अपनी दया का बल देकर घट में रास्तह तै करावेंगे ॥

१७—यह प्रेम जिसके घट में पैदा हुआ वह सदा मगन और किसी क़दर निःचिन्त रहता है और अभ्यास भी उस्से सहज बनता है, और अख़ीर वक़्त पर मन और सुरत के सिमटाव और खिंचाव में मदद देता है, और शब्द और स्वरूप को सहज में प्रघट कराता है ॥

१८—जिसके घट में मालिक के चरनों का प्रेम बसा है, उसको कुछ तकलीफ़ मौत के वक़्त देह छोड़ने की नहीं ब्यापेगी, बल्कि आनंद और सरूर विशेष उस वक़्त प्राप्त होगा, और जिस क़दर सुरत का खिंचाव होता जावेगा, वह आनंद बढ़ता जावेगा, और जब तक कि धुर पद में पहुंचने का नम्बर आवे, ऊंचे देश के सुख अस्थान में बासा पावेगा, और फिर नरदेही में लाकर और बाक़ी अभ्यास पूरा कराकर, धुर पद में पहुंचावेगा ॥

१६–यह सच्च है कि दुनियादारों के साथ भी दुनिया का सामान और धन और माल नहीं जाता, लेकिन वे भोगों की बासना और कुटम्ब परिवार और धन माल का मोह संग ले जाते हैं और वह अख़ीर वक़्त पर देह के छूटने में बहुत तकलीफ़ देता है। और थोड़ी दूर आगे चलकर यानी छठे चक्र के परे सुन्न में पहुंच कर, फ़ुरना उसी बासना और देह और कुटम्ब के संग की उठाकर सुरत को नीचे खींचता है, और करम अनुसार नई देह में बासा देता है ॥

२०—यह हालत दुनियादारों की बसबब न मिलने संत सतगुरु के (जो कि जीवों के इस लोक और पर-लोक में सच्चे सहाई हैं) और न पैदा होने मालिक

के चरनों के प्रेम के घट में, हुई, यानी मौत का कष्ट और कलेश और जनम मरन का दुख भोगना पड़ा। और जब तक संत सतगुरु से मेला न होगा, और प्रेम घट में प्रघट न होगा, तब तक यह भरमना जीवों की चौरासी के चक्कर में दूर न होगी ॥

२१--इस वास्ते बारम्बार कहा जाता है कि अपने जीव के कल्यान के लिये सब को लाज़िम और फ़र्ज़ है कि संत सतगुरु या राधास्वामी संगत से मिल कर, और सुरत शब्द मारग का उपदेश लेकर, जिस क़दर बने अभ्यास करें। और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों का थोड़ा बहुत प्रेम अपने हिरदे में जगावें, ताकि इस जिंगदी में और आइंदह को उनकी सहायता होवे, और जनम मरन के कष्ट और कलेश से बच कर, एक दिन परम धाम में बासा पाकर, हमेशः को सुखी हो जावें ॥

बचन-१७

कलजुग करम धरम नहिं कोई।
नाम बिना उद्धार न होई ॥

१—नाम की यह महिमां है जो सोते पुर्ष को नाम लेकर पुकारो तो वह जाग उठता है फिर जो

जागता पुर्ष है उसका नाम लेकर पुकारोगे तो क्यों नहीं बोलेगा। इस वास्ते सब जीवों को चाहिये कि अपने जीव के कल्यान के लिये कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और उनके धाम का पता और भेद लेकर उनके निज नाम को जुगत के साथ उच्चारण करें, और अंतर में उसकी धुन सुनें ॥

२—नाम की दो क़िसमें हैं, एक धुन्यात्मक दूसरी बर्णात्मक। धुन्यात्मक नाम वह है कि जिसकी धुन हर दम घट में आपही आप बग़ैर ज़बान और बाजे के हो रही है। बर्णात्मक नाम उसको कहते हैं कि जो लिखने और पढ़ने में आवे ॥

३—बर्णात्मक नाम का सुमिरन आम तौर पर जारी है, मगर लोग उसको बिना भेद और जुगत के करते हैं, इस सबब से फ़ायदा उसका मालूम नहीं पड़ता। जो नामी का भेद लेकर ठिकाने पर सुमिरन करें, तो उसका फ़ायदा जल्द मालूम पड़े ॥

४—धुन्यात्मक नाम का अभ्यास यह है, कि अपने घट में मुक़र्ररह अस्थान पर, मन और सुरत और दृष्ट को जमा कर, नाम की धुन को तवज्जह के साथ सुनें और धुन के आसरे मन और सुरत को ऊंचे देश की तरफ़ चलावें और चढ़ावें ॥

५–जो कि जाग्रत अवस्था में सुरत की बैठक आंखों में है, और यही करम का अस्थान है, यानी यहां ही बैठ कर देह और दुनिया की कारवाई होती है, और दुख सुख व्यापता है, इस वास्ते जब तक कि सुरत का अस्थान नहीं बदलेगा, यानी आंख के मुक़ाम से ऊपर और अंदर की तरफ़ नहीं चढ़ाई जावेगी, तब तक देह और दुनिया के साथ बंधन और दुख सुख का भोग नहीं छूटेगा। और यह चढ़ाई बे-ख़तरे और सहज में और पकाई और मज़बूती के साथ, धुन्यात्मक नाम और अभ्यास से हो सक्की है। और यह अभ्यास बनिस्बत प्राणायाम और दूसरे अभ्यासों के बहुत सहज है और लड़के और जवान और बूढ़े इस्त्री और पुर्ष से, चाहे ग्रहस्त में होवें या बिरक्त, बग़ैर छोड़ने घर बार और रोज़गार के, बिला दिक़्क़त और आसानी के साथ बन सक्ता है ॥

६–इस अभ्यास को सुरत शब्द मारग कहते हैं और उसका भेद और तरीक़ा सिर्फ़ शब्द भेदी और शब्द अभ्यासी और शब्द स्वरूपी गुरू से जिनको संत सतगुरु कहते हैं मिल सक्ता है। और किसी को यह भेद मालूम नहीं है, और न ऐसी किसी की गत हो सक्की है कि अभ्यासी को अंतर में मदद दे सके और अपनी दया

का बल देकर रास्तह तै करावे और एक दिन धुर पद में पहुंचावे ॥

७—ऐसे संत सतगुरु दुर्लभ हैं यानी हर किसी को नहीं मिल सकें, लेकिन सच्चे खोजी और दर्दी को अपनी दया से सहज में मिल जाते हैं। उनके सत-संग की महिमां बहुत भारी है, सच्ची गढ़त मन की वहीं होती है, और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों का प्रेम हिरदे में बसाया जाता है, और संसार की तरफ़ से चित्त थोड़ा बहुत उपराम हो जाता है, और अभ्यास में थोड़ा बहुत रस मिलता है ॥

८—संत सतगुरु का प्रघट होना इस दुनिया में जीवों के उपकार के वास्ते होता है। उनके दर्शन और सेवा करने और बचन सुन्ने और उनकी जुगत का अभ्यास करने से, सब को प्रेम की बख़्शिश होती है। और वह प्रेम दिन २ हिरदे की सफ़ाई करता है, और संसारी भोगों की बासना घटाता है, और मन और सुरत को ऊंचे देश यानी निज घर की तरफ़ चलाता है ॥

९—सतगुरु की गत भारी है, वे चाहे जिसको छिन भर में निहाल कर सकें हैं, और सहज में भौसागर के पार निज देश में पहुंचा सकें हैं ॥

१०—कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल की भक्ती का

बीजा, सिवाय संत सतगुरु के जीवों के हिरदे में और कोई नहीं डाल सक्ता है, और न ऐसी भक्ती को जो किसी के हिरदे में पैदा हुई है कोई शख़्स बढ़ा सक्ता है ॥

११—इस वास्ते कुल्ल जीवों को जो अबिनाशी उद्धार चाहें, मुनासिब और लाज़िम है, कि पहिले संत सत-गुरु को खोज करके उनके सतसंग में शामिल होवें, और वहाँ भक्ती अंग में बर्ताव करें, और प्रेमी जन की हालत और रहनी देख कर, जिस कदर बन सके उनके मुवाफ़िक़ करनी करे और रहनी रहें तब कुछ फ़ायदह हासिल होना शुरू होगा ॥

१२—धुन्यात्मक नाम यानी शब्द की महिमाँ अपार है। कुल्ल रचना शब्द से हुइ, और शब्द ही के आसरे ठहरी हुई है, और शब्द ही के वसीले से कुल्ल कारोबार दुनिया के जारी हैं ॥

१३—शब्द की धार चेतन्य की धार का नाम है। यही जान और नूर की धार है, और शब्द ही चेतन्य का निशान और ज़हूरा है, यानी जब तक मनुष्य या कोई और जानदार बोलता है, जिंदह है, और जहां बोल बन्द हुआ मुर्दह है ॥

१४—असल में शब्द की धार धुर पद यानी कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में प्रघट हुई

और वहां से उतर कर और रास्ते के ठेके मुक़र्रर करती हुई, और मंडल बांध कर रचना करती हुई, पिंड में आंखों के मुक़ाम पर ठहरी है, और यहां बैठ कर देह और दुनिया का कारज कर रही है ॥

१५—राधास्वामी देश में माया नहीं है, और जहाँ से कि उसका ज़हूर हुआ, वहाँ से यह सुरत की धार पर ख़ोल पै ख़ोल चढ़ाती चली आई है, और इन्हीं ख़ोलों का नाम देही है ॥

१६—अब जब तक कि यह सब ख़ोल उतर कर सुरत रूहानी यानी निर्मल चेतन्य देश में न पहुंचे, तब तक उसका सच्चा और पूरा निरवार नहीं हो सक्ता, क्योंकि किसी न किसी देहों में बंधन और उनके साथ पदार्थों में आशक़ी रही आवेगी। और जो कि माया के मसाले की बनी हुई देह हमेशह एक रस क़ायम नहीं रह सक्ती इस सबब से जनम मरन का भी चक्कर नहीं छूट सक्ता ॥

१७—सत्तपुर्ष राधास्वामी यानी निर्मल चेतन्य देश माया के घेर के पार है, और वहाँ चढ़ कर पहुंचना सुरत का मृत्यु लोक से, बग़ैर शब्द की धार के किसी सूरत में मुमकिन नहीं है। यानी शब्द को सुन्ती हुई सुरत उसी चेतन्य धार पर जिसके संग

उतरी है, सवार होकर उलट सक्री है और कोई रास्तह धुर पद में पहुंचने का रचा नहीं गया ॥

१८—शब्द की धार को धुन्यातमक नाम कहते हैं, जो इस नाम के भेद और अभ्यास से बेख़बर हैं उनका सच्चा उद्धार हरगिज़ नहीं हो सक्ता ॥

१९—जो कि बग़ैर शब्द के अभ्यास के उद्धार मुमकिन नहीं है, इस सबब से शब्द यानी नाम की महिमां हर एक मत में बहुत की है, मगर बसबब न मालूम होने भेद और तरीक़ा अभ्यास या जुगत चलने के, कोई जीव उस महिमाँ को सुन कर फ़ायदह नहीं उठा सक्ता ॥

२०—अब कि कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल ने संत सतगुरु रूप धारन करके, भेद शब्द का मै जुगत चलने के निहायत सहज तरकीब के साथ खोल कर जीवों को समझाया और बानी में बर्णन किया है, इस वास्ते कुल्ल जीवों को चाहिये कि अपने जीव के असली कल्यान के वास्ते राधास्वामी मत में शामिल होकर और उपदेश सुरत शब्द मारग का लेकर, जिस क़दर बन सके अभ्यास शुरू करें, और अपनी नरदेह जो कि मुशकिल से हाथ आई है सुफल करें। नहीं तो चौरासी में भरमना और ऊँच नीच जोन में पैदा

होकर, हमेशह दुख सुख और जनम मरन का कलेश सहना पड़ेगा ॥

बचन-१८

लेना देना पकड़ना और छोड़ना यानी जिस क़दर बाहर से लेना उसी क़दर देना और जिस क़दर अंतर में लेना, वह उलट कर और बढ़ा कर कुल्ल मालिक के सन्मुख पेश करना । और सत्त को पकड़ना और असत्त को छोड़ना ॥

पहिले बाहर के लेन देन का बर्णन ।

१—दुनिया में लेन देन यानी भाजी ब्यौहार आम तौर पर जारी है, यानी हर एक जीव कितने ही जीवों से कुछ लेता है और देता भी है। यह बर्ताव कुल्ल रचना में चाहे आसमानी है या ज़मीनी जारी है ॥

२—अब ग़ौर से देखो कि कुल्ल जीव इस लोक में अपना २ अहार बाहर से लेते हैं, अस्थूल अंग उसका पेशाब और पाख़ाने के रास्ते निकल जाता है, और सूक्षम अंग पसीने के रास्ते और भी इन्द्रियों की

कार्रवाइ में, जैसे चलना फिरना बैठना उठना देखना सुन्ना और दूसरे कामों के करने यानी मिहनत मज़दूरी में ख़र्च होता है; जो थोड़ा सा हिस्सह बाक़ी रहा वह देह के बढ़ाव और परवरिश में काम आता है ॥

३—जो कि माया के मसाले का झुकाव बाहर की जानिब और नीचे की तरफ़ है, इस वास्ते जिस क़दर उसका ख़ुलासह देह में बढ़ैगा, उसी क़दर झुकाव और पकड़ संसार और संसार के पदार्थों में होगी, और वह ऊंचे देश में सुरत के चढ़ाने के अभ्यास में बिघन कारक होगा। यही सबब है कि रागी और भोगी जीव सच्चे परमार्थ का अभ्यास दुरुस्ती से नहीं कर सकें, और न सत संग में संत सतगुरु के ठहर सकें हैं ॥

४—जो सच्चे परमार्थ का अभ्यास करते हैं, वे इस लोक का अहार ज़रूरत के मुवाफ़िक़ ग्रहन करते हैं, और जहां तक मुमकिन होता है उसको यहां का यहीं ख़ारिज और ख़र्च कर देते हैं, यानी देह में जमा होने नहीं देते, सिर्फ़ ज़रूरत और कार्रवाई के मुवाफ़िक़ रखते हैं। क्योंकि इस मसाले का स्वभाव है कि सुरत को बाहर मुखी कार्रवाई में मशग़ूल रखता है, और अंतर में ऊंचे देश की तरफ़ चढ़ने में बिघन डालता है ॥

५—इसी तरह सब इन्द्रियां बाहर से अपने भोग के वक़्त सामान लेती हैं, और जमा भी रखती हैं, लेकिन परमार्थी जीव वक़्त मुनासिब पर और आहिस्तह २ अभ्यास की मदद से, इन इन्द्रियों के इकट्ठे किये हुए सामान को ख़ारिज करता रहता है, या जलाता और मिटाता रहता है ॥

६—सिवाय अहार लेने वाली इन्द्री के और इन्द्रियों का सामान जमा करना यह है, कि जैसे आँख का सूरतों को और कान का पढ़ी और सुनी हुई बातों को वग़ैरः २ ॥ यह इन्द्रियां सामान जमा भी करती हैं, और उस के मुवाफ़िक़ या उससे बढ़ के और सामान की चाह और तरंग पैदा करती हैं, कि जिस के सबब से मन हमेशह चंचल रहता है, और जीव किसी न किसी क़िसम की करतूत करने में अटका रहता है, यानी इस क़द्र फ़ुर्सत नहीं पाता कि कभी अपने असली फ़ायदह और नुक़सान का सोच और फ़िकर करे ॥

७—नई २ चाहों और तरंगों के उठाने से जीव का बंधन संसार में दिन २ बढ़ता रहता है, और करम में मशग़ूली और आशक़ी भी बढ़ती रहती है, कि जिसके सबब से छुटकारा निहायत मुशकिल हो गया है ॥

दूसरे अंतर के लेन देन का बयान ।

८—अंतर में जो सुरत की धार चेतन्यता लिये

हुये उतर कर आई है, वही सामान जीव को धुर घर से मिला है, और वही इस पिंड में सर्ब शक्ती और चेतन्यता और प्रेम और आनंद का छोटा भंडार है ॥

९—जो कोई इस चेतन्यता और प्रेम को निपट संसारी कामों में, और हासिल करने मन और इन्द्रियों के भोग और बिलासों में ख़र्च करते हैं, वह अपनी पूंजी गंवाते हैं। और फल उसका यह होता है कि बसबब ज़बर रहने संसार और भोगों की चाह और बासना के, यह जीव बारम्बार देह धरते हैं, और अपने निज घर की कभी सुध भी नहीं लेते, और करम अनुसार नीची जोनों में भी भरमते हैं, और अपनी चेतन्यता शक्ती बरबाद करते हैं ॥

१०—मुनासिब तो यह है कि कुल्ल जीव अपने निज घर की सुध लेकर, और संत सतगुरु से जुगत चलने की दरियाफ़्त करके, थोड़ी बहुत कार्रवाई उसकी करें। और सच्चे मालिक राधास्वामी दयाल के दर्शनों की चाह अपने घट में ज़बर पैदा करें कि जिसके सबब से दिन २ इनका दरजा सुरत की चढ़ाई के साथ बढ़ता जावे, और एक दिन कुल्ल मालिक के सन्मुख पहुंच कर उसका दर्शन करें, और निज धाम में जो कि अमर और परम आनंद का भंडार है, बासा पावें ॥

११–इस कारवाई यानी सुरत शब्द मारग के अभ्यास से, सुरत दिन २ ऊपर को चढ़ती और चेतन्यता और नूरानियत उसकी बढ़ती जाती है ॥

१२—सुरत को चढ़ा कर राधास्वामी देश में पहुंचना यही काम ज़रूरी और कठिन है। इसी को जो चेतन्यता और प्रेम और आनंद की शक्ती कुल्ल मालिक के चरनों से वक़्त उतार सुरत के हासिल हुई थी, फेर देना यानी वापिस लेजाकर जिसको उलटाना कहते हैं, कुल्ल मालिक के चरनों में पेश करना, समझना चाहिये ॥

१३–जो कोई यह काम सुरत की चढ़ाई का सुरत शब्द मारग का अभ्यास करके नहीं करेंगे उनकी सुरत मुवाफ़िक़ ज़बर संसारी बासना के जनम मरन में पड़ी रहेगी, और नीच ऊँच जोनों में करम अनुसार भरमती रहेगी। इसका नाम अपने मालिक को भूलना और उसकी अमानत वापिस न देना, बल्कि उसको बेजा और ना मुनासिब बर्ताव और ब्यौहार के साथ ख़राब करना और दिन २ घटाना है, और इसी को जीव का अकाज और अकल्यान कहते हैं। ऐसे जीव हमेशः दुख सुख का भोग करते हैं और जनम मरन का कलेश सहते रहेंगे ॥

१४–जिन जीवों को इस बात का ख़्याल है, कि जो पूंजी सच्चे माता पिता कुल्ल मालिक ने बख़्शी है उसको बढ़ाकर मालिक के सन्मुख पेश करना और किसी क़िसम के दुनियावी झगड़े रगड़े में न पड़ना हर एक पर फ़र्ज़ और लाज़िम है वेही जीव सच्चे परमार्थी और भक्त कहलाते हैं, और उन्हीं को संत सतगुरु अपना दर्शन दे कर और भेद रास्ते और मंज़िलों का समझा कर और चलने की जुगत यानी सुरत शब्द मारग का उपदेश देकर अपनी दया और मेहर से धुर पद में पहुँचावेंगे ।।

तीसरे सत्त को पकड़ना और असत्त को छोड़ना ।

१५—मालूम होवे कि कुल्ल रचना में कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल सत्त स्वरूप हैं, या उनकी अंस सुरत सत्त रूप है। और बाक़ी जो कुछ कि है या नज़र आता है, वह मायक और असत्त है, यानी हमेशह एक रस ठहर नहीं सक्ता ॥

१६—रचना में जो नाम और रूप हैं, वह जानदारों में सुरत के नाम और रूप हैं ।।

१७—यह नाम और रूप सुरत के ठहराव से नज़र आते हैं, और जब सुरत का किसी देह से बिजोग हो जाता है, तब उस नाम और रूप का भी अभाव

हो जाता है। क्योंकि सत्त बस्तु सुरत थी, उसके अलहदह होने पर देह यानी असत्त बस्तु का अभाव हो गया ॥

१८—अब बिचार करो कि जो कोई सुरत की (जो कि सत्त बस्तु है) पहिचान करके, एक दूसरे से प्रीत करेगा उसको वक़्त सुरत के बिजोग के इस क़दर झटका नहीं लगेगा, जैसा कि उन लोगों को कष्ट और कलेश होता है, जो कि देह रूप से प्रीत करते हैं, और चेतन्य सुरत की पहिचान नहीं करते और उसके हाल से बेख़बर हैं ॥

१९—ख़ुलासह यह है कि नाशमान पदार्थ में बंधन मन का करने से हमेशह तकलीफ़ पैदा होगी, और बिजोग का कलेश सहना पड़ेगा, इस वास्ते मुनासिब है कि ज़ाहरी स्वरूप में मन और इंद्रियों का सख़्त बंधन न चाहिए, नहीं तो नतीजा उसका दुख और कलेश होगा ॥

२०—जहां कि सत्त और असत्त का आपस में संग या मेल है, उस देश में कोई पदार्थ या नाम और रूप हमेशह एक रस क़ायम नहीं रह सक्ता, फिर जो कोई ऐसी रचना में दिलबंदी करेगा, यानी अपने मन को बांधेगा वह हमेशह जनम और मरन और दुख सुख के चक्कर में पड़ा रहेगा ॥

२१—इस वास्ते संत फ़रमाते हैं कि जहां तक माया का घेर है, वहीं तक असत्त का फेरा है। जब तक उस घेरे के पार सुरत न जावेगी, तब तक असत्त के देश में लाचार उसको किसी न किसी क़िसम की देह धारन करके रहना पड़ेगा। और जब देह नाश-मान और असत्त हुई, तब जनम मरन का चक्कर भी ज़रूर जारी रहेगा, और दुख सुख और कष्ट और कलेश भोगना पड़ेगा ॥

२२—माया के घेर के पार सत्त यानी निर्मल चेतन्य का देश है, और वहीं सत्त पुर्ष राधास्वामी कुल्ल मालिक का धाम है। यह धाम अजर और अमर है और महा चेतन्य और महा ज्ञान और महा आनंद और महा प्रेम और महा सत्त का भंडार है। यहीं से सुरत का आदि में निकास और उतार हुआ और जब इसी धाम में उलट कर सुरत आवेगी तब सच्चा और पूरा छुटकारा काल और माया के जाल से होवेगा, और जनम मरन का चक्कर हट जावेगा और सुरत परम आनंद को प्राप्त होगी ॥

२३—इस वास्ते सब जीवों को जो अपना सच्चा निरवार और परम आनंद की प्राप्ती चाहें मुनासिब और लाज़िम है, कि माया के देश और मायक

रचना से आहिस्तह २ चित्त हटाकर, सत्त देश में पहुँचने का जतन करते रहें–यानी सुरत शब्द मारग का अभ्यास नित्त जारी रक्खें और अभिलाषा राधास्वामी दयाल और उनके धाम के दर्शन की नित्त बढ़ाते और पकाते रहें। तो संत सतगुरु और राधास्वामी दयाल की दया से एकदिन कारज पूरा बन जावेगा ॥

२४–जिस क़दर भूल और भरम है वह माया के देश में है, यानी जहां माया के गिलाफ़ सुरत पर जो सत्त और चेतन्य है चढ़े हुए हैं। जब तक यह ग़िलाफ़ नहीं उतरेंगे, तब तक अज्ञान और ग़फ़लत पूरी तौर से दूर न होगी, और यह बग़ैर चढ़ाई सुरत के सुरत शब्द मारग के अभ्यास से और तरह मुमकिन नहीं है ॥

२५–सुरत शब्द मारग के भेद और अभ्यास से कुल्ल जीव बेख़बर हैं, सिर्फ़ राधास्वामी मत में इसका उपदेश आज कल जारी है। जो कोई सच्चा परमार्थी (जिसके मनमें सच्चा खोज और दर्द है) चाहे, वह राधास्वामी संगत में शामिल होकर, और उपदेश लेकर और अभ्यास शुरू करके, और अपने जीव का प्रत्यक्ष कल्यान होता हुआ देख कर अपना कारज बना सक्ता है ॥

बचन--१६

सतगुरु बचन सुनो और मानो
गुरु चरन प्रीत पालो और चालो
राधास्वामी चरन पकड़ के धाओ
निज घर जाय अमर सुख पाओ

१—जिस किसी को कि दुनिया और उसके सामान की नाशमानता, और जीव का दुनिया में ठहराव थोड़े दिनों का देखकर चेत हुआ है, और वह सच्चे मालिक और उसके धाम का, जो अमर और परम आनंद का भंडार है खोज और पता लगाना चाहता है, और जिसको जुगत चलने और पहुँचने उस मुक़ाम की दरियाफ़्त करना मंज़ूर है, उसके वास्ते यह बचन कहा जाता है ।।

२—पहिले संत सतगुरु या उनकी संगत का खोज लगा कर, उनके सत संग में शामिल होवे, और दीनता और अदब और सच्ची ग़रज़मंदी के साथ उनके सन्मुख जावे और शौक़ और प्रीत के साथ उनके बचन सुने और समझे और जो बचन अपने वास्ते मुफ़ीद और लायक़ देखे, उनके मुवाफ़िक़ कारवाई शुरू करे, यानी जो ख़ियालात नाक़िस और ना मुनासिब

उसके मन में पहिले से जमा हुए और धरे हैं, उनको अहिस्तह २ निकाले और छोड़े और जो बातें और चाल ढ़ाल उसको वास्ते हासिल करने सच्चे परमार्थ के ज़रूर दरकार हैं, उनको पकड़े और उनके मुवाफ़िक़ अपनी रहनी दुरुस्त करे ॥

३—सिवाय इसके जो प्रेमी और भक्त जन संत सतगुरु के सत संग में शामिल हैं या होते रहते हैं, उनकी करनी और रहनी देख कर उसके मुवाफ़िक़ अपनी कार्रवाई भी दुरुस्त करे, और उमंग के साथ संत सतगुरु और प्रेमी जन की तन मन धन से सेवा करे ॥

४—जो कि संत सतगुरु के सत संग में हर रोज़ महिमां कुल्ल मालिक, और उससे मिलने के मारग यानी सुरत शब्द के अभ्यास की बर्णन की जाती है, उसको सुनकर और समझ कर शौक़ के साथ उपदेश लेकर अंतर अभ्यास शुरू करे, और भेद रास्ते और अस्थानों का अच्छी तरह समझ लेवे ॥

५—संत सतगुरु के सत संग में और भी संत मत में प्रेम की महिमां ज़ोर देकर बर्णन की जाती है क्योंकि बग़ैर प्रेम के न कोई दुनिया का काम दुरुस्त बन सक्ता है, और न परमार्थ का रास्ता चल सक्ता है

और न मन और इंद्रियों के बिकार और माया के बिघन दूर हो सक्ते हैं ॥

६–संत सतगुरु की प्रीत कुल्ल दुनियावी ज़ाहरी और अस्थूल प्रीतों से छुड़ाने वाली है, इस वास्ते सच्चे परमार्थी को पहले मुनासिब है कि उनके चरनों में गहरी प्रीत करे। यह प्रीत सिर्फ़ दुनिया के बंधनों को ढीला करने वाली और हटाने वाली नहीं है बल्कि अंतर अभ्यास में बहुत मदद मन और सुरत के सिमटाव और चढ़ाई में देती है ॥

७–कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में गहरी प्रतीत और प्रीत का आना संत सतगुरु की प्रीत और प्रतीत पर मुनहसिर है क्योंकि कुल्ल मालिक का स्वरूप और संत सतगुरु का निज रूप एक ही है। जो संत सतगुरु के ज़ाहरी स्वरूप में गहरा प्यार आया तो निजरूप में भी उसी क़दर मुहब्बत पैदा होवेगी, और यह मुहब्बत शब्द के अभ्यास में गहरी मदद देगी, यानी एक दिन धुर धाम में पहुँचा कर छोड़ेगी ॥

८–जिस क़दर संत सतगुरु और कुल्ल मालिक के चरनों में प्रीत बढ़ती और पकती जावेगी, उसी क़दर अंतर में रास्ता तै होता जावेगा, और रास्ता वही

सुरत की धार है कि जो शब्द की धार है यानी शब्द सुनते हुए सुरत की धार को समेटना और उल्-टाना मुमकिन है, और कोई जुगत चढ़ाई की नहीं है और नहीं रची गई है ॥

६—यही सुरत और शब्द की धार कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु के चरन हैं। इस धार यानी चरनों में प्रीत लानी चाहिये, और इसी धार यानी चरनों को पकड़ के घट में चलना चाहिये ॥

१०—यही सुरत और शब्द की धार संत सतगुरु और राधास्वामी दयाल के चरनों की धार है, और वही नूर और अमृत और चेतन्य और ज्ञान की धार है जिसने इस धार को पकड़ा उसने गोया कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु का दामन पकड़ लिया, या यह कि चरनों में लिपट गया ॥

११—जिसको वक़्त अभ्यास के शब्द साफ़ सुनाई देता है, और कुछ आनंद आता है, या यह कि वक़्त ध्यान के उसके मन और सुरत सिमट कर चरनों में लग जाते हैं, और रस लेते हैं, तो जानना चाहिये कि उसके अभ्यास की हालत अच्छी है, और दिन २ तरक्क़ी होती जावेगी ॥

१२—जिस क़दर अभ्यासी को अंतर में रस और

आनंद मिलता जावेगा, उसी क़दर उसका प्रेम चरनों में कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु के बढ़ता जावेगा, और उसी क़दर प्रेमी जन में प्यार आता जावेगा, और उसी क़दर संसार और उसके भोग बिलास और सामान से चित्त हटता जावेगा ॥

१३--जैसे कि मन और सुरत सिमट कर चढ़ते जावेंगे, वैसेही रफ़्तह २ अभ्यास का रस और चरनों में प्रेम ज़्यादह बढ़ेगा, और प्रेमी अभ्यासी को महा सुख और आनंद प्राप्त होता जावेगा ॥

१४—यही अभ्यास जो बिलानागह जारी रहेगा एक दिन संत सतगुरु की दया से धुर धाम में पहुँचा कर छोड़ेगा, और वही परम आनंद और महासुख का भंडार है ॥

१५—यह काम जलदी का नहीं है । सुरत का उतार पिंड में छठे चक्र के मुक़ाम से अठारह बीस बर्ष में होता है, और उसमें आसानी बहुत है और मदद पूरी मिलती है, यानी दिन और रात कुटम्बी लोग बराबर उतार में मदद देते हैं । बरख़िलाफ़ इसके चढ़ाई मुश्किल है, और उसका अभ्यास बहुत थोड़ी देर किया जाता है, और बाक़ी वक़्त संसारी कारो-

बार में सर्फ़ होता है, इस वास्ते प्रेमी अभ्यासी को चाहिये कि प्रतीत और प्रीत सहित अपना अभ्यास नेम से हर रोज़ दो बार तीन बार बल्कि चार बार करता रहे, और धीरज के साथ अपनी तरक़्क़ी की जांच करता हुआ कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में शुकरानह करे, और प्रीत और प्रतीत बढ़ाता रहे, तब एक दो तीन या चार जनम में कारज बन जावेगा ॥

१६—मालूम होवे कि हर जनम में तरक़्की ज़्यादह से ज़्यादह होती जावेगी, और संत सतगुरु और उनका सतसंग भी मिलेगा, और जहां से कि अभ्यास पिछले जनम में छोड़ा वहीं से आगे बढ़ेगा, और बनिसबत पहिले जनम के दूसरा जनम हरतरह से बेहतर होगा ॥

१७—जिस किसी के मन में शौक़ तेज़ है और प्रेम ज़बर है, और सफ़ाई जल्द करी है, यानी अपने मन से दुनिया की ख़्वाहशों को निकाल दिया और घटा दिया है, वह एकही जनम में दो जनम की कार्रवाई कर सक्ता है, और इस तरह से उसका काम किसी क़दर जल्द बनना मुमकिन है, लेकिन जो यह सिफ़ात उसमें नहीं हैं और ख़्वाहमख़्वाह जल्दी और घबराहट ज़ाहर करता है, तो समझना

चाहिये कि वह शख़्स नादान है, और अचरज नहीं कि जल्दी के सबब से किसी क़दर निरास होकर अभ्यास छोड़ देवे, और राधास्वामी मत को हक़ीर समझ कर उस्से जुदा हो जावे। ऐसे जीवों को नादान और अभागी समझना चाहिये ॥

१८—अक़लमंद और दाना वही है कि जो अपनी हालत और ताक़त और लियाक़त को जांचता और परखता हुआ चलता है, और धीरज के साथ अपना अभ्यास करके उसका रस थोड़ा बहुत लेकर मगन रहता है। और तरक़्क़ी का उम्मैदवार होकर संत सतगुरु और राधास्वामी दयाल के चरनों में प्रीत और प्रतीत बढ़ाता जाता है। ऐसे शख़्स का कभी अकाज नहीं होगा, और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल उसको तरक़्क़ी देते हुए एक दिन निज धाम में बासा देवेंगे ॥

बचन–२०

जागो, भागो, और तोड़ो, जोड़ो ॥

(ख़्वाब ग़फ़लत और मोह नींद से जागो) (निज घर यानी राधास्वामी धाम की तरफ़ भागो) (और जगत

से प्रीत तोड़ो यानी दुनिया का मोह छोड़ो) और (राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु के चरनों में प्रीत जोड़ो)

१—कुल्ल जीव दुनिया और कुटम्ब परवार के मोह और कारोबार में इस क़दर मशग़ूल हैं, कि उनको कुल्ल मालिक और उसके निज धाम की कभी सुध भी नहीं आती। और बावजूदे कि तमाम जगत का अभाव होता हुआ देखते हैं और फिर अपनी मौत की याद नहीं लाते ॥

और कहते हैं कि कोई मालिक इस रचना का है और फिर उसका खोज या भजन या उसके चरनों में प्रीत नहीं करते ॥

और जानते हैं कि रूह या जीव आत्मा अमर है और फिर तहक़ीक़ नहीं करते कि बाद छोड़ने इस देह और देश के कहां जायँगे, और सुख पावेंगे या दुख ॥

दुनिया में जो थोड़े दिन का ठहराव है, उस अर्सह में वास्ते प्राप्ती सुख और दूर होने दुख के ज़िंदगी में रात दिन मिहनत करते हैं, और आइंदह बाद मौत

के वास्ते मिलने सुख और दूर होने कष्ट और कलेश के कोई जतन नहीं करते। इस क़िस्म की रहनी का नाम ख़्वाब ग़फ़लत और मोह नींद और भूल और भरम है।

२—इस ग़फ़लत और भूल से जिस क़दर जल्द हो सके कुल्ल जीवों को जागना यानी होशियार होना चाहिये, और होशियारी का निशान यह है कि कुल्ल मालिक का खोज लगाना, कि वह (१) कौन और (२) कैसा और (३) कहां है-और उस्से (४) किस तरकीब से मेल हो, (५) और देह धर कर दुख सुख और जनम मरन के चक्कर से कैसे बचाव होवे॥

३—इन सवालों का पूरा २ जवाब सिर्फ़ राधास्वामी मत में मिल् सक्ता है, और जो मत कि दुनिया में जारी हैं, उनमें इस भेद का बर्णन जैसा चाहिये वैसा नहीं है, और न तरक़ीब चढ़कर पहुँचने सुरत की कुल्ल मालिक के निज धाम में बयान की है॥

४—जवाब उन सवालों के यह हैं कि (१) कुल्ल मालिक सत्त पुर्ष राधास्वामी दयाल हैं, और (२) उनका शब्द स्वरूप है, और (३) उनका निज धाम ऊँचे से ऊँचे देश में है और (४) रास्ता उसका नैन

नगर से (जहां जीव की बैठक वक़्त जाग्रत के है) शुरू होता है, और शब्द को सुनती हुई यानी धुनको पकड़ के सुरत धुर धाम में पहुँच सक्ती है–और वहाँ दर्शन कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल का करके परम आनंद को प्राप्त होती है, और (५) देश में पहुंचने पर विदेह हो जाती है, यानी रूहानी स्वरूप हो जाता है, और जनम मरन का चक्कर छूट जाता है, क्योंकि दुख का भोग देह के सबब से होता है, और जनम मरन भी देह का होता है, और देह माया के मसाले से तयार होती है, और वह मसाला हमेशह एक रस क़ायम नहीं रहता है ॥

५–जो कोई सच्चा खोजी और दर्दी है, वह राधास्वामी संगत में शामिल होकर और भेद रास्ते और मुक़ामात का और जुगत चलने की दरियाफ़्त करके अभ्यास शुरू कर सक्ता है, और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु के चरनों में, प्रीत और प्रतीत बढ़ाने से चाल उसकी सहज और तेज़ चल सक्ती है ॥

६–जिस क़दर दुरुस्ती से अभ्यास ध्यान और भजन का, जिस किसी से बिरह और प्रेम अंग लेकर बन पडेगा, उसी क़दर उसको अंतर में रस और आनंद

प्राप्त होगा और उसी क़दर दुनिया और उसके भोगों से चित्त हटता जावेगा, और ख़्वाहिश भी घटती जावेगी।

७—इसी तरह अभ्यास करते २ कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु की दया और मेहर से एक दिन निज घर में बासा मिल जावेगा और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के दर्शन का बिलास और आनंद प्राप्त होगा ॥

८—यह कार्रवाई दुरुस्ती और आसानी से उस वक्त बन पड़ेगी, जब कि अभ्यासी के मन में संसार और उसके पदार्थों की तरफ़ से किसी क़दर बैराग आवेगा यानी सत संग में बैठ कर और बचन सुनकर, पुराने स्वभाव और आदतें और संसार और उसके भोगों की चाह मन से निकसती और घटती जावेंगी और बजाय उनके परमार्थ की क़दर और कुल्ल मालिक के चरनों का प्रेम और उसके धाम में पहुँचकर दर्शन हासिल करने का शौक़ पैदा होगा ॥

९—सच्चे प्रेमी को ऊपर का लिखा हुआ फ़ायदह संत सतगुरु के सतसंग से जल्द हासिल होगा और उसके प्रेम की हालत उनकी दया और मेहर से बढ़ती जावेगी, और उसके साथ अभ्यास की भी तरक़्क़ी होती जावेगी ॥

१०–इसी तरह दुनिया और उसके सामान से प्रेमी अभ्यासी का आहिस्तह २ पीछा छूटता चला जावेगा, और कुल्ल मालिक के चरनों में प्रीत और प्रतीत बढ़ती जावेगी ॥

११–खुलासह यह कि अंतर में सुरत इधर से सरकती और ऊंचे देश में चढ़ती चली जावेगी और जिस क़दर यह कार्रवाई बन्ती जावेगी उसी क़दर देह और दुनिया में बंधन घटता और हल्का होता जावेगा । क्योंकि बग़ैर इधर से हटने के मन और सुरत उधर की तरफ़ चल और चढ़ नहीं सक्के ॥

१२—जो लोग कि इस दुनिया को अपना घर और यहां के भोग बिलास और मान बड़ाई और हकूमत को अपना सुख और आनंद समझ रहे हैं, वे अपनी वासना और करनी अनुसार बारम्बार संसार में आवेंगे, और दुख सुख और जनम मरन का कलेश सहते रहेंगे ॥

१३—जो कोई थोड़ा शौक़ लेकर के भी राधास्वामी मत में शामिल होगा, और उपदेश लेकर थोड़ा बहुत अभ्यास सुरत शब्द मारग का शुरू करदेगा, वह भी सतगुरु की मेहर और दया से एक दिन पार हो जावेगा, और जनम मरन के कलेश से ... जावेगा ॥

१४–इस वास्ते कुल्ल जीवों को मुनासिब और लाज़िम है, कि जैसे तैसे भाव से राधास्वामी मत में शामिल होकर, और उपदेश सुरत शब्द मारग का लेकर, थोड़ा बहुत अभ्यास उसका शुरू कर दें तो उनका भी बचाव हो जावेगा, यानी एक दिन धुरपद में पहुंच कर परम आनंद को प्राप्त होवेंगे ॥

१५—राधास्वामी मत में बड़ा भारी फ़ायदह यह है, कि घर बार और रोज़गार छोड़ना नहीं पड़ता। ग्रहस्त में रहकर राधास्वामी मत का अभ्यास थोड़ा बहुत दुरुस्ती के साथ बन सक्ता है, बशर्ते कि संत सतगुरु के बचन के मुवाफ़िक़ कार्रवाई की जावे, और सहज में जीव का कल्यान हो सक्ता है। दूसरे मतों में यह फ़ायदह हासिल नहीं हो सक्ता क्योंकि जो कोई प्राणों के आसरे घट में चढ़ाई करना चाहे, उसको सख़्त स[illegible] और अभ्यास प्राणों के रोकने और चढ़ाने का [illegible]ड़ता है, और वह ग्रहस्त आश्रम में रहकर [illegible]सक्ता। ज़रासी बेअहतियाती में ख़तरा जान [illegible] सख़्त बीमारी का रहता है ॥

बचन-२१

पहिले जीव संसार में बसा, रसा, धसा, फँसा और ग्रसा गया, अब जो संत सतगुरु की मेहर से अपने घट में उलटने का जतन करे, और बसे, रसे, धसे, फँसे और ग्रसे-तो उसके जीव का कारज सहज में बन जावे ॥

१—आदि में सुरत राधास्वामी दयाल के चरनों से उतर और ब्रह्मान्ड से गुज़र कर पिन्ड में तीसरे तिल अथवा छठे चक्र के मुक़ाम पर ठहरी, और वहां से दो धार होकर दोनों आँखों में आई और तिल में बसी-और एक धार ज़बान पर आई, और वहां सुरत जिभ्या रस में रसी ॥

२–फिर वही सुरत आंख और कान इंद्रियों के वसीले से संसार में धसी और फैली, और कुटुम्ब परवार और धन और माल के मोह में फँसी और इंद्री रस और भोगों में ग्रसी यानी गिरिफ़्तार हुई ॥

३—इस उतार और फैलाव और फँसाव की

में सुरत इस देह और दुनिया में अपने आसा मंसा और त्रिश्ना और मन के बंधन और प्यार के सबब से दुख सुख भोगती है, और अक्सर चिन्ता और फ़िकर इसको सताते रहते हैं ॥

४—कोई दुख सुख असली हैं और कोई आरज़ी। असली वह हैं कि जो मन और सुरत को अपने करमों के सबब से भोगने पड़ते हैं। और आरज़ी वह हैं कि जो बसबब प्रीत और बंधन दूसरे शख़्सों के दुख सुख का असर पैदा करते हैं और असल में वह दुख सुख उन शख़्सों को अपने करमों का फल मिला है ॥

५—सिवाय मामूली दुख सुख के एक निहायत भारी दुख और तकलीफ़ मौत की हर एक जीव को सहनी पड़ती है और उस्से किसी सूरत में किसी का बचाव नहीं हो सक्ता, और न कोई उस दुख में किसी तरह की मदद और सहायता कर सक्ता है ॥

६—अलावह इस के जो उमरभर संसार के कारो-बार, और मन और इन्द्रियों के भोग बिलास में ख़र्च की गई, और यही चाह और यही बासना मनमें बसी रही, तो वह बाद मरने के खींच कर फिर देह में लावेगी। और इस तरह जनम मरन का चक्कर

और ऊंच नींच देह और देश में बासा बराबर जारी रहेगा ॥

७—कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु फ़रमाते हैं, कि जिस किसी को इन तकलीफ़ों और मुसीबतों से बचना मंज़ूर है, और अमर देश में परम आनंद की प्राप्ती चाहता है, उसको चाहिये कि संत सतगुरु के सतसंग यानी राधास्वामी संगत में शामिल होकर पता और भेद कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और उनके निज धाम का, और भी हाल रास्ते और मंज़िलों का, और जुगत उसके तै करने की सुरत शब्द मारग का अभ्यास करके, मुफ़स्सिल तौर पर दरियाफ़्त करके अभ्यास शुरू करदे, और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और उनके सतसंग की सरन द्रिढ़ करे, तब उसका कारज बन्ना शुरू होगा, यानी सुरत और मन उसके सिमटते और घर की तरफ़ चलते और चढ़ते जावेंगे ॥

८—जैसे सुरत पिंड में उतार के वक़्त देह और संसार और कुटुम्ब परवार वग़ैरह में बंधगई, ऐसे ही जब अंतर में शब्द और राधास्वामी दयाल के चरनों में, प्रीत और प्रतीत के साथ लगेगी, तब छुटकारा जनम मरन से और प्राप्ती परम धाम की मुमकिन है ॥

९–इस वास्ते चाहिये कि पहिले सुरत तीसरे तिल में बसे, और शब्द के रस में रसे, और अधर में धुन सुन्ती हुई धसे, और गुरु चरन में प्रेम प्रीत के साथ फंसे, और दर्शन और स्वरूप में ग्रसे, तब संसार की तरफ़ से हटाव, और सच्चे परमार्थ यानी कुल्ल मालिक के चरनों में झुकाव और रास्ते का तै होते जाना मालूम पड़े और रफ़्तह रफ़्तह एक दिन काम पूरा बन जावे ॥

१०—यह सब काम संत सतगुरु या उनके प्रेमी सेवक के सतसंग में बन सक्ता है, और किसी की संगत में यह बात हासिल नहीं हो सक्ती चाहे कोई अमीर होवे या ग़रीब, जब तक सतगुरु के चरनों और उनके सतसंग में सच्चा दीन नहीं होगा, कुछ फ़ैज़ और फ़ायदह नहीं हासिल कर सक्ता ॥

११–इस क़िसम का सतसंग आज कल राधास्वामी मत में जारी है, और पता और भेद कुल्ल मालिक और उसके धाम का वहीं मालूम हो सक्ता है। और हाल रास्तह और मंज़िलों का और तरीक़ा चलने का सुरत शब्द मारग के अभ्यास से, वहां वक़्त उपदेश के समझाया जाता है, और किसी मत में जो आज कल जारी हैं यह भेद और उपदेश बिल्कुल् नहीं है ॥

१२—जो जीव कि मौत के कष्ट और कलेश और

जनम मरन के चक्कर से बचना चाहें, उन को चाहिये कि राधास्वामी संगत में शामिल होकर और कोई दिन सतसंग करके उपदेश लेकर अभ्यास शुरू करें, और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु की सरन द्रिढ़ करें, तो उन के जीव का कारज सहज में बन जावेगा और अनेक तरह के कष्ट और कलेश और दुक्खों से बचाव हो जावेगा, और अमर धाम में बासा और कुल्ल मालिक सत्तपुर्ष राधास्वामी दयाल का दर्शन पाकर परम आनंद को प्राप्त होंगे ॥

१३—जो जीव भूल और भरम करके राधास्वामी संगत में शामिल नहीं होंगे, और ऊपर की लिखी हुई कार्रवाई यानी सुरत शब्द मारग का अभ्यास नहीं करेंगे, तो वक़्त मौत के अत्यन्त दुख पावेंगे और चौरासी जोनों में माया के घेर में भरमते रहेंगे, यानी बारम्बार ऊँची नीची देह धर कर दुख सुख और जनम मरन का कलेश सहते रहेंगे ॥

———

बचन-२२

जाँचो सम्हालो और होशयार हो, खोजो रलो और मिलो, और गाओ ध्याओ और बजाओ ॥

(दुनियां का हाल नाशमान्ता का जांच कर सम्हलो यानी उसमें धोखा न खाओ, और होशयार हो यानी उस्से न्यारे होने की पेश्तर मौत के वक़्त से तदबीर करो) (और वह तदबीर यह है कि सतगुरु खोजो और उन के सतसंग में रलो, और उन से प्रेम प्रीत के साथ मिलो) (फिर सतगुरु से उपदेश लेकर उन की महिमा और गुन गाओ, और उनके स्वरूप को निज घट में ध्याओ और अन्तर शब्द को बजाओ यानी चित्त से सुनो) ॥

१—इस दुनिया का हाल जो कोई ग़ौर से देखे, तो मालूम होगा कि बिलकुल धोखे की जगह है यानी इसमें कोई चीज़ ठहराऊ नहीं है, और न अपना ठहराव मुमकिन है, फिर भी लोग यहीं के सामान के वास्ते बारम्बार चाह उठाते हैं, और अनेक तरह के जतन और मिहनत उसके पूरा करने के वास्ते करते हैं, और वक़्त पूरन होने चाह के निहायत मगन होते हैं और मन में फूलते हैं, और फिर वक़्त बिजोग के रोते और दुखी होते नज़र आते हैं ॥

२—अब ख़्याल करो कि ऐसे अस्थान में जहां कि जीवों का ठहराव थोड़े दिनों का है, उन को वह वक़्त सिर्फ़ दुनिया के सामान पैदा करने में और इंद्री भोगों का रस लेने में ख़र्च करना चाहिये, याकि यह काम औसत दरजे पर करें, और निजघर का (जहां से कि आदि में सुरत आई है) खोज करके, और पता और भेद रास्ते और तरीक़ा चलने का दरियाफ़्त करके, कुछ कार्रवाई इस रास्ते पर चलने की भी करें। क्योंकि जो ऐसा न किया जावेगा, तो काल मौत के वक़्त ज़बरदस्ती और झटके देकर सुरत को देह में से निकाल कर ले जावेगा, और महाकष्ट और कलेश देगा। फिर ग़ौर का मुक़ाम है

कि उस रास्ते को जीते जी साफ़ करना, और काल के जुलम से बचने का जतन मुनासिब है या नहीं ॥

३—अक़लमंद और खोजी आदमी ज़रूर पेश्तर मौत से तहक़ीक़ करेगा, कि सुरत को बाद छोड़ने देह के कहां बिश्राम करना चाहिये, और वह अस्थान कहाँ है, और कौन जतन से उसकी प्राप्ती होवे, और उस जतन की कार्रवाई में लग जावेगा और घट में रस और आनंद पाकर उस जतन की कार्रवाई को बढ़ा-वेगा, और दुनिया और उसके सामान से आहिस्तह २ उस की तवज्जह घटती और हटती जावेगी ॥

४—यह बात बग़ैर मेहर और दया सतगुरु के हासिल नहीं हो सक्ती, इस वास्ते मुनासिब होगा, कि जब दुनिया का हाल देख कर होशयारी आवे तब संत सतगुरु का खोज करके उनके सतसंग में शामिल होवे, और प्रेमी जन से जो उस सतसंग में शामिल हैं हेल मेल पैदा करें। यहां तक कि उनमें अच्छी तरह से रलमिल जावे, और बचन सुन कर अपने मन और बुद्धि की सफ़ाई करता जावे, और संत सतगुरु की सेवा करके और उनके चरनों में प्रीत और प्रतीत लाकर मुहब्बत पैदा करे, ताकि पूरा मेल हो जावे, और वे इसको अपना लेवें ॥

५—जब शौक़ के साथ कोई जीव संतों के सतसंग में शामिल होकर उनसे मिलेगा, तब वे दया करके उपदेश सुरत शब्द मारग का देवेंगे, और पता और भेद कुल्ल मालिक के धाम का, और भी रास्ते की मंज़िलों का समझा कर जुगत चलने की बतावेंगे, जिसकी कमाई से कुछ भेद अंतर का खुलेगा ॥

६—जब संत सतगुरु की दया से मन और सुरत का सिमटाव, और चढ़ाई घट में थोड़ी बहुत मालूम पड़े और कुछ रस आवे, तब बारम्बार उनकी और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल की महिमां गाना चाहिये और जो २ दया और मेहर उन्होंने समय २ पर की है, उसका मनही मन में शुकराना करना चाहिये ॥

७—कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु की महिमां अगम और अपार है और किसी की ताक़त नहीं कि जो ज़र्रह भी उनके गुन गा सके लेकिन हर एक प्रेमी को चाहिये, कि अपनी समझ और ताक़त के मुवाफ़िक़ गुन गावे और महिमां बर्णन करे, तो उसके मन में हुलास और उमंग पैदा होगी और प्रेम जागेगा, और अभ्यास सुखाला और रसीला बन पड़ेगा ॥

८—प्रथम अभ्यास नाम का सुमिरन और गुरु स्वरूप के ध्यान का करना चाहिये, इस्से मन निश्चल होगा और रस पावेगा, और अस्थान २ पर ध्यान करने से तरक़्क़ी होती जावेगी, और चरनों में प्यार और विश्वास बढ़ता जावेगा, और अंतर में सफ़ाई होती जावेगी ॥

९—जब गुरु स्वरूप का ध्यान किसी क़दर दुरस्ती से बन पड़ेगा, तब मौज और दया से शब्द भी साफ़ सुनाई देगा। और उस में तवज्जह लगाने से संत सतगुरु की दया से मन और सुरत चढ़ेंगे, और रफ़्तह २ ऊंचे देश का बिलास और आनंद देखकर मगन होते जावेंगे ॥

१०—इस तरह अभ्यास करने से जीव का कारज सहज में बन्ना शुरू होगा, और एक दिन माया के पार धुर पद में पहुंच कर परम आनंद को प्राप्त होगा और जनम मरन और देहियों के बंधन और दुख सुख के भोगसे क़ितई छुटकारा हो जावेगा ॥

११—ऐसी महिमां संत सतगुरु की है, कि उनके चरनों में लग कर जगत के जीव सहज में तरसक्ते हैं, यानी माया के घेर के पार पहुंच कर, सत्तपुर्ष राधास्वामी देश में जहां काल और करम मन और माया नहीं है बासा पा सक्ते हैं ॥

१२—राधास्वामी संगत कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु की संगत है। जो उसमें शामिल होगा और उपदेश लेकर, गुरु स्वरूप का ध्यान, और राधास्वामी नाम का सुमिरन, और शब्द का श्रवन मन और सुरत से अपने घट में शुरू करेगा, और भेद लेकर राधास्वामी दयाल के चरनों में प्रीत प्रतीत करेगा उसपर बराबर दया होती जावेगी, और हर तरह से उसकी रक्षा और सम्हाल फ़रमा कर कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु उस जीव को एक दिन निज घर में पहुँचा कर छोड़ेंगे, जहां से फिर देह और दुनिया में आना नहीं होगा, और जहां सदा आनंद और महा सुख प्राप्त होगा ॥

बचन--२३

मन भूले को समझाओ, शैतानी अंग हटाओ, राधास्वामी चरनन चित लगाओ, गुरु सनमुख दीनता लाओ तब घटमें चढ़ फल पाओ ॥

१—इस दुनिया में सब जीव सच्चे और कुल्ल मालिक और उसके निज धाम को जो उनका निज घर है भूलकर अनेक पदार्थों और जीवों में बन्ध रहे और

भरम रहे हैं। और हरचंद एक दूसरे को मरते देखते हैं, और और चीज़ों का भी अभाव होता हुआ नज़र आता है, पर अपनी मौत का ख़्याल दिल में बहुत कम गुज़रता है और कभी ऐसा सोच पैदा नहीं होता कि बाद मरने के कहां जाना होगा, और वहां सुख मिलेगा या दुख ॥

२—इस दुनिया में थोड़े दिनों का ठहराव है जिस के वास्ते सुख हासिल करने और दुख दूर करने के लिये अनेक जतन करते हैं, और जानते हैं कि सुरत यानी जीव आत्मा अमर है, पर ज़रा भी खोज इस बात का नहीं करते, कि आइंदह बाद मरने के सुख मिलेगा या दुख, और कहां बासा पावेंगे और दिन २ संसार और उसके पदार्थों में और भी कुटुम्ब परवार में लिपटते जाते हैं, और उनके निमित्त अनेक तरह के जतन यानी करम करते हैं ॥

३—यह भूल और भरम बग़ैर सतसंग सतगुरु के दूर नहीं हो सक्ता, क्योंकि सिर्फ़ उनके सतसंग में भेद कुल्ल मालिक, और उसके निज धाम और रास्ते की मंज़िलों का बर्णन होता है, और दुनिया और तीन लोक की रचना का (जो माया के घेर में है) निरनै खोल करके किया जाता है, यानी यह

बात ज़ोर के साथ समझाई जाती है, कि जो कोई माया के देश में रहेगा, वह जनम मरन और देहियों के दुख सुख से नहीं बचेगा, जब तक कि कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के दर्शन, और उनके निज धाम में पहुचने की आसा मज़बूत बाँध कर, उस तरफ़ चलने का अभ्यास नहीं करेगा ॥

४—लेकिन भेष और पंडित और जिनके घरों में बंसाबली गुरवाई जारी है, और इन सब के बहकाने से जगत जीव संत सतगुरु और उनके सतसंग की निंद्या करते हैं, और अपने रोज़गार और मान बड़ाई और फ़ायदह के वास्ते नहीं चाहते हैं, कि कोई जीव संतों के सतसंग में शामिल होवे, और सच्चे मत यानी सच्चे कुल्ल मालिक का भेद, और उसके धाम में चढ़कर पहुँचने की जुगती से वाक़िफ़ होकर चलने का अभ्यास करे ॥

५—यह लोग काल पुर्ष के दूत हैं और इस दुनिया के रचना की सम्हाल और रक्षा के लिये पैदा किये गये हैं। जो कोई इनका संग करेगा और बचन मानेगा, वह काल और माया के घेर में रहेगा, और बारम्बार संसार ही में भरमेंगा ॥

६—जो कोई दयाल मत में शामिल होकर, दयाल

पुर्ष के धाम में बासा चाहे, उसको लाज़िम है कि उन जीवों के संग से, जो कालमत का उपदेश करते हैं (जैसे मूरत और निशान की पूजा तीरथ बरत हठजोग बुद्धिजोग प्राणजोग बाचकज्ञान वग़ैरह) बचा रहे और संत सतगुरु के सतसंग का पता लगा कर उसमें शामिल होवे तब सच्चा भेद और सच्चा मारग सच्चे मालिक से मिलने का हासिल होगा ॥

७—मालूम होवे कि सिवाय काल के दूतों के, अपना मन और इंद्रियां भी काल के प्यादे हैं और इनका पूरा २ झुकाव संसार और उसके भोग बिलास की तरफ़ है। संत सतगुरु और उनके सतसंग की मदद लेकर, इनका मुख मोड़ना चाहिये, यानी मन में शौक़ सच्चे मालिक से मिलने का पैदा करके, उसको और भी इन्द्रियों को सच्चे मालिक से मिलने के जतन में मुख्य करके लगाना चाहिये। और दूसरे दरजे पर संसार के कारोबार भी (जो औसत दरजे पर ज़रूरी हैं) जैसे रोज़गार और अपनी देह और घर बार का काम और ब्यौहार वग़ैरह करना चाहिये ॥

८—सिवाय संत सतगुरु के सतसंग और उनकी दया और मेहर के यह मन और इन्द्रियां कभी सीधे नहीं चलेंगे। इस वास्ते पहिले खोज संत सतगुरु और

उनके सतसंग का ज़रूर है, और फिर भाव और दीनता से उस में शामिल होना और बचन सुनकर बिचारना और जिस क़दर बन सके उसके मुवाफ़िक़ कार्रवाई करना, तब काल अंग किसी क़दर आहिस्त २ जीता जावेगा, और चित्त थोड़ा बहुत कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में लगेगा ॥

९—जिस क़दर भेद और महिमा राधास्वामी दयाल की सतसंग में सुनी जावेगी, उसी क़दर ज़रूरत सच्चे परमार्थ के कमाने की मन में समझी जावेगी, और दया लेकर करनी थोड़ी बहुत बन्ती जावेगी, और अंतर में उसका फ़ायदह भी कुछ २ मिलता जावेगा, इस तरह दिन २ शौक़ और प्यार और प्रतीत, चरनों में कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु के बढ़ते जावेंगे, और दीनता यानी ग़रज़मंदी ज़्यादह होती जावेगी ॥

१०—प्रेम और दीनता के साथ सुरत शब्द मारग के अभ्यास में, संत सतगुरु की मेहर और दया से तरक़्क़ी होती जावेगी, और घटमें परचे मिलते जावेंगे और मन और सुरत चढ़कर ऊँचे देश का रस और आनंद लेवेंगे, तब इस जीव को संत सतगुरु और उनके सतसंग और उपदेश और दया की महिमा

थोड़ी बहुत मालूम पड़ेगी, और चरनों में प्रीत और प्रतीत दिन २ बढ़ती जावेगी। इसी तरह एक दिन धुरधाम में पहुँच कर कारज पूरा बन जावेगा यानी सुरत अमर और परम आनंद को प्राप्त होगी और अपने सच्चे माता पिता कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल का दर्शन पाकर चरनों में बासा पावेगी, और जनम मरन और बारम्बार देह धारन करने के कष्ट और कलेश से क़ितई छुटकारा हो जावेगा ॥

बचन-२४

उगलो १ निगलो २ देओ ३ और लेओ ४ (१ जगत को उगलो) (२ शब्द की धुन को जो अमीं की धार है निगलो) (३ तन मन धन देओ) (४ प्रेम दान लेओ)

१—जीव बहुत काल से रचना में आया है, और अनेक जनम इसके माया देश में गुज़र गये हैं, इस सबब से बंधन मन इंद्री और देह के संग और भी साथ कुटम्ब परिवार और धन माल और भोगों के, बहुत गाढ़े और मज़बूत होगये हैं, और इसी क़िस्म के ख़ियालात और तरंगें और ख़्वाहशें मन में समारही हैं ॥

२—जब से कि यह जीव हाल के जनम में पैदा हुआ, और उस वक़्त तक कि संत सतगुरु के सन्मुख या उनके सत संग में हाज़िर हुआ—इस अर्सह में कुल्ल वक़्त अपना दुनिया के कारोबार और रोज़गार और देह के ब्यौहार में, और कुटुम्ब परवार और बिरादरी और दोस्त आश्ना वग़ैरह के संगमें ख़र्च करता रहा, और यही ख़्याल और तरंगें और गुनावन हर वक़्त चाहे एकान्त में और चाहे भीड़ भाड़ के संग उठती रहीं, अब जब तक कि यह मसाला निकाला न जाय, तब तक परमार्थ के बचन हिरदे में कैसे समा सक्ते हैं, और क्योंकर याद रह सक्ते हैं ॥

३—इस वास्ते संत सतगुरु फ़रमाते हैं, कि पहिले जगत यानि दुनिया को उगलो यानी अपने मन से संसारी ख़्यालों को हटाओ और कम करो और बजाय उसके सतसंग में हाज़िर होकर, सतगुरु के बचनों को चेत कर सुनो और समझो और अंतर हिरदे में बसाओ ॥

४—जिस क़दर सतसंग के बचन होशयारी के साथ सुन्ने और समझने में आवेंगे, उसी क़दर दुनिया के ख़्याल ओछे और तुच्छ दिखलाई देवेंगे, और मन से आहिस्तह २ निकसते जावेंगे और इसी तरह तरंगे और

ख़्वाहिशें भी घटती जावेंगी, तब हिरदा किसी क़दर साफ़ और निर्मल होता जावेगा, और आहिस्तह २ पारमार्थ का रंग चढ़ता जावेगा, यानी कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु के चरनों में भाव और प्यार मन में पैदा होता जावेगा ॥

५—जब इस क़दर असर सतसंग का ज़ाहर होवेगा तब सतगुरु मेहरबान होकर उपदेश ध्यान और भजन का देवेंगे, यानी मन और सुरत को स्वरूप के आसरे समेटने और जमाने, और शब्द के आसरे चढ़ाने और ठहराने का जतन समझावेंगे, और उसका नित्त अभ्यास करावेंगे, इस जुगत से मन को अंतर में रस मिलेगा और सुरत को आनंद प्राप्त होगा ॥

६—जिस क़दर मन और सुरत अंतर में बिरह और प्रेम अंग लेकर शब्द और रूप में लगेंगे उसी क़दर रस और आनंद बढ़ता जावेगा, और शान्ती और ताक़त आती जावेगी, यानी अमीं अहार प्राप्त होना शुरू होगा ॥

७—लेकिन यह हालत उस वक़्त हासिल होगी, जब कि मन से चाहें और तरंगें संसार के भोग बिलास और मान बड़ाई की दूर हो जावेंगी, और गुरु स्वरूप और शब्द में गहरा प्यार आजावेगा, पर यह

कैफ़ियत कुछ अर्सह के सतसंग और अंतर अभ्यास से पैदा होगी ॥

८—मन और इन्द्रियां संसार के भोगों में निहायत लिप्त हो रहे हैं, और ज़ाती झुकाव इनका दुनिया की तरफ़ है। इस वास्ते जो कोई इनका मुख अंतर में मोड़ा चाहे, उस को बहुत खैंचा तानी करनी पड़ती है, यानी कोई दिन मन के साथ लड़ाई और झगड़ा करना पड़ता है, तब यह सतगुरु की मेहर से कोई अर्सह में थोड़ा बहुत सीधा चलता है ॥

९—इस काम के करने के लिये परमार्थी अभ्यासी को मुनासिब है, कि अपने मनकी चौकीदारी करे यानी हर वक़्त इसकी चाल ढाल को निरखता रहे और नामुनासिब और फ़ज़ूल और बेजा तरंगों और ख़्वाहिशों को रोकता और काटता जावे तब कोई दिन के अभ्यास से यह मन अपनी पुरानी आदत को आहिस्तह २ छोड़ता जावेगा, और उसी क़दर परमार्थी ख़्याल और ख़्वाहिश इस में पैदा होते और बढ़ते जावेंगे ॥

१०—जब प्रेमी परमार्थी के मन और इन्द्री किसी क़दर सीधे चलने लगेंगे, तब उसको तन मन और धन पूरे तौर से सतगुरु के चरनों में अरपन करने

में कुछ दिक़्क़त और तकलीफ़ नहीं होगी यानी सर्व अंग करके वह शख़्स सतगुरु का सच्चा सेवक और प्यारा बालक हो जावेगा, और प्रीत और प्रतीत चरनों की उसके हिरदे में गहरी बस जावेगी ॥

११—उस वक़्त सतगुरु अपनी मेहर और दया से उस प्यारे सेवक को प्रेम की दात बख़्शिश करेंगे कि जिस्से उसका तन मन हरा हो जावेगा, और सुरत प्रेम रंग में सरशार और सरबोर हो जावेगी और धुनों की झनकार और अमी की बर्षा घट में हरदम जारी रहेगी ॥

बचन-२५

वर्णन हाल सुरत के उतार का संसार और पिंड में और जुगत उस के उल्टाने की निज धाम की तरफ़ सुरत शब्द मारग के अभ्यास से जिसका रास्ता घट में कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल ने जीव के रोज़ मर्रह की हालतों में दिखला दिया है। और ज़ोर दे कर ज़ाहर करना

इस बात का कि सिवाय शब्द के अभ्यास के और कोई रास्ता सुरत की चढ़ाई और उसके निज घर में पहुंचाने का रचा नहीं गया है ॥

१—सुरत यानी रूह कुल्ल मालिक की अंस है, और हमेशह से उसके साथ अभेद थी ॥

२—जब मौज हुई और शब्द प्रघट हुआ, तब धुन रूप धारा जारी हुई यानी सुरत निज धाम से नीचे उतरी, और रास्ते में किसी क़दर फ़ासले पर ठेके या मंज़िल या अस्थान मुक़र्रर करती हुई, और हर मुक़ाम पर मंडल बाँध कर रचना करती हुई, पहिले और दूसरे दरजे यानी निर्मल चेतन्य देश और ब्रह्माण्ड से गुज़र कर, पिंड में दोनों नेत्रों के मध्य में पीछे की तरफ़ यानी अंतर में ठहरी, और वहां से दो धार होकर दोनों आंखों में बैठ कर देह और दुनिया का कारज करने लगी और मन और इन्द्रियों के वसीले से अनेक भोगों और पदार्थों और कुटम्ब परवार और धन और माल में बंध कर दुख सुख का भोग करती है ॥

३—सच्चे और कुल्ल मालिक सत्तपुर्ष राधास्वामी

दयाल की दया और तवज्जह इस सुरत पर बहुत है, यानी जब से यह चरनों से जुदा हुई और धुन रूप होकर नीचे उतरी, और मनुष्य देह में आंखों के मुक़ाम पर ठहरी, तब से कुल्ल मालिक भी इस के संग हर पिंड में मौजूद है और इस पर दया की नज़र रखता है ॥

४—यही सुरत या धुन की धारा हर एक अस्थान पर रूप धरती और रचना करती हुई पिंड में उतरी है, सो वे सब रूप गोया कुल्ल मालिक ने इसकी ख़ातिर आप धरे, और वह हर एक रूप नीचे के स्वरूप का गोया पिता और मालिक और करतार और गुरू है ॥

५—अव्वल दरजे यानी निर्मल चेतन्य देश की हद्द में, जो रूप कि आदि सुरत यानी शब्द की धारा ने धारन किये, वे अरूप या निर्मल चेतन्य स्वरूप हैं, और सब रचना उन्हीं के मंडल यानी घेर में हैं ।

६—और जब से कि वह धारा निर्मल माया के देश यानी ब्रहमान्ड में उतरी, वहां जो स्वरूप कि उसने धारन किये, उन में शुद्ध माया की मिलौनी हुई यानी शुद्ध माया के मसाले का ग़िलाफ़ या ख़ोल उन पर चढ़ता गया ॥

७–और जब कि वही धारा मलीन माया के देश यानी पिंड में उतरी, तब से अलावह शुद्ध माया के ख़ोलों के, मलीन माया के ख़ोल उस पर और भी उन रूपों पर, जो कि इस दरजे में धारन किये, चढ़ते गये ॥

८–इस तरह सुरत सर्ब अंग करके उन धाराओं के आधीन हो गई, जो कि हर एक अस्थान से चेतन्य और माया की मिलौनी से प्रघट हुईं, और यह धारें तीसरे दरजे यानी पिंड में ख़ास कर ज़्यादह मलीन और बहुत ताक़त वाली हैं, कि सुरत की धार या तवज्जह को जिधर चाहें उधर खैंच कर ले जाती हैं ॥

९—इसी तरह माया के रचे हुए जड़ पदार्थों में भी खैंच शक्ती बहुत रक्खी गई है, कि वे मन और इंद्रियों की धारों को और उनके साथ सुरत की तवज्जह को अपनी तरफ़ खैंचते हैं ॥

१०–मन और इंद्रियां मतलब उन औज़ारों से है, जो पिंड में इस ग़रज़ से रचे गये कि उनके वसीले से सुरत इस मृत्यु लोक की रचना के साथ मेल और बर्ताव करे, और उस्से काम लेवे ॥

११–जो रचना कि पहिले दरजे यानी निर्मल चेतन्य देश में आदि सुरत ने, सत्तपुर्ष राधास्वामी दयाल

की मौज से करी, और दूसरे दरजे यानी ब्रह्मान्ड में सब रचना निरंजन और आद्या ने, अथवा ब्रह्मान्डी मन यानी ब्रह्म और माया ने सत्तपुर्ष से आज्ञा लेकर करी, और तीसरे दरजे यानी पिंड देश में जो रचना हुई, वह तीनों गुन (ब्रह्मा, बिष्णू और महेश) ने, निरंजन जोत के हुक्म से और उनकी मदद् से करी, और पिंडीमन और इंद्रियाँ पिंड में कारकुन मुक़र्रर हुये ॥

१२—मालूम होवे कि माया ने बिचित्र रचना इस लोक में, वास्ते लुभाने और बांधने सुरत के जड़ पदार्थों में करी है, और मन और इंद्रियाँ जिस क़द्र ताक़त वाली हैं, उनका ज़ोर और शोर बाहर की तरफ़ ज़ारी है। और अन्दर में ऊपर की तरफ़ जो रास्ता गया है उसकी ख़बर तक भी नहीं है, और न उधर कभी फेरा होता है इस सबब से जीव हमेशह दुख सुख के चक्कर में पड़ा रहता है क्योंकि जिन पदार्थों में और भी कुटम्ब परवार वगैरह में जो इस की आशक़ी है वह कोई ठहराऊ नहीं हैं ॥

१३—आम तौर पर सब जीवों का झुकाव दुनिया और उसके सामान और भोगों की तरफ़ हो रहा है और बावजूदे कि सब देखते हैं कि एक दिन मरना

ज़रूर पड़ेगा, और उस वक़्त कुल्ल असबाब धन और माल और कुटम्ब और परवार एक छिन में छोड़ दिये जायँगे, और सिवाय हसरत और अफ़सोस के कुछ हाथ नहीं लगेगा। फिर भी किसी को चेत नहीं होता कि मौत की तक़लीफ़ के दूर करने का जतन करें ॥

१४—जब मौत के वक़्त काल सुरत को ऊपर की तरफ़ खींचेगा और वह अपने स्वभाव और दुनिया में बंधन और आशक़ी के मुवाफ़िक, नीचे और बाहर की तरफ़ को झोका खावेगी तो इस खैंचा तानी में मरने वाले को भारी तकलीफ़ होगी, और आगे चल कर बहुत दुख जो अपने कर्मों का फल है सहना पड़ेगा। जिसका थोड़ा सा हाल मुरदे की सूरत से जो निहायत भयानक और पिटी कुटी हो जाती है ज़ाहर होता है ॥

१५—इस दुख में कोई दुनिया का सामान या कुटम्ब और बिरादरी किसी तरह की सहायता नहीं कर सके, और न धन और माल कुछ मदद दे सक्ता है। अलबत्तह संत सतगुरु और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल की सरन लेने से और भी उन का उपदेश मान्ने यानी सुरत शब्द मारग की कमाई करने से, मौत का दुख बिलकुल नहीं ब्याप सक्ता है

बल्कि गहरा आनंद और ख़ुशी कुल्ल मालिक के दर्शनों के प्राप्ती की हासिल हो सक्ती है ॥

१६—इस वास्ते जिस किसी को अपना सच्चा छुट-कारा जनम मरन और देहियों के दुख सुख से मंज़ूर है, उस को चाहिये कि सत्तपुर्ष राधास्वामी दयाल की संगत में शामिल होकर और चित्त से चेत कर बचन सुने और समझे और उपदेश लेकर सुरत शब्द मारग का अभ्यास शुरू करे, तो बेशक बचाव हो जावेगा ॥

१७—कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल की इस क़द्र दया जीवों पर है, कि जब से उन को मनुष्य देह में पैदा किया है तब से आप भी उन के अंग संग हैं। और उन को रास्ता सच्चे उद्धार और मुक्ती का, और भी अपने निज घर में जाने का साफ़ उनके रोज़ मर्रह की कार्रवाई में दिखला दिया है। फिर भी जीव खोज न करें और अनेक तरह के करम और धरम और भरम में फँसे रहें, और रोज़गारियों के कहने को मान कर धोखा खाते रहें, तो मुक़ाम अफ़सोस और लाचारी का है ॥

१८—वह रास्ता यह है, कि जीव की बैठक जाग्रत अवस्था में आँख के मुक़ाम पर है, और सोते वक़्त

वहां से सुरत की धार अंतर में ऊपर की तरफ़ खिँच जाती है। पहिले सूक्षम शरीर में जहां सुपना देखता है, और फिर कारन शरीर में जहां गहरी नींद में सोता है और सक्ते यानी सन्नपात की बीमारी में उसके भी परे, जबकि स्वांस और नब्ज़ छूट जाती है इस वक़्त में जिस २ शरीर से धार खिंचती जाती है, वही बेकार होता जाता है, और उसी के बंधन ढीले हो जाते हैं, और एक का दुख सुख दूसरे शरीर में नहीं ब्यापता ॥

१९——ऊपर के बयान से साफ़ ज़ाहर है, कि मुक्ती और उद्धार यानी देहियों और रचना के बंधनों से छूटने का रास्ता, आँख के मुक़ाम से अंदर में ऊपर की तरफ़ जारी है। जो कोई उस रास्ते पर चलने का जतन करे, वह सुतंत्र यानी बाइख़्तियार अपने, जब चाहे तब अस्थूल सूक्षम और कारन देहियों से न्यारा हो सक्ता है ॥

२०——अलावह इसके मरने के वक़्त जीव इसी रास्ते से यानी आंख के मुक़ाम से घर की तरफ़ को जाते हैं, यानी पैरों की उंगलियों से खिंचाव शुरू होता है और जब आंख के मुक़ाम तक पहुंच कर पुतली खिंचती हैं, तब मौत हो जाती है। अब ख़्याल करो

कि जिस रास्ते से सोते वक़्त धार सुरत की अंतर में खिंच जाती है, इसी रास्ते से मौत के वक़्त खिंचाव होता है, तो फिर यही रास्ता देह को छोड़ कर घर की तरफ़ जाने का ठहरा और उसी रास्ते से अंतर में पैदायश के वक़्त सुरत उंचे मुक़ाम से पिंड में उतर कर आई है, सो उसी रास्ते से मरते वक़्त पिंड को छोड़ कर जाती है ॥

२१—जो कोई देहियों के बंधन और उनके लाज़मी दुक्खों से और भी मौत की सख़्त तकलीफ़ से बचना चाहे उसको मुनासिब है कि इसी रास्ते से यानी आँख के मुक़ाम से चलने का जतन शुरू करे। और वह जतन सुरत शब्द मारग का अभ्यास है, यानी सुरत को धुन में जो घट २ में हर वक़्त हो रही है, लगा कर ऊपर को चढ़ावे, और जो शब्द की धुन है वही चेतन्य या जान की धार है। खुलासह यह कि जिस धार पर सुरत उतरी है, उसी धार पर चढ़ कर उलटना, और जहां से वह धार आई है वहां पहुंचना चाहिये ॥

२—अगर यह कारंवाई नहीं की जावेगी, और
संसार के कारोबार और भोग बिलास में
गी, तो इस स्वभाव और संसारी आसा

कि जिस रास्ते से सोते वक़्त धार सुरत की अंतर में खिंच जाती है, इसी रास्ते से मौत के वक़्त खिंचाव होता है, तो फिर यही रास्ता देह को छोड़ कर घर की तरफ़ जाने का ठहरा और उसी रास्ते से अंतर में पैदायश के वक़्त सुरत उंचे मुक़ाम से पिंड में उतर कर आई है, सो उसी रास्ते से मरते वक़्त पिंड को छोड़ कर जाती है ॥

२१—जो कोई देहियों के बंधन और उनके लाज़मी दुक्खों से और भी मौत की सख़्त तकलीफ़ से बचना चाहे उसको मुनासिब है कि इसी रास्ते से यानी आँख के मुक़ाम से चलने का जतन शुरू करे। और वह जतन सुरत शब्द मारग का अभ्यास है, यानी सुरत को धुन में जो घट २ में हर वक़्त हो रही है, लगा कर ऊपर को चढ़ावे, और जो शब्द की धुन है वही चेतन्य या जान की धार है। ख़ुलासह यह कि जिस धार पर सुरत उतरी है, उसी धार पर चढ़ कर उलटना, और जहां से वह धार आई है वहां पहुंचना चाहिये ॥

२२—अगर यह कारवाई नहीं की जावेगी, और ...संसार के कारोबार और भोग बिलास में ...गी, तो इस स्वभाव और संसारी आसा

और बासना के मुवाफ़िक, बाद मरने के फिर देह धारन करनी पड़ेगी, और जो दुख सुख कि देही के साथ लाज़मी हैं। उनका भोग करना पड़ेगा और मौत के वक़्त का भारी कष्ट सहना पड़ेगा, और यह चक्कर कभी बन्द नहीं होगा ॥

२३—सिवाय सुरत शब्द मारग के और कोई जुगत या जतन या अभ्यास, वास्ते उलटाने सुरत के और पहुंचाने उसके निज घर में रचा नहीं गया यानी सिर्फ़ शब्द की धार को पकड़ करके सुरत धुरपद में पहुंच सक्ती है क्योंकि आदि में शब्द प्रघट हुआ और बाक़ी रचना शब्द की धार से पैदा हुई इस वास्ते जो कोई शब्द का भेद लेकर और उसकी धार को पकड़ के घट में चलेगा, वही कुल्ल मालिक के चरनों में जहां से आदि शब्द प्रघट हुआ पहुंच सक्ता है और जो कोई और किसी धार को पकड़ के चलेगा, वह माया के घेर में रहेगा, क्योंकि और सब धारें चेतन्य और माया की मिलौनी से जारी हुई हैं और यह सब धारें शब्द की धार के जो रूह और जानकी धार है आधीन और ताबेदार हैं, और [illegible] की शक्ती से चेतन्य और क़ायम हैं, और [illegible] कारवाई कर रही हैं। जो रूह यानी शब्द की

जावे, तो और सब धारें बेकार हो जाती हैं बल्कि उनका अभाव हो जाता है, यानी जब तक कि रूह की धार वापिस न आवे, तब तक और धारें गुप्त और बेकार हो जाती हैं ॥

२४—शब्द की धार से मतलब चेतन्य की धार से है, क्योंकि शब्द चेतन्य का ज़हूरा और निशान है और उसका भेद सिर्फ़ सन्तों या उनके प्रेमी सेवकों के पास है। और आज कल राधास्वामी संगत में उसका अभ्यास जारी है, जो कोई सच्चा खोजी या दर्दी होवे, वह वहां से उपदेश लेकर और अभ्यास शुरू करके अपने जीव का काज बना सक्ता है। और जो कोई बाहर मुख परमार्थ की कार्रवाई कर रहे हैं या करेंगे, उनको शुभ करम का फल कुछ सुख मिल सक्ता है पर जीव का उद्धार यानी जनम मरन से बचाव हरगिज़ नहीं हो सक्ता ॥

———

बचन--२६

१ रचो २ भजो ३ हटो ४ तजो ५ मरो ६ जीवो और ७ बसो ॥

(गुरु के रंग रचो) (गुरु का नाम भजो) (जगत से हटो) (देह का मोह तजो) (शब्द में मरो) (अमर होके जीवो) (अमर धाम में बसो)

१—इस लोक में मौत का बाज़ार बड़ा गरम है, कोई जीव इस्से बच नहीं सक्ता चाहे कैसाही जतन करो ॥

२—जब तक देह और कुटम्ब परवार और इस लोक के भोगों और पदार्थों में मोह और उन्हीं की आसा और बासना मन में रहेगी, तब तक सिर्फ़ एक बार नहीं बल्कि बारम्बार जनमना और मरना पड़ेगा, और मौत का भारी कष्ट और कलेस हरबार सहना पड़ेगा ॥

३—जो कोई इस कष्ट और कलेश से ब[illegible] और अमर धाम में पहुंच कर परम आन[illegible] होना चाहे, तो इस बात के हासिल[illegible] सिर्फ़ एकही जतन है और वह यह[illegible]

संत सतगुरु का खोज लगा कर उनके सतसंग में शामिल होवे, और बचन सुन कर उनके चरनों में प्रेम प्रीत करे ॥

४—और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और उनके धाम का, और भी रास्ते और मंज़िलों का भेद और चलने के तरीक़े का उपदेश लेकर अभ्यास शुरू करे ॥

५—संत सतगुरु उपदेश के वक़्त, गुरु स्वरूप के ध्यान की और घट में शब्द के सुन्ने की हिदायत करेंगे, यही शब्द धुन्यात्मक नाम और गुरू और मालिक का नाम कहलाता है। इस में तवज्जह करने से नाम के अभ्यास की बहुत जल्द तरक्की होगी, यानी मन और सुरत घट में सिमटेंगे, और परमधाम की तरफ़ चढ़ना शुरू करेंगे ॥

६—जो थोड़ा बहुत रस अंतर में मिलना शुरू होगा तो संत सतगुरु और राधास्वामी दयाल के चरनों में प्रीत और प्रतीत जागेगी, और दूसरों के मन में भी यह हाल सुनकर, इसी काम यानी अभ्यास करने का शौक़ पैदा होगा। और वे भी सतसंग में शामिल होकर, संत सतगुरु की दया का फ़ायदह उठावेंगे ॥

७—जब अभ्यासी को घट में दया और रक्षा के

परचे मिलने शुरू होंगे, तब उसके मन में प्रेम संत सतगुरु के चरनों का बढ़ेगा, और उनके रंग में रच जावेगा, और उमंग के साथ उनके नाम को भजेगा यानी सुरत शब्द मारग का अभ्यास शौक़ के साथ करेगा ।।

८—जिस क़द्र यह कैफ़ियत और हालत बढ़ती जावेगी, उसी क़द्र अभ्यासी का चित्त संसार और उसके भोगों और पदार्थों की तरफ़ से हटता जावेगा और परमार्थी अनुराग की दिन २ तरक़्क़ी होती जावेगी यहां तक कि लोक लाज और मोह जाल के बंधन ढीले होते जावेंगे, और भक्ती अंग और भक्ती रीत में बेतकल्लुफ़ और बग़ैर झिझक के बर्ताव करेगा ।।

६—ऐसे अभ्यासी को यह दुनिया धोखे की जगह नज़र आवेगी, और उस में भाव और प्यार घटता और दूर होता जावेगा, और सतसंग और संत सतगुरु और प्रेमी जन प्यारे लगेंगे, और राधास्वामी दयाल के चरनों में पहुंचने का इरादा तेज़ और मज़बूत होता जावेगा ।।

१०—जिस क़द्र अभ्यास यानी ध्यान और भजन में, मन और सुरत सिमटते और सरकते जावेंगे उसी क़द्र देह और कुटम्ब का मोह और उस के बंधन

कम और ढीले होते जावेंगे, और सुरत के चढ़ाई का शौक़ और अभ्यास तेज़ होता जावेगा ॥

११—जब दया से इस क़दर अभ्यास बढ़ेगा, कि मन और सुरत चढ़कर तीसरे तिल में और उसके पार पहुंचेंगे, तब वे मौत और काल के मुक़ाम से गुज़र जावेंगे यानी मर कर जी उठेंगे। और उन को इस क़दर ताक़त हासिल हो जावेगी, कि चाहे जब ऊपर की तरफ़ को सैर करें और चाहे जब देह में उतर आवें। इसी का नाम काल और मौत का जीतना है ॥

१२—यह काम जल्दी का नहीं है, सहज २ संत सतगुरु की दया और नित्त के अभ्यास से दुरुस्त बनेगा और मन और सुरत को ऊँचे देश में चढ़ने और ठहरने की ताक़त हासिल होवेगी ॥

१३—जो कोई अपने तन मन धन को सतगुरु पर वारे, और प्रेम प्रीत उनके चरनों में करे, उसी को सच्चा बैराग संसार और उसके सामान की तरफ़ से हासिल होवेगा। और वही सच्चा अनुराग कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में करेगा, और उसी की हालत अंतर अभ्यास में बदलती जावेगी, यानी उसके मन और सुरत सिमटते और घर की तरफ़ चढ़ते जावेंगे। फिर उसी का देह और इंद्रियाँ और

मन रूपी आपा शब्द में तीसरे तिल के मुक़ाम और उसके परे पहुंचने पर मर जावेगा, यानी यह आपा तीसरे तिल में और कुछ उसके नीचे रह जावेगा, और सुरत और निज मन चेत कर ऊपर चढ़ेंगे ॥

१४—फिर वहां से त्रिकुटी में पहुंच कर निज मन भी रह जावेगा, और सुरत न्यारी होकर छड़ी अपने निज घर की तरफ़ चलेगी, और संत सतगुरु की मेहर और दया से अमर लोक में पहुंच कर बासा पावेगी और अमर आनंद को प्राप्त होवेगी ॥

१५—जब तक इस तौर पर कार्रवाई न की जावेगी तब तक जीव का सच्चा कल्यान नहीं होगा, यानी किसी न किसी क़िस्म की देही के साथ बंधन और दुख सुख और जनम मरन का चक्कर नहीं मिटेगा इस वास्ते सब जीवों को चाहिये, कि संत सतगुरु का खोज करके उनके सतसंग में शामिल होवें और सुरत शब्द मारग का उपदेश लेकर, जिस क़दर बन सके अभ्यास करें। और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल की सरन दृढ़ करें, तो वे दया करके सब भांत बचावेंगे, और एक दिन दयाल देश में बासा देंगे, जहाँ हमेशह को सुखी हो जावेंगे ॥

बचन-२७

निरखो और छोड़ो, परखो और पकड़ो (दुनियां का हाल नाश मानता का निरख कर उसको मन से छोड़ते जाओ) (और सत्त की अंस जो यहाँ मौजूद है उसकी परख करो और पकड़ के सत्त सिंध से मिलो)

१—जो कोई नज़र ग़ौर और बिचार से इस दुनिया और उसके समान और हाल को देखे, उसको मालूम होगा कि सब कारख़ानह और सुख और आनंद यहां का नाश मान है। और चाहे जिस क़दर मिहनत और कोशिश करके, चाहे जितना सामान और दौलत कोई जमा करे, वह सब एक दिन छोड़ना पड़ेगा॥

२—इसी तरह नेक नामी और शुहरत और इज़्ज़त इस लोक की ठहराऊ नहीं है, उसके हासिल करने के लिये पचना और ख़पना और जान देना अपनी उमर और चेतन्यता यानी जान को ओछी पूंजी और थोड़े फ़ायदह के लिए ख़र्च करना है॥

३—परमार्थी हिसाब में वह शख़्स अक़्लमंद और बिचारवान और बड़भागी समझा जाता है कि जो अपने तन मन धन और उमर को कुल्ल मालिक सत्तपुर्ष राधास्वामी दयाल की भक्ती, और उनके दर्शनों की प्राप्ती के निमित्त ख़र्च करे ऐसी कार्रवाई से उसको बग़ैर मांगे बड़ाई और शुहरत इस लोक में, और परम आनंद और अमर अस्थान बाद छोड़ने इस देह और देश के प्राप्त होगा, और देहियों के साथ दुख सुख का भोग और जनम मरन का चक्कर क़ितई दूर हो जावेगा। यह फ़ायदा संसारी कार्रवाई से चाहे वह किसी क़दर मिहनत और कोशिश और धन ख़र्च करके की जावे हासिल नहीं हो सक्ता है ॥

४—जो कोई रसमी यानी संसारी परमार्थ की कार्रवाई करे, उससे भी उस फ़ायदा का हासिल होना जो ऊपर लिखा गया है, यानी सत्तपुर्ष राधास्वामी देश में वासा, और अमर आनंद का प्राप्त होना मुमकिन नहीं है ॥

५—रसमी और संसारी परमार्थ से मुराद उन मतों की कार्रवाई से है, कि जो संत अथवा राधास्वामी मत से अलहदह इस संसार में जारी हैं। और जिनमें कुल्ल मालिक सतपुर्ष राधास्वामी दयाल और उनके

धाम का पता और भेद और तरीक़ा चढ़कर पहुंचने का उस धाम में और हासिल करने दर्शन कुल्ल मालिक का पाया नहीं जाता है ॥

६—संतमत के मुवाफ़िक़ जब तक कार्रवाई नहीं की जावेगी, तब तक असली सत्त पद में पहुँचना मुमकिन नहीं है, और न उस सत्त सिंध की अंस यानी सुरत की परख और पहिचान आवेगी, जिसके आसरे तमाम रचना पिंडों की ठहरी हुई और कार्रवाई कर रही है ॥

७—बड़ भागी वही जीव है कि जिसको संतों का सतसंग मिलगया। उनके दर्शन और बचन से नित्त आँख खुलती चली जावेगी। और इस दुनिया का हाल कि धोखे के मुक़ाम है अच्छी तरह समझ में आवेगा और कुल्ल मालिक और उसके धाम की महिमां बख़ूबी मालूम पड़ेगी तब यह शख़्स संसार और उसके सामान और कारोबार को ओछा और नाशमान यक़ीन करके निज धाम में पहुँचने और कुल्ल मालिक का दर्शन करने का इरादा सच्चा और पक्का करके जो जुगत कि सुरत शब्द मारग की राधास्वामी मत में समझाई है, उसका अभ्यास शौक़ के साथ शुरू करेगा और संत सतगुरु की दया से एक दिन कारज

उसके जीव का दुरुस्त बन जावेगा, यानी परम धाम में बासा पावेगा ॥

८—दुनिया और उसके सामान और भोग बिलास का छोड़ना आसान नहीं है। बसबब जीव के जन-मान जनम से बर्ताव करने और फँसे रहने के संसार में मन और इंद्रियों का यही स्वभाव पड़ गया है कि भोगों में लिपटे रहते हैं, और उन्हीं की बारम्बार चाह उठाते हैं और जतन करते हैं इस वजह से मन कभी संसारी करतूत और ख़्यालों से ख़ाली नहीं रहता। जब कभी परमार्थ के बचन सुनता है, उस वक़्त वे किसी क़दर अच्छे मालूम होते हैं लेकिन जब वहां से अलहदह हुआ या बचन मौक़ूफ़ हुये, तब फ़ौरन संसारी ख़्याल और गुनावन पैदा होकर उसकी तवज्जह को फिर संसार में खींच कर लगा देते हैं ॥

९—यह स्वभाव मन और इंद्रियों का जब तक कि संत सतगुरु और प्रेमी जनका संग, कुछ अर्से के वास्ते नित नहीं मिलेगा, तब तक बदला नहीं जावेगा। इस वास्ते सच्चे प्रेमी को मुनासिब है कि पहिले कोई दिन संत सतगुरु का संग करके अपनी समझ बूझ और ख़्याल और पकड़ और स्वभाव को बदलवावे और भक्ती की रीत और बर्तावा, और संसार से

किसी क़दर बैराग की चाल ढाल, और प्रेम की हालत को अपने हिरदे में बसावे और उसी मुवाफ़िक़ प्रेमी जनके संग बर्ताव शुरू करे, तब मन और इंद्रियाँ थोड़े बहुत सीधे चलेंगे, और किसी क़दर सफ़ाई और थिरता यानी निश्चलता हासिल करेंगे, और अन्तर अभ्यास में सुरत शब्द मारग के लगेंगे ॥

१०-इस तरह कार्रवाई करने से हालत जल्द बदलेगी, और कुछ पहिचान सुरत और शब्द की आवेगी, और शौक़ सतसिंध में पहुँचने का बढ़ेगा और संत सतगुरु की मेहर से एक दिन सुरत चढ़कर निज पद में बासा पावेगी और परम आनन्द को प्राप्त होगी ॥

बचन-२८

१ समेटो और चढ़ाओ, मत बिखेरा और मत उतारो (मन और सुरत को समेटो और चढ़ाओ) (और उनको फज़ूल मत बिखेरो और मत उतारो)

१—मन और सुरत देह में और भी संसार में बिखर रहे हैं, और अनेक जगह इनका बंधन हो रहा है, कि जिसके सबब से दुख सुख सहते हैं ॥

२–ऐसे ही मरने के वक़्त मन और सुरत को, इस देह के छोड़ने में निहायत दरजे की तकलीफ़ होती है, और कोई उस वक़्त सहायता नहीं कर सक्ता। जो कोई देह के संग जो दुख सुख व्यापता है, और मौत के वक़्त जो सख़्त तकलीफ़ होती है उनसे बचना चाहे, तो उसको मुनासिब है कि आहिस्ते २ अपनी बैठक बदले, यानी जो जाग्रत के वक़्त सुरत का आंखों में बासा है वहां से राधास्वामी मत के मुवाफ़िक़ अभ्यास करके, उसको ऊपर यानी निज घर की तरफ़ चलावे ॥

३–इस कार्रवाई से दोनों मन और सुरत का सिमटाव होगा, और आंख के अस्थान से हटकर ऊपर की तरफ़ चढ़ेंगे। इस तौर से उनका फैलाव और बिस्तार संसार में कम होता जावेगा, और बंधन भी ढीले होवेंगे, कि जिसके सबब से दुनिया और देह का दुख सुख कम ब्यापेगा ॥

४—यह अभ्यास मन और सुरत को समेटने और चढ़ाने का अख़ीर वक़्त में यानी मौत के समय बहुत कुछ मदद दुख सुख के भुलाने और मौत का असर न ब्यापने में देगा। यानी जिस सिमटाव और खिंचाव को यह शख़्स अभ्यास के वक़्त रोज़मर्रह ज़ोर देकर

चाहता रहता है, यह अख़ीर वक़्त पर मौज से सर्ब अंग करके होवेगा, और तब शब्द भी खुलेगा और रूप भी दरसेगा, और निहायत दरजे का आनंद प्राप्त होवेगा ॥

५—यह तरकीब समेटने और चढ़ाने मन और सुरत की, सुरत शब्द मारग के अभ्यास से सिर्फ़ राधास्वामी मत में जारी है, जो कोई अपना सच्चा उद्धार यानी बारम्बार देह धारन करने और छोड़ने से बचना चाहे, उसको चाहिये कि राधास्वामी संगत में शामिल होकर सतसंग और अभ्यास करे। तब कोई दिन में उसको वह क़ैफ़ियत और हालत जिसका ज़िकर ऊपर किया गया है मालूम होवेगी ॥

६—फिर जिस क़दर प्रीत और प्रतीत कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में, और भाव और प्यार संत सतगुरु में बढ़ता जावेगा, उसी क़दर चढ़ाई ज़्यादह बढ़ती जावेगी, और अंतर में रस और आनंद विशेष आवेगा, और देह और दुनिया से आहिस्ते २ छुटकारा होता जावेगा ॥

७—परमार्थी अभ्यासी को मुनासिब है कि बहुत बखेड़ों के काम में न पड़े, और न फ़ज़ूल चाह अपने बिस्तार और नामवरी की इस दुनिया में उठावे,

क्योंकि ऐसी चाहें जीव को हमेशा करम में बाँधे रखती हैं, और इस तरह कभी निःकर्म नहीं होवेगा ॥

८–जिस क़दर कार्रवाई मन और इंद्रियों की बाहरमुख ज़्यादह होगी, उसी क़दर मन और सुरत बाहर बिखरेंगे और सिमटाव कम होगा इस वास्ते मुनासिब है कि जो कोई सच्चा परमार्थ कमाना चाहे, वह सिर्फ़ ज़रूरी और मुनासिब कार्रवाई देह और घर बार और रोज़गार की करे, और फ़ज़ूल और बेफ़ायदा और बेमतलब अपना वक़्त इस क़िसम के कामों में ख़र्च न करे ॥

६—अलावह इसके उसको मुनासिब है, कि दो तीन बार अभ्यास समेटने और चढ़ाने अपने मन और सुरत का दिन रात में, जिस क़दर दुरुस्ती के साथ बने करता रहे, तो उसको यह फ़ायदा हासिल होगा, कि जिस क़दर मन और सुरत बाहरमुखी कार्रवाई के सबब से उतरेंगे या फैलेंगे, उसी क़दर कामोबेश सिमट आवेंगे, और अपने ठिकाने और निशाने पर जा पहुंचेंगे । बल्कि प्रेमी जन के सुरत और मन रोज़ बरोज़ सिमटाव और चढ़ाई में थोड़ी बहुत तरक़्क़ी करेंगे, कि जिस्से मुक़ाम मन और सुरत के चढ़ाई का ऊंचे की तरफ़ को ज़्यादह बदलता और बढ़ता जावेगा ॥

१०–जिस क़दर कि अभ्यास के वक़्त मन और सुरत का सिमटाव और चढ़ाई होती जावेगी उसमें में किसी क़दर अंग मन और सुरत का ऊंचे देश में आहिस्ते २ बस्ता जावेगा, और तब वक़्त अभ्यास के बाक़ी अंग को समेटने और चढ़ाने में बहुत दिक़्क़त न होगी ॥

११–लेकिन यह हालत सच्चे और गहरे प्रेमी सतसंगी की होगी, और उसी से अभ्यास इस क़दर दुरुस्ती से बन पड़ेगा, कि जिस्से सिमटाव और चढ़ाई मन और सुरत की, ऊंचे देश की तरफ़ थोड़ी बहुत आहिस्ते २ होती जावेगी ॥

१२—ऐसे प्रेमी सतसंगी को आप फ़ायदा चढ़ाई का, और किसी क़दर मन और सुरत के अंग का ऊंचे देश में बस जाने का नज़र आवेगा । और वह अपनी ताक़त के मुवाफ़िक़ इस बात की बड़ी अहतियात रक्खेगा, कि उसके मन और सुरत फ़ज़ूल और बेफ़ायदा उतरने और बिखरने न पावें। और वह ध्यान का अभ्यास थोड़ा २ यानी पांच सात या दस मिनट दिन रात में दस बारह दफ़े करता रहेगा, कि जिस्से हालत सिमटाव और चढ़ाई की थोड़ी बहुत बराबर बनी रहेगी और दुनिया और देह और रोज़गार की कार्रवाई भी बख़ूबी जारी रहेगी। और यह हालत ऐसे प्रेमी

अभ्यासी की कोई शख़्स समझ और परख नहीं सकेगा, लेकिन संत सतगुरु और बराबर के प्रेमीजन से यह हालत छिपी नहीं रह सक्ती ॥

१३—दुनिया के भोग और बिलास में मन और इंद्री जल्द उतर कर लिपट जाते हैं, और उधर ही तरक़्क़ी चाहने की वजह से, उनका उतार और फैलाव देह और दुनिया में बहुत जल्द और कसरत से हो जाता है। पर दुनिया के लोग और रसमी परमार्थ की कार्रवाई करने वाले इस हाल से बेख़बर हैं, और अपने नुक़सान का कुछ इलाज नहीं सोचते और नहीं करते हैं। बल्कि कुछ रस और मज़ा मन और इन्द्रियों का पाकर दिन २ उसी में लिपटते और गिरते और बिखरते चले जाते हैं, यहाँ तक कि फिर जो कोई उपदेश चढ़ाई का करे और जुगत बतावे, तो उसको बिलकुल नहीं सुनते। बल्कि उलटे संत सतगुरु और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल की निंद्या करते हैं, और आप और अपने संगियों को दर्शनों से संत सतगुरु के दूर हटाये रखते हैं और नतीजा उसका यह होता है, कि ज़िंदगी में और भी मौत के वक़्त सख़्त तकलीफ़ और महा दुक्ख सहते हैं, और फ़िर जनम मरन का चक्कर जारी रहता है ॥

बचन-२६

१ बचो, २ सजो, ३ चलो, ४ और मिलो ॥ (संसार और उसके भोग बिलास और मान बड़ाई से बचो) (सतसंग में बैठ कर अपने मन और सुरत को सजो यानी उनका सिंगार करो) (और फिर घट में धुन के संग चलो) (और अपने सच्चे माता पिता कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल से मिलो)

१—इस दुनिया में निज मन यानी काल पुर्ष और माया ने, बहुत से पदार्थ और भोग वास्ते लुभाने, और फँसाने जीव के, और बहुतसी डोरियां कुटम्ब परवार और रिश्तेदारी की, वास्ते उसके बांधने के रचे हैं, और जीव अजान उन में फँस गया और बंध रहा है ॥

सिवाय इसके अनेक तरह की तरंगें और ख़्वाहिशें ...ती रहती हैं, कि जिनके सबब से जीव

हमेशह करम के चक्कर में पड़ा रहता है, और पाप पुन्य का भागी होता है ॥

३—ऐसे तौर से कार्रवाई दुनिया की जारी की है, कि कुल्ल जीव क्या अमीर क्या ग़रीब क्या औरत क्या मर्द हमेशह धंधे में लगे रहते हैं। और जब बाहर के कामों से थोड़ी देर को फ़ुर्सत होती है, तब अंतर में अनेक तरह के ख़्याल उठाते रहते हैं, और आसा और त्रिश्ना की लहरों में बसते रहते हैं ॥

४—ख़ुलासह यह कि जीवों को बहुत कम फ़ुर्सत अपने आपे और अपने मालिक की निसबत खोज और बिचार करने की मिलती है, और उस में भी सच्ची तवज्जह वास्ते लगाने सच्चे खोज के नहीं आती है। और न कोई सच्चा भेदी जिस्से मुफ़स्सिल हाल सच्चे मालिक के धाम, और उसके रास्ते और मंज़िलों का, और तरकीब चलने और रास्ता तै करने की मालूम पड़े मिलता है ॥

५–दुनियां का हाल नाशमानता का साफ़ आंख से नज़र आता है, और जीव भी जो पैदा होते हैं, वे भी बाद कार्रवाई चंद रोज़ा के गुज़रते चले जाते हैं और अख़ीर में सिवाय हसरत और अफ़सोस के साथ कुछ नहीं जाता। और यह भी देख

है कि देह धर कर कोई जीव दुख सुख भोगने से ख़ाली नहीं रहता, और अख़ीर वक़्त यानी मौत के समय निहायत कष्ट और कलेश हर एक को सहना पड़ता है। जैसा कि मरने के वक़्त की हालत और बाद मरने के रंग रूप बिगड़ जाते ... ज़ाहिर होता है ॥

मन में पैदा ...

... हालत और कैफ़ियत देख कर भी जीवों ... तहक़ीक़ात का इस मुआमले में नहीं ... भूल और ग़फ़लत इस क़दर बढ़ी हुई ... इस मुआमले की निसबत गुफ़्तगू ... और न कुछ हाल उसका सुन्ना

... मिलना नामुमकिन है, ... औलियों के ... मालिक ... में ऐसा
... में पहुंच कर मिल सका है और न कोई का पता
को ... जामा पहिन कर अनेक तरह के फिर उससे लोगों
... जाती और उनके साथ बहुत क़िस्म धोखे
गैर कार्रवाई अभ्यास सबब से जीवों को अक्सर की
... और गुफ़्तगू करने वालों
... मुआमले में तहक़ीक़ात
फ़ज़ल ... भी गई ॥

८—इस सबब से पूरी तवज्जह कुल्ल जीवों की दुनिया और उसके सामान और भोग बिलास और मान बड़ाई हासिल करने के लिये ख़र्च होने लगी, और परमार्थी कार्रवाई रसमी और ठेकियों की सी रहगई ॥

९—बहुत से लोग परमार्थी रसमों को इस ख़ौफ़ से जारी रखते हैं, कि कहीं उनके क़बायल[1] की तनदुरुस्ती, और उनके पेशे की आमदनी और ख़ानदानी इज़्ज़त और आबरू में ख़लल न पड़े क्योंकि रोज़गारियों ने उनको इसी क़िसम का डर दिखाया कि अगर पुरानी रसमों को जारी न रक्खेंगे तो नुक़सान होगा ॥

देखने में आता है कि ...

१०— ...

दुखदाई या स... और पछ... हैं। ...

लोग उनको नेक ... देते हैं ... समझते

लीक पीटने के अंजाम ... और थोथा ...

रसमों को फ़ज़ूल ... छोड़ नहीं सके ॥

के ज़ोर शोर के सबब से ...

११—जो लोग कि बिचारवान हैं, और सच्चा परमार्थ चाहते हैं, और किसी के बँधे नहीं हैं, उनके वास्ते ...

है कि पहिले संत सतगुरु का खोज करो, और उनके सत संग में प्रीत और दीनता और शौक़ के साथ रलो और मिलो तब स्वार्थ और परमार्थ की सच्ची ख़बर पड़ेगी ॥

१२—इन दिनों में सच्चे और कुल्ल मालिक का भेद और उसके निज धाम का रास्ता और चलने की जुगत का हाल मुफ़स्सिल तौर से राधास्वामी संगत में मालूम हो सक्ता है। जो सच्चा खोजी और दर्दी है, उसको चाहिये कि उस संगत में शामिल होकर और उपदेश सुरत शब्द मारग का लेकर अभ्यास शुरू करे, और दुनिया के जाल में न फंसे यानी भोग बिलास और मान बड़ाई और धन और माल की चाह औसत दरजे की (जिसमें अपना और कुटुम्ब का गुज़ारा हो जावे) उठावे, और फ़ज़ूली और ज़्यादती न करे ॥

१३—इस तरह संसार और उसके बखेड़े से बचे और सतसंग में बैठ कर और संतों के बचन और बानी को सुनकर, बिचार के साथ उनके मुवाफ़िक़ कार्रवाई करे, तब सहज में संसार से निबेड़ा होता जावेगा, और उसी क़दर मन और सुरत संत सतगुरु की दया से अभ्यास में लगेंगे ॥

१४—मन के अंतर बहुत बिकार और नाक़िस स्वभाव धरे हैं, और दस इंद्री और पांच दूत (काम क्रोध, लोभ, मोह, और अहंकार) का इस में भारी ज़ोर और शोर है। सो यह सब सफ़ाई और इनके ज़ोर का घटाव, संत सतगुरु की दया और उनके सतसंग और उपदेश की कमाई से मुमकिन है। इसी को सुरत और मन का सजना और सिंगार कहते हैं ॥

१५—जब दुनिया और उसके सामान की तरफ़ से चित्त में किसी क़दर बैराग होगा, और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु के चरनों में प्रेम और अनुराग पैदा होगा तब ऊंचे देश की तरफ़ चलना यानी रास्ता तै करना शुरू होगा ॥

१६—जो मेहर और दया से इस तौर से कार्रवाई जारी रही, यानी संसार से उदासीनता और चरनों में प्रीत और प्रतीत आहिस्तह २ बढ़ती गई, तो एक दिन ऐसा प्रेमी अभ्यासी धुर धाम में पहुंच कर कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल का दर्शन हासिल करेगा और उसी धाम में बिश्राम पाकर अमर आनंद को प्राप्त होगा और देहियों के बंधन और उनके दुख सुख और जनम मरन के कष्ट और कलेश से क़ितई छुटकारा हो जावेगी ॥

बचन-३०

दुनिया में ज़रूरत के मुवाफ़िक़ दिल लगाना और बाक़ी कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु के चरनों में प्रीत जोड़ना चाहिये और जो रास्ता कि मालिक ने घट में चलने और चढ़ने का निज घर की तरफ़ दिखा रक्खा है, उस पर जीते जी चलना चाहिये, ताकि एक दिन निज घर में पहुँच कर और बिश्राम पाकर परम आनंद को प्राप्त होवे, और जनम मरन और दुख सुख के चक्कर से बच जावे॥

१—कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल सर्ब समर्थ कुल्ल करतार घट २ अंतरजामी परम पुर्ष पूरन धनी हैं, और जीव उनकी अंस है, जैसे सूरज और सूरज की किरन ॥

२—कुल्ल रचना आदि सुरत या आदि धार ने, जो राधास्वामी दयाल के चरनों से प्रघट हुई, करी है और जितने पिंड या देही हैं वह सुरतों ने रचे हैं और उनमें बैठ करके कार्रवाई हर एक देह की कर रही हैं ॥

३—सुरत की बैठक पिंड में आंख के मुक़ाम पर है, और अथूस्ल और सूक्षम और कारन शरीर में, हर रोज़ जागते और सोते वक़्त फेरा रहता है और जब एक शरीर से दूसरे में गुज़र होता है, तब पहिले की कार्रवाई बंद हो जाती है, और वहां का दुख सुख और चिन्ता और फ़िक्र सब हवा हो जाता है। और जब फिर सुरत की धार लौट आती है, तब वह शरीर बदस्तूर चेतन्य हो जाता है यानी कार्रवाई उसकी जारी हो जाती है ॥

४—यह हालतें जाग्रत और सुपन और गहरी नींद की, जो हर एक जीव पर हर रोज गुज़रती हैं साफ़ साबित करती हैं कि अस्थूल सूक्षम और कारन शरीर सुरत के ग़िलाफ़ हैं, और माया के मसाले से बने हुए और जड़ हैं, और सुरत चेतन्य की धार से अपनी चेतन्यता ले रहे हैं, यानी उसकी ताक़त से कार्रवाई कर रहे हैं, और सुरत चेतन्य इनसे और

इनके मसाले से अलहदा है क्योंकि जब सुरत इन सब से जुदा हो जाती है, जैसे सकते या सुन्नपात की बीमारी में या मौत के वक़् तब यह शरीर बदस्तूर सही और सालिम बने रहते हैं, लेकिन महज़ बेकार और मुर्दे ॥

५—जब कि तीसरे दरजे यानी पिंड देश में, सुरत कुल्ल की चेतन्य करने वाली और शरीरों से न्यारी है तब ब्रह्मान्ड यानी दूसरे दरजे में भी इसी तरह से उन तीनों रूप से जो परमेश्वर यानी ब्रह्म ने धारन किये हैं वह जुदा है। और पिंड और ब्रह्मान्ड के परे अव्वल दरजे में, जो संतों का निज देश और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल का निज धाम है, सुरत का निज घर है, और वहीं यह अपने अंसी कुल्ल मालिक से मिल कर परम आनंद को प्राप्त हो सक्ती है ॥

६–जो जीव यानी सुरतें इस लोक में देह और कुटम्ब परवार और संसार के भोग बिलास में बांध गईं और रच गई हैं, और इन्द्री रस और भोगों के हासिल करने के लिये धन पैदा करने में, अपनी तमाम उमर ख़र्च कर रही हैं, और इस जड़ देही को ही अपना रूप समझा है, वे अपनी चाह और बासना के मुवाफ़िक़ बाद मरने के फिर जनमेंगी और देह

धारन करेंगी, और देह के साथ जो दुख सुख का भोग लाज़मी है वह जब तब अपनी उमर में भोगती रहेंगी, और अख़ीर वक़्त यानी मौत के समय महा कष्ट और कलेस उनको सहना पड़ेगा। जैसा कि मरने वालों की हालत से ज़ाहर है ॥

७—अब संत सतगुरु जो कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के निज मुसाहब और निज पुत्र हैं और संसार में जब तब देह धारन करके वास्ते उद्धार और उपकार जीवों के प्रघट होते हैं, इस तौर पर फ़रमाते हैं कि कुल्ल मालिक राधास्वामी जीवों पर इस क़दर दयाल हैं, कि जहां वह जाते हैं यानी पैदा होते हैं उनके अंग संग रहते हैं और कृपा करके उनको रास्ता उद्धार का या उलट कर उनके निज धाम में जाने का हर एक के घट में साफ़ दिखला दिया है, यानी जिस रास्ते पर सोते वक़्त हर रोज़ जाते हैं, या मरने के वक़्त गुज़र करते हैं, वही ठीक रास्ता घर जाने का है। और जिस क़दर कि सुरत आंख के मुक़ाम से सरकती जाती है उसी क़दर देह और दुनिया की तरफ़ से अलहदगी होती जाती है, और दुख सुख उसका कम ब्यापता है ॥

८—जो जीव अपना सच्चा उद्धार और कुल्ल मालिक

के निज धाम में पहुंचना चाहें उनको मुनासिब है कि आंख के मुक़ाम से चलना शुरू करें। मगर इस रास्ते का हाल और चलने की तरकीब सिर्फ़ भेदी और वाक़िफ़कार गुरू से मालूम होगी, और सब इस भेद और हाल से बेख़बर हैं ॥

६—जो संत सतगुरु से मिलकर और उनकी दया से करनी करके धुर मुक़ाम तक पहुंचे हैं, या असल में वहीं से आये हैं, उनको सच्चा और पूरा गुरू और संत सतगुरु कहते हैं। और जो संत सतगुरु से मिलकर और उपदेश लेकर अभ्यास कर रहे हैं, और अभी ब्रह्म पद तक पहुंचे हैं, उनको साध गुरू कहते हैं। और जो संत सतगुरु या साध गुरू से मिलकर उपदेश कमा रहे हैं और घट में कुछ रास्ता भी तै किया है, उनको प्रेमी सतसंगी कहते हैं। जो कोई संत सतगुरु या साधगुरू से मिलेगा, उसका काम सर्ब अंग करके दुरुस्त बन जावेगा, यानी उनकी दया लेकर रास्ता उसका घट में जारी हो जावेगा और एक दिन धुर मुक़ाम में पहुंच कर विश्राम करेगा। और जो कोई प्रेमी सतसंगी से मिलेगा, उसका भी काम आहिस्तगी के साथ दुरुस्त बन जावेगा, और मौज से उसको संत सतगुरु भी मिल जावेंगे ॥

१०—अब ग़ौर करना चाहिये कि इस लोक में जितने पदार्थ और भोग हैं, वह सब जड़ हैं और सुरत चेतन्य है, इसका और उनका आपस में मेल नहीं है। और जो कि वे और सुरत का देह रूप दोनों नाशमान हैं, और वास्ते आपस में मेल और मुहब्बत का फल सुख थोड़ा और दुख घनेरा होता है। इसी तरह कुटुम्ब परवार की मुहब्बत का हाल समझना चाहिये।

११—सच्चे परमार्थी को बिचार के साथ बर्ताव करना चाहिये, यानी इस क़दर विशेष बंधन और प्रीत किसी में नहीं करना चाहिये, जिसमें दुख और कलेश पैदा होवे। और तवज्जह अपनी हमेशा चरनों में कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु के मज़बूत करना और बढ़ाना चाहिये, तब दुनिया के दुख सुख कम ब्यापेंगे, और अख़ीर वक़्त पर तकलीफ़ नहीं होवेगी, बल्कि ख़ुशी और आनंद प्राप्त होवेगा॥

१२—जो रास्ता घट में चलने और चढ़ने का आंख के मुक़ाम से मालिक ने दिखा रखा है, उस रास्ते पर चलने की जुगत संत सतगुरु या उनके प्रेमी सत संगी से दरियाफ़्त करके अभ्यास शुरू करना मुनासिब

है, यानी अपनी सुरत को चेतन्य की धार में जो शब्द की धार है, जोड़ना और धुन के आसरे चढ़ाना चाहिये ॥

१३—सच्चे उद्धार और सच्ची मुक्ती और सच्चे मालिक के दर्शनों की प्राप्ती का यही एक जतन है। जो इसको यानी सुरत शब्द की कमाई नहीं करेंगे, वह अपनी ज़िन्दगी में और भी वक़्त मरने और बाद मरने के बहुत कष्ट और कलेश पावेंगे, और उस दुख में कोई उनकी सहायता नहीं कर सकेगा ॥

१४—सुरत शब्द मारग के संग कुल्ल मालिक और संत सतगुरु की दया हमेशा मौजूद रहती है, जो कोई यह अभ्यास करेगा उसको वह दया अपने घट में मालूम पड़ेगी, और दुख और कलेश के वक़्त हमेशा उसकी सहायता होगी और जो यह अभ्यास नहीं करेगा, वह काल और जमदूतों के हाथ से दुख और कष्ट सहेगा ॥

१५—यह अभ्यास ऐसा सहज है कि जो मन में थोड़ा प्रेम भी है, तो वह थोड़ा बहुत दुरुस्ती से बन पड़ेगा, और अपना फल अभ्यासी को दिखावेगा, यानी उसकी प्रीत और प्रतीत को आहिस्तह आहिस्तह बढ़ावेगा। और इस अभ्यास को लड़का जवान और

बूढ़ा और स्त्री और पुर्ष और ग्रहस्त और बिरक्त और पढ़ा हुआ और अनपढ़, थोड़े शौक़ के साथ बे तकलीफ़ कर सक्ते हैं। और इस कमाई से सहज वैराग दुनिया और उसके सामान की तरफ़ से आ-हिस्तह २ मन में पैदा होता जावेगा। जो कोई इस अभ्यास में लग जावे उसी को सच्चा परमार्थी और बड़भागी और मेहरी समझना चाहिये ॥

बचन--३१

चलो २ घरघंट पुकारे। रलोमिलो संग दयाल पियारे ॥

१—जब से कि सुरत उतर कर पिंड में आँख के मुक़ाम पर बैठी है, तब से सहसदल के मुक़ाम से बरा-बर घंटे की आवाज़ हो रही है, गोया इस सुरत को पुकार रही है, कि चलो और अपने घर की सुध लो पर सुरत की तवज्जह मन और इन्द्रियों के सबब से भोगों में, और कुटम्ब परवार और धन और माल में ऐसी ज़बर हो रही है, कि वह इस धुन की जो हर वक़्त घट में जारी है, ख़बर भी नहीं लेती ॥

२—कुल्ल जीव अपने निज घर और कुल्ल मालिक की तरफ़ से बेख़बर हैं, और हर चंद ज़मीनी और

आसमानी रचना छोटी और बड़ी और बहुत खुशनुमा और सुहावनी और रंगारंग देखते हैं और जानते हैं कि यह काम मनुष्य का नहीं है, फिर भी कोई खोज उसके करता का नहीं करते, सिर्फ़ इतनी समझ लेकर कि कोई मालिक है निःचिन्त हो बैठे हैं ॥

३—सबब इस बेख़बरी और बेतवज्जही और बे-परवाही का साफ़ यह मालूम होता है, कि जो कि पिछले लोगों ने उस मालिक की सिफ़त अलख और अगम और अकह और अपार और अनंत कहा है सो जीवों ने इन नामों के यह अर्थ समझ कर, कि कोई उस मालिक को जान नहीं सका, और लख नहीं सका, और उसके पास पहुंच नहीं सका, और वह कहने में और समझने में आ नहीं सका, तहक़ीक़ात और दरियाफ़्त करने की कोशिश छोड़ दी। और इस सबब से सब के सब क्या विद्यावान और क्या अनपढ़ उस मालिक के पते और धाम के भेद से बे-ख़बर रहे ॥

४—जो कोई ज़्यादह खोज भी करे, तो उसको पंडित भेष मौलवी और शेख़ वग़ैरह नासतिक और काफ़िर कहकर हटा देते हैं, और अपनी नादानी और बेख़बरी के दूर करने का ज़रा भी जतन नहीं करते ॥

रहा है, यहां सदा आनंद ही आनंद है और कुल्ल रचना यहां की अमर है ॥

१०—कुल्ल मालिक परम पुर्ष पूरन धनी राधास्वामी महा दयाल हैं, और महा प्रेम और महा आनंद का भंडार हैं, और कुल्ल रचना के सच्चे माता पिता हैं। जो कोई उनके चरनों में प्रेम प्रीत करे, और दर्शनों की चाह उठाकर उनके धाम की तरफ़ चलना चाहे उसको चाहिये कि संत सतगुरू से मिलकर, और उनसे सुरत शब्द मारग का उपदेश लेकर चलना शुरू करे, तो एक दिन उनकी मेहर और दया से राधास्वामी धाम में पहुंच कर बासा पावेगा, और अमर आनंद को प्राप्त होगा ॥

११—जब तक कि कोई दयाल देश में कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में नहीं पहुंचेगा, तब तक उसका सच्चा और पूरा उद्धार यानी काल और माया के जाल से क़ितई छुटकारा नहीं होगा, इस वास्ते कुल्ल जीवों को मुनासिब और लाज़िम है, कि अपने असली कल्यान के निमित्त, थोड़ा बहुत सतसंग संत सतगुरु या उनके प्रेमी जन का करें, और वहां उपदेश सुरत शब्द मारग का लेकर जिस क़दर बने अभ्यास करें, तो रफ़्ता २ दो तीन चार जनम में उनका वहां

...॥

... जावे ॥

... घर चढ़ जावे ॥

दुनिया और दुनियादारों के हाल मालूम होगा, कि जिस क़दर दुख हैं, और तीन ताप यानी मानसी दुख और उपाधी वग़ैरह का चक्कर चल रहा और मन के बंधन का फल है ॥

मसाले की मिलौनी और उसके रचे हुये पदार्थों के संग से बंधन पर बंधन पड़ते गये ।।

...आ अपने को आप नहीं खोल सका

कलेश और जनम मरन का दुख नहीं है, और हमेशा आनंद ही आनंद रहता है ॥

११–ऐसे दर्दी और खोजी जीव को, संत सतगुरु ज़रूर मिलते हैं, और वह उनके बचन सुन कर निहायत मगन होता है, और प्रेम में भर कर उनकी और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल की भक्ती निहायत उमंग के साथ करता है, और उपदेश लेकर सुरत शब्द मारग की कमाई बहुत शौक़ के साथ करता है ॥

१२–सुरत शब्द जोग से मतलब यह है, कि सुरत यानी रूह को, आवाज़ के वसीले से, जो घट २ में हरदम हो रही है, अंतर में लगाना और ऊंचे देश की तरफ़, जहां कुल्ल मालिक का धाम है, चढ़ाना–सिवाय इसके कोई दूसरा मारग निज घर में जाने का नहीं है। इसी अभ्यास से मन और इंद्रियां थोड़े बहुत क़ाबू में आवेंगे, और अंतर और बाहर के बंधन ढीले होवेंगे। और जो कोई दूसरी जुगत या तरीक़ा अभ्यास का कहता है, वह निहायत कठिन होगा, और माया के घेर में ख़तम हो जावेगा, जिस सबब से जनम मरन का चक्कर चाहे देर के बाद होवे, जारी रहेगा ॥

१३–अब समझना चाहिये कि संत सतगुरु के सतसंग और उपदेश की महिमा ज़्यादह से ज़्यादह है। जिस

किसी ने उनके बचन चित्त देकर सुने और समझे, उसी के संसे और भरम दूर हो जावेंगे, और उनके जुगत को कमाई करके, अंतर में कुछ रस मिलेगा, और जलवह नज़र आवेगा। और जिस क़दर उनके चरनों में प्रीत पैदा होती जावेगी, उसी क़दर बाहर के यानी संसारी बंधन ढीले होते जावेंगे ॥

१४—अब ख़्याल करो कि सुरत असल में निरबंध थी, लेकिन माया के घेरे में उतर कर, उस पर ख़ोल पै ख़ोल चढ़ते गये, जिनका नाम देही है, और उनमें बंधन होता गया। पिंड में उतर कर सुरत का बंधन कारन और सूक्षम और अस्थूल शरीर में हो गया। और अस्थूल शरीर में बैठकर, इस लोक के भोगों और पदार्थों और कुटम्ब परवार और बिरादरी और दोस्त आश्ना और दुनिया के सामान वग़ैरः के संग बर्तावा करके, इस क़दर बंधन हुआ कि उसके सबब से दुख सुख ज़िंदगी भर सहना पड़ता है। और उसी की चाह और याद करके, मरते वक़्त निहायत दरजे की तकलीफ़ उठानी पड़ती है, और फिर देह धारन करके थोड़ी बहुत वही करतूत, जो पिछले जनम में करी, बारम्बार करनी पड़ती है, और वही दुख सुख और मौत का चक्कर सहना पड़ता है। यह सब हालत और कैफ़ियत बंधनों के सबब से पैदा हुई ॥

१५–अब जो कोई इन बंधनों से छूटकर फिर अपनी असली हालत हासिल करना चाहे, यानी निरबंध होने की ख़्वाहिश करे, तो उसको चाहिये कि सतगुरु के सन्मुख जावे, और उनसे और उनके सतसंग में प्रीत करे, और जो वह सुरत शब्द मारग का उपदेश करें, उसका शौक़ के साथ हर रोज़ अभ्यास करे यानी अपने मन और सुरत को सत्तपुर्ष राधास्वामी दयाल के चरनों में जोड़े, तो, आहिस्तह २ उसके संसारी और देही के बंधन सहज में ढीले होते जावेंगे, यानी इस नये बंधन से जो सतगुरु और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में पैदा होगा, सब पिछले बंधन दुनिया और देह के आहिस्तह २ काटे जायंगे ॥

१६—यह क़ायदह है कि काँटे से कांटा निकाला जाता है, यानी एक बंधन से दूसरा बंधन काटा जाता है। सो जो कोई सतगुरु और उनके सतसंग से प्रीत करेगा, उसके संसारी यानी बाहरी बंधन ढीले होवेंगे, और जब उनके उपदेश के मुवाफ़िक़ उनके निज स्वरूप यानी शब्द और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में भाव लावेगा तब उसके देही के बंधन ढीले होते जावेंगे यानी जो गांठें लगी हैं वह खुलती जावेंगी, और रफ़्तह रफ़्तह एक दिन दोनों

क़िसम के बंधनों, यानी दुनिया और देह, से आज़ादगी हासिल हो जावेगी ॥

१७—सतगुरु के निज स्वरूप यानी शब्द से मतलब कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों की धार से है । सो जिस क़दर प्यार और भाव कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में आता जावेगा, उसी क़दर मन और सुरत सिमट कर, और शब्द की धार यानी धुन को पकड़ के, ऊपर की तरफ़ चढ़ते जावेंगे, और रफ़्तह २ एक दिन कुल्ल मालिक के धाम में पहुंच कर, और उसका दर्शन करके, परम आनंद को प्राप्त होंगे । यह निज धाम माया के घेर के पार है, वहां पहुंच कर किसी क़िसम का बंधन या कष्ट और कलेश नहीं रहेगा, और अमर आनंद प्राप्त होगा ॥

१८—यह दुर्लभ बख़्शिश संत सतगुरु की दया और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल की मेहर से हासिल होगी । तब जीव को मालूम होवेगा, कि निरबंधी कैसे माया के घेर में, मन और इंद्रियों के सबब से, देह और दुनिया और उसके सामान में फंस गया, और अनेक बंधनों में गिरिफ़्तार हो गया था, और फिर संत सतगुरु और कुल्ल मालिक के चरनों में प्रीत लाने से किस तरह सहज में, उसके सर्ब बंधन छूट

गये और निरबंध होकर अपने निजदेश में, अपने सच्चे माता पिता कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में पहुंच कर, अमर आनंद को प्राप्त हुआ और वही संत सतगुरु और उनके सतसंग की महिमा जानेगा ॥

१६—इस्से ज़ाहर है कि जो कोई देह और दुनिया से प्रीत करेगा, यानी जगत के बंधनों में गिरिफ़्तार रहेगा, वह चौरासी में भरमेगा, यानी बारम्बार देह धारन करके, दुख सुख और जनम मरन का कलेश सहता रहेगा। लेकिन जो कोई संत सतगुरु और कुल्ल मालिक के चरनों में प्रीत करेगा, वह एक दिन निरबंध होकर निज धाम में बासा पावेगा, और परम आनंद को प्राप्त होगा ॥

बचन—३३

सच्चे परमार्थी के भक्ती की कारवाई का बर्णन

१—पहिले संत सतगुरु की ख़ास ज़रूरत ।

१—आदि में जब कुछ रचना न थी, तब अनामी पुर्ष राधास्वामी के चरनों से, आदि धार शब्द की प्रघट हुई, और उसीने चांदना किया, और ग़ुबार को हटाती हुई और हर एक मंडल की जुदा २ रचना करती हुई, नीचे उतरी और पिंड में ठहरी, और मन और

इन्द्रियों के वसीले से बाहर माया की रचना में फंस गई, और अनेक जनम धारन करके अपने निज घर और कुल्ल मालिक को (जो उसके सच्चे माता पिता हैं) भूल गई, और कुटम्ब परवार और भोगों में बँध कर दुख सुख सहती है ॥

२—अब वास्ते दूर करने इस भूल और भरम और दुखः सुख के चक्कर के ज़रूर है कि कोई राधास्वामी देश का भेदी और बासी मिले, तो वह अपने बचनों की धार से घट का तमोगुन और अंधकार हटाकर, और शब्द का उपदेश करके, घट में चाँदना करे, और आहिस्ते २ तमोगुनी रचना यानी बिकारों को, जैसे काम क्रोध लोभ मोह अहंकार और ईर्षा वग़ैरे को घटाकर सतोगुनी अंग जैसे सील संतोष क्षिमा दीनता और प्रेम को पैदा करे। ऐसे निज धाम के बासी और उपदेश करनेवाले का नाम संत सतगुरु है ॥

३—जब तक ऐसे संत सतगुरु नहीं मिलेंगे, तब तक निजधाम का भेद और जुगत रास्ता तै करके वहां पहुंचने की हरगिज़ मालूम नहीं होगी। क्योंकि सिवाय भेदी और बासी उस धाम के, और किसकी ताक़त है कि जो भेद और जुगत को बतावे, और अपनी मदद से रास्ता तै करावे ॥

४—अब समझना चाहिये कि जैसे आदि शब्द की धार ने (जो कि चेतन्य की धार है) प्रथम चांदना करके सत्त का प्रकाश किया, और प्रेम और आनंद का भंडार खोला, इसी तरह जब तक कि संत सतगुरु के बचनों की धार से घट का अंधकार नहीं हटाया जावेगा, तब तक जीव को असली सत्त और असत्त की तमीज़ नहीं होगी। और जब तक कि उनसे सुरत शब्द मारग का उपदेश लेकर अंतर में अभ्यास नहीं करेगा, तब तक शब्द का चांदना नहीं होगा, और प्रेम और आनंद प्रघट नहीं होंगे, और रास्ता नहीं चलेगा ॥

५—इस वास्ते हर एक जीव को, जो अपना सच्चा कल्यान और उद्धार चाहे, जरूर है, कि पहिले संत सतगुरु से मिले, और उनका सतसंग करके और उपदेश लेकर, अंतर अभ्यास सुरत शब्द जोग का शुरू करे। और जो कोई और लोगों से (जिनका नाम गुरू हरगिज़ नहीं हो सक्ता) समझौती लेकर, परमार्थी कार्रवाई करेगा, वह निज घर में नहीं पहुँचेगा, और रास्ते में माया के घेर में, कहीं न कहीं अटक कर रह जावेगा, और जनम मरन और दुख सुख के चक्कर से उसका बचाव हरग़िज़ नहीं होवेगा, क्योंकि गुरू

नाम अंधेरे में चांदना करनेवाले, और निजघर का रास्ता तै कराने वाले का है, सो जहाँ तक माया का घेर है, वहां तक अंधेरा है, और उस अंधेरे में सिर्फ़ शब्द ही प्रकाश करनेवाला है, सो जो कोई शब्द का भेद बतावे, और उसको प्रघट कराके घट में चांदना करे, और असली सत्तपद में पहुँचावे, वही सच्चा गुरू है। और किसी का नाम सच्चा गुरू नहीं हो सक्ता है॥

६—अब समझो कि जीव को ऐसे गुरू की वास्ते निजघर में पहुँचने के ख़ास ज़रूरत है कि नहीं॥

२—दूसरे कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु की भक्ती की ज़रूरत॥

७—कुल्ल जीव पहिले मा बाप के हुकम में चलते हैं, फिर वास्ते सिखाने बिद्या और हुनर के उस्ताद के सुपुर्द किये जाते हैं, बाद इसके हाकिम या अपने आक़ा की ताबेदारी करते हैं, और अपने घर के कारोबार इस्त्री की सलाह से करते हैं, तब दुनिया और ग्रहस्त के सब काम दुरुस्ती से चलते हैं, और उनको उन कामों के अंजाम देने की दुरुस्त समझ बूझ आती है॥

८—इसी तरह जब परमार्थी जीव संत सतगुरु और कुल्ल मालिक की आज्ञा में बर्तेगा, और उनकी बानी

और बचन से समझ बूझ दुरुस्त हासिल करेगा, और उनके चरनों में प्रीत और प्रतीत लावेगा, तब परमार्थ की कार्रवाई दुरुस्ती से बन पड़ेगी, यानी भक्ती की रीत में मुनासिब तौर से बर्ताव कर सकेगा, और अंतर अभ्यास में तरक़्क़ी होती जावेगी ॥

९—चाहे कोई कितना ही सतसंग और अंतर अभ्यास करे, लेकिन जो संत सतगुरु के चरनों में प्रीत और प्रतीत न होगी, और उनकी अज्ञा के मुवाफ़िक़ कार्रवाई नहीं करेगा, और भक्ती के क़ायदों में थोड़ा बहुत दुरुस्ती के साथ नहीं बर्तेगा, तब तक उसकी असली तरक़्क़ी परमार्थ में नहीं होगी, यानी मन की चालढाल नहीं बदलेगी, और न उसके घट में प्रेम जागेगा और न अंतर और बाहर के सतसंग में रस और आनंद मिलेगा ॥

३—तीसरे भक्ती के ख़ास अंग यह हैं ।

१०—कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल को सर्ब समर्थ और अपने घट में मौजूद, और हर वक़्त और हर जगह हाज़िर नाज़िर जान्ना, और उनकी मौज के साथ जहां तक बन सके मुवाफ़क़त करना। और संसार और भोगों की तरफ़ से किसी क़दर बैराग और उदासीनता रखना संत सतगुरु के चरनों में दीनता और अनुराग

बढ़ाते रहना, और उनको अपना सच्चा हितकारी और उद्धारकरता मानना ॥

४—चौथे कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु के चरनों में गहरी प्रीत और पकड़ ॥

११—जैसे कि ग्रहस्ती को अपने इस्त्री और पुत्र और कुटम्ब परवार में गहरा मोह और प्यार और मज़बूत बंधन होता है, और उसके सबब से वह चाहे जहां परदेश में जावे, और कितनेही दिन वहां रहे, लेकिन किसी में उसका बंधन नहीं होता, और अपनी पूंजी अपने घर को भेजता रहता है और हमेशा मुंतज़िर इस बात का रहता है कि क़ब मौक़ा मिले और छुटकारा होवे, तबही घर को जावे और अपने कुटम्ब से मिले ॥

१२—इसी तरह सच्चे परमार्थी का बंधन संत सतगुरु और उनके सतसंग में होता है, कि सिवाय उनके और कोई संग उसको प्यारा नहीं लगता और हमेशह इरादा और कोशिश अपने निजघर में जाने की करता रहता है, और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के दर्शनों की तड़प हिरदे में लगी रहती है ॥

१३—इस बंधन और शौक़ का फ़ायदा यह है कि उस परमार्थी का मन और किसी जगह इस संसा[र] में ऐसा मजबूत नहीं बँधता, और चित्त किसी

यानी माया और उसके पदार्थों में नहीं जाता। अपने प्रीतम और निजघर की याद ज़बर रहती है, और अंतर में थोड़ा बहुत रस लेता रहता है, कि और जगह उसको चैन नहीं आता ॥

१४—जब तक इस क़दर गहरी प्रीत और पकड़ चरनों में कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु के न होगी, तब तक ख़ौफ़ रहता है, कि माया के ज़बर भोग मिलने के वक़्त झोका खा जावे, और अपने प्रीतम की प्रीत ढीली करके, माया के पदार्थों और संसार की मान बड़ाई में लिपट जावे ॥

५—पाँचवें सुरत शब्द मारग के अभ्यास में ज़रूरत शौक़ और मिहनत की वास्ते प्राप्ती रस और आनंद के ॥

१५—जैसे दुनिया के लोग अपने २ पेशे और रोज़गार में निहायत तवज्जः और मिहनत के साथ कार्रवाई करते हैं और जो फ़ायदा यानी धन उस्से प्राप्त होता है उस्से आप और अपने कुटम्ब को पालते हैं, और भोग बिलास करके मगन रहते हैं। और आइन्दा अपने काम में तरक़्क़ी हासिल करते हैं ॥

१६—इसी तरह परमार्थी शख़्स भी अपने अभ्यास मिहनत करके रस और आनंद लेता है, और वही आनंद सुरत और मन का अहार है और जिस क़दर यह आनंद बढ़ता है उसी क़दर उसका असर इंद्रियों

और देह तक पहुंच कर, उनको निर्मल और ताज़ा करता है। और कुल्ल मालिक और संत सतगुरु के चरनों में प्रीत और प्रतीत को बढ़ाता है कि जिस्से आइंदा अभ्यास की तरक़्क़ी होती जाती है ॥

६—छठे कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु की सरन और उनकी दया का भरोसा ॥

१७—जैसे दुनिया के लोग अपनी बिद्या और बुद्धी और पौरुख और ताक़त का बल और भरोसा रख के दुनिया के काम करते हैं और ख़्याल करते हैं कि वे अपनी समझ बूझ और चतुराई से कैसाही काम आकर पड़े उसको दुरस्ती से अनजाम देंगे ॥

१८—इसी तरह सच्चे परमार्थी को चाहिये कि कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु की सरन और उनकी दया का भरोसा दृढ़ करे, कि जिसके बल से वह मन और माया के बिघनों से बचकर और अपना अभ्यास और भक्ती दुरस्ती से करके एक दिन अपने जीव का कारज बना लेगा, और भक्ती के अंग और रीत में, चाहे जैसे कठिन होवें, उनकी मेहर और दया से आसानी से बर्त सकेगा ॥

१९—बर ग़ैसरन और दया के यह रास्ता [illegible] निहायत मुशकिल है बल्कि नामुमकिन है। पुर्षार्थ और बल का आसरा लेकर अभ्यास

रक़्क़ी का रास्ता

नहीं है

गालिब

हैं, डर और शरम और लिहाज़ और

छोड़कर, भक्ती के क़ायदों और रीत में बर्ताव

और संत सतगुरु और प्रेमीजन में बिशेष प्यार

चाहिये, तब उसका परमार्थ दुरुस्त और पूरा

...थ। के लोगों का, जो सच्चे परमार्थ

तरह परमार्थी को भी

बिरादरी वगै़रे के

आ- का शौक़

बचन

...ग़ों में उन्न-

और बरताव

...हुत ख़्याल

रखना

...हिये।

बन सकेगा। और जो कोई कुल की मरजाद और दुनिया की लाज और दुनियादारों के डर में अटका रहेगा उसके परमार्थ में कसर पड़ेगी, यानी प्रेमाभक्ती के अंगों में जैसा चाहिये नहीं वर्त सकेगा। और इसी तरह कुटम्ब परवार का विशेष मोह और डर परमार्थ में बहुत बिघन और खलल डालता है इस वास्ते ज़रूरत के मुवाफ़िक़ सब से प्रीत करना और ब्यौहार में बर्तना जायज़ और दुरुस्त है. लेकि[illegible]
सान [illegible]

राधास्वामी दयाल की दया
राधास्वामी सहाय

छांटे हुए शब्द प्रेमबानी जिल्द ४

शब्द १

मन तू करले हिये धर प्यार ।
राधास्वामी नाम का आधार ॥
राधास्वामी नाम है अगम अपारा ।
जो सुमिरे तिसे लेहिं उबारा ॥
सुन घट में अनहद झनकार ॥ १ ॥

राधास्वामी धाम है ऊंच से ऊंचा ।
सन्त बिना कोइ जहां न पहुंचा ॥
दरस किया जाय कुल करतार ॥ २ ॥

राधास्वामी नाम की महिमा भारी ।
शेष महेश कहत सब हारी ॥
लीला अपर अपार ॥ ३ ॥

राधास्वामी परम पुरुष जग आये ।
हंसजीव सब लिये मुक्ताये ॥
और जीवन पर बीजा डार ॥ ४ ॥

नाम की महिमा बहुबिध गाई ।
मुक्ती की यही जुगत बताई ॥
सुमिरो राधास्वामी बारम्बार ॥ ५ ॥
राधास्वामी नाम का भेद सुनाया ।
सुरत शब्द मारग दरसाया ॥
धुन संग सुरत चढ़ाओ पार ॥ ६ ॥
धुन आत्मक जो राधास्वामी नामा ।
तिस महिमा कस कहूं बखाना ॥
जो सुने सोइ जाय निज घरबार ॥ ७ ॥

शब्द २

सुरतिया हरख रही ।
निरखत गुरु चरन बिलास ॥ १ ॥
बिगसत खेलत संग गुरू के ।
दिन २ बढ़त हुलास ॥ २ ॥
प्रीत प्रतीत बढ़त चरनन में ।
तजत काम और भोग बिलास ॥ ३ ॥
उमंग उमंग कर गावत बानी ।
मगन होय रह गुरु के पास ॥ ४ ॥
चित दे सुनत बचन सतसंग के ।
चेत करत घट में अभ्यास ॥ ५ ॥
मन और सुरत सिमट कर चालें ।
तजत देश जहां माया बास ॥ ६ ॥

तीसर तिल धस सुनती बाजा ।
लखती जहँ वहँ जोत उजास ॥ ७ ॥
गगन ओर धावत स्रुत प्यारी ।
पावत काल तिरास ॥ ८ ॥
अधर चढ़त सुन २ धुन अच्छर ।
सुन्न में हंसन संग बिलास ॥ ९ ॥
भंवरगुफा धुन सुन गई आगे ।
निज सूरज संग मिला अभास ॥ १० ॥
अलख अगम लख हुई अचिंती ।
मिलगई प्रेम आनन्द की रास ॥ ११ ॥
प्रेम पियारी सुरत रंगीली ।
प्यारे राधास्वामी की हुई ख़वास ॥ १२ ॥
दरशन कर अतिकर मगनानी ।
पाय गई धुरधाम निवास ॥ १३ ॥
प्रेम प्रताप छाय रहा घट में ।
प्रेम स्वरूप किया हिरदे बास ॥ १४ ॥
यह गत मत है अगम अपारा ।
पावे मेहर से कोइ निज दास ॥ १५ ॥
कर सतसंग गहे स्वामी सरना ।
सुरत चढ़ावे निज आकाश ॥ १६ ॥
सुरत होय तब स्वामी प्यारी ।
प्रेम की दौलत पावे ख़ास ॥ १७ ॥

राधास्वामी मेहर दृष्टि से हेरें ।
प्रेम दुलार होय ख़ासुल-ख़ास ॥१८॥

जो अस दुर्लभ भक्ति कमावे ।
जावे निज घर बिन परियास ॥१९॥

सुरत निमानी मेरी स्वामी सँवारी ।
गावत उन गुन स्वाँसो स्वाँस ॥२०॥

प्रेम दुलारी शब्द पियारी ।
होय निहाल बैठी चरनन पास ॥२१॥

दयाल सरन ले काज बनाया ।
तज दिया जग का मोह और आस ॥२२॥

प्रेम अधार जियत सुर्त प्यारी ।
जग से रहती सहज उदास ॥२३॥

धूम हुई भक्ती की भारी ।
करम भरम सब हो गये नाश ॥२४॥

प्रेम अधारी सुरत सिरोमन ।
आरत दीपक करती चास ॥२५॥

सब सखियाँ मिल आरत गावें ।
राधास्वामी चरनन धर बिसवास ॥२६॥

दया करी राधास्वामी प्यारे ।
घट घट कीना प्रेम प्रकाश ॥२७॥

शब्द ३

सुरतिया वार रही ।
तन मन गुरु चरन निहार ॥ १ ॥
बिमल बैराग धार कर मन में ।
छोड़ दिया संसार ॥ २ ॥
मोह जाल के बंधन काटे ।
गुरु सेवा में रहे हुशियार ॥ ३ ॥
सतसंग बचन धार कर चित में ।
मन को छिन छिन डारत मार ॥ ४ ॥
भोग अंक को काटत छिन छिन ।
राधास्वामी नाम जपत हर बार ॥ ५ ॥
ध्यान लगाय बढ़ावत प्रीती ।
शब्द सुनत हियरे धर प्यार ॥ ६ ॥
घंटा संख मचावत शोरा ।
छिटक रहा घट जोत उजार ॥ ७ ॥
अनहद् शब्द लगा अब गरजन ।
चढ़ कर पहुंची गगन मँझार ॥ ८ ॥
द्वारा फोड़ गई अब सुन में ।
न्हाइ मानसर मैल उतार ॥ ९ ॥
भँवरगुफा का देख उजारा ।
बीन सुनी सतगुरु दरबार ॥ १० ॥

अलख अगम के पार चढ़ाई ।
राधास्वामी चरन मिला आधार ॥ ११ ॥
तन मन तोड़ किया जब सतसंग ।
भोग बासना दई निकार ॥ १२ ॥
गुरु चरनन में प्रीत घनेरी ।
कीनी हिय से तन मन वार ॥ १३ ॥
दीन ग़रीबी धार चित्त में ।
मन के मान दिये सब झाड़ ॥ १४ ॥
तब गुरु परसन होय मेहर से ।
अंग लगाया किरपा धार ॥ १५ ॥
अस सतसंग करे जो कोई ।
सोई जावे भौजल पार ॥ १६ ॥
राधास्वामी परम गुरू दातारा ।
पहुंचावें फिर निज घरबार ॥ १७ ॥
होय निचिंत बसे सुख सागर ।
हरदम राधास्वामी दरस निहार ॥ १८ ॥
अचरज नाम और अचरज रूपा ।
अचरज मेहर का वार न पार ॥ १९ ॥
लख लख भाग सरावत अपना ।
राधास्वामी चरन पकड़ रही सार ॥ २० ॥
राधास्वामी दयाल सरन हिय धारी ।
उन मेहर से दिया मेरा काज संवार ॥ २१ ॥

राधास्वामी दयाल की दया
राधास्वामी सहाय

बचन-३४

सहज उपदेश

फ़ेहरिस्त मज़मून सहज उपदेश

(१) रचना का कुल्ल मालिक और करतार ज़रूर है ॥

(२) सुरत यानी जीव कुल्ल मालिक की अंस है ॥

(३) मन और सुरत और इन्द्रियों का बंधन जगत और उसके भोगों में और उसके सबब से दुख सुख सहना ॥

(४) तीन ताप दुख का रूप हैं ॥

(५) दुख सुख और जनम मरन से बग़ैर दया संत-सतगुरु के छुटकारा नहीं हो सक्ता है ॥

(६) बर्णन इस बात का कि वास्ते प्राप्ती सच्चे परमार्थ के संत सतगुरु से मिल कर उपदेश लेना ज़रूरी है ॥

(७) सिफ़त पूरे और सच्चे गुरू की ॥

(८) जब पूरे गुरू मिलें और कुल्ल मालिक का भेद देवें तब उनके साथ किस तरह बर्तावा करना चाहिये ॥

(९) जीव की जाग्रत के समय आंख में बैठक है और वहीं से खिंच जाना अंदर और ऊपर की तरफ़ वक़्त नींद और मौत के और बेख़बर हो जाना देह और दुनिया के दुख सुख से ॥

(१०) टेकियों की मूर्खता और अहंकारी पन और बाद बिबाद करने की आदत और नाक़ाबिलियत वास्ते करने किसी क़िसम के अंतरी अभ्यास के या शामिल होने संतों के सतसंग के ॥

(११) ज़ात पांत के टेकी भी वैसे ही मूर्ख और नादान हैं और अपने परमार्थी नफ़े और नुक़सान से ग़ाफ़िल, यह लोग संतों के दर्शन और सतसंग के फ़ैज़ और फ़ायदे से हमेशा महरूम रहेंगे ॥

(१२) बाज़े लोगों के ओछे और नाक़िस ख़्याल निसबात औरतों के परदे के और हारिज होने उनकी तरक़्क़ी इलम और अक़्ल समझ और तजर्बह और सच्चे परमार्थ में ॥

(१३) एक गुरू करके दूसरा गुरू न करने के बयान में ॥

(१४) क़ायदा बर्ताव का सतसंग में और पूरे गुरू के साथ ॥

(१५) आरती का क़ायदा और फ़ायदा ॥

(१६) हार चढ़ाने का फ़ायदा ॥

(१७) मत्था टेकने और बंदगी करने का फ़ायदा ॥

(१८) परशादी और चरनामृत का फ़ायदा ॥

(१९) ज़ात का भेद और उसका मुक़र्रर होना करम के बमूजिब ॥

(२०) सेवा का बर्णन ॥

(२१) महिमा सतसंग की ॥

(२२) महिमा अंतर अभ्यास यानी अंतरी सतसंग की ॥

(२३) जीवों का बेजा और ग़लत भरम, और ख़ौफ़ निसबत राधास्वामी मत में शामिल होने के ॥

(२४) दुनिया के लोगों का धरम और ईमान ॥

(२५) प्रेम की महिमा ॥

(२६) सरन की महिमा ॥

(२७) हिदायत यानी उपदेश कुल्ल जीवों को ॥

(२८) गोश्त खाने का नुक़सान ॥

(२९) शराब और भंग और दूसरे नशों के खाने पीने का नुक़सान ॥

(३०) तितिम्मा ॥ यानी आख़ीर बचन ॥

———

बचन-३४

सहज उपदेश

(१) रचना का कुल्ल मालिक और करतार ज़रूर है।

१—समझवार और बिचारवान मनुष्य को अनेक प्रकार की ज़मीनी और आसमानी रचना, और उसकी भारी और बारीक कारीगरी को देखकर मन में फ़ौरन यह ख़्याल पैदा होगा कि उसका करता ज़रूर है और वह सर्ब समर्थ और अंतरजामी और सर्व व्यापक पुर्ष है ॥

२—सबूत इस बात का कि कोई कुल्ल मालिक ज़रूर है यह है कि हरचंद चेतन्य सब जगह मौजूद है, मगर बग़ैर मदद अपने से बिशेष चेतन्य के कुछ कार्रवाई रचना और उसके पालन पोषन वग़ैरे की नहीं कर सक्ता। जैसे इस लोक का चेतन्य बग़ैर मदद अपने विशेष चेतन्य के, जिसकी धार इस सूरज से आती है, कोई कार्रवाई नहीं कर सक्ता है, इसी तरह से यह सूरज अपने बिशेष चेतन्य निरंजन के आसरे, और वह ब्रह्म रूपी सूरज और फिर वह सत्त नाम रूपी निज सूरज, और फिर वह भी कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के आधीन है ॥

३—इस सूरज के विशेष चेतन्य सूरज का पता नजूमी देते हैं, और ब्रह्म रूपी सूरज की महिमा जोगीश्वर ज्ञानियों ने की है, और ब्रह्म के परे सत्त नाम रूपी सूरज का भेद संतों ने बर्नन किया है, और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल का पद, कुल्ल मालिक ने आप परम संत रूप धारन करके प्रघट किया।

४—इन अस्थानों या सूरजों से जो चेतन्य धार आती है, वह अपने २ समान चेतन्य सूरज मंडल की रचना की कुल्ल कार्रवाई में मदद देती है। और इन हर एक अस्थानों का जो धनी है, वही नीचे की रचना का मालिक और मुख़्तियार है, और राधास्वामी दयाल कुल्ल मालिक हैं, और सिर्फ़ परम संत उनके धाम तक पहुंचे हैं।

५—जो आदि धार राधास्वामी धाम से निकली वही कुल्ल रचना की करतार है, यानी उस धार से पहिले सत्तलोक तक यानी दयाल देश की रचना हुई। और सत्तलोक से जो दो धार प्रघट हुईं, उन से दूसरे दरजे (ब्रह्मान्ड) यानी निरमल चेतन्य और शुद्ध माया देश की रचना हुई और निरंजन जोत से जो तीन धारें प्रघट हुईं उनसे तीसरे दरजे (पिंड)

यानी निर्मल चेतन्य और मलीन माया देश की रचना हुई ।

६—हर चंद कि निर्मल चेतन्य सब जगह मौजूद है, लेकिन शुद्ध माया देश यानी दूसरे दरजे में शुद्ध माया के ग़िलाफ़ों से, और मलीन माया देश यानी तीसरे दरजे में मलीन माया के ग़िलाफ़ों से ढका हुआ है। इस सबब से माया देश में नीचे के दरजे का चेतन्य समान, और ऊपर के दरजे का बिशेष कहलाता है क्योंकि बग़ैर मदद बिशेष चेतन्य के वह पूरी तौर से रचना की कार्रवाई नहीं कर सक्ता ॥

७—हर एक मंडल और दरजे में जो रचना है उसको ग़ौर से देखने और बिचारने से भारी कारीगरी और समर्थता और इरादा या मतलब रचना करनेवाले का साफ़ पाया जाता है। यह समर्थता कुल्ल मालिक की इन कामों में साफ़ ज़ाहिर है, जैसे माया और उसके इजज़ा तत्त और गुन वग़ैरे को पैदा करना, और उस मसाले से अनेक तरह के रूप और रंग निहायत बारीकी और कारीगरी से बनाना, और फिर उनसे और उनके अंग २ से जुदा २ काम लेना। जो नज़र ग़ौर से देखा जाय तो यह क़ैफ़ियत कुल्ल

रचना में, और भी एक २ देह और उसके बनाव में साफ़ मालूम होती है ॥

८—जब समर्थता और कारीगरी और इरादा और मतलब कुल्ल आसमानी और ज़मीनी रचना में पाया जाता है, और तीनों शक्ती यानी पैदा करने और पालन पोषन करने और सिंघार करने की, हर जिस्म यानी हरएक नाम और रूप में कार्रवाई कर रही हैं, फिर साबित हुआ कि कोई कुल्ल मालिक इस रचना का ज़रूर है, और वह सर्ब समर्थ और भारी कारीगर और सब जगह मौजूद और अंतरजामी और सर्ब ज्ञानी और अमर और अजर है ।

९—यह कुल्ल मालिक घट २ में मौजूद है, और ऊंचे से ऊंचा उसका धाम है, और राधास्वामी उसका नाम है ॥

१०—यह नाम धुन्यात्मक है, यानी इसकी आवाज़ बे ज़बान और बे बाजे के, ऊंचे मंडल में हर एक के घट में हर वक़्त हो रही है। और गहरे अभ्यासी और प्रेमी उसको अपने अंतर में सुनते हैं। यह नाम किसी मनुष्य का धरा हुआ नहीं है, कुल्ल मालिक ने आप संत रूप धारन करके, जीवों के उद्धार के निमित्त उसको आप अति दया करके प्रघट किया।

११—मालूम होवे कि मनुष्य का स्वरूप कुल्ल रचना का नमूना है, और जितने मंडल बाहर हैं, वे सब छोटे पैमाने के मुवाफ़िक़ घट २ में मौजूद हैं, और बाहर के मंडलों से मुवाफ़िक़त रखते हैं, यानी एक हो रहे हैं। जैसे सात खन के मकान की हवा, बाहर की हवा के मंडल से, अपने २ दरजे के मुवाफ़िक़ मेल रखती है, और एक हो रही है ॥

सुरत यानी जीव किसको कहते हैं और कहां से आये।

१२—आदि में सब जीव धुर मुक़ाम से आये, जैसे सूरज और सूरज की किरन, वह किरन यानी आदि धार जब माया के घेर में उतरी, तब माया के ख़ोल उस पर चढ़ते चले आये। इन ख़ोलों का नाम देही है। जिस मंडल में सुरत उतर कर ठहरी उसी मंडल के माया के मसाले की देह उसकी बन गई, और उसमें बैठ कर सुरत उसी रचना के साथ बर्ताव करने लगी, और उसमें किसी क़दर बंध गई।

१३—इसी तरह इस लोक में उतर कर मनुष्य देह धारन करी, और उसमें उसका बंधन हो गया और ऊपर के मंडलों के पट बंद हो गये, यानी सुरत का रुख़ नीचे की तरफ़ हो गया। ऐसी सुरतों को जिनका देह में और भी इस लोक की रचना में बंध

हो गया जीव कहते हैं, यानी उनको अपने मालिक और निज धाम की सुध बिसर गई ॥

संत सतगुरु किसको कहते हैं ।

१४—जो सुरत कि उस आदि धाम से एक दम उतर कर बा ख़बर और होशियार आई, और नर रूप धारन किया, उसके घट में सब पट खुले रहते हैं, यानी जब वह चाहे धुर पद में चली जावे और कुल्ल मालिक का दर्शन करे, और जब चाहे जब पिंड में उतर कर इस दुनिया की सैर करे । ऐसी सुरत को संत और सतगुरु कहते हैं, और उसका कुल्ल मालिक के साथ बराबर मेल रहता है, और वह किसी मंडल की रचना या इस दुनिया में नहीं फंसती है ॥

(२) सुरत यानी जीव कुल्ल मालिक की अंश है ।

१५—दफ़ा १२ और १३ में लिखा गया है कि सब जीव बतौर किर्नियों के आदि धाम से आये और माया के घेर में उन पर दरजे ब दरजे ख़ोल चढ़ते चले आये, और इन ख़ोलों यानी देहियों में उनका बंधन हो गया, पर जौहर उनका और कुल्ल मालिक का एक है, और सूत उनका कुल्ल मालिक से लगा हुआ है, पर रास्ते में जाबजा पट लगे हुये हैं, क्योंकि धार का रुख़ नीचे और बाहर की तरफ़ हो रहा है ॥

१६—अब मालूम होवे कि कुल्ल रचना हरएक मंडल में सुरत यानी आदि धार ने जो धुर पद से आई करी है। और इस लोक में भी साफ़ नज़र आता है कि एक २ सुरत ने अपने क़याम के वास्ते, यहाँ एक २ पिंड रचा, और उस पिंड की सम्हाल और पालन पोषन उसी की शक्ती से हो रहा है, यानी तीनों गुन और पांचो तत्त और उनकी प्रकिरतियां और अनेक शक्तियां जैसे बिजली की शक्ती और रोशनी की शक्ती और खैंच शक्ती और हटाव शक्ती और बनाव शक्ती वग़ैरः सब ताबेदारी में सुरत के जब कि उसने पहिले ही अपना ज़हूर किया, हाज़िर होकर पिंड के बनाव और सम्हाल में मदद देती हैं, और सब आपस में रल मिल कर काम करती हैं। और जब सुरत पिंड को छोड़ती है, तब वे सब आपस में लड़ भिड़ कर पिंड को बिगाड़ देती हैं, यानी उसका अभाव हो जाता है॥

१७—इस्से ज़ाहर है कि कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल, अपनी किर्नियों या धारों के वसीले से यहां सब जगह मौजूद हैं। और उन्हीं किर्नियों की मार्फ़त यहां अनेक प्रकार की रचना करा रहे हैं, और जब उन किर्नियों यानी सुरतों का पिंडों से वियोग होता

है, तब उन देहियों का अभाव हो जाता है और कुल्ल मसाला माया का जैसे तत्त और गुन और शक्तियाँ सुरत के आधीन हैं, यानी उसकी मौज या हुकम अनुसार कार्रवाई कर रहा है ॥

१८—यह बात दरख़्त की पैदायश पर नज़र करने से, बहुत आसानी से समझ में आसक्ती है। जिस वक़्त कि किसी बीज में से आदि धार निकली यानी कुला फूटा और सुरत ने अपना ज़हूर किया, उसी वक़्त से तीनों गुन और पांचों तत्त और सर्ब शक्तियाँ वहां मौजूद होकर, उस दरख़्त के बढ़ाव और बनाव में मदद देती हैं, और इसी आकाश से मसाला खींच कर लेती हैं, और फ़ज़ूल माद्दा ख़ारिज करती हैं, और वही आदि धार यानी कुला जो फूटा है, बढ़ता हुआ कुल्ल दरख़्त का करता है। और उस दरख़्त के रूह की धारें नसाजाल के वसीले जड़ से पत्ती तक फैली हुई हैं ॥

१९—जब वह दरख़्त मर जाता है यानी उसकी रूह खिँच जाती है, उस वक़्त उसका जिस्म बतौर ईंधन के पड़ा रहता है, चाहे जला दिया जावे या कुछ अर्सह में गल कर ख़ाक हो जावे ॥

२०—जो माया और उनका मसाला और कुल्ल शक्तियां और गुन और तत्त वग़ैरे सुरत के आधीन और ताबेदार न होते, तो तीन लोक की रचना भी न होती और जो कि कुल्ल मालिक का सत्त चित्त आनंद रूप है, इस वास्ते सुरत का भी वही स्वरूप है, यानी इस रचना में वही चेतन्य है और सर्ब रस और आनंद उसी की धार में हैं और इस रचना में सत्त भी वही है, यानी सुरत ही रचना करती है और उसी के सबब से सब रचना ठहरी हुई और क़ायम नज़र आती है और उसके बियोग में उस रचना का यानी देहियों का अभाव हो जाता है ॥

२१—यही सुरत संत सतगुरु की कृपा और सतसंग से उलट कर अपने निज घर में पहुंच सक्री है। पर माया का मसाला जो कि जड़ है, और जिस्से देहियां और उनके अनेक औज़ार, जैसे इन्द्रियां बग़ैरे बने हैं उलट नहीं सक्ता यानी अपनी हद्द के पार नहीं जा सक्ता ॥

२२—यह सुरत अंस मुवाफ़िक़ अपने अंसी यानी कुल्ल मालिक के अमर और अजर है। और जब एक देह को छोड़ती है, तब अपनी चाह और बासना के मुवाफ़िक़ दूसरी देह धारन करती है। क्योंकि

जब तक कुल्ल मालिक का भेद लेकर, और जुगत दरियाफ़्त करके उस तरफ़ को चलना शुरू न करेगी तब तक उसका बंधन देह और दुनियां से नहीं छूटेगा, और बारंबार देह धरनी पड़ेगी ॥

(३) मन और सुरत और इन्द्रियों का बंधन जगत और उसके भोगों में और उसके सबब से दुख सुख सहना ।

२३—सुरत का पिंड में बैठने और इन्द्रियों के वसीले से संसार में बर्ताव करने से, देह और दुनिया में बंधन हो गया । और जो कि देह और इन्द्रियां माया के मसाले से बनी हुई हैं, इस वास्ते उनको इसी देश की रचना में से अहार लेना ज़रूर पड़ा और यही इन्द्रियों के भोग बंधन का कारन हो गये ॥

२४—जब किसी इंद्री के अहार या भोग की ख़्वाहिश पैदा होती है, जो वह ख़ातिर ख़्वाह मिल गया तौ सुख नहीं तौ दुख होता है, या जब किसी औज़ार में देह के कोई ख़लल या बिगाड़ हो जाता है तब भी दुख होता है, ॥

२५—यह हाल दुख सुख का जो निजदेह के साथ तअल्लुक़ रखता है बयान हुआ । इसी तरह हर एक देह को जो जानदार है दुख सुख होता है, और जिसका जिस दूसरी देह या देहियों में बंधन है, उसको भी

उसी क़दर उसका असर पहुंचता है। इस सबब से हर एक शख़्स अपने निज करमों का, और भी दूसरे के करमों का फल जो दुख सुख है भोग करता है, और सबब इस भोगने का बंधन या लाग और लगन है ॥

(४) तीन ताप दुख का रूप हैं ॥

२६—ऐसे कम लोग हैं जिनको सुख विशेष हासिल है और दुख बहुत कम, लेकिन ऐसे जीव कसरत से हैं जिनकी ख़्वाहिशें भोगों की ज्यों की त्यों पूरी नहीं होती हैं, और इस वास्ते दुख सहते हैं ॥

२७—यह दुख तीन क़िस्म के हैं, यानी आधि, ब्याधि, और उपाधि, आधि मन के दुख को कहते हैं, और ब्याधि देह में रोग को कहते हैं, और उपाधि बाहर के क़ज़िये और झगड़े को कहते हैं। इन तीन ताप से इस रचना में कोई जीव खाली नहीं रहता, यानी अपने २ चक्कर के मुवाफ़िक़ यह ताप सब जीवों को ब्यापते हैं, चाहे अमीर होवे या ग़रीब, और सिर्फ़ इसी देह में नहीं बल्कि दूसरी देहों तक करम का फल असर करता है ॥

(५) सुख दुख और जनम मरन में बग़ैर दया संत सतगुरु के छुटकारा नहीं हो सक्ता है ॥

२८—अब जो कोई इन तीनों ताप के असर से और

भी जनम और मरन के कष्ट और कलेश से बचना चाहे, उसके वास्ते संतों ने यही जतन फ़रमाया है, कि जैसे बने तैसे देह और दुनियां के बंधनों को ढीला करे, और चित्त को राधास्वामी दयाल के चरनों में जोड़े। और यह बात संत सतगुरु के सतसंग में शामिल होने और उनके चरनों में प्रीत करने से हासिल हो सक्ती है। बग़ैर उनकी दया के किसी का छुटकारा इन दुक्खों से मुमकिन नहीं है॥

(६) बर्तन इस बात का कि वास्ते प्राप्ती सच्चे परमार्थ के, संत सतगुरु से मिलकर उपदेश लेना ज़रूरी है॥

२६—दुनिया और जीवों के हाल को देखकर मालूम होता है कि कोई काम बग़ैर गुरू या उस्ताद या सिखानेवाले के कोई नहीं सीख सक्ता, फिर सच्चे परमार्थ की कार्रवाई बग़ैर मिलाप सच्चे गुरू के, और उनसे उपदेश लेकर कमाई करने के कैसे मुमकिन है॥

३०—जो कोई ऐसा ख़्याल करते हैं कि गुरू की कुछ ज़रूरत नहीं है, और पोथियां पढ़कर ज़ाहरी कार्रवाई आप कर सक्ते हैं, उनको यह मालूम नहीं है कि सच्चा परमार्थ किसे कहते हैं। वे लोग सिर्फ़ बाहरी करतूत को परमार्थ समझते हैं, जैसे पोथी पढ़ना और पढ़ाना, भजन गाना और प्रार्थना करना, और ब्रत

रखना, और ज़बान से या स्वांसा और मन से नाम का जाप करना, या बेठिकाने मूर्त या किसी और स्वरूप या अरूप ब्रह्म का ध्यान करना, या तीर्थों और मंदिरों में जाना और ख़ैरात करना, या पाठशाला धरमशाला कुयें बावड़ी बाग़ या और कोई मकान वास्ते जीवों के उपकार और आराम के बनाना वग़ैरे २ ॥

३१–यह सब काम हर कोई जिसने थोड़ी बहुत विद्या पढ़ी है बग़ैर मदद् गुरू या उस्ताद् के पोथियां पढ़ कर, और बाहरमुखी परमार्थियों की चालढाल देखकर आसानी से कर सक्ता है, लेकिन सच्चा परमार्थ बग़ैर सच्चे और पूरे गुरू के कोई नहीं कमा सक्ता, क्योंकि उसमें कुल्ल मालिक राधास्वामी द्याल के धाम और उसके रास्ते और मंज़िलों का भेद् लेकर, निज घर की तरफ़ चलना पड़ता है, और वह चाल बग़ैर मालूम होने जुगत और सवारी के, और मिलने मदद् के ऐसे शख़्स से जो आप रास्ता तै कर चुका है कोई नहीं चलसक्ता। और जो कार्रवाई कि बाहर मुखी परमार्थी लोग करते हैं, उसमें चलना और चढ़ना बिल्कुल नहीं है, और न सच्चे मालिक के धाम का पता और भेद् है ॥

[७] सिफ़त सच्चे और पूरे गुरू की ।

३२—गुरू नाम उसका है कि जो अंधेरे में चांद्ना करे और रास्ता बतावे, और उस रास्ते पर ख़ास जुगत के साथ चला कर निज धाम में पहुंचावे। सो यह सिफ़त पहिले तो कुल्ल मालिक की है, कि जिस ने मौज से अपने चरनों से आदि धार प्रघट करके अँधेरे में चाँद्ना किया और रचना करी और जीवों को उस धार से मिलाकर अपनी तरफ़ खींचता है, इस वास्ते वही आदि गुरू और परम गुरू है ॥

दूसरे यह सिफ़त संतसतगुरु की है, कि जो कुल्ल मालिक राधास्वामी द्याल के निज पुत्र या मुसाहब हैं, और उसकी मौज से दुनिया में आकर जीवों को उपदेश करके निजधाम में पहुंचाते हैं, यानी अपने बचनों से उनके घट का तमोगुन और अंधकार दूर करके, और रास्ता और जुगत बताकर और मेहर से चांद्ना करके उनसे रास्ता तै करवाते हैं, और सिवाय उनके जीव के कल्यान के, और कोई मतलब जीवों से नहीं रखते हैं। जब तक ऐसे गुरू नहीं मिलेंगे और रास्ता तै न होगा तब तक किसी जीव का सच्चा उद्धार होना क़ितई मुमकिन नहीं है ॥

———

(८) जब पूरे गुरू मिलें और कुल्ल मालिक का भेद देवें, तब उनके साथ किस तरह बरतावा करना चाहिये ॥

३३—जिस किसी को भाग से सतगुरु मिल जावें, और कुल्ल मालिक का पता और भेद देवें, और जुगत उस्से घट में चढ़कर मिलने की बतावें, तब उसको चाहिये कि कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में गहरी प्रतीत और प्रीत लावे ॥

३४—प्रतीत की शरह यह है कि उनको, (१) सर्व समर्थ और (२) हाज़िर नाज़िर और (३) हर वक़्त अपने अंग संग समझे। ऐसा यक़ीन मुशकिल से आता है, लेकिन जिसके दिल में थोड़ा बहुत पैदा हुआ, वह उसके मन और उसकी कार्रवाई की गढ़त बहुत जल्द कर देगा। यानी जब वह कुल्ल मालिक को हाज़िर नाज़िर और हर वक़्त अपने संग समझैगा, तौ बहुत कम उसका मन नाक़िस तरंगों में बर्ताव करेगा, और कुल्ल मालिक को हर काम में करता धरता मानेगा, और यही भक्तों की चाल और समझ रहती है ॥

३५—प्रीत की शरह यह है, कि कुल्ल मालिक की, ऊपर के लिखे हुये के मुवाफ़िक़, प्रतीत करके, उसके चरनों में इस क़दर प्यार और भाव लावे, कि संसारियों की प्रीत उस्से नीचे दरजे की रहे, और दर्शन की शौक़

ऐसा तेज़ होवे, कि दुनिया और दुनिया के सामान की चाह और प्रीत हलकी पड़ जावे बल्कि फ़ज़ूल ख़्वाहिशें बिल्कुल बंद हो जावें, यानी कोई संसारी चाह, सिवाय औसत दरजे पर, अपने और अपने कुटम्ब के गुज़ारा करने के मन में न रहे। और जो कुछ कि हो रहा है और आइँदह होवे, वह सब अपने मालिक का हुकम और मौज समझे, और उसके साथ जिस क़दर बन सके मुवाफ़क़त करे, यह भक्ति भाव का स्वरूप और बर्तावा है ॥

३६–जो कि संत सतगुरु की महिमां अगम और अपार है, और वह कुल्ल मालिक के निज धाम के बासी हैं, और सिर्फ़ जीवों के कल्यान के वास्ते जब तब संसार में आते रहते हैं इस वास्ते प्रेमी परमार्थी को मुनासिब है कि उनके साथ थोड़ा बहुत उसी मुवाफ़िक़ बर्ताव करे जैसे कुल्ल मालिक की निसबत समझ बूझ धारन की है ॥

(९) जीव की जाग्रत के समय आंखों में बैठक है, और वहीं से खिंच जाना अन्दर और ऊपर की तरफ़ वक्त, नींद और मौत के और बे खबर हो जाना देह और दुनिया के दुख सुख से ॥

३७—जाग्रत के समय जीव की बैठक आंखों में होती है, और जब नींद के बस उसका खिंचाव

अंदर में ऊपर की तरफ़ होता है, तब उसको देह और दुनियां के सुख दुख की सुध बिसर जाती है। इसी तरह जब मौत के वक़्त ज़्यादा खिंचाव हो जाता है, तब देह और दुनियां से नाता टूट जाता है, यानी इधर की बिलकुल सुध बुध नहीं रहती है, लेकिन वक़्त खिंचाव के इस क़दर तकलीफ़ मरने वाले को होती है, और ऐसी सूरत उसकी बिगड़ जाती है, कि किसी से देखा नहीं जा सक्ता है ॥

३८—अब ग़ौर करना चाहिये कि आंखों के मुक़ाम पर बैठने से जीव का बंधन देह और दुनियां के साथ पैदा होता है, और यहां से सरकने पर यह बंधन ढीले हो जाते हैं। तो साबित हुआ कि निरबंध होकर सच्चे मुक्त पद में पहुंचने और निज घर में जाने का रास्ता आंख के मुक़ाम से शुरू होता है ॥

३९—जो कोई जीते जी इस रास्ते पर संत सतगुरु से उपदेश लेकर चलना शुरू करेगा, उसको कुछ मालिक की कुदरत अंतर में नज़र आवेगी और मन और सुरत के सिमटाव और चढ़ाई का रस आवेगा, और संसार और उसके भोगों की क़दर उसके चित्तसे कम होती जावेगी, और रफ़्ते २ सतगुरु की दया से एक दिन निज घर में पहुंच कर (जो

माया देश के पार है) विश्राम पावेगा, और अमर आनन्द को प्राप्त होगा, यानी जनम मरन का चक्कर उसका बंद हो जावेगा ॥

४०—लेकिन जो जीव कि यह कारवाई नहीं करेंगे और उमर भर दुनियां और उसके भोग बिलास में खर्च करेंगे, और उन्हीं की प्राप्ती के लिये जतन करते रहेंगे, तौ अखीर वक़्त यानी मृत्यु के समय उनकी तबीअत का मैलान और झुकाव देह और दुनियां की तरफ़ रहेगा, और जोकि काल पुर्ष उनको पिंड से अलहदा करके ऊपर की तरफ़ खींचेगा, इस सबब से इस खींचा तानी में जीवों को बहुत कष्ट और कलेश होवेगा, जैसा कि उनके मरने के वक़्त की हालत और मरने के बाद की सूरत से ज़ाहर होता है, यानी उनका चेहरा और रंग ऐसा बदल जाता है, कि देखने में डर मालूम होता है। और जब कि वह पिंड के नाके के पार पहुंचेंगे, वहां उनकी देह और दुनियां और उसके सामान की फ़ुरना यानी याद उठेगी, और वह फ़ुरना उनको नीच ऊंच जोन में मुवाफ़िक़ उनकी करनी के जनम देगी। खुलासा यह कि ऐसे जीवों का बारम्बार देह धर कर दुख सुख सहने, और जनम मरन का कष्ट भोगने का चक्कर बराबर जारी रहेगा ॥

४१—जो कोई जीव सिवाय ऊपर की लिखी हुई करनी के, और २ जतन परमार्थ के नाम से बाहर मुखी या अंतर मुखी नीचे के घट में, कर रहे हैं उन को शुभ करम का फल मिलेगा, पर सच्चा उद्धार नहीं होगा, और न उनकी चाल उस रास्ते पर चलेगी जो कि घर की तरफ़ जारी है, और जहां होकर अख़ीर वक़्त पर चलना पड़ेगा ॥

४२—लेकिन जो बाहर मुखी करनी कि अंतर अभ्यास में मदद देनेवाली है, जैसे संत सतगुरु का संग, और उनके प्रेमी जन की सेवा, और संतों की बानी का (जिस में प्रेम और भेद और चितावनी का बर्णन है) पाठ करना, और गाना, और राधास्वामी मत की चरचा करना बग़ैरे उसकी कार्रवाई सच्चे परमार्थ का फल देगी, और संत सतगुरु और सच्चे मालिक की दया की बख़्शिश करावेगी, कि जिस्से भक्ती और प्रेम बढ़ेगा, और मन और सुरत अंतर में सिमटेंगे और चढ़ेंगे ॥

(१०) टेकियों की मूर्खता और अहंकारी पन और बाद बिबाद करने की आदत और नाक़ाबिलियत वास्ते करने किसी किस्म के अंतरी अभ्यास के या शामिल होने संतों के सतसंग के।

४३—जो कोई पिछले वक़्त की परमार्थी कार्रवाई

और इष्टों की टेक बांध रहे हैं, और उनकी महिमा करते हैं, पर कोई कार्रवाई उसकी जैसे अष्टांग जोग जिसमें प्राणायाम शामिल है, और मुद्रा का साधन और उनके संजम वग़ैरा और हठ जोग आप नहीं करे, तो ऐसे लोग उन साधनों के फ़ायदे और नुक़सान से बिल्कुल बेख़बर हैं, और न उनको गुरू की ज़रूरत और महिमा की ख़बर पड़ेगी, क्योंकि जितने अंतरी साधन हैं, वह बग़ैर अभ्यासी गुरू के सतसंग और उपदेश और मदद के मुतलक़ बन नहीं सक्ते हैं, और जो कोई पढ़कर और सुनकर कुछ कर रहे हैं, वह ग़लती और धोखे में पड़े हैं, और मुमकिन नहीं कि के सिवाय चंदरोज़ के कोई अन्तर अभ्यास बग़ैर मदद गुरू के जारीरख सकें। ऐसे लोग सच्चे परमार्थ की तरफ़ से नादान और बे परवाह रहते हैं, और इस वास्ते उनके जीव का कारज जैसा चाहिये नहीं बनता। इनकी करनी और रहनी करमी जीवों के मुवाफ़िक़ रहती है, और उसी मुवाफ़िक़ उनको फल मिलता है। यह लोग हुज्जत और तकरार और लड़ाई और झगड़े और बाद बिवाद करने को हमेशा तइयार रहते हैं, और अपनी टेक और पक्ष उस वक़्त बहुत ज़ोर और शोर से ज़ाहर करते हैं पर सच्चे प्रेमी उनको नादान

और जाहिल और अहंकारी समझ कर, उनके साथ गुफ़तगू या चर्चा नहीं करते हैं, मुवाफ़िक़ इस क़ौल के ॥

॥ दोहा ॥

बहते को मत बहन दे गह पकड़ाओ ठौर ।
समझाया समझे नहीं तो कहो बचन दो और॥
बहते को बह जान दे मत पकड़ाओ ठौर ।
समझाया समझे नहीं तो दे धक्के दो और ॥

४४–बड़ा अफ़सोस है कि इन लोगों की समझ और अक़ल बड़ी मोटी है । ज़रा भी ग़ौर करके बात को नहीं बिचारते । ख़ुद अपनी ज़बान से कहते हैं, कि पुराने वक़्तों की चालढाल और ब्यौहार और लोगों के स्वभाव बहुत बदल गये हैं, और दिन २ बदलते जाते हैं, और यह हाल सिर्फ़ अपनी दो तीन पुश्त का कहते हैं, और परमार्थ की निसबत इनके मन और अक़ल में यह बात ज़रा नहीं समाती, कि जो साधन उस वक़्त में ज़ारी थे जिसको हज़ारों वर्ष गुज़र गये, किस तरह हाल के ज़माने के लोगों के लायक़ हो सक्ते हैं, और इस वक़्त के जीव जो कि धन और देह और बल और प्राकर्म वग़ैरा में निहायत निबल और लाचार हैं, किस तरह पुराने साधन और पुरानी चाल में बर्ताव कर सक्ते हैं । यही सबब है कि ज़बान से मनू धर्म शास्त्र

और पातन्जली योग शास्त्र और अनेक पुराने ग्रन्थों को पढ़ा करें और गाया करें, और आप समझें और औरों को समझावें, और इधर उधर हुज्जत और तकरार करने को उनके हवाले और गवाही देवें, लेकिन किसी शास्त्र के मुवाफ़िक़ कार्रवाई ग्रहस्त या परमार्थ की, न इनके बाप दादे और बंसावली गुरू से और पंडित और परोहित से बनी, और न इनसे और न इनकी औलाद से बनसक्ती है, सिर्फ़ ख़ाली बातें बनाते हैं, और अपनी नालियाक़ती और बे ताक़ती पर नहीं शरमाते, और न अफ़सोस करते हैं। और जो कोई उनको इस समय के लायक़ कार्रवाई ब्यौहार और परमार्थ के साधन की बतावे (जो कि मुवाफ़िक़ हुकम संतों के है और हर एक से बन सक्ती है) उसको नहीं सुनते, और अहंकार करके और पिछले ग्रन्थों की टेक बाँध कर संतों के बानी और बचन का निरादर करते हैं। इन जीवों को अभागी और क़हरी समझना चाहिये ॥

४५—संतों ने अपनी बानी और बचन में वह जुगत प्रघट की है कि पिछले वक़्त के महात्माओं को उसकी ख़बर भी नहीं थी, और इस क़दर उसको आसान कर दिया है, कि लड़का जवान और बूढ़ा और औरत

और मर्द और पढ़ा और अनपढ़, सब उसकी कार्रवाई आसानी से, बग़ैर छोड़ने घरबार और रोज़गार के, करसक्ते हैं, और तत्काल यानी चंद्रोज़ में उसका फल देख सक्ते हैं, यानी अपनी मुक्ती होती हुई, और कुल्ल मालिक के निज धाम की तरफ़ चाल चलती हुई नज़र आवेगी, और उधर से संत सतगुरु और कुल्ल मालिक की दया और रक्षा सूझ पड़ेगी ॥

४६—पिछले वक़्त के महात्माओं ने जो साधन मिसल अष्टांग योग वग़ैरे के जारी किये वह बिरक्तों से दुरुस्त न बनसके, और ग्रहस्तियों की तो मुतलक़ ताक़त नहीं कि उस रास्ते पर क़दम धर सकें, जब तक कि घरबार और रोज़गार न छोड़ें। यह कठिन साधन पिछले वक़्तों में यानी सतजुग से शुरू कलजुग तक सिवाय पंद्रा बीस ऋषीश्वरों और मुनीश्वरों और औतारों के जैसे राम कृष्ण, ब्यास बशिष्ट, याग्यबल्क उद्दाल्क और सुखदेवजी वग़ैरे के, जिनके नाम उपनिषदों और शास्त्रों और पुरानों वग़ैरे में दर्ज हैं और किसी से नहीं बने। अब किस क़दर तअज्जुब की बात है, कि आजकल के जीव थोड़ीसी बिद्या पढ़कर और अपने मत के हाल से बिल्कुल नावाक़िफ़, पर थोड़ा तर्जुमा मनू धर्मशास्त्र और योगशास्त्र का

अपनी बुद्धी के मुवाफ़िक़ पढ़कर, संतों और उनके प्रेमीजनों से मुक़ाबला और हुज्जत और तकरार करने को मुस्तैद होते हैं, और अपनी दानाई को जो कि महज़ नादानी और जिहालत है, बड़ी मर्दानगी के साथ ज़ाहर करते हैं। इनको अपनी नादानी और ग़फ़लत की ख़बर जब पड़े कि जब कम से कम एक महीना चुप बैठकर संतों की बानी और बचन पक्षपात छोड़कर सुने और समझें, और अपनी ओछी बुद्धी और बिद्या को उसमें दख़ल न देवें। लेकिन अफ़सोस है कि इनका ऐसा भाग नहीं है, इनसे तो वही करनी बन पड़ेगी जो इनको चौरासी में भरमावे ॥

(११) ज़ात पांत के टेकी भी वैसे ही मूर्ख और नादान हैं, और अपने परमार्थी नफ़े और नुक़सान से ग़ाफ़िल। यह लोग संतों के दर्शन और सतसंग के फ़ैज और फ़ायदे से हमेशा महरूम[1] रहेंगे ॥

४७—सिवाय पुराने वक़्त के परमार्थी टेकवालों के, बाज़े लोग ज़ातपाँत के भी टेकी हैं, चाहे उनका परमार्थ बने या बिगड़े, अपने से कम ज़ात वाले से कभी दीन न होंगे, और परमार्थ की दौलत चाहे कैसी ही भारी और सस्ती और आसानी से मिलती होवे हासिल नहीं करेंगे। लेकिन दुनिया के कामों और धन के लेने के वास्ते, चाहे कोई ज़ात होवे, उसकी

१ अभागी।

ख़ुशामद और ख़िदमत करने को बहुत ख़ुशी से तइ-यार रहते हैं, जैसे वकील और डाक्टर और हकीम और धनवान और हाकम और उस्ताद और मास्टर और सयाने दिवाने और रंडी मुंडी वग़ैरा, इनकी कभी ज़ात नहीं देखते और पूंछते और बग़ैर किसी के कहने के उनकी हाज़िरी और अनेक तरह की ख़िद-मत करने को मुस्तैद रहते हैं ॥

४८—जब कोई परमार्थ के हासिल करने के वास्ते अपने से कम ज़ात की तरफ़ रुजू लावे, तो उसके साथ तमाम बिरादरी और कुटम्ब परवार झगड़े और फ़िसाद करने को तइयार होते हैं। लेकिन जब इनमें से कोई अंगरेज़ी सराय में जाकर अंगरेज़ी खाना खावे, या रंडी घर में डाल लेवे, या शराबी कबाबी या तमाश-बीन और ज्वारियों का संग करे, तो उस्से कोई कुटम्बी या बिरादरीवाला मुज़ाहिम नहीं होता, और न किसी क़िसम की बाज़ पुर्स करते हैं, बल्कि उलटा उस्से डरते हैं। यह सब काम ख़राब और ख़िलाफ़ मज़हब हैं, मगर उनमें कोई दख़ल नहीं देता, और परमार्थ यानी सच्चे मालिक की पूजा और भक्ती, जो कि सब कामों में बढ़ का काम है, दुनियादारों की नज़र में ऐसा ओछा और फ़ज़ूल दिखलाई देता है, कि उसकी

कार्रवाई करनेवालों की निंद्या करते और तान तंज़ लगाने से नहीं डरते। बल्कि इस क़िसम की उपाधियां उठाने को तइयार होते हैं, कि जिस्से उसकी परमार्थी तरक़्क़ी में ख़लल पड़े, या वह कार्रवाई बंद हो जावे। यह लोग बजाय कार सवाब यानी पुन्य के, अपने ऊपर भारी पाप का भार चढ़ाते हैं, जिसके सबब से उनकी आक़बत कभी नहीं सुधरेगी, यानी उनका परलोक कभी नहीं बनेगा॥

(१२) बाज़े लोगों के ओछे और नाक़िस ख़्याल निसबत औरतों के परदे के, और हारिज होने उनकी तरक्की इल्म[१] और अक़्ल[२] समझ[३] और तजर्बा[४] और सच्चे परमार्थ[५] में।

४६—बहुत से मर्द दुनियादार औरतों को परदे में रखने की कोशिश करते हैं, और उनको सतसंग नहीं करने देते। इन लोगों की अक़्ल और समझ पर बड़ा अफ़्सोस आता है, कि बावजूद इस बात के, कि औरतें आम तौर से किसी बात में मर्दों से कम नहीं हैं, और इल्म और अक़्ल मर्दों के मुवाफ़िक़ हासिल करके, बंदोबस्त घर का और बाहर का अच्छी तरह कर सक्ती हैं और इस क़िसम की कार्रवाई आज कल बहुत जगह जारी है, यानी औरतें डाक्टरी और

१ विद्या। २ बुद्धी।

मुहर्रिरी और वकालत और मास्टरी और तिजारत के काम, और दूकानदारी और मुसव्वरी और ख़बर नवीसी, और बहुत से फ़न और हुनर और नट बिद्या और सिपहगरी के काम कर रही हैं फिर भी यह लोग उन पर जो ज़रा क़दम बढ़ा कर रक्खें, तो रोक टोक लगाने और तान तंज़ करने और बुरा भला कहने में कसर नहीं रखते। लेकिन इनकी इस क़िस्म की कार्रवाई बेफ़ायदा है, क्योंकि अक्सर औरतें अनेक तरह की पूजायें जो ख़िलाफ़ शास्त्र हैं, मिसल सीतला और बराही और जखइया और क़बरों वग़ैरे की करने को बेतकल्लुफ़ बाहर जाती हैं, और मंदरों में उत्सव के दिन दर्शन करती फिरती हैं और तीर्थों में तो यह कैफ़ियत बकसरत नज़र आती है, यानी बराबर मर्द व औरत बे क़ैद और बे तकल्लुफ़ मंदरों का गश्त और परिक्रमा वग़ैरा, और साधों के अखाड़ों में और पंडितों की कथा वग़ैरे में जाती आती हैं। अलावह इसके झुंड के झुंड औरतों के कुछ रात बाक़ी रहे से और दिन चढ़े तक हमेशा, और ख़ास कर परभी के दिन और कार्तिक के महिने में, गंगा और जमुना और २ दरियाओं पर नहाने और पूजा करने को जाती हैं। सिवाय इसके अक्सर औरतें

बिरादरी के अनेक कामों और रसमों और ब्योहारों में घर २ जाती आती हैं, और कोई ख़ास तौर पर परदा नहीं करती हैं।

५०—ज़्यादह तर अफ़्सोस इन लोगों की इस समझ पर आता है, कि औरतों की निसबत गुरू धारन करना नाजायज़ कहते हैं, और बयान करते हैं कि उनका पति ही उनका गुरू और परमेश्वर है। अब ख़्याल करो कि जब पति को गुरू और परमेश्वर क़रार दिया, तो सच्चे मालिक की भक्ती और पूजा से उनको एक दम हटा दिया, और सच्चे गुरू से भी जो मालिक से मिलने का जतन बताते और भक्ती पूजा की बिधी समझाते उनको रोका और हटाया और जो उनके पति संसारी और टेकी पुर्ष हैं, और जो वे सिवाय घर बार के कारोबार और ब्योहार और रोज़गार वग़ैरे और भोग बिलास के कुछ नहीं जानते हैं, तो दोनों निपट संसारी रहे, और अपने पैदा करनेवाले मालिक का कुछ भेद न जाना, और न उसकी कुछ भक्ती करी, तो दोनों का परलोक बिगड़ा और चौरासी में भरमने के अधिकारी हुये। और यही सबब है कि ऐसे दुनियादार मर्द और औरतें वक़्त तकलीफ़ या बीमारी वग़ैरः के, भूत पलीत और भंगी और धोबी

मुर्दों और मुसलमानों के क़बरों की पूजा बे तकल्लुफ़ करने लगती हैं। ऐसी पूजायें जब एक दफ़े शुरू हुईं, तो सालहा साल और नसलन् बाद् नसलन् उनके घराने में जारी रहती हैं। अब इनसे पूछना चाहिये कि यह पूजायें कौन से शास्त्र के मुवाफ़िक़ आप करते हैं, और अपनी औरतों से कराते हैं। सच्च पूंछो तो यह लोग नास्तिक और भ्रष्ट हैं। इनको संतों और महात्माओं और भक्तों और प्रेमियों पर, और उनके सतसंग और भक्ती की कार्रवाई पर तान मारते और निंद्या करते शरम भी नहीं आती। ज़रा गरेबान में सिर डाल कर अपने हाल और चाल को देखें, कि बिलकुल बेमज़हब वालों के मुवाफ़िक़ गुज़रान कर रहे हैं। और जो लोग कि सच्चे मालिक को चीन्ह कर उसकी भक्ती करते हैं, उनकी हंसी उड़ाते हैं, और उनसे परहेज़ करना चाहते हैं। प्रेमीजन तो ख़ुश होते हैं, कि जो यह लोग अपनी मूर्खता से ख़ुद उनसे हटना चाहते हैं तो सहज में इनसे पीछा छूटता है, क्योंकि यह उनके संग और सोहबत के लायक़ बिलकुल नहीं हैं। पर इनका बहुत अकाज होता है। एक तो मालिक से बेमुख और दूसरे संत और भक्तजन के निंदक और बिरोधी। यह लोग मुफ़्त पापों

का भार अपने सिर पर चढ़ाते हैं, जैसा कि गुरू नानक ने इन कड़ियों में कहा है।

॥ कड़ियां ॥

संत का निंदक महा अतिताई।
संत का निंदक खिन टिकन न पाई॥
संत का निंदक महा हत्यारा।
संत का निंदक परमेश्वर मारा॥
संत का निंदक राज से हीन।
संत का निंदक दुखिया और दीन॥
संत के दूषन मत होय मलीन।
संत के दूषन शोभा ते हीन॥
संत के निंदक को सर्ब रोग।
संत के निंदक को सदा विजोग॥
संत का दोषी जनमे मरे।
संत की दूखना सुख ते ठरे॥
संत के दूषन सुख सब जाय।
संत के दूषन नर्क में पाय॥

५१—ज़रा ग़ौर करने से इस ना मुनासिब चाल की भारी ग़लती ज़ाहर होती है जब कि किसी इस्त्री का पति थोड़ी या कुछ ज़्यादा उमर में गुज़र गया, तौ गोया उसका गुरू और परमेश्वर मर गया, अब वह

किस का आसरा और सहारा लेकर अपनी ज़िंदगी बसर करे। जो पहिले ही से सच्चे गुरू से उपदेश दिला कर, उसको थोड़े बहुत अंतरी ध्यान वग़ैरा में लगादेते तो इस वक़्त में उसको बहुत मदद मिलती, यानी कुछ परमार्थ का आनन्द पाकर दुनिया के दुक्ख को किसी क़दर बिसरती ॥

५२—देखने में आता है कि लोग बेवह हो जाने पर, औरतों को बंसावली गुरुओं से उपदेश दिलाते हैं, और वे मूर्त पूजा वग़ैरे में लगादेते हैं, लेकिन उसमें कुछ शान्ती या अंतर आनंद नहीं आता। अब ग़ौर करो कि पति को गुरू मान्ने से क्या फ़ायदा हुआ, जब उसके मरने के बाद दूसरा गुरू धारन करना पड़ा, और वह भी असली परमार्थ से बेख़बर ॥

मालिक को कहते हैं कि सब जगह मौजूद है, और जो ऐसा है तो हर एक जीव के घट में भी मौजूद है, और उसकी पूजा घट में वाजिब और सहीह है। फिर जब बंसावली गुरू (पण्डित या भेष या गुसांई या साहब-ज़ादे) ने घट का भेद न बताया, तो वह आप गुरुवाई की रीत और सच्चे मालिक के भेद से बेख़बर हुआ, फिर वह गुरुवाई के लायक़ किस तरह हो सक्ता है, और उसको गुरू धारन करने से मालिक से मेल कैसे

होगा, और भरम कहां दूर हुआ। खुलासा यह कि ऐसी बेचारी औरतें जैसी नादान थीं वैसी ही रहीं, और उनके उद्धार और मालिक के चरनों में मन के लगाव की कोई सूरत न निकली। यह नतीजा उस दस्तूर का हुआ, कि जिसके मुवाफ़िक़ औरतों को गुरू धारन करने से बाज़ रक्खा, और उनके पति को ही उनका गुरू और परमेश्वर क़रार दिया और बंसावली और सच्चे गुरू में तमीज़ और फ़र्क़ न किया, और नक़ूल यानी मूर्त को पेश करके असल का पता और भेद न समझाया, फिर शान्ती कैसे प्राप्त होवे, जैसे हाकिम या हकीम या ख़ाविंद की तसवीर कुछ काम नहीं दे सक्ती, इसी तरह मालिक की तसवीर से भी कुछ काम नहीं निकल सक्ता॥

५३—मुनासिब तो यह है कि कुल्ल औरत और मर्दों को, जब कि अठारा बीस बर्ष की उमर हो जावे, कुल्ल मालिक के भेद से (जो कि घट में मौजूद है) समझौती देकर, जुगत उसके ध्यान और पूजा की बताना चाहिये, ताकि वे उसी वक़्त से एक या दो बार दिन रात में थोड़ा बहुत अभ्यास करें, और जैसी उमर बढ़ती जावे और फ़ुर्सत और मौक़ा मिले, उस अभ्यास को आहिस्ते २ बढ़ाते जावें, और वक़्त ज़रूरत किसी

दूसरे के महुताज न रहें, और हमेशा अपने घट में आसरा और भरोसा अपने सच्चे मालिक का रक्खें, और तकलीफ़ में इधर उधर न भरमें, यानी अपने अंतर में थोड़ी बहुत शान्ती हासिल कर सकें ॥

५४–यह भेद और जुगत संत सतगुरु या उनके प्रेमी जन से, जो संगत में शामिल हैं, मालूम हो सक्ता है। सुहागन औरतों को उनके ख़ाविन्द, अपने साथ सतसंग में ले जाकर, उपदेश दिला सक्ते हैं, और जो बेवा हैं वह अपने मा बाप या भाई या लड़के या सास या सुसर या देवर जेठ या कोई ख़ास रिश्तेदार के संग संगत में जाकर और उपदेश लेकर, अपने घर में बैठ कर अभ्यास कर सक्ती हैं, और जब तब मौक़े मुनासिब पर सतसंग में भी शामिल होवें, इसमें परदा भी रहा आवैगा, और सब तरह से हिफ़ाजत भी इनकी रहेगी यानी सतसंग में अकेली नहीं जावेंगी ॥

(१) सबब ऐसी समझ बूझ और बर्ताव का यह है कि यह मर्द आपही परमार्थ से बेख़बर हैं, यानी न तो सच्चे मालिक के भेद से वाकिफ़ हैं, और न कुछ उसकी भक्ती या अंतरी पूजा करते हैं, फिर उनके मन में परमार्थ की क़दर और ज़रूरत, वास्ते हर एक जीव के कैसे समावे, और बर्ताव और ब्यौहार उनका

कैसे बद्ले। इस वास्ते वे आप भी निपट संसारी हैं, और नक़ली परमार्थ और देवताओं और भूत प्रेत की पूजा में राज़ी, फिर उनके इस्त्री और बाल बच्चे भी, उन्हीं के मुवाफ़िक़ नादान और सच्चे परमार्थ से बेख़बर और बेपरवाह बने रहते हैं। और जिस किसी के सच्चा दर्द परमार्थ का पैदा होता है, उसकी कार्रवाई देख करके ऐसे पुर्ष और इस्त्रियों को अचरज मालूम होता है और अपनी मूर्खता से उस पर तान मारते हैं, और हंसी उड़ाते हैं। और अपनी ग़फ़लत और बेपरवाही का सोच बिचार नहीं करते, और न मरने के वक़्त की सख़्त तकलीफ़ का ख़ौफ़ दिल में लाते हैं॥

(२) जो उनको सच्चे परमार्थ का उपदेश मिलता तो अपने कुल कुटम्ब और रिश्तेदार और पड़ोसी वग़ैरे को समझा कर, उसी कार्रवाई में लगाते, और अपने और उनके भागों को सराहते, और मालिक की दया का शुकराना बजा लाते॥

(१३) एक गुरू करके दूसरा गुरू न करने के बयान में।

५५—बाज़े मर्द और औरतों का यह ख़्याल है, कि एक गुरू करके दूसरा गुरू न करना चाहिये, सो यह बात उस हालत में दुरुस्त है जब कि सच्चे और पूरे

गुरू पहिलेही मिल जावें, और जो किसी ने बंसावली या मामूली गुरू कर लिया है, और उसने सच्चे मालिक का भेद और जुगत उसके मिलने की घट में नहीं समझाई, और उलटा नकल यानी मूर्त और तीर्थ में भरमा दिया, तो उसका नाम गुरू नहीं हो सक्ता। बल्कि वह पाखंडी और धोखा देने वाला है, और आप भी धोखा खाया हुआ है, फिर ऐसे गुरू को छोड़ने में जिस वक़्त कि सच्चे गुरू मिलें हरगिज़ देर नहीं करनी चाहिये ॥

॥ साखी ॥

झूंठे गुरु की टेक को तजत न कीजे बार।
द्वार न पावे शब्द का भटके बारम्बार ॥
सुरत शब्द बिन जो गुरु होई। ताको छोड़ो पाप कटा ॥

५६—सच्चे गुरू की पहिचान यह है कि घट में कुल्ल मालिक और रचना का भेद बतावें, और शब्द सुनाकर अंतर में सुरत यानी रूह और मन को सिमटवावें और चढ़ावें और आंख के मुक़ाम से, जहां जाग्रत अवस्था में जीव की मुख्य कर बैठक है, चलने की तरकीब समझावें और आप कुल्ल मालिक के अस्थान से बाख़बर आये होवें, या अपना काम यहीं अभ्यास करके पूरा कर चुके होवें, या साधना कर रहे होवें।

पहिले का नाम संत सतगुरु और दूसरे का साध गुरू या प्रेमी अभ्यासी है। उनके उपदेश और सतसंग से जीव का कारज बन सक्ता है, और कोई दूसरी जुगत से सच्चा उद्धार मुमकिन नहीं है, और चौरासी का भरमना नहीं छूटेगा ॥

५७—अब जीवों को आप बिचारना चाहिये, कि सच्चे मालिक और असल से मिलने की सच्ची जुगत बतानेवाले, और रास्ता चलानेवाला ही गुरू हो सक्ता है, या कि नक़ल और भरमों में और बाहर मुखी करमों में भटकाने वाला और असल से बेमुख रखने वाला। वह तो आप ही बेख़बर है और भरमों में भरम रहा है, और धन और पूजा के लालच औरों को भी भरमाता है। ऐसे झूठे आदमी से जिसने पाखंड करके या नादानी से अपना नाम गुरू रक्खा है, रिश्ता गुरु-वाई का तोड़ना मुनासिब है या नहीं। इस में कभी पाप नहीं होगा, बल्कि कुल्ल मालिक राज़ी और ख़ुश होगा। उन जीवों का जिन्होंने सच्चा उपदेश लेकर अभ्यास शुरू किया है, और सच्चे गुरू और सच्चे मालिक की सरन में आये हैं, अपनी मेहर से आप उद्धार करेगा, और रास्ता तै करने में मदद देगा। इस बात की सचौटी का हाल थोड़े दिन के अभ्यास से जीव को मालूम हो सक्ता है ॥

(१४) क़ायदा बर्ताव का सतसंग में और पूरे गुरू के साथ।

५८—जो कि बग़ैर पूरे गुरू और उनके सतसंग के किसी जीव का सच्चा उद्धार मुमकिन नहीं है, इस वास्ते कहा जाता है कि परमार्थियों को किस तौर से वहां बर्तना चाहिये, जिस्से उनको पूरा फ़ायदा हासिल होवे ॥

५९—परमार्थी जीवों को पहिले खोज सतगुरु और उनके सतसंग का लगाना चाहिये। और जब पता मिल जावे, तब जिस क़द्र जल्दी बन सके सतसंग में शामिल होवें। और जब वहां जावें तब वहां के क़ायदे के बमूजब आदाब बजा लाना चाहिये, यानी दृष्टी सतगुरु के सनमुख करके चरनों पर मत्था टेकना या चरन छूकर बंदगी करना चाहिये। और जहाँ तक मुमकिन होवे सन्मुख, या दायें बायें, जहाँ सतगुरु की नज़र पड़ती होवे बैठना चाहिये—पीठ पीछे या नज़र के पीछे की तरफ़, जहां तक मुमकिन होवे न बैठे। क्योंकि वहाँ नज़र दया की भरी हुई उस पर नहीं पड़ेगी, और बचन भी जैसा सनमुख होने से सुनाई देंगे, नज़र से पीछे की तरफ़ बैठने से वैसे साफ़ नहीं मालूम होंगे, और नज़र भी किसी क़द्र चंचल रहेगी ॥

६०—जब सतसंग में जावे, तब अपने तईं ख़ाली

और कम वाक़िफ़ कार समझ कर, दीनता के साथ जावे तब कुछ फ़ायदा उठावेगा। और जो अपने तईं भरपूर और दाना समझ कर, या मुमतहिन बन कर या सैर देखने की नज़र से जावेगा, तो वह ख़ाली आवेगा और शायद बजाय दया के, उनकी ना मेहर-बानी की नज़र उस पर पड़े, और अकाज होवे ॥

६१—जब सतसंग में बैठे तब नज़र सतगुरु पर रक्खे और बचन चित्त देकर सुने और समझे, और कोई ख़्याल दुनिया यानी घरबार या रोज़गार वग़ैरे का मन में न लावे, नहीं तो बचन कम सुनाई और समझाई देगा, और उसका रस भी नहीं मिलेगा। और जिस वक़्त कि सतगुरु बचन कहते होवें, बीच में सवाल न करे—और जब वे फ़िक़रा या बचन पूरा करलें तब जो कि दरियाफ़्त करना होवे पूछे और हो-शियारी रक्खे कि सिवाय असली मतलब की बात के या जो कुछ कि उस्से तअल्लुक़ रखता होवे, दूसरी बात न पूंछे और न कहे, नहीं तो मतलब ख़ब्त हो जावेगा। और जो बात कि सुने उसका बिस्तार और फैलाव अपने मन में आप करे ॥

६२—जब सतसंग में बचन ऐसे होवें कि किसी नाक़िस चीज़ के खाने पीने या ख़्याल करने या नाक़िस

करतूत के करने से परहेज़ करना चाहिये, तो अपनी ताक़त के मुवाफ़िक़ उसके मान्ने में अंतर और बाहर कोशिश करे। और जो बातें नई सुनाई देवें, उनको जहां तक मुमकिन होवे याद करे, और बाद सतसंग के उसका मनन करके हिरदे में बसाता जावे ॥

६३—फ़ज़ूल और बेमतलब की बातचीत न करे, और दुनिया की ख़बरें सतसंग में न सुनावे, और न दुनिया के बड़े आदमी और अमीरों और राजाओं की कथा कहे, और न उनके ब्योहार और चाल चलन की बातों का ज़िक्र करे, और न कचहरी दरबार के मुआमलों और मुक़द्दमों और लड़ाई झगड़ों का ज़िक्र करे, और अपनी बिरादरी और रिश्तेदारों के ब्योहार और उनके घरों की और शहर की चीज़ों का बर्णन न करे, क्योंकि यह सब कारख़ाने मलीन हैं, और परमार्थ से उनका कुछ तअल्लुक़ नहीं है ॥

६४—सतसंग में बैठकर मन को दुनियावी ख़्यालों और ज़िकरों से ख़ाली करना चाहिये, न कि नई २ चीज़ों और मतलब से ख़ारिज बातों का उस में भराव करना और औरों के मन को भी गदला करना ॥

६५—सतसंग में किसी की बुराई भलाई करना नहीं चाहिये, और किसी के मुआमलों या कार्रवाई पर ख़्वाह

दुनिया या राजदरबार के मुतअल्लिक़ होवे हर्फ़गीरी[1] या अपनी रायज़नी[2] करना मुनासिब नहीं है, क्योंकि सतसंग परमार्थ का घर है, न कि दुनिया के झगड़े रगड़े की कथा या मुआमलों के फ़ैसले करने की जगह। इस क़िस्म की बातें, बाद परमार्थी कथा के, जहां कहीं कि होती हैं, वह परमार्थ के अमोल और हितकारी बचनों को भुलाने वाली हैं—ऐसे संग और सुहबत में परमार्थी को कभी शामिल होना नहीं चाहिये ॥

६६—जो कोई कहे कि विद्या और बुद्धी और चतुराई की बातें करने में कुछ मुज़ायक़ा नहीं है, इस में अक़्ल और इल्म बढ़ते हैं, तो उसको समझाया जाता है, कि सच्चे सतसंग में विद्या और बुद्धी भुलाई जाती हैं, न कि उनकी याद दिलाई जावे, और तरक़्क़ी की तदबीर की जावे। ऐसी कार्रवाई परमार्थी बचनों के मनन, और अंतर में भजन और अभ्यास की तरक़्क़ी के वास्ते, निहायत दरजे की बिघन कारक और ख़लल डालने वाली है और सच्चे परमार्थी को उस्से सख़्त परहेज़ करना चाहिये ॥

६७—सतगुरु और उनके प्रेमीजन को यह सब बातें निहायत नापसंद हैं, और ऐसे लोगों का जो स्वभाविक

१ कसर देखना। २ अक़्ल लड़ाना

ऐसी बातों में बर्त्तते हैं, सतसंग में शामिल होना मंज़ूर नहीं करते ॥

६८—सिवाय इन सब बातों के जिनका ज़िक्र ऊपर हुआ, सतसंग में बैठकर ऊंघना या सोवना परमार्थ की तरक़्क़ी में निहायत दरजे का ख़लल डालता है, और वहां के क़ायदे और अदब के बरख़िलाफ़ है। लेकिन ऐसे लोग जो गहरा सतसंग कर चुके हैं, वह अपने मन और सुरत को समेट कर बैठें, या एक गोशे पर अलहदा लेट रहें, तो उनकी हालत मामूली ऊंघने और सोवनेवालों से जुदा है। वे ग़ाफ़िल नहीं होते, और न उन पर तमोगुन का ग़ल्बा होता है। वे अपने मन और सुरत को समेटे हुये, अंतर में एक क़िस्म का रस लेते हैं, और नई ताक़त हासिल करते हैं। कभी २ ज़्यादह खिंच जाते हैं; नहीं तो थोड़ी तवज्जह उनकी सतसंग की कार्रवाई या अपनी सेवा की तरफ़ रही आती है। बाज़े लोग जो पहिले दुरुस्ती के साथ अर्से तक सतसंग कर चुके हैं वह वक़्त सतसंग के अपने अंतरी अभ्यास (जैसे ध्यान वग़ैरा) में मशग़ूल हो जाते हैं। जाहर में बैठे २ सोते हुये नज़र आते हैं लेकिन असल में वे होशियार हैं और अंतर में रस ले रहे हैं या चरनों में लै हो रहे हैं। और मालूम होवे कि मन और सुरत को

समेट कर, और ऊंचे अस्थान पर बिठलाकर, बचन या शब्द सुन्ने और दर्शन करने का रस और मजा बनिसबत मामूली तौर से बैठने के ज़्यादा मिलता है। मगर यह हालत गहरे सतसंगी और अभ्यासियों की है। नये परमार्थियों को होशियारी से बैठना, और आंखें खोले हुए दर्शन करना, और बचन चित्त से सुन्ना और फिर उनका मनन करना लाज़िम और ज़रूरी है। और जो इस तरह कार्रवाई नहीं करेंगे, तो गहरे सतसंगियों के दरजे तक नहीं पहुंचेंगे बल्कि सच्चे खोजी और दर्दी का निशान यही है, कि सतसंग में बहुत होशयार बैठे, और किसी बचन का एक लफ़्ज़ भी न जाने देवे, यानी कुल्ल बचन को ग़ौर से सुने और समझे, और फिर उसका मनन करे ॥

(१५) आरती का क़ायदा और फ़ायदा

६६—वक़्त सतसंग के एक तरीक़ा आरती का जारी है। उस वक़्त प्रेम के शब्दों का बानी में से पाठ किया जाता है, और जो शख़्स आरती करना चाहता है वह सन्मुख बैठता है, और सतगुर की दृष्टी से अपनी दृष्टी जोड़ कर, और मन को समेट कर शब्द के मज़मून पर नज़र रखता है, और पहिले या दूसरे मुक़ाम पर अपनी सुरत को ठहराता है। यह तरीक़ा

असल में ध्यान का है। लेकिन तनहाई में मन ऐसा नहीं लगता, जैसा कि सतगुर के सन्मुख, यानी उस वक़्त दुनियावी ख़ियालात नहीं उठते हैं, और सतगुर की नज़र के आसरे से रस और आनन्द विशेष हासिल होता है। अकसर दस पांच या ज़्यादा सतसंगी इस तरह पर आरती करते हैं, और सब सन्मुख बैठते हैं, और हर एक के वास्ते एक या दो शब्द का जुदागाना पाठ किया जाता है, और जब तक कि कुल्ल आरतियां ख़तम होवें, सब सतसंगी इसी तरह दृष्ट अपनी सतगुर के स्वरूप पर जमाकर, और मन को समेटे हुये, बैठे रहते हैं, और अंतर में रस और आनन्द लेते हैं॥

७०—बाद ख़तम होने आरतियों के, हर एक सतसंगी आरती करने वाला, अपनी सरधा और ताक़त के मुवाफ़िक़, भेंट पेश करता है, और एक या दो या सब आरती करने वाले मिलकर शीरीनी वग़ैरा बतौर परशाद के मंगवाते हैं, कि वह आरती के ख़तम होने पर, कुल्ल सतसंगी और हाज़िरान सतसंग में बराबर तक़सीम हो जाता है। और शुरू आरती में हार चढ़ाते हैं, सो परशादी होकर सतगुर से वापिस मिल जाता है। और बाद देने भेंट और वापस लेने हार के,

मत्था टेक कर और दृष्टी जोड़ कर बंद्गी करते हैं ॥

(१६) हार चढ़ाने का फ़ायदा

७१—जो कि संत सतगुर या साध गुरू की सुरत ऊंचे देश की बासी है, और जब नीचे उतरी तौभी पिंड में ऊंचे मुक़ाम पर उसकी बैठक रहती है, इस सबब से उनकी देह से जो रूहानी धारें निकलती हैं, वह भी ऊंचे मुक़ाम की और निहायत निर्मल और सीतल होती हैं। और फूल निहायत नाज़ुक और लतीफ़ होता है, और चाहे किसी क़िस्म की धार हो, उसका असर उस पर बहुत जल्द पैदा होता है। सो जब कि हार बना कर संत सतगुर या साध गुरू के गले में डाला गया, तब उनकी देह और हाथों के स्पर्श से उस में बहुत असर उनकी रूहानी धार का आजाता है, और पहिन्नेवाले के बदन में वह असर प्रवेश करता है, यानी संतों की रूहानी धार, हार पहिन्ने वाले की रूहानी धार से मिलकर, नया असर पैदा करती है, और निर्मलता और सीतलता को बढ़ाती है, यानी ऊंचे मुक़ाम की तरफ़ उसका मुख मोड़ती है ॥

(१७) मत्था टेकने और बंदगी करने का फ़ायदा

७२—ज़ाहिर है कि आंखें झरोखे दर्शन हैं, क्योंकि

हर एक शख़्स की बैठक उनके अंतर में है, और वहीं से वह जगत और उसकी रचना को देखता है- जैसा जिसका मन वैसी उसकी नज़र होती है। संत सतगुर और साध गुरू ऊंचे देश के बासी और महा निर्मल और महा सीतल और दयाल हैं, और उन की नज़र भी दयालता और सीतलता और मेहर से भरी हुई है, और जिस पर वह नज़र तवज्जह के साथ पड़ती है, उसके दिल पर भी वही असर किसी क़द्र पैदा करती है। इस वास्ते उनकी नज़र के साथ नज़र मिलाकर बंदगी करने में बहुत फ़ायदा होता है, यानी उनकी दया और मेहर हासिल होती है। और जो कि उनकी देही और ख़ास कर हाथों और चरनों से हर वक़्त महा पवित्र रूहानी धारें निकलती रहती है, इस वास्ते उनके चरनों पर मत्था टेंकने से, गहरा असर रूहानियत का बन्दगी करने में आता है, और प्रीत पैदा करता है ॥

७३—दुनिया में भी दस्तूर है, कि जो कोई जिस से मिलता है—और ख़ास कर अपने से बड़े के साथ— तब नज़र के रूबरू होकर बंदगी या प्रणाम करता है। अगर सन्मुख यानी नज़र के सामने न हुआ तो बंदगी दुरस्त न हुई। और जब कुछ ख़्वाहिश या

दरख़्वास्त पेश करता है, तो नज़र मेहरबानी की मांगता है, और जब अपने बराबर या छोटे से मिलता है, तब मुहब्बत और प्यार की नज़र से उस को देखता है। और हर कोई मर्द या औरत या बालक नज़र को पहिचानते हैं, यानी नज़र से हाल मन की मुहब्बत और दोस्ती या दुश्मनी और बर-ख़िलाफ़ी का दरियाफ़्त करके, उसी मुवाफ़िक़ आपस में बर्ताव करते हैं॥

७४—आपस में मिलने के वक़्त एक दूसरे के बदन को स्पर्श करने का भी दस्तूर आम है, और यह निशान अदब और दोस्ती और मुहब्बत का समझा जाता है। जैसे कोई (जहां मुहब्बत ज़ियादा है) बग़लगीर होकर मिलते हैं, यानी सीने से सीना मिलाते हैं, या हाथ से हाथ मिलाते हैं, या जहां बड़ाई छुटाई का हिसाब है, घोटे या पांव छूते हैं, या चरन चूमते हैं। इस कार्रवाई से दोनों की रूहानी धारें आपस में मिलती हैं, और एक का असर दूसरे में प्रवेश करता है। बालकों को जिनके रूह और मन निर्मल होते हैं, हर कोई ज़ियादती प्यार से गोद में लेकर चिपटाता है और चूमता है॥

———

(१८) परशादी और चरनामृत का फ़ायदा

७५—ऊपर लिखा गया कि सतसंग में शीरीनी वग़ैरे की क़िस्म से परशाद बंटता है; यह परशाद या तो पहिले ही परशादी होकर बांटा जाता है, या बाद तकसीम के जिस २ के दिल में आता है, वह अपने हिस्से को परशादी कराकर खाता है ॥

परशादी से यह मतलब है, कि सतगुर या साध गुरू उसको अपनी ज़बान से छू दें, या लब लगाकर पवित्र कर दें। जब तक किसी के मन में सच्चा भाव और प्यार सतगुर का न होगा, तब तक परशादी नहीं खाई जावेगी। और भाव और प्यार उस वक़्त आता है, जब कि कुछ पहिचान आती है और दया का परचा मिलता है—बग़ैर ऐसी महिमा जानने के कोई परशादी नहीं ले सक्ता ॥

७६—आम तौर पर हर एक के लब में चाहे मनुष्य होवे या जानवर ख़ास असर है। देखो मनुष्य अपने लब से फोड़े फुंसी और दाद और ज़ख़्म वग़ैरा को अच्छा कर लेते हैं, और कुत्ता अपने लब से अपने ज़ख़्म को चंगा कर लेता है, और गाय भैंस बल्कि कुल्ल जानवर अपने बच्चों को चाट २ कर ताक़त देते हैं। फिर जब कि आम मनुष्य और जानवरों के लब में

इस क़दर असर अमृत का है, तो संत सतगुर और साध गुरू के लब में, जिन की धार अमृत के भंडार से और ऊंचे मुक़ाम से आती है, किस क़दर असर अमृत का होना चाहिये। वही लब यानी अमृत की धार हर एक के ज़बान पर सर्ब रस और स्वाद् और सीतलता का भंडार है। बुख़ार या और बीमारी में जब कि उस धार की आमद् में कमी हो जाती है, और नाक़िस मवाद् का असर बढ़ जाता है, तब किसी क़द्र ज़बान का मज़ा कड़ुवा और फीका हो जाता है। इस वास्ते जो कोई निर्मल अमी का रस लेना चाहे, वह संत सतगुर की परशादी से हासिल हो सक्ता है। और ख़्याल करो कि जब एक के लब से जो बीमार है दूसरे आदमी के मुंह और बदन में बीमारी का असर फ़ौरन पैदा हो जाता है, फिर अमृत और निर्मलता और सीतलता का भी असर संत सतगुर के लब से ज़रूर पैदा होगा। इस वास्ते वही बड़ भागी हैं जिनको नित्त संत सतगुर की प्रशादी, जो अमीं यानी निर्मल रूहानी धार से भरी हुई है, खाने को मिलती है, और जो उस से परहेज़ करते हैं, वह अजान हैं और उनको अभागी समझना चाहिये ॥

७७—दुनिया के लोग निपट नादान हैं, और ज़रा ग़ौर और बिचार को काम में नहीं लाते हैं, नहीं तो संत सतगुर और साध गुरू की परशादी लेनेवालों पर तान न मारते। क्योंकि देखो आप कितने जानवरों की परशादी रोज़मर्रा खा रहे हैं, (१) चिड़िया मोरी में से कीड़े बीनती हुई उसी चोच से चौके में से रोटी का आटा नोच कर ले जाती हैं, (२) और इसी तरह से चूहे और चुहियां मोरी में से निकलकर, और चौके में जाकर, आटा या रोटी खींच ले जाती हैं, (३) बिल्ली और कउवे भी पानी और खाने की चीज़ में मुंह डाल देते हैं, (४) और हलवाई की दूकानों में बिल्ली और चूहे थोड़ा और बहुत सब ही मिठाई को झूंठा कर देते हैं, (५) गांड़े का रस जहां निकाला जाता है उसको हर कोई झूंठा कर देता है, (६) और नाज जब बालों में से निकाला जाता है, तो आदमी और बैल उसको पैरों से खूंदते हैं, और बैल उसमें पेशाब भी कर देते हैं, (७) अफ़यून को हरएक ज़ात के मर्द और औरत अपना थूंक लगाकर दरख़्त से उतारते हैं, (८) घी भंगी और चमारों तक के घर से आता है, (९) और गंडेरियां तरकारी और सिंघाड़े वग़ैरा कुंजड़ों (मुसलमान) के पानी से, जो एक नंदोले में भरा

रहता है (और उसमें वे और उनके लड़केबाले हाथ धोते हैं) छिड़के जाते हैं, (१०) बनियें बेचने के वक़्त मुसल्मानों के बर्तन में घी तौलते हैं, और जब तौल से ज़्यादा भर जाता है, तब उस में से निकाल कर अपने बरतन में डाल लेते हैं, (११) हलवाई जब चमार और भंगी के हाथ पूरी और मिठाई बेचते हैं, तब उनके हाथ से रुपये और पैसे लेते जाते हैं, और माल तौल कर देते जाते हैं, (१२) बहुत से लोग जो तमाश-बीनी करते हैं, रंडियों के मुंह से मुंह और ज़बान से ज़बान मिलाते हैं, और जब उनके यहाँ रात भर रहते हैं, तो वहीं खानपान भी करते हैं, इनकी कौन ज़ात है, ज़ाहर में मुसल्मान वरनह असल में कोई ज़ात नहीं है, (१३) नई रोशनीवाले जवान लड़के हर एक कौम के, डाक बंगले और होटल और अंगरेज़ी सराय और स्टेशन के अंगरेज़ी खाने के कमरे में जाकर, बराबर शराब और कबाब और खाना मुसलमानों का पकाया हुआ खाते हैं, (१४) आटा जो कोलन और चमारियां पीसती हैं, गरमियों में उनका पसीना व कसरत उसमें गिरता जाता है, और उनके पैरों से खुंदता है, और वहीं वे अपनी रोटियों के टुकड़े भी खाती जाती हैं, (१५) भड़भूंजे हिन्दू और मुसलमान जब खीलें और चना

भूनते हैं तब अपनी हांड़ियों के पानी से उन्हें भिगोते हैं और उबालते हैं, (१६) और गड़रिया और कहार और कहारियां सुबह उठकर और पाखाने होकर जो कि हाथ भी अच्छी तरह से नहीं धोते, बड़ी जातवालों के घरों में से मटके और कलसे दरिया या नल पर ले जाते हैं और भर कर लाते हैं—दरिया का पानी सर्व ज़ात का धोवन और चरनामृत है, क्योंकि हर कोई उसमें नहाता है और कपड़े धोता है, और ताअ-ज्जुब यह कि उस मटके या कलसे को ख़ाविंद या बेटे या भाई जो अपनी अंस हैं, और रोज़ नहाते हैं और सफ़ाई रखते हैं, अगर छू लेवें तो वह नापाक समझ कर उतार दिये जावें, और उनका पानी फेंक दिया जावे, (१७) रूई से बने हुये कपड़े को जैसे धोती व कुर्ता और पगड़ी और टोपी वग़ैरा को नापाक समझते हैं और बाज़े चौके वग़ैरे में नहीं पहिनते, और ऊनी कपड़ा जो भेड़ बकरी के बालों से बुना गया है, या रेशमी कपड़ा जो कीड़ों की हगार से तइयार हुआ है, उसको शुद्ध समझ कर चौके में पहिनते हैं, (१८) शहद जो मक्खियों का हगार और उगलन और थूक है, उसको पवित्र समझ कर सर्ब ज़ात खाते और पीते हैं, (१९) चिड़ियां कउवे और तोते वग़ैरा अनेक

फलों को कुतर जाते हैं, और लोग बिला तकल्लुफ़ उनको खाते हैं, (२०) अंगरेज़ी दवाइयां जैसे अर्क़ वग़ैरा भिश्ती के पानी में, मुसलमान और छोटी क़ौमवाले तइयार करते हैं, और हर कोई उनको बीमारी में पीता है, (२१) अक्सर लोग अपनी बिरादरी के साथ एक ही हुक्का पीते हैं, इस्से ज़्यादह और झूंठन क्या होगी, यानी एक दूसरे का थूक चाटता है, (२२) अक्सर क़ौमों में बिरादरी के लोग शरबत या शराब या पानी एकही कटोरे या पियाले में पीते हैं, इस तरह सब आपस में एक दूसरे का झूंठा पीते हैं, बिला ख़्याल इस बात के कि हर एक की रहनी और करम किस क़िस्म के हैं, और कहां और किस के साथ क्या २ चीज़ खाता पीता है ॥

७८—अब इन साहबों से पूछना चाहिये, कि ज़रा ग़ौर करके जवाब दो, कि आप किस २ की झूंठन और छुई हुई चीज़ें हर रोज़ खा रहे हो, और संत सतगुरु और भक्त जनसे इस क़दर परहेज़ करते हो, और प्रेमीजन पर जो अपनी बड़ भागता से उनकी परशादी ले रहे हैं, क्या मुंह लेकर तान मारते हो। यही सबब है कि पिछले वक़्त में जब महात्माओं ने देखा, कि तमाम दुनियादार हैवानों यानी पशुओं के मुवा-

फ़िक्र रहते हैं, और संत साध और भक्त जन की ज़रा भी महिमा या अद्‌ब और आद्‌र नहीं करते बल्कि उनको अपने बराबर या अपने से और कमतर यानी ओछा मनुष्य देखते हैं, और कुल्ल मालिक के भेद से बेख़बर रहते हैं, और उसके जान्ने की चाह भी नहीं रखते हैं, तब उन्हों ने मुनासिब समझ कर हुक्म दिया, कि इन लोगों का गुरू और महात्मा भी पशू होना चाहिये ॥

७६—सब पशुओं में जब ग़ौर से देखा तो गाय को उत्तम पाया, कि अपनी ज़िंद्‌गी में घास और भूसा खाती है और दूध और घी देती है, और अपने पालनेवाले को खिलाती है, और बाद मरने के भी उसके शरीर से उपकार जारी रहता है, यानी उसकी खाल का चरसा बनाकर बाग़ और खेती को पानी देते हैं, कि जिस्से मेवा और नाज पैदा होता है, जो जीवों का अहार है, और उसकी खाल के जूते बना कर पहिनते हैं, और उसके सींग वग़ैरे भी काम में आते हैं, और आदमी उसकी पूंछ पकड़ कर नदी और नालों के पार जा सक्ते हैं, इस वास्ते गाय को इन मूर्ख दुनियादारों का गुरू और उद्धार करता क़रार दिया। और चूंकि गुरू और महात्मा की परशादी और चरनामृत, वास्ते सफ़ाई मन और इन्द्रियों के

खाते हैं, इस वास्ते पिछले महात्माओं ने हुक्म दिया कि यह दुनियादार लोग गाय का गोबर खावें और बछिया का मूत पियें, तब उनकी सफ़ाई होगी, चुनांचि यह लोग ख़ुशी से साथ ताज़ीम के गाय का गुह और मूत खाते पीते हैं ॥

८०—अब ख़्याल करो कि इस रचना में मनुष्य सब से श्रेष्ट है, और पशुओं का नम्बर दूसरा है, फिर जिन मनुष्यों ने संत और साध और भक्त और महात्माओं को न पहिचान कर और उनकी क़द्र न जानकर, गाय को बड़ा माना और उसका गुह और मूत पवित्र समझा, तो वे पशू से भी दरजे में कम हुये। क्योंकि देखने में आता है कि गाय मनुष्यों का ग़लीज़ बहुत मज़े से खाती है, और वे गाय का ग़लीज़ पवित्र समझ कर खाते हैं, तो अब उनका क्या दर्जा ठहरा। और वे संत साध और भक्त जन और महात्माओं के सन्मुख जाने के कहां क़ाबिल रहे, और उनकी प्रशादी कैसे मिले और वे कैसे उनकी क़द्र जानें ॥

(१९) ज़ात का भेद और उसका मुक़र्रर होना करम के बमूजिब ॥

८१—दुनियादार लोग ज़ात पर बहुत ज़ोर देते हैं, ख़ासकर परमार्थ के मुआमले में, पर यह नहीं जानते और न ज़रा बिचार को काम में लाते हैं, कि ज़ात

पांत करम के मुवाफ़िक़ मुक़र्रर हुई, जैसे जो लोग कि मालिक का खोज लगा कर उसकी भक्ती और ध्यान करते थे वह ब्राह्मण कहलाये गये, और जो सिपाही-गरी करते थे वह क्षत्री और जो बनिज ब्यौपार करते थे वह बैश्य यानी बनिये और दूकानदार कहलाये, और जो नौकरी और मिहनत और मज़दूरी करते थे वह शूद्र ॥

८२—अब जो ब्राह्मण रोटी पकाने या किसानी या चपरास गीरी या दूकानदारी वग़ैरा करते हैं और जो काम कि मुतअल्लिक़ उनकी ज़ात के था नहीं करते वे असल में किस तरह ब्राह्मण समझे जा सक्ते हैं। इसी तरह से जिन ज़ात वालों ने अपना काम छोड़ कर दूसरा काम ले लिया, वहभी असल में उस ज़ात में न रहे। क्योंकि जो कोई शख़्स पुरानी चाल के मुवा-फ़िक़ ऐसे ज़ात ब्राह्मणों से उनके असली पेशे यानी परमार्थी कार्रवाई का हाल दरियाफ़्त करना या उनसे ब्रह्म विद्या सीखना चाहे तो वह कुछ भी नहीं कह सक्ते। फिर जो कोई टेक धारन करके उन्हीं को अपना गुरू बनावे तो धोखा खावेगा, और उनसे उसको कुछ हासिल न होगा। इसी तरह जो कोई बैद या हकीम के ख़ानदान में से है, या किसी वक़्त के बड़े

हाकिम या राजा के घराने में से है, अब उसने दूसरा पेशा इख़्तियार कर लिया है, और न बैद्क और हकीमी जानता है, और न अमीरी और राज उसके घर में है, तो जो कोई उस्से अपनी बीमारी का इलाज कराना चाहे, या कोई क़ज़िये झगड़े का फैसला चाहे तो वह कुछ भी कार्रवाई बाप दादे के मुवाफ़िक़ नहीं कर सक्ता। जो टेक धारी हठ करके बैद् या राजा की औलाद् से रुजू लावेगा, उसका काम हरगिज़ नहीं बनेगा, और नुक़सान उठावेगा॥

८३—मालूम होवे कि ब्राह्मण उसका नाम है कि जो ब्रह्म को जाने, न कि जनेऊ धारी का नाम ब्राह्मण है॥

श्लोक।

जन्मनजायतेशूद्रः संसकाराद्विजउच्चते।
बेद्पाठीभवेदुबिप्रः ब्रह्मजानातिब्राह्मणः॥

यानी पैदायश के वक़्त सब ब्राह्मणों की औलाद् शूद्र है, और जब जनेऊ धारन करके गुरू की सेवा में लगें तब द्विज, और बेद् पढ़ लेवें और उसका पाठ करें तब बिप्र, और जब ब्रह्म को पहिचानें तब ब्राह्मण नाम कहा जाता है। फिर जो ब्राह्मण कि रसमी परमार्थ की कार्रवाई कर रहे हैं, यानी सत्तनारायन

और एकादशी और दसमस्कंध भागवत और रुक्मिनी मंगल और रामायन और दुर्गा वग़ैरा की कथा कह कर अपने कुटम्ब का गुज़ारा कर रहे हैं, या मंदिरों में पुजारी का काम कर रहे हैं, या बीमारों और कामना वालों की तरफ़ से जाप करते हैं, या पत्रा देखकर मुहूर्त्त वग़ैरा बताते हैं और बिवाह कराते हैं, या तीर्थों के मुक़ाम पर पंडे कहलाते हैं, या कंठी बांधकर मामूली नाम या मंत्र कान में फूंक कर जीवों को चेला करते हैं, और हर साल रामत यानी उगाही करने को शहर बशहर चेलों के घरों पर जाते हैं, यह सब और बहुतेरे जो इसी क़िस्म के काम करते हैं, और दान पुन्य और ख़ैरात लेते हैं सब पेशेवाले और रोज़गारी हैं। इनके मन में मालिक का खोज या प्यार या भाव बिल्कुल नहीं है, और न चाह उसके दर्शनों की या भेद और जुगत के जान्ने की है। ऐसे ब्राह्मणों से एक ज़र्रा सच्चे परमार्थ का किसी को हासिल नहीं हो सक्ता है॥

८४—यही हाल भेषों का है, कि घरबार न मालूम किस आफ़त के वाक़े होने से छोड़ कर, और कपड़े रंग कर शहर बशहर और घर २ मांगते खाते और सैर करते फिरते हैं। और सिवाय बानी और पोथियों

के पाठ कर लेने के, या तीर्थों में भरमने के, एक ज़र्रा भी सच्चे परमार्थ की चाह या खोज या दर्द उनके मन में नहीं है। ज़्यादा कार्रवाई करी तो कुछ संस्कृत सीख ली और श्लोक पढ़ कर लोगों को अपनी महिमा जताने लगे—या बाचक ज्ञान कथकर अपने तईं ब्रह्म मान्ने लगे, और ग्रहस्ती जीवों को बातों से धोखा देकर अपना मतलब बनाते हैं ॥

८५—पिछले वक़्त में लोगों की नज़र करम और रहनी पर थी न कि नकली ज़ात पर। देखो ब्यास जी मच्छोदरी के लड़के थे, और बशिष्ठ जी गनिका से पैदा हुये, और नारद जी दासी के लड़के थे, और सूत पुरानिक जिन्हों ने नीमषार में ऋषियों और मुनीश्वरों को कथा सुनाई दासी के लड़के थे, और कृष्ण महाराज ने ग्वाले के घर में परवरिश पाई, और रामचन्द्र जी क्षत्री थे, और सुखदेव जी जिन्हों ने परीक्षित को भागवत सुनाई ब्यास जी के लड़के थे और बाल्मीक जी बहेलिये थे। अब कहो कि इनमें से कौन ब्राह्मण ज़ात का था, सब अपनी परमार्थी कार्रवाई से इस दरजे को पहुंचे ॥

८६—इसी तरह जितने भक्त हुये उनमें से कोई भी ज़ात ब्राह्मण न था, बल्कि बहुतेरे नीच क़ौम से थे

लेकिन बसबब भक्ती के किस क़द्र महिमां उनकी संसार में हो रही है, कि उस वक़्त के राजों और अमीरों और ज़ात ब्राह्मणों को कोई नहीं जानता, पर इनका नाम औरत मर्द और लड़के, जहां २ उनकी मानता है हर रोज़ ताज़ीम के साथ लेते हैं, और गुन गाते हैं, जैसा कि कहा है ॥

जातपांत पूंछे नहि कोई । हरि को भजे सो हरि का होई ॥

८७—परमार्थी कार्रवाई में ज़ात ब्राह्मण और दूसरी ऊंची ज़ात वाले, अपनी नसली ज़ात का बड़ा अहंकार और मान करते हैं, और अपने से कम ज़ात वाले से चाहे कैसाही परमार्थी होवे, और तन मन धन ख़र्च करके, निर्मल भक्ती यानी ख़ालिस परमार्थ की कार्रवाई करता होवे, उस्से परमार्थ का खोज करने या सिक्षा लेने में निहायत दरजे का परहेज़ करते हैं। लेकिन दुनिया के मुआमले में चाहे कोई ज़ात होवे उस्से विद्या और हुनर सीखने में, या उसके नीचे नौकरी करने में, या उसकी तरह बतरह की सेवा और ख़िदमत करने में, ज़रा भी ख़्याल ज़ातपांत का नहीं करते और उसके साथ निहायत दरजे की दीनता और अदब से पेश आते हैं, और उसकी सवारी के साथ बेतकल्लुफ़ दौड़ते हैं। इस्से साफ़ ज़ाहिर है कि इन

लोगों के मन में धन की क़द्र है, और सच्चे परमार्थ और सच्चे मालिक का ज़रा भी आदर और भाव नहीं है, फिर इनका कैसे उद्धार होगा, और क्या परमार्थ इनसे बन आवेगा। इनको सच्चे परमार्थियों पर तान मारते हुये ज़रा भी ख़ौफ़ नहीं आता, और अपनी काहिली और ग़फ़लत और बेजा अहंकार पर ज़रा भी अफ़्सोस और पछतावा नहीं करते। सच कहा है कि यह लोग मालिक के दरबार से निकाले हुये, और हटाये हुए हैं, उनको मालिक के चरनों के प्रेम की दौलत, जब तक कि यह सच्चे संत और साध या प्रेमी जनके सन्मुख सच्चे मन से दीनता और सेवा नहीं करेंगे हरगिज़ २ नहीं मिल सक्ती है। जो यह लोग दुनिया के मुआमले और रस्मी परमार्थ में ज़ातपात का ब्योहार और बर्ताव जारी रक्खें तो मुज़ायक़ा नहीं, क्योंकि वहां बहुत से काम ज़ाहरी और नक़ली तौर पर किये जाते हैं, लेकिन सच्चे परमार्थ यानी सच्चे मालिक की भक्ती में, ज़ाहरी और नक़्ली कारवाई कपट में दाख़िल है, और इस सबब से ऐसे लोगों को, जिनकी नज़र ऊपरी और नक़ली कारवाई पर है, और असली और अंतरी भेद और भाव से बेख़बर हैं, मालिक के दरबार और संतों और प्रेमियों

के सतसंग में दख़ल नहीं मिल सक्ता, और इस वास्ते सच्चे परमार्थ की दौलत से वह हमेशा बेनसीब रहेंगे ॥

(२०) सेवा का बर्णन ।

८८—सेवा चार क़िस्म की है, तन मन धन और सुरत की। संत सतगुरु या साध गुरू या प्रेमी जन किसी क़िस्म की सेवा के मोहताज नहीं हैं, पर भक्ती की तरक़्क़ी और प्रेम का जागना और मन की सफ़ाई बग़ैर थोड़ी बहुत सेवा के मुमकिन नहीं है ॥

८९—सिवाय इसके सेवा से हाल प्रीत और प्रतीत और शौक़ सेवक का मालूम होता है—यानी जिनके मन में सच्चे मालिक और सच्चे गुरू की और उनके सच्चे उपदेश और सुरत शब्द मारग की महिमां समाई है, और सच्चा प्यार चरनों में आया है, और सच्चा शौक़ भक्ती और शब्द का अभ्यास करके कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के धाम में पहुंचने का मन में पैदा हुआ है, तो ऐसे परमार्थी जीव के हिरदे में उमंग सेवा और ख़िदमत करने की आपही आप पैदा होवेगी, और बग़ैर थोड़ा बहुत तन मन धन और सुरत के लगाने के उस्से रहा नहीं जावेगा ॥

९०—दुनिया में भी जहां जिसकी मुहब्बत है, वहां वह ख़ुशी के साथ तन मन धन ख़र्च करता है, बग़ैर

प्रीत कहीं एक पैसा भी ख़र्च करने को मन नहीं चाहता, फिर परमार्थ में भी जब सच्ची प्रीत होती है, तब इसी तरह उमंग उठती है, और सेवा करके हर्ष होता है और शान्ती आती है ॥

६१—जब तक कि किसी प्रेमी के हिरदे में सतगुरु और सच्चे मालिक की थोड़ी बहुत प्रतीत नहीं आती है, तब तक उस्से तन की सेवा नीचे दरजे की नहीं बन सक्ती है, और न विशेष धन ख़र्च कर सक्ता है, और न उसके मन और सुरत जैसा चाहिये शब्द के अंतर अभ्यास में लग कर थोड़ा बहुत रस और आनन्द पा सक्ते हैं ॥

६२—जितनीं सेवा कि संतों के सतसंग में जारी हैं, वे सब प्रेमी जनों ने आप अपनी उमंग से निकाली हैं, और फिर दूसरे प्रेमीजन देखकर उमंग उठाते हैं, और उन सेवाओं में शामिल होते हैं, और इस कार्रवाई से अपने अभ्यास में तरक्की पाते हैं ॥

६३—तन की सेवा यह है—जैसे चरन दाबना, पंखा हांकना, हुक्का भरना, जल भरके पिलाना, भोजन तइयार करना, पलंग बिछाना, खाना या प्रशाद तक़सीम करना, पोथी का पाठ करना, शब्द गाना, झाड़ू लगाना और फ़र्श बिछाना वग़ैरा २। यह ज़रूर नहीं है कि हर

कोई यह सेवायें हर रोज़ करे, मगर एक दो या तीन बार हर एक क़िस्म की सेवा को करलेना मुनासिब है, ताकि जब वक़्त आवे और ज़रूरत पड़े तब फ़ौरन् उमंग के साथ उस सेवा को अंजाम देवे और किसी तरह की झिझक या शरम मन में न लावे ॥

६४—फ़ायदा ख़िदमत और सेवा का यह है कि मन में मान और झिझक न रहे, और सफ़ाई और प्यार पैदा होवे, और प्रतीत सतगुरु और कुल्ल मालिक के चरनों में बढ़े, और महिमां उनकी ज़्यादा से ज़्यादा चित्त में समावे, और अंतर अभ्यास में आसानी होवे ॥

६५—मन और बुद्धी की सेवा–सतसंग में बैठ कर बचन सुन्ना और समझना और बिचारना और संसे और भरम दूर करना, और जो २ ख़्याल और भाव संसारियों के संग से मन में बसे हुये हैं, उनको ओछा और बिघन कारक समझ कर निकालना। और सुमिरन और ध्यान एकाग्र चित्त होकर करना, और लीला और बिलास और परचे अंतर और बाहर देखकर मगन होना और प्रतीत बढ़ाना और आरती करके प्रीत जगाना। और अंतर में कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और सतगुरु की महिमां का बिचार और मेहर और दया की परख करके, नई २ भक्ती रीत और सेवा की उमंग अंतर और बाहर उठाना ॥

९६—इन सेवाओं का फ़ायदा यह है कि मन से संसारी ख़्यालों का निकालना, और उसमें प्रेम का भरना, और फिर उसको समेट कर अंतर स्वरूप में जोड़ना और रस लेना, और बाहर सतसंग में दर्शन और बचन का आनंद पाना ॥

९७—धन की सेवा—अगर धन अपने पास मौजूद है तो उसको भूखे प्यासे को देना, और सतगुरु और प्रेमी जनकी सेवा में ख़र्च करना ॥

९८—फ़ायदा—धन में पकड़ और बंधन का घटना, और सतगुरु और प्रेमी जन की प्रसन्नता और दया हासिल करना, और ग़रीबों और मोहताजों की दोआ लेना। यह दया और दोआ प्रेम को बढ़ाती है, और प्रेमी जनकी प्रसन्नता सेवक की उमंग को जगाती है ॥

९९—बाज़े प्रेमीजन सेवा की उमंग में उम्दा २ पोशाक तइयार करके सतगुरु को पहिनाते हैं, और आरती और भंडारा करते हैं। ऐसे उत्सव में सब सतसंगी दर्शन करके मगन होते हैं, और बहुत से उस वक़्त के स्वरूप को मन में बसा कर, ध्यान के वक़्त उस्से मदद लेते हैं। यह दर्शन मन और इंद्रियों के समेटने और जोड़ने में, अंतर और बाहर, ज़्यादा फ़ायदा देते हैं, और इस तरह से जब २ नया दर्शन

नई पोशाक के साथ होता है, तब ध्यान में बहुत मदद मिलती है। सतगुरु शौक़ीन ऐसी पोशाक के नहीं हैं, पर प्रेमियों की ख़ातिर उनको पहिन्ना पड़ता है। क्योंकि इस रीत से उनके मन में नई उमंग और नई प्रीत जागती है, और उनकी भक्ती की तरक़्क़ी होती है, और अंतर अभ्यास में मदद मिलती है। मालूम होवे कि धन की सेवा ख़ासकर ज़रूरी नहीं है, यानी जिसके पास धन नहीं है उस पर यह सेवा फ़र्ज़ नहीं है, वह औरों की सेवा में तन से मदद देवे ॥

१००—मन और सुरत की सेवा यह है, कि सिमट कर घट में शब्द को सुन्ना, और उसके आसरे ऊंचे की तरफ़ को चलना और चढ़ना और रस और आनंद लेना ॥

१०१—फ़ायदा—चरनों में दिन २ प्रीत और प्रतीत का बढ़ना, अभ्यास में तरक़्क़ी का होना, और संसार और उसके पदार्थों और भोगों से आहिस्ते २ मन में उदासीनता पैदा होनी, और परमार्थ की क़दर का दिन २ चित्त में बढ़ना, और उसमें विशेष प्यार का आना, और रहनी का सम्हलना यानी संसारी आदतों का छूटना, और परमार्थी स्वभाओं का बर्ताव जारी होना, और मन और इन्द्रियों का दिन २ तन से,

और सुरत का मन से, न्यारे होना, और अधर में चढ़ना और अंतर शब्द् में रचना ॥

१०२—जिन सेवाओं का ज़िकर ऊपर किया गया, उनमें से बाज़ी २ को दुनिया के लोग देखकर अचरज करते हैं, या तान मारते हैं और हंसी उड़ाते हैं। पर यह लोग बेचारे नादान हैं, इनको प्रेम की ज़रा भी ख़बर नहीं है। अलबत्ता दुनिया की मुहब्बत से जिसमें वे अपना तन मन धन लगा रहे हैं ख़ूब वाक़िफ़ हैं, और वहां दिल खोलकर मेहनत और ख़र्च करते हैं कि जिसमें उनके दोस्त आश्ना और रिश्तेदार, और दुनिया के लोग तमाशा देखकर राज़ी होवें और उनकी वाह २ करें। पर यह तारीफ़ चार दिन की है। परमार्थ के रास्ते में और ख़ास कर अख़ीर वक़्त में, यह कारवाई कुछ काम नहीं देगी ॥

बरख़िलाफ़ इसके प्रेमी जन को कि जो संसार के भी काम दस्तूर के मुवाफ़िक़ औसत दरजे पर करते हैं, और परमार्थ की क़दर जानकर उसमें भी उमंग के साथ मेहनत और ख़र्च करते हैं, यहां भी लाभ और वहां भी गहरा फ़ायदा मिलता है। वे दुनिया की वाह २ नहीं चाहते, पर संत सतगुरु और प्रेमी जनकी प्रसन्नता दिल और जान से चाहते हैं और उसका

फ़ायदा दुनिया में भी और आख़ीर वक़्त पर और बाद मरने के गहरे से गहरा उठाते हैं, और दुनियादारों की निंद्या और अस्तुति और तान और हंसी का ज़रा भी ख़्याल मन में नहीं लाते। उनके मन में मुख्यता इस बात की रहती है, कि सतगुरु और कुल्ल मालिक राज़ी और प्रसन्न होवें—और संसारियों की चाह दुनियादारों के रिझाने की रहती है। फिर इन दोनों में बड़ा फ़र्क़ है, और आपस में इनका मेल नहीं हो सक्ता॥

(२१) महिमां सतसंग की।

१०३—राधास्वामी मत में दो क़िस्म की कार्रवाई जारी हैं—बाहर सतसंग और सेवा और अंतर सतसंग और सेवा, यानी सुमिरन और ध्यान और शब्द का श्रवन जिसको भजन कहते हैं॥

१०४—सतसंग में बचन सुनाये जाते हैं, और बानी का पाठ और अर्थ किया जाता है॥

१०५—जो कोई सच्चा शौक़ लेकर सतसंग में शामिल होगा उसके मन और इंद्रियों की गढ़त और सफ़ाई बचन सुन २ और समझ २ कर आहिस्ते आहिस्ते होती जावेगी, और उसकी समझ बूझ भी बदलती जावेगी, यानो संसारी ख़्याल निकस कर परमार्थी ख़्याल मन में धसते और बसते जावेंगे, और दुनिया और

उसके सामान की प्रीत हलकी होती जावेगी, और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु के चरनों में प्रेम पैदा होकर दिन २ बढ़ता जावेगा, और स्वभाव और रहना और वर्तावा भी आहिस्ते २ मुवाफ़िक़ भक्तों और प्रेमी जन के होता जावेगा। मन की मलीनता और अस्थूल बिकार बग़ैर सतसंग के कभी दूर नहीं हो सक्ते हैं, और अंतर अभ्यास में भी मदद सतसंग से ही मिलती है।

(२२) महिमां अंतर अभ्यास यानी अंतरी सतसंग की।

१०६—जो कोई बाहर सतसंग करेगा, और उपदेश लेकर अंतर में सुरत शब्द मारग का अभ्यास भी करेगा, तब उसके बंधन संसार के ढीले होते जावेंगे, और अस्थूल और सूक्षम बिकार घटते जावेंगे, और अंतर में रस पाकर शौक़ बढ़ता जावेगा और परचे दया के देखकर चरनों में प्रतीत और प्रीत नई जागेगी, और दिन २ बढ़ती जावेगी, और सरन दृढ़ होती जावेगी, और मन और इंद्रियां और संसार और उसके सामान से, सुरत आहिस्ते २ न्यारी होती जावेगी यानी उसके बंधन ढीले होते जावेंगे, और देह और दुनिया का दुख सुख कम ब्यापेगा, और कोई अर्से के अभ्यास के बाद प्रेमी परमार्थी अपने अंतर में

थोड़ा बहुत हर वक़्त मगन रहेगा, और काल और करम से बेख़ौफ़ होता जावेगा। इस हाल की जांच सतगुरु या प्रेमी जन आप कर सक्ते हैं, या थोड़ी सी इस हालत की ख़बर उन शख़्सों को पड़ सक्ती है जो प्रेमी अभ्यासी का मुद्दत से संग कर रहे हैं, या उसके साथ रहते हैं, जैसे कुटम्बी और नौकर चाकर वग़ैरा—दूसरा शख़्स अच्छी तरह नहीं परख सक्ता ॥

(२३) जीवों का बेजा और ग़लत भरम और ख़ौफ़ निसबत राधास्वामी मत में शामिल होने के।

१०७—आम तौर पर असूल और क़ायदे और भेद राधास्वामी मत का सुनकर थोड़ी बहुत सब को शान्ती होती है, यानी जो बातें दरियाफ़्त करने के लायक़ हैं, उनका जवाब साफ़ २ और थोड़ा बहुत तसल्ली देने वाला मिलता है। पर जीवों की समझ बूझ बहुत ओछी है, इस सबब से वे इस मत की महिमां और बुज़ुर्गी, और सिफ़त उसके अभ्यास की आसानी और फ़ौरन असर दिखानेवाली ताक़त, की, जैसा चाहिये, जान नहीं सक्ते। वजह इसकी यह है, कि पहिले तो उनकी परमार्थी वाक़िफ़कारी बहुत कम, दूसरे कभी कुल्ल मालिक और उसकी क़ुदरत और अपने आपे के मुआमले में खोज और ग़ौर और तहक़ीक़ नहीं किया,

तीसरे सतसंग में नेम से पांच सात दिन बराबर तहक़ीक़ात की नज़र से नहीं आये कि मुफ़स्सिल हाल सुनते और समझते और संसै और भरम अपने दूर कराते, और जिन बातों का इल्म न था उनको दरियाफ़्त करते। जो कभी सतसंग में आये तौ एक रोज़ के वास्ते, और फिर महीनों के बाद एक रोज़, और फिर चुपके होके बैठ रहे—यह ढंग तहक़ीक़ात का नहीं है, और इस्से बेपरवाही और कमी शौक़ की ज़ाहिर होती है॥

१०८—सबब इस बेपरवाही और ग़फ़लत के तीन हैं:-एक तो दुनिया के भोग बिलास में निहायत दरजे का लिप्त और फंसे होना, और ज़्यादा मोह कुटम्ब परवार का और लोभ धन का; दूसरे बेजा ख़ौफ़ इस बात का कि राधास्वामी मत में शामिल होने से उनके भोग बिलास और मोह और लोभ वग़ैरा और दुनिया की चाह और मुहब्बत और गिरफ़्तारी में ख़लल पड़ेगा; तीसरे जगत और बिरादरी की लज्या और शरम और ख़ौफ़ और बंधन कुल की मरजाद और पुरानी रसमों और टेकों में, जिनको छोड़ते वे निहायत डरते और घबराते हैं॥

१०९—यह तीनों सबब निहायत दरजे की कचाई

परमार्थ की, और वे ख़ौफ़ी दुनिया के दुक्खों और सख़्ती मौत की (जो हर एक के सिर पर खड़ी हुई है) और निहायत दरजे का फंसाव और लिपटाव दुनिया और उसके भोगों में ज़ाहर करते हैं। और यह कसरें सिर्फ़ सतसंग में संतों के बचन और बानी के सुन्ने से दूर हो सक्ती हैं, और कोई जतन या तद्बीर उनके हटाने या घटाने की नहीं है ॥

११०—यह लोग अपनी आंख से देखते हैं कि राधास्वामी मत में किसी का कुटम्ब परिवार और घरबार और रोज़गार और ब्यौहार नहीं छुड़ाया जाता है, सिर्फ़ सच्चे कुल्ल मालिक की महिमां सुनाई जाती है, और उस्से मिलने की जुगत समझाई जाती है और दुनिया की नाशमान्ता और दुनियादारों की खुद मतलबी कार्रवाई पर तवज्जह दिलाई जाती है। जो कोई थोड़े शौक़ और तवज्जह के साथ बचन सुनता और समझता है और उपदेश लेकर उस जुगत का अभ्यास करता है, उसको कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल का जलवा और प्रकाश किसी क़द्र अपने घट में नज़र आता है, और उनकी मेहर और दया की परख आती है, तब वह ज़्यादा शौक़ और मुहब्बत के साथ, सतसंग और अंतर के अभ्यास में लगता है, और फिर

वक़्त अपना दुनियादारों की सोहबत में फ़ज़ूल बरबाद नहीं करता, बल्कि जहां तक मुमकिन होता है, राधास्वामी दयाल की दया का बल लेकर, कुछ ज़्यादा वक़्त परमार्थी कार्रवाई में ख़र्च करता है, और अपना धन भी जिस क़दर बे तकलीफ़ मुमकिन होता है परमार्थ में लगता है। लेकिन ऐसे शख़्स के कुटम्बी और रिश्तेदार और बिरादरी वालों को ऐसी हालत और चाल की बरदाश्त नहीं होती है क्योंकि उन्होंने कभी सच्चे परमार्थ में क़दम नहीं रक्खा, और न कभी सच्चे परमार्थ में पैसा खर्च किया, और न सच्चे मालिक की प्रतीत और प्रीत उनके मन में आई। इस सबब से वे जिस किसी की सच्ची हालत परमार्थ में देखते हैं, तब फ़ौरन चौंकते हैं और ख़ौफ़ करते हैं, कि शायद रफ़्ते २ वह घरबार और कुटम्ब परवार और रोज़गार को छोड़ देगा, और इस ख़ाम ख़्याली के सबब से उसको रोकते हैं और धमकाते हैं, और तरह २ के ख़ौफ़ दिखलाते हैं, और उसकी भक्ती में बिघन डालते हैं॥

१११—जिस किसी ने राधास्वामी मत को अच्छी तरह समझ लिया है, और अभ्यास करके अंतर में कुछ रस पाया है, वह सतसंग का बल लेकर रोज़

मर्री अपनी पकाई करता है, और मूर्ख कुटम्बी और संसारियों की धमकी और चालबाज़ी को ख़्याल में नहीं लाता, बल्कि उनको भी समझाकर सच्चे परमार्थ में लगाना चाहता है, और जो न लगें तो उनसे ज़्यादा हुज्जत या दलील नहीं करता, और उनको उनके हाल और चाल पर मालिक की मौज बिचार कर छोड़ देता है ॥

११२—अब इन मूर्ख संसारियों की हालत पर ग़ौर करो, कि जो कोई उनके कुटम्ब और बिरादरी में से बुरे से बुरे काम करता है जैसे (१) रंडीबाज़ी करना और उनके घरों पर खाना पीना और ठहरना, (२) जुआ खेलना और खिलवाना, (३) ग़ैर क़ौमों के साथ शराब और कबाब खाना और पीना, (४) और झूंठ बोल कर और फ़रेब कर २ धन पैदा करना, (५) और ग़ैर क़ौम या नीच क़ौम की औरतों को घर में डालना और उनके साथ रहना वग़ैरः, उस्से कोई नहीं कुछ कहता है और न धमकाता है, और न ज़ात में से निकालने का इरादा करता है। लेकिन जो कोई सच्चे परमार्थ में शामिल होकर सच्चे मालिक की सच्ची भक्ती करता है और दिन २ उसकी पुरानी चाल और स्वभाव और रहनी बदलती हुई आंखों से देखते हैं, और

नेक ख़सलतें और नेक ब्यौहार और परमार्थी चाल उसकी परखते हैं, फिर भी अपनी नाक़िस समझ और आदत, और पापों से भरी हुई बुद्धी के साथ, अनेक तरह के अड़ंगे परमार्थी शख़्स की भक्ती में लगाते हैं, और तरह २ के बिघन और ख़लल डालने को (कुल्ल मालिक से निडरता करके) तइयार होते हैं। अब समझो कि इन लोगों को शुभ करम और अच्छी करतूत और सच्चे मालिक की भक्ती प्यारी है कि पाप करम और नाक़िस चाल और बेईमानी पसंद है। फिर समझवार परमार्थी आदमी को, इन लोगों की बातों और धमकियों और निंद्या वग़ैरे का किस क़दर ख़्याल करना चाहिये, यानी मूर्खों और पापियों की समझौती और धमकी वग़ैरे का, अपने सच्चे मालिक की दया का भरोसा रखकर, ज़रा भी ख़्याल और अंदेशा न करना चाहिये, और कुल्ल मालिक की भक्ती हरगिज़ नहीं छोड़नी चाहिये, बल्कि उसको दिन २ मज़बूत करना और बढ़ाना चाहिये-महात्माओं का क़ौल है॥

गुर राज़ी तो करता राज़ी।
करम काल की चले न बाज़ी॥

चु राज़ी शुद अज़् बंदः यज़दान पाक।
गर ईंहा न गरदंद राज़ी चे बाक॥

यानी जो मालिक अपने भक्त से राज़ी है, तो जो दुनिया के लोग उस्से नाराज़ रहें तो कुछ ख़ौफ़ नहीं है ॥

(२४) दुनिया के लोगों का धरम और ईमान ।

११३–जो लोग कि निपट दुनियादार हैं, उनके मन में मुख्यता धन, इस्त्री, पुत्र और अपनी मान बड़ाई की रहती है–और इस ज़माने का हाल देखकर कहा जाता है, कि इस क़िस्म के लोग कसरत से हैं, और उनके मन में ख़ौफ़ और प्यार सच्चे मालिक का नहीं है, बल्कि बहुतेरों के मन में पूरा २ यक़ीन भी इस बात का नहीं है कि कोई सच्चा और कुल्ल मालिक इस रचना का मौजूद है, फ़िर ख़ौफ़ और प्यार कैसे आवे। यह लोग थोड़ा सा इल्म पढ़कर और नास्तिकों के बानी और बचन सुनकर या पढ़कर, बहुत जल्द उसको क़बूल और मंज़ूर कर लेते हैं, और धोखा खाते हैं ॥

११४—रस्मी परमार्थ जो दुनिया में जारी है, और वह कार्रवाइयां बाहरमुखी जो हर एक मत में कर रहे हैं, वह थोड़े या बहुत पढ़े हुये लोगों को पसन्द नहीं आती हैं, अलबत्ता मूर्ख और नादान और टेकी लोग उनको अपने मन हठ से कर रहे हैं, और इस

में कुछ शक नहीं कि वह परमार्थी क़ायदे और रस्में, आम लोगों के वास्ते किसी पुराने वक़्त में मुक़र्रर हुईं थीं, खोजी और दर्दी को वह कार्रवाई शान्ती नहीं दे सक्ती, और न विद्यावान को उस से तसल्ली हो सक्ती है। संत मत की इन लोगों को मुतलक़ ख़बर नहीं है, नहीं तो परमार्थ की तरफ़ से ऐसे बेपरवाह, और मालिक की तरफ़ से ऐसे बेख़ौफ़ न हो जाते ॥

११५—सच्चे परमार्थ के हासिल करने के वास्ते दो बातें दरकार हैं :—एक बाहर से चाल और चलन और ब्यौहार और बर्ताव का नेक और दुरुस्त होना, दूसरे सच्चे और कुल्ल मालिक का भेद लेकर और उस्से मिलने का जतन दरियाफ़्त करके, अपने घट में नित्त अभ्यास करना, यानी निज धाम की तरफ़ रोज़मर्रा चलना और रास्ता तै करते जाना ॥

११६—जब तक कि बाहर का चाल चलन और ब्यौहार दुरुस्त न होगा, और मन में थोड़ी बहुत सफ़ाई नहीं आवेगी, और सच्चे मालिक का थोड़ा प्यार और खोज पैदा न होगा, तब तक अंतर मुख अभ्यास सुरत शब्द जोग का (जिसके सिवाय और कोई जुगत मालिक से मिलने की नहीं है) दुरुस्ती से नहीं बन पड़ेगा ॥

११७—मनकी गढ़त और उसका चाल चलन दुरुस्त करने के वास्ते किसी क़िसम का डर ज़रूर दरकार है, सो इस दुनिया में सात क़िसम के बड़े डर हैं :— पहिला डर हाकम और उसके क़ानून का, दूसरा डर और शरम बिरादरी और रिश्तेदारों और दोस्तों वग़ैरे का, तीसरा डर नुक़सान, अपनी इज़्ज़त और रोज़गार और माल और तनदुरुस्ती का, चौथा डर मौत और कष्ट कलेश का, पांचवां डर पूरे गुरू और सच्चे मालिक का, छठा डर ख़ानदानी इष्ट और पिछले महात्मां और देवता वग़ैरे का, सातवां डर आख़िरत यानी परलोक का ॥

११८—सिवाय इनके कितने ही छोटे डर भी हैं जो मन को दुरुस्ती से चाल चलने में मदद देते हैं—जैसे बालकपन में मा बाप का डर, और फिर उस्ताद का डर, और इस्त्रियों को पति का डर, और नौकरों को अपने २ मालिक का डर, और ख़ानदान की बुज़ुर्गी और नेक नामी का डर वग़ैरे २ । क्योंकि वग़ैरे डर के यह मन सीधा नहीं चलता, क्या दुनिया के काम और ब्योहार में और क्या परमार्थ की कार्रवाई में ॥

११९—पहिला डर हाकिम और उसके क़ानून का सब मानते हैं, दूसरा डर इस वक़्त में ऐसा ज़बर नहीं

माना जाता है जैसा कि पिछले वक़्तों में था, तीसरा डर भी सब मान्ते हैं, चौथा डर मौत वग़ैरे का सब मान्ते हैं मगर भूले रहते हैं यानी उसकी याद बहुत कम आती है, पांचवां डर गुरू और मालिक का किसी बिरले जीवों को होगा जो सच्चे गुरू की भक्ती में लगे हैं, पर आम तौर पर यह डर किसी के दिल में नहीं समाता क्योंकि यक़ीन सच्चे मालिक के हाज़िर और नाज़िर होने का नहीं है या बहुत कम है और वह भी बिसरा हुआ रहता है, छठा ख़ानदानो इष्ट और पिछले महात्मा और देवता वग़ैरे का डर थोड़ा बहुत बाज़े मर्द और बहुत सी औरतें मानती हैं, और उनकी मुक़र्ररह पूजा और भेंट वग़ैरे करती हैं, इस ख़्याल से कि उसके न करने और छोड़ देने में किसी तरह का नुक़सान जान और माल और तन दुरुस्ती वग़ैरे का न हो जावे, इस वास्ते यह डर दुनियावी है परमार्थी नहीं है, सातवां डर आख़िरत और परलोक का अक्सर जीव मानते हैं, हरचंद वे करमी और टेकी हैं, मगर किसी क़द्र ख़ैरात वग़ैरे और दूसरे शुभ करम जो कोई बतावे वास्ते अपने आइंदा की ज़िंदगी के आराम और फ़ायदे के करते रहते हैं ॥

१२०—जिस क़द्र डर ऊपर लिखे गये हैं वे सब

संसारी हैं सिवाय एक डर सच्चे गुरू और सच्चे मालिक के जो निर्मल परमार्थी है। पर चाहे किसी क़िसम का डर होवे, वह जीव के चाल चलन और ब्यौहार वग़ैरे के दुरुस्त करने में मदद देता है। लेकिन निर्मल परमार्थी डर का फ़ायदा बहुत भारी है, यानी उससे पूरी सफ़ाई मन और इंद्रियों वग़ैरे की हासिल होवेगी, और एक दिन सच्चे मालिक के धाम में पहुंचावेगा। ऐसे डर वाले का हर हाल में ऐतबार हो सक्ता है, पर दूसरी किसम के डरवालों का पूरा ऐतबार नहीं हो सक्ता, क्योंकि जब कोई कामना उनके मन में ज़बर उठेगी, या किसी तरह से अपने काम को ग़ैरों की नज़र से बचा सकेंगे, तब डर के बिसर जाने का ख़ौफ़ रहेगा॥

१२१—जिसके मन में सच्चे गुरू और सच्चे मालिक का डर है, वही बड़ भागी है, और वही मन और इच्छा की आफ़तों से हर हाल में बचेगा॥

१२२—जिसके मन में हाकिम और बिरादरी और अपने नुक़्सान और मौत वग़ैरे का डर किसी क़दर रहेगा, उसका भी चाल चलन और ब्यौहार दुनिया में थोड़ा बहुत दुरुस्त रहेगा॥

१२३—जिसके मन में ख़ानदानी इष्ट और परलोक

और मौत वग़ैरे का कुछ डर रहेगा, उससे भी थोड़े बहुत शुभ करम और ख़ैरात वग़ैरा बन पड़ेंगे, और उसके एवज़ में थोड़ा बहुत सुख पावेगा ॥

१२४—लेकिन जिनके मन में यह सब डर आरज़ी तौर पर कभी आ जाते हैं और अक्सर बिसरे रहते हैं उनके क़ौल और फ़ेल यानी कथनी और करनी का ऐतबार नहीं हो सक्ता। वे अपने मतलब के पूरा करने के वास्ते जब जैसा मौक़ा होगा, बग़ैर सोच और बिचार के कार्रवाई करने को तइयार हो जावेंगे, और जब कोई डर ज़बर नहीं होगा, तब बिल्कुल् जंगली और वहशी आद्मियों के मुवाफ़िक़, बग़ैर द्या और रह्म के कार्रवाई करने को मुस्तैद् हो जावेंगे ॥

१२५—खुलासा यह है कि बग़ैर डर के शुरू में—बल्कि बहुत दूर तक यह मन सीधा और दुरुस्ती और इंसाफ़ के साथ नहीं चल् सक्ता है, और न बन्दोबस्त दुनिया का दुरुस्ती के साथ जारी रह सकता है, और न परमार्थ की कार्रवाई बन सक्ती है। इस वास्ते हर एक शख़्स को लाजिम और मुनासिब है, कि अव्वल नम्बर मालिक का ख़ौफ़ मन में रक्खे, और जो यह डर क़ायम न होवे, तो जितने डर कि ऊपर लिखे हैं, उनमें से कोई न कोई ज़बर करके माने, तो

उसका किसी क़दर बचाव और सम्हाल मुमकिन होगी, नहीं तो उसका बर्तावा दुनिया में पशुओं यानी जानवर और वहशी और जंगली आदमियों के मुवाफ़िक़ रहेगा, और परमार्थ का भाग उसको मुतलक़ नहीं मिलेगा ॥

१२६–और छोटे डरों का जो ऊपर ज़िक्र हुआ, वे कोई २ अवस्था में पैदा होते हैं, और जब वह अवस्था या हालत ख़तम हो गई, तब जाते रहते हैं ॥

१२७–हाकिम के डर का फ़ायदा यह है, कि जो बुरे काम ख़िलक़त के दुखदाई हैं, और जिनके वास्ते क़ानून में सज़ा तजवीज़ की गई हैं, उनके करने से वे लोग जिनके मन में सच्चा डर आया है बच जाते हैं, और ख़िलक़त को रिफ़ाहियत और आराम होता है ॥

१२८—बिरादरी और रिश्तेदारों के डर का फ़ायदा यह है, कि जो बातें ख़िलाफ़ रसम और मरजाद और क़ानून वग़ैरे के हैं, उन में भी बर्ताव न करें, और ब्योहार वग़ैरे में फ़रेब और दग़ाबाज़ी को काम में न लावें ॥

१२९–तीसरे डर नुक़सान वग़ैरे का फ़ायदा यह है, कि आदमी बेजा और नाक़िस कार्रवाई, और दूसरे की हक़तलफ़ी करने और इक़रार वग़ैरा पूरा न करने से बच जाता है ॥

१३०—चौथे मौत के डर से जो याद रहा आवे आदमी का चाल चलन और ब्यौहार दूसरों के साथ बहुत दुरुस्त हो जाता है, और संसार और उसके पदार्थों में पकड़ और मोह किसी क़दर ढीला हो जाता है, और शुभ करम की तरफ़ तबीअत रुजू होती है, और मालिक और उसके धाम का खोज दिल में पैदा होता है। यह डर सब के वास्ते चाहे संसारी हो या परमार्थी मुफ़ीद है, बल्कि परमार्थी के दिल में यह डर ज़रूर रहता है, और उस्से परमार्थ की कार्रवाई जल्दी करवाता है ॥

१३१—पांचवां डर गुरू और सच्चे मालिक का—यह डर बग़ैर सच्चे सतसंग के पैदा नहीं होता। जिस किसी को भाग से संतों का या उनके सच्चे प्रेमियों का संग मिल जावे, तो अलबत्ता सच्चे मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु की महिमा सुनकर, उनके चरनों में भय और भाव यानी डर और प्यार दोनों पैदा हो सके हैं, और जब उपदेश लेकर अभ्यास शुरू किया जावे और दया से अंतर में कुछ रस मिलने लगे तब वह डर और प्यार बढ़ता जावेगा ॥

डर के सबब से कुल्ल बुरे कामों से बचाव होगा बल्कि अंतर में भी नाक़िस ख़्याल उठाने में डरेगा ॥

और प्यार के सबब से सेवा की उमंग उठेगी और अंतर अभ्यास का शौक़ बढ़ेगा, इसी तरह मन और इन्द्रियों की गढ़त और सफ़ाई होती जावेगी, और चाल चलन बदलता जावेगा, और दुनिया की तरफ़ से चित्त में किसी क़दर बैराग पैदा होगा, और मेहर और दया के अंतर और बाहर परचे पाकर, प्रतीत मज़बूत होती जावेगी, और संत सतगुरु और मालिक के चरनों में दिन २ प्रेम और अनुराग बढ़ता जावेगा ॥

१३२—यह डर निर्मल है। जिस परमार्थी के मन में यह क़ायम हो जावे, तो उसका एक दिन पूरा काम बना कर छोड़ेगा—यानी सब बिकारों को आहिस्ते २ दूर करता हुआ, और मालिक का प्यार बढ़ाता हुआ, एक दिन धुर धाम में पहुंचावेगा, और निहचिंत कर देगा। इस डर की जिस क़दर सिफ़त कही जावे थोड़ी है, जैसा कि इस कड़ी में कहा है ॥

डर करनी डर परमगुरु डर पारस डर सार।
डरत रहे सो ऊबरे ग़ाफ़िल खाई मार ॥

१३३—छठा डर ख़ानदानी इष्ट वग़ैरे का—यह डर संसारी और टेकी जीवों के मन में रहता है, और इस सबब से उनकी ख़ानदानी रसमें और पूजायें वग़ैरह जारी रहती हैं। इस कार्रवाई से दुनियादारों

को एक क़िस्म का सहारा मिलता रहता है—खासकर तकलीफ़ के वक़्त में वह अपने इष्ट वग़ैरे को याद करते हैं और मानते हैं और पूजा वग़ैरे बोलते हैं। और जब इत्तफ़ाक़ से फ़ायदा हो जावे तब अपने इक़रार के मुवाफ़िक़ भेंट पूजा और ज़ियारत व दर्शन वग़ैरा करते हैं। यह डर सिवाय वक़्त तकलीफ़ या कोई उत्सव जैसे शादी और पैदायश बच्चा वग़ैरे के, और वक़्तों में साधारण रहता है, और बिल्कुल दुनियावी है॥

१३४—सातवां डर आख़िरत यानी परलोक का—इस डर से यह मतलब है कि कुछ ऐसी कार्रवाई जैसे बर्त और दान पुन्य और खिलाना पिलाना वग़ैरा जीव से बन आवे, कि जिस्से मरने के बाद दुक्खों से बचाव हो जावे। यह डर अक्सर संसारी जीवों को जो टेकी और किसी क़दर भोले हैं होता है और वे अपने २ मज़हब के मुवाफ़िक़ वह कार्रवाई जो वास्ते हासिल होने सुख अस्थान के बाद मरने के बताई है, उसको थोड़ी बहुत शौक़ और हठ के साथ करते हैं, और उनकी ख़ैरात वग़ैरा से ब्राह्मणों और भेषियों और भी थोड़े ग़रीबों को फ़ायदा पहुंचता है। यह डर भी एक क़िस्म का

दुनियावी है, क्योंकि दुनिया और माया के घेर से निकलने का जतन इसमें कुछ नहीं किया जाता ॥

(२५) प्रेम की महिमां ।

१३५—ख़ौफ़ का ज़िक्र ऊपर हो चुका है। पहिले ख़ौफ़ ज़रूर चाहिये, ताकि परमार्थी चाल चलनी शुरू हो जावे, और फिर शौक़ पैदा होता जावेगा और फिर आहिस्ते २ उसकी तरक़्क़ी होकर प्रेम (यानी गहरा शौक़) प्रघट होगा।

१३६—जिस वक़्त से प्रेम आया, उसी वक़्त से प्रीतम के साथ मेल शुरू हुआ, और जिस क़दर तरक़्क़ी प्रेम की होगी, उसी क़दर प्रीतम के साथ नज़दीकी होती जावेगी, और अंतर और बाहर पूरी सफ़ाई हासिल होगी और एक दिन पूरा काम बन जावेगा, यानी प्रीतम के धाम में पहुंच कर दर्शन और बासा मिलेगा ॥

१३७—पहिले डर के सबब से कुछ शौक़ पैदा होगा और तवज्जै प्रीतम की तरफ़ आवेगी, और बिकारों का ज़ोर और शोर घटेगा, और अभ्यास मामूली तौर से बनेगा, और उसमें कुछ रस मिलेगा। लेकिन जब कि वह डर और शौक़ प्रेम के साथ बदलना शुरू होगा, तब बिकारों की जड़ कटनी शुरू होगी और

रसीला और सुखाला अभ्यास बनेगा, और फिर प्रेम की तरक़्क़ी के साथ रस और आनन्द बढ़ेगा, और रस और आनन्द के बढ़ने से नया २ प्रेम जागता जावेगा, और दया और मेहर के परचे बराबर मिलते जावेंगे ॥

१३८—यह कुछ ज़रूरी बात नहीं है कि पहिले डर पैदा होवे। प्रेम अंग वालों के मन में प्रीतम और उसके धाम की महिमा सुनकर, गहरा शौक़ और प्रेम एक दम पैदा हो जाता है, और फिर अभ्यास के साथ रस और आनंद मिलने से दिन २ बढ़ता जाता है। और फिर यह डर पैदा होता है कि किसी करतूत से प्रीतम की नाराज़गी न हो जावे। यह डर बहुत निर्मल है, और बहुत जल्द सफ़ाई करता है, और प्रीतम से मेल कराता है ॥

१३९—सच्चे प्रेमी के मन में यह डर आपही पैदा होता है, और जब तक कि काम पूरा न होवे यानी प्रीतम के पूरे २ दर्शन न मिलें, तब तक दूर नहीं होता। यह डर बड़ा असर वाला है, और बिरले बड़भागी परमार्थियों के मन में प्रघट होता है ॥

१४०—यह डर असल में प्रेम स्वरूप है, और सतगुरु की ख़ास दया का निशान है, और जिस घट

में प्रघट हुआ, गोया प्रेम और आनंद का भंडार खुलना शुरू हो गया ॥

१४१—प्रेम की सिफ़त बहुत से बहुत है, जहां प्रेम है वहां दीनता क्षिमा और सीतलता हमेशा उसके संग रहती हैं, और प्रेमी सदा मगन रहता है, और जिस किसी को भाग से उसका संग मिल जावे, वह भी मगन हो जाता है, और उसका भी रास्ता सुखाला चलने लगता है ॥

१४२—अहंकारी और अभिमानी और बिद्यावान और चतुरा प्रेमी को मूर्ख जानते हैं, क्योंकि वे संसारी हैं, और उनकी नज़र में दुनिया की लाज और बड़ाई और धन और माल बड़ी चीज़ें नज़र आती हैं, और इन्हीं के वास्ते वे जान तक देने को तइयार हो जाते हैं। लेकिन प्रेमी इन चीज़ों को तुच्छ और दुनिया का जाल समझ कर उनकी परवाह नहीं करता, और अपने कुल्ल मालिक के प्रेम में मस्त और मगन रहता है, और वह सच्चा मालिक हर वक़्त उसकी रक्षा और सम्हाल करता है। इस बात की समझ और प्रतीत दुनियादारों को जिनका प्रेम हैवानी और हरजाई है नहीं आसक्ती। हैवानी और हरजाई से मतलब यह है, कि अनेक जीवों और पदार्थों के मोह में फंसे रहते हैं, और अपने सच्चे मालिक की कभी सुध भी नहीं लेते ॥

१४३—जिस किसी के मन में गुरू और मालिक के चरनों का प्रेम है, उसका काम सब तरह से बना हुआ है। लेकिन जिसके मन में डर है और कुछ शौक़ भी रखता है, वह भी सतगुरु से मिलकर एक दिन प्रेमी हो जावेगा। पर वह लोग जिनके हिरदे में न प्रेम है और न डर है, बिल्कुल रूखे और फीके हैं, उनको सच्चा परमार्थ कभी हासिल नहीं होगा॥

(२६) सरन की महिमा।

१४४—जीव निहायत निबल और कमज़ोर है, अपने बल से मन और इन्द्री और काल और करम का मुक़ाबला नहीं कर सक्ता है, और माया और उसके सामान का यहां इस क़द्र ज़ोर और शोर है, कि उस्से बचाव बग़ैर मदद और दया समर्थ पुर्ष के, किसी सूरत में मुमकिन नहीं है॥

१४५—पुराने वक़्तों में बड़े २ बैरागवान और ताक़त वाले हो गये, पर माया ने उन पर भी अपना चक्कर डाला, और उनको अपने लपेट में ले आई। फिर जीवों की जो कि निपट मन और माया के आधीन हैं, क्या ताक़त है, कि उनकी और अनेक प्रकार के भोगों की जो कि उन्होंने दुनिया में रचे हैं झटक झेल सकें॥

१४६—सब जीवों को ज़रा ग़ौर करने से मालूम हो

सक्ता है, बल्कि उनके रोज़ मर्रे का तजर्बा और इम्तिहान है, कि माया का कारख़ाना नाशमान और धोखे का असबाब है। लेकिन उसमें ऐसी खैंच शक्ती और लुभाव शक्ती रक्खी है, कि जान बूझ कर जीव उसमें फंसते चले जाते हैं, और उसी गिरिफ़्तारी की चाह बढ़ाते हैं, और उसके वास्ते जतन करते हैं ॥

१४७—बानी और बचन से दुनिया का हाल, जैसा कुछ कि है हर कोई समझ सक्ता है, और विद्या और बुद्धिवान अपनी किसी क़दर ज़ाहर में दुरुस्ती भी रखते हैं, लेकिन जब मन और माया का किसी वक़्त ज़ोर होता है, यानी अनेक तरह के भोग सन्मख आते हैं, और संसार की मान बड़ाई और प्रभुता लुभाती है, उस वक़्त सब झोका खा जाते हैं, और माया और उसके पदार्थों के अधीन हो जाते हैं ॥

१४८—इस वास्ते संत सतगुरु फ़रमाते हैं, कि जिस मुक़ाम पर पिंड में जीव की बैठक है, और जहां मन और इन्द्रियों और पांचों दूतों का ज़ोर से चक्कर चल रहा है, वही मुक़ाम गिरिफ़्तारी और फंसाव का है। सो जब तक जतन करके वह अस्थान नहीं छोड़ा जावेगा, तब तक जीव मन और इच्छा और माया और ममता के पंजे से छूट नहीं सक्ता ॥

१४६–पिछले वक़्त में जोगी और जोगीश्वरों ने प्राणों को रोक कर और ब्रह्माण्ड में चढ़ा कर उस गिरिफ़्तारी के अस्थान से जीव को न्यारा किया, पर ब्रह्माण्डी मन और ईश्वरी माया के घेर से बाहर नहीं निकले। और इस सबब से ब्रह्माण्डी मन और माया के झकोले सहते रहे, और जनम मरन के चक्कर से चाहे बदेर हुआ उनका बचाव नहीं हुआ, अलबत्ता पिंडी मन और जीवी माया पर ग़ालिब रहे ॥

१५०—लेकिन प्राणायाम का अभ्यास इस क़दर कठिन और उसके संजम ऐसे मुशकिल हैं, कि जीवों की ताक़त नहीं है कि उसका अभ्यास दुरुस्ती से कर सकें। जो जोगी और जोगीश्वर पिछले वक़्त में गुज़र गये, वे ईश्वर कोटी थे, इस सबब से उनसे प्राणायाम का अभ्यास बन पड़ा, पर इनकी तादाद बहुत कम यानी तीन जुग में सिर्फ़ बीस पच्चीस स्वरूप प्रघट हुये। अब इस ज़माने में कुल्ल जीव जीव कोटी में हैं, और इस वास्ते वे प्राणायाम के अभ्यास के हरगिज़ लायक़ नहीं हैं। जो कोई मन हठ से इस क़िस्म की कार्रवाई शुरू करेगा, वह चंदरोज़ में ही बीमार हो जावेगा, और जो ज़्यादती करेगा तो जान के नुक़सान का ख़ौफ़ है ॥

१५१—जो कि पिछले वक़्त के महात्माओं ने सिवाय प्राणायाम के और कोई जुगत, जीव के पिंड से न्यारा करने, और ब्रह्माण्ड में चढ़ाने की नहीं बर्णन करी, और प्राणायाम का अभ्यास किसी से, विरक्त होवे चाहे ग्रहस्त बन नहीं सक्ता, फिर उद्धार का रास्ता भी बन्द हो गया । और जीव बजाय उलटने के अपने निज घर की तरफ़, चौरासी में कसरत से उतरने लगे, और जो इस लोक में पैदा हुये, वह भी कसरत से कष्ट और कलेश अनेक तरह के भोगने लगे ॥

१५२—ऐसी हालत जगत की देखकर, यानी जीवों को महा कष्ठ और कलेश में गिरिफ़्तार मुलाहिज़ा करके, कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल संत सतगुरु रूप धारन करके प्रघट हुये और अति दया करके उपदेश सहज जुगत यानी सुरत शब्द मारग का देकर, जीवों को समझाया कि थोड़ी सी मिहनत अभ्यास की गवारा करके वे अपने निज घर में जो कुल्ल मालिक का धाम है, उनकी मेहर और दया से पहुँच कर, काल और करम और मन और माया के जाल से छूट सक्ते हैं ॥

१५३—जो जुगत अभ्यास की बताई वह ऐसी सहज करदी, कि जिसको ग्रहस्त और विरक्त और लड़का

और जवान और बूढ़ा और इस्त्री और पुर्ष और पढ़ा हुआ और अनपढ़ सब आसानी से कर सक्ते हैं। और थोड़े अर्से के अभ्यास के बाद, इसी ज़िंदगी में अपने मन और सुरत का सिमटाव, और चढ़ाव अपने घट में देख सक्ते हैं, और उसी क़दर अपने आपे को संसार और पिंड से न्यारा होता हुआ परख सक्ते हैं ॥

१५४—और एक बढ़ की महिमां राधास्वामी मत की यह है, कि बग़ैर छोड़ने घर बार और रोजगार के, हर एक जीव चाहे मर्द होवे या औरत, सतसंग में, शामिल होकर और उपदेश लेकर, सुरत शब्द मारग की कमाई कर सक्ते हैं। सिवाय इस अभ्यास के और कोई जुगत निज घर में जाने की, क़ितई नहीं है बल्कि रची भी नहीं गई ॥

इस जुगत की कमाई के वास्ते कोई क़ैद वक़्त या नहाने धोने की नहीं है, जिस वक़्त फ़ुर्सत होवे और मन चाहे, उसी वक़्त एकान्त जगह में पलंग या चौकी या गद्दी पर बैठ कर अभ्यास हो सक्ता है, चाहे रात होवे या दिन, खाने से पेश्तर, या दो तीन घंटे बाद खाना खाने के, अभ्यास में बैठ सक्ते हैं। एक वक़्त में कम से कम आध घंटा, या जो फ़ुर्सत कम होवे तो बीस मिनट अभ्यास करना चाहिये, और भजन में तवज्जह

आवाज़ पर और सुमिरन ध्यान में तवज्जै रूप पर रखना चाहिये। और जब तक रूप प्रघट न होवे, तब तक उसका ख़्याल करके ध्यान करना चाहिये, और वास्ते आसानी अभ्यास के, दो या तीन लुक़मे मामूली मुक़र्ररा खाने से कम खाना चाहिये, ताकि सुस्ती न आवे, और स्वांस लेना बे तकल्लुफ़ जारी रहे ॥

१५५—हर चंद सुरत शब्द मारग का अभ्यास दया करके निहायत दरजे का आसान कर दिया है, पर बिना सच्चे शौक़ और मेहर और दया संत सतगुरु और राधास्वामी दयाल के, कोई दुरुस्ती के साथ रास्ता तै नहीं कर सक्ता। इस वास्ते कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु की सरन, प्रीत प्रतीत के साथ हर एक शख़्स को जो राधास्वामी मत में शामिल होवे दृढ़ करना चाहिये, तब अभ्यास दुरुस्त बनेगा और रास्ता जल्दी तै होगा ॥

१५६—दुनिया के पदार्थों और भोगों से पूरा बैराग करना, और चरनों में गहरा अनुराग लाना कुछ आसान काम नहीं है। लेकिन जो कोई सच्चे मन से राधास्वामी दयाल की सरन लेगा, उसका सब काम आसानी से बन जावेगा, यानी मुवाफ़िक़ ज़रूरत के उसको दोनों बैराग और अनुराग बख़्शिश में मिलेंगे। और संत

सतगुरु उसकी सुरत को अख़ीर वक़्त पर आप अपनी गोद में बैठा कर ऊंचे देश में ले जावेंगे, और दो तीन या चार जनम में धुर पद में पहुंचावेंगे ॥

१५७—जो कोई अपना बल लेकर अभ्यास करेगा और संत सतगुरु की दया का आसरा न लेगा, उस्से अभ्यास पूरा २ नहीं बनेगा। क्योंकि काल और माया के बिघनों को वह नहीं हटा सकेगा, और थोड़े अर्से के अभ्यास के बाद अहंकार में भर कर अपनी तरक़्क़ी को आप बंद कर देगा। यानी मान बड़ाई और प्रतिष्ठा की चाह लेकर, जीवों को तरफ़ मुतवज्जे हो जावेगा, और अपने नफ़े और नुक़्सान का तमीज़ नहीं कर सकेगा।

१५८—सरन की बराबर कोई जतन रास्ता सुखाला और जल्द तै करने का नहीं है इसमें हर वक़्त रक्षा संग रहती है, और बिघन दूर रहते हैं, और प्रेम और दीनता बढ़ती जाती है, कि जिस्से अभ्यास में रस और आनंद नित्त मिलता है ॥

१५९—सरन की महिमां जिस क़दर कही जावे थोड़ी है, हर एक को इसकी क़दर नहीं मालूम है। हर एक अपना २ पुरुषार्थ ज़ोर के साथ करता है, और फिर अपने बल से मन और इंद्री और इच्छा वग़ैरे पर

ग़ालिब नहीं हो सक्ता, और किसी वक़्त में माया के चक्कर में आकर रास्ते में थक कर रह जाता है, या संसार की तरफ़ झोका खाकर उलट आता है ॥

(२७) हिदायत यानी उपदेश कुल्ल जीवों को ।

१६०—इस बचन को ग़ौर के साथ पढ़ने से मालूम होगा, कि हर एक जीव पर चाहे औरत होवे या मर्द वास्ते अपनी सुरत के कल्यान के, यानी निज घर में उलटा कर पहुंचाने के लिये, लाज़िम और फ़र्ज़ है, कि पिंड में उसकी बैठक के मुक़ाम से, मन और सुरत को अंतर में ऊंचे की तरफ़ सरकाने का जतन, सुरत शब्द मारग के मुवाफ़िक़ संत सतगुरु से उपदेश लेकर, थोड़ा बहुत रोज़मर्रा करे, और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु की सरन लेकर, उनकी दया के आसरे कार्रवाई करे, और प्रेमाभक्ती की रीत के मुवाफ़िक़ थोड़ा बहुत बर्ताव करे, तो रफ़्ते २ एक दिन निज धाम में पहुंचकर बासा पावेगा, और अमर आनंद को प्राप्त होगा ॥

१६१—शब्द सब जगह भरपूर है, लेकिन बिना दर्शन और उपदेश संत सतगुरु के, कोई उसका भेद या अभ्यास की जुगत जान नहीं सक्ता । इस सबब से पहिले संत सतगुरु और उनकी संगत का खोज ज़रूर

है, और जब वे मिल जावें, तब उनका सतसंग गहरा करके और उपदेश लेकर अभ्यास जारी करना चाहिये ॥

१६२—मालूम होवे कि संत अथवा राधास्वामी मत में, मांस और मदिरा और कुल्ल नशे की चीज़ों का खाना पीना मना है। यह दोनों अभ्यासी के अंतर मुख कार्रवाई में बहुत ख़लल डालते हैं ॥

(२८) गोश्त खाने का नुक़सान।

१६३—गोश्त खाने से मन किसी क़दर मलीन और भारी और सख़्त और बेरहम हो जाता है और वतज्जह उसकी बाहर और नीचे की तरफ़ झुकाव रखती है ॥

१६४—मुर्दा जिसम किसी क़दर नापाक समझा जाता है, उसको छूकर लोग हाथ धोते हैं या अस्नान करते हैं, और हिंन्दुओं में जो मुर्दे को आग देता है, वह तेरह दिन तक दुनिया के कारोबार से अलहदा, परहेज़गारों के मुवाफ़िक़ गुज़रान करता है। तो अब ख़्याल करो कि मुर्दे के मास को धोकर और देगची में पकाकर खाना, अपने हिरदे को जानवरों का मसान और क़बरस्तान बनाना हुआ कि नहीं। इस्से ज़्यादा और क्या नापाकी होगी, और फिर ऐसा मन अपने घट में ऊंचे देश, यानी कुल्ल मालिक के धाम की तरफ़ चलने के क़ाबिल कैसे हो सक्ता है ॥

१६५—सब कहते हैं कि मालिक का नूर और भेद हर एक मनुष्य के हिरदे में धरा है, फिर जिस जगह कि जानवरों का मसान या क़बरस्तान बनाया गया वहां वह नूर पाक कैसे ठहर सक्ता है ॥

१६६—सच्चे परमार्थी अभ्यासी का मन नरम और मुलायम और निर्मल और दुनिया की ख़्वाहशों से किसी क़दर ख़ाली होना चाहिये, तब मालिक के नूर यानी शब्द की धार उसमें उतरे और ठहरे, और चरनों का प्रेम यानी इश्क़ पैदा होवे। और जो मन की हालत बरख़िलाफ़ इसके है, और उसमें इन्द्री भोगों की चाह की तरंगें उठती रहती हैं, तो वह क़ाबिल अभ्यास सुरत शब्द मारग के, यानी चढ़ाई ऊंचे देश की तरफ़ के कैसे हो सक्ता है, और उसमें मालिक के चरनों की भक्ती कैसे जागे और ठहरे ॥

१६७—कुल्ल जानवर बनिसबत मनुष्य के ओछे और मलीन हैं, फिर उनके मांस का अहार करना और भी ज़्यादा मलीनता को पैदा करेगा, और मन को ख़िया-लात फ़ासिद यानी मलीन तरंगों में भरमावेगा और उसकी परमार्थी कार्रवाई में भारी ख़लल पड़ेगा ॥

१६८—जबकि अनेक क़िस्म की ग़िज़ा जो कि ज़मीन से पैदा होती है, जैसे अनाज और मेवा तर

और खुश्क मौजूद है, और बनिसबत गोश्त के सस्ता मिल सक्ता है, और मुवाफ़िक़ क़ौल डाक्टरों और हकीमों के, मनुष्य को ज़्यादा ताक़त दे सक्ता है, फिर क्या ज़रूर है कि दूसरे जानवरों को क़तल करके, उनके मास का अहार किया जावे। और इस क़िसम की चीज़ों में से घी और दूध और मिठाई और गेहूं चना उर्द और मसूर हैं, जिनके इस्तेमाल से बहुत ताक़त पैदा हो सक्ती हैं।

१६६—संसारी जीवों को जोकि परमार्थ यानी अपने जीव के कल्यान की तरफ़ से ग़ाफ़िल हैं, और रात दिन दुनिया के कारोबार, और अपने भोगों की चाह के पूरा करने के जतन में खर्च कर रहे हैं, इख़्तियार है कि वे चाहे सो खावें। पर सच्चे परमार्थी को जो अपने घट में अभ्यास करके, मालिक का दर्शन चाहता है, ऐसी गिज़ा के खाने से जो उसके अभ्यास में खलल डाले ज़रूर परहेज़ करना चाहिये—नहीं तो अभ्यास में जैसा रस चाहिये नहीं मिलेगा, और न दुरुस्ती से मन और सुरत की चढ़ाई होगी॥

(२६) शराब और भंग और दूसरे नशों के खाने पीने का नुक़सान।

१७०—डाक्टर और हकीम और सब दुनिया के लोग कहते हैं, कि नशे की चीज़ खाने या पीने से दिमाग़

में ख़लल पैदा होता है, और जिसम के ऐज़ायरईसा यानी बड़े और ख़ास अंगों को जैसे दिल और जिगर और मेदा वग़ैरे को ख़ास नुक़्सान पहुंचता है। और नशे की ज़्यादती से और सख़्त बीमारियां पैदा होकर, नशे बाज़ की ज़िंदगी को ख़राब कर देती हैं, और अक़्ल में भी फ़ितूर[1] आता है, बाजी जगह जान का नुक़्सान हो जाता है। इस वास्ते सच्चे परमार्थी को नशे की चीज़ों से आम तौर पर परहेज़ करना मुनासिब है ॥

१७१—ख़ास बीमारियों में जो डाक्टर या हकीम, शराब या अफ़यून वग़ैरे का थोड़े मिक़दार के साथ इस्तेमाल करावें, तो कुछ मुज़ायका नहीं है, उसमें नशा नहीं पैदा होगा या बहुत थोड़ा होगा। और चंदरोज़ के वास्ते यानी जब तक कि बीमारी दूर न होवे, वह कार्रवाई जारी रहेगी ॥

१७२—जितने नशे हैं वह या तो मन और इन्द्रियों की धारों को भोगों की तरफ़ रुजू करते हैं, या मन और इंद्री और बुद्धि को सिथल और बेकार कर देते हैं कि फिर कार्रवाई दुनिया और परमार्थ की मुतलक़ दुरस्त नहीं बन सकी है। यह दोनों हालतें परमार्थी अभ्यास के वास्ते नुक़सान करने वाली हैं ॥

---

१ नुक़सान ।

१७३—जो कोई नशा पीकर अभ्यास करेगा उसको रस नहीं आवेगा बल्कि गुम यानी लै हो जावेगा, और बाद जागने के यह समझेगा कि मुझ से अभ्यास ख़ूब बना, और किसी क़िसम की गुनावन या ख़्याल पेश न आये। ऐसी उलटी समझ से अहंकार पैदा होगा, और वह उसका भारी नुक़्सान करेगा ॥

१७४—बाद नशा खाने या पीने के देर तक उसका असर रहता है, और फिर ख़ुमार की हालत में सुस्ती और काहिली देर तक रहती है, कि जिसके सबब से कोई कारवाई नशेबाज़ आदमी से दुरुस्त नहीं बन सकी ॥

१७५—अक्सर नशेबाज़ आदमी बे वास्ते अपनी बे अक़ली से, ज़रा २ सी बात पर ग़ुस्से में भर कर तकरार और लड़ाई कर बैठते हैं, और झगड़े बखेड़े को बढ़ाते हैं। यह आदत उनके मन को ऐसा ख़राब कर देती है, कि वे क़ाबिल सुन्ने और समझने परमार्थी या नसीहत के बचनों के नहीं रहते। और जो कोई उनको नशा पीने से रोके या समझौती देवे, उसके दुश्मन बन जाते हैं, और उसको किसी न किसी तरह दुख पहुंचाना चाहते हैं। यह स्वभाव परमार्थ के बिल्कुल बरख़िलाफ़ है ॥

१७६—नशेबाज़ आदमी के क़ौल और फ़ेल यानी उसकी बात और चाल का पूरा ऐतबार नहीं हो सक्ता क्योंकि वह नशे या ख़ुमार की हालत में, जिस तरफ़ झुक जावे, अपनी हद्द और ताक़त से ज़्यादा बातें बनाता है, और पीछे उनको भूल जाता है, और उनका ख़्याल भी नहीं करता। यह आदत भी परमार्थी चाल के ख़िलाफ़ है ॥

(३०) तितिम्मा।

यानी आख़री बचन

१७७—मालूम होवे कि यह बचन मनुष्यों के उपदेश के वास्ते है, और वे इसको सुनकर और समझ कर, ज़रूर थोड़ी बहुत इसके मुवाफ़िक़ कार्रवाई करने को तइयार होवेंगे। और संतों के बचन की जांच और परख अपने अंतर में अभ्यास के साथ करेंगे, और फिर थोड़ा बहुत रस और आनन्द पाकर, अपनी प्रतीत और प्रीत संत सतगुरु और कुल्ल मालिक के चरनों में दिन २ बढ़ाते जावेंगे कि जिसको उनकी रहनी से, हर एक शख़्स जो उनके संग रहता है, किसी क़दर परख सकेगा ॥

१७८—लेकिन वे लोग कि जो सूरत में मनुष्य हैं, पर सीरत यानी स्वभाव और रहनी उनकी मुवाफ़िक़

पशुओं के है, इस बचन को सुनकर अपने मन में सख़्त नाराज़ होंगे। और संतों के उपदेश और बानी और बचन में, अपनी ओछी और नाक़िस समझ से कसरें निकालनें को तइयार होंगे और संत सतगुरु और उनके सतसंगियों को, हर एक तरह के इल्ज़ाम और बुराई लगावेंगे, और बेख़ौफ़ उनकी जाबजा निंद्या करेंगे, और जो कोई संतों के बचन को मानेगा या मान्ने को तइयार होगा, उसको धमका कर रोकेंगे, और उस्से एक क़िसम की अदावत पैदा करके उसकी हंसी उड़ावेंगे। ऐसे लोगों को यह बचन दिखाना या सुनाना मुनासिब नहीं है ॥

१७९—यह लोग निपट दुनियादार हैं, और अपनी मौत और परलोक का कुछ फ़िक्र नहीं करते और उनको पशू या हैवान की सीरतवाला इस सबब से कहा गया, कि वे पशुओं के मुवाफ़िक़ मिहनत करके, अपने तईं और अपने कुटम्ब को खिलाते पिलाते हैं और हमेशा धन और भोगों की प्राप्ती के वास्ते जतन सोचते और करते रहते हैं। लेकिन सच्चे मालिक और करतार का खोज कभी नहीं करते। देखो यही हाल पशुओं का है, कि मिहनत करके आप खाते हैं, और अपने पालनेवालों को खिलाते हैं, और इन्द्रियों बिषयों

का भोग भी करते हैं, पर कुल्ल मालिक को नहीं चीन्ह सके, और न अपने जीव के निरवार के वास्ते कुछ कारवाई कर सके हैं। ऐसे लोगों की आदत है कि जो कोई परमार्थी बचन उनको सुनावे, उसकी हंसी उड़ाते हैं, और बुरा भला कहते हैं। और अपनी आख़िरत यानी परलोक के सुधार के वास्ते मुतलक़ तदबीर नहीं करना चाहते, बल्कि कुल्ल मालिक की मौजूदगी में भी, बाज़ों के मन और अक़्ल शक और शुभा पैदा करते हैं, और दूसरों को भी जो उनकी सलाह माने गुमराह करते हैं, यानी परमार्थ की कारवाई से बाज़ रखते हैं ॥

१८०—ऐसे लोगों की सोहबत से परमार्थी आदमी को हमेशा बचना चाहिये, नहीं तो उसकी समझ बूझ और कारवाई में, यह लोग अपनी नाक़िस और पापों की भरी हुई बुद्धी से, अनेक तरह के बिघन और ख़लल डालेंगे। और जो इत्तफ़ाक़ से उनका संग कुछ अर्से तक रहा, तो ज़रूर उसको अपनी सोहबत में मिला कर, हैवानी स्वभाव और कारवाई सिखाकर ख़राब कर देंगे ॥

———

राधास्वामी सहाय

शब्द

मन तू सुन ले चित दे आज ।
राधास्वामी नाम की आवाज़ ॥
अनहद् बाजे घट घट बाजें ।
अनुरागी सुन सुन आराधें ॥
प्रेम भक्ति का लेकर साज ॥ १ ॥
तीन लोक में अनहद् राजे ।
सत्तलोक सत शब्द् बिराजे ॥
तिस परे राधास्वामी नाम की गाज ॥२॥
शब्द् की महिमा संतन गाई ।
जिन मानी धुन तिन्हें सुनाई ॥
कर दिया उनका पूरा काज ॥ ३ ॥
राधास्वामी नाम हिये में धारा ।
सोई जन हुआ सब से न्यारा ॥
त्याग दई कुल जग की लाज ॥ ४ ॥
राधास्वामी नाम प्रीत जिन धारी ।
राधास्वामी तिसको लिया सुधारी ॥
दान दिया वाहि भक्ती दाज ॥ ५ ॥
राधास्वामी नाम है अपर अपारा ।
राधास्वामी नाम है सार का सारा ॥
जो सुने सोई करै घट में राज ॥ ६ ॥

बचन-३५

मालिक अपने निज बच्चों से गहरी प्रीत और प्रतीत चाहता है, और जिसकी ऐसी हालत है वही गुरमुख है, और वही निज धाम पावेगा ॥

१—रचना में कुल्ल जीव यानी सुरतें कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल की अंस यानी बच्चे हैं, और उन सब पर आम तौर को दया है, और सब को दुनिया का सामान मुनासिब तौर पर दिया है ॥

२—इन सुरतों के तीन दरजे हैं–उत्तम मध्यम और निकष्ट–(१) उत्तम वह हैं जिनके मन में दुनिया का हाल नाशमान्ता, और उसके पदार्थों का ओछापन देखकर, खोज कुल्ल मालिक और उसके निज धाम का जो कि अमर और अजर और आनन्द और प्रेम का भंडार है, और शौक़ उसके प्राप्ती का, पैदा हुआ है। (२) मध्यम वह सुरतें हैं कि जिनको जो सामान दुनिया का मिला है उसमें प्यार है, और उसकी तरक़्क़ी हाल में और आइंदा को बाद छोड़ने इस देह और देश के चाहते हैं। और इस मतलब से परमेश्वर और औतारों और देवताओं का आराधन

करते हैं, और कोई २ इनमें से मुक्ती की चाह उठाकर परमेश्वर के लक्षस्वरूप से मिलना, या उसके लोक में उसके सन्मुख रहना चाहते हैं। (३) तीसरे निकृष्ट सुरतें वह हैं कि जो दुनिया के भोग बिलास में मगन हैं, और जो कुछ कि सामान उनको मिला है, उसी को ग़नीमत समझ रहे हैं, और उसको बढ़ाना चाहते हैं और आइंदा का यानी इस देह के छोड़ने के बाद का कुछ ख़ास तौर पर फ़िकर और जतन नहीं करते हैं ॥

३—उत्तम दरजे की सुरतें जो सच्चे मालिक के चाहने वाली हैं, वह राधास्वामी दयाल की ख़ास प्यारी हैं, और उन पर ख़ास दया होती रहती है, और बाक़ी सुरतों पर आम तौर की दया दरजे ब दरजे जारी रहती है ॥

४—उत्तम सुरतें कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और उनके निज धाम का पता और भेद और जुगत चलने और मिलने की दरियाफ़्त करना चाहती हैं। लेकिन यह तहक़ीक़ात थोड़ी बहुत तसल्ली देने के मुवाफ़िक़, सिवाय संत अथवा राधास्वामी मत के और किसी मतवालों से नहीं हो सक्ती है। यानी सिर्फ़ संत सतगुरु या उनके प्रेमी और अभ्यासी सतसंगी से यह भेद मिल सक्ता है, और बाक़ी के जीव इस

हाल से बिल्कुल बेख़बर हैं, या पूरी वाक़फ़ियत नहीं रखते, और न उस पर अमल करते मालूम होते हैं ॥

५—उत्तम जीव का मेला संत सतगुरु के संग मौज से वक़्त मुक़र्ररा पर होगा। उसको बहुत कोशिश तलाश करने की नहीं करनी पड़ेगी। और जब वह उनके सन्मुख आवेगा, तब बचन सुनते ही उसको शान्ती आवेगी, और उनके चरनों में प्रीत और प्रतीत जागेगी ॥

६—भेद सुनकर उत्तम सुरत यानी प्रेमी जीव को मालूम होवेगा, कि कुल्ल मालिक का धाम सब के परे है और सब से ऊंचा है, यानी माया के घेर के पार है, और उस देश में माया नहीं है। और जो चेतन्य धार आदि में उस धाम से निकली वही शब्द की धार है, और वही कुल्ल रचना की करतार है, और जो कोई उलट कर निज धाम में पहुंचना चाहे, वह उसी धार को पकड़ कर यानी शब्द की धुन को सुनता हुआ चले, तो वह एक दिन संत सतगुरु की दया और राधास्वामी दयाल की मेहर से निज धाम में पहुंच सकता है ॥

७—प्रेमी जीव को संत सतगुरु के संग से यह भी ख़बर पड़ेगी, कि रचना में तीन दरजे हैं। पहिला कुल्ल

मालिक का देश जहां चेतन्य ही चेतन्य है और माया नहीं है, और दूसरा ब्रह्म और माया देश, जहां निर्मल चेतन्य और शुद्ध माया की मिलौनी से रचना हुई और जिसको ब्रह्मान्ड कहते हैं, और तीसरा जीव और इच्छा देश, जहाँ निर्मल चेतन्य और मलीन माया की मिलौनी से रचना हुई, और जिसको पिंड कहते हैं ॥

इसी देश से जीव संतों का सतसंग और उनके उपदेश की कमाई करके, पहिले ब्रह्मान्ड में और फिर सत्तपुर्ष राधास्वामी देश में जा सक्ते हैं ॥

८—संत सतगुरु का उपदेश यही है, कि सुरत को शब्द में लगाकर चढ़ाना चाहिये, और इसको सुरत शब्द योग कहते हैं। और जो कि मन और माया का जहूर दूसरे दरजे से हुआ है, और पिंडी मन ब्रह्माण्डी मन की अंस है, सो यह मन और इन्द्रियां भी सुरत के संग उलट कर, अपने २ निकास के अस्थान पर पहुंचेंगीं।

६—सुरत का मन और माया के देश से न्यारे हो कर अपने निज घर में पहुंच कर, सच्चे माता पिता कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के दर्शनों का विलास और आनंद को प्राप्त होना, सच्चा और परा उद्धार कहलाता है। यानी जनम मरन और दुख सुख और

कष्ट और कलेश से क़ितई छुटकारा हो जाना, और अमर और पूरन आनंद को प्राप्त होकर निज धाम में, जो अमर अजर और प्रेम और आनंद का अथाह और अपार भंडार है, विश्राम पाना ॥

१०—तीसरे दरजे की रचना में दुख विशेष और सुख कम है, और दूसरे दरजे की रचना में सुख विशेष और दुख बहुत कम है, और पहिले दरजे में सुख ही सुख और आनंद ही आनंद हैं, और दुख और कलेश का नाम भी नहीं है ॥

११—इस लोक में जीवों का बंधन देह और इन्द्री और मन के साथ अपने अंतर में, और बाहर की तरफ़ कुटम्ब परवार और बिरादरी और दोस्त और आश्ना और बहुत से जीव जिनके साथ जब तब काम पड़ता है, और भोगों और पदार्थों वग़ैरे में हो गया है, और इन्हीं बंधनों के सबब से दुख सुख भोगना पड़ता है। जो कि कुल्ल रचना यहां की ओछी और नाश-मान है, इस वास्ते संत सतगुरु फ़रमाते हैं कि यहां कोई जीव या कोई चीज़ इस क़ाबिल नहीं है कि उसके साथ मन का बंधन किया जावे। सिर्फ़ कारज मात्र या ज़रूरत मात्र उनके साथ मेल और मिलाप करना चाहिये, और उसी मुवाफ़िक़ हर एक के साथ

अपना बर्तावा दुरुस्त करना चाहिये, जैसे कि कोई आदमी परदेश में रह कर हर एक से प्रीत भाव करता है, लेकिन अपने घर की याद ख़ूब रखता है और जब मौक़ा मिलता है, तब अपने वतन को बहुत ख़ुशी के साथ जाता है, इन परदेसियों की मुहब्बत उसको ज़रा नहीं अटका सक्ती ॥

ज़्यादह मोह में ज़्यादह दुख सहना पड़ेगा, क्योंकि एक दिन वह बंधन काल ज़बरदस्ती तोड़ेगा ॥

१२—हर एक बड़े दरजे में कितने ही छोटे दरजे हैं, जो संत फ़रमाते हैं कि जैसे इस लोक की रचना के बंधनों का ज़िकर ऊपर किया गया, ऐसे ही थोड़ा बहुत सब दरजों में पिंड देश और ब्रह्माण्ड के सम-झना चाहिये। यानी इन दरजों की रचना में दिल लगाने और बंधन करने से, प्रेमी अभ्यासी आगे क़दम बढ़ाने से रह जावेगा, यानी अपने निज घर में नहीं पहुंचेगा और जो कि यह देश माया के घेर में हैं, इस वास्ते चाहे देर से होवे या सबेर जनम मरन का चक्कर जारी रहेगा ॥

१३—जो कि कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल प्रेम और आनंद के भंडार हैं, और जीव उनकी अंस भी प्रेम रूप है, और जो चेतन्य धार कि आदि में कुल्ल

मालिक के चरनों से निकस कर, रचना करती हुई नीचे उतरी है, वह भी शब्द और प्रेम की धार है, इस वास्ते ज़ाहिर है कि जीव से कोई काम संसारी या परमार्थी, बग़ैर प्रेम या इश्क या शौक़ के नहीं बन सक्ता। इसलिये संतों ने अपने मत और उपदेश में प्रेम की मुख्यता रक्खी है, यानी बग़ैर प्रेम के निज घर का रास्ता तै नहीं हो सक्ता। और जिस मत में कि प्रेम यानी भक्ती की मुख्यता नहीं है वह मत और उसके अभ्यास का तरीक़ा ख़ाली समझना चाहिये ॥

१४—जोगी और जोगीश्वरों ने भी उपासना यानी भक्ती की जरूरत वास्ते तै करने रास्ते के बयान की लेकिन वह उपासना उन्हों ने रास्ते के मुक़ामों के धनी और मालिकों की क़ायम रक्खी, पर जो कि उन सब का अभाव होता देखा, इस वास्ते अपने मत और उपदेश में प्रेमाभक्ती की मुख्यता नहीं की और ज्ञान को मुख्य ठहराया, यानी बग़ैर ज्ञान के मुक्ती का प्राप्त होना सही नहीं ठहराया। और ज्ञान से मतलब यह है, कि अभ्यासी जो भक्ती करके ईश्वर या ब्रह्म के मुक़ाम तक पहुंचा है वहां न ठहरे और ब्रह्म या ईश्वर के लक्षस्वरूप में जो अरूप और

निराकार है मिलकर अपने आपे को उसमें गुम् कर दे् ताकि फिर जनम न होवे, और परलै और महा परलै की चोट से बच जावे, क्योंकि ईश्वर और ब्रह्म के लोक का परलै और महा परलै में अभाव हो जाता है ॥

१५—संतों ने जो प्रेमाभक्ती की शुरू से आख़िर तक मुख्यता करी, उसका सबब यह है, कि उनका भगवंत सत्तपुर्ष राधास्वामी द्‌याल हमेशा क़ायम है, और किसी क़िसम की परलै का असर द्‌याल देश यानी पहिले द्‌रजे में नहीं पहुंचता है ॥

१६—संत भी अपने प्रीतम कुल्ल मालिक से जब चाहें जब मिलकर एक हो सक्ते हैं, और फिर जब चाहें जब जुद्‌ा होकर दर्शनों का आनंद् लेते हैं–इसको भेद् भक्ती और अभेद् भक्ती कहते हैं, लेकिन जोगी और जोगीश्वर जिस पद् में समाये, उस्से फिर न्यारे नहीं हो सक्के, जब तक कि वक़्त उत्थान यानी फिर जनमने का न आवे ॥

१७—उत्तम जीव यानी प्रेमी सुरतों से संत सतगुरु फ़रमाते हैं, कि उनको कुल्ल मालिक राधास्वामी द्‌याल के चरनों में गहरी प्रीत और प्रतीत करनी चाहिये, यानी जिस क़द्‌र कि उनकी प्रीत संसार और

कुटुम्ब परिवार और धन माल वग़ैरे में है उस्से कुछ ज़्यादा मालिक के चरनों में होना चाहिये, तब रास्ता सुखाला और तेज़ चलेगा। यानी जो मालिक की प्रीत का पल्ला, बनिस्पत दुनिया की प्रीत के पल्ले के कुछ भारी होगा, तब कोई बिघन मन और माया और काल वग़ैरे का उनके अभ्यास में ख़लल नहीं डालेगा, और अभ्यास भी सहज बनेगा। इसी को गुरुमुखता कहते हैं, और गुरुमुख को कोई रोक और अटका नहीं सकता ॥

१८—जो उत्तम जीवों की बिशेष प्रीत चरनों में होगी, तब यह बात ज़ाहिर होगी कि उन्होंने सच्चे मालिक की कुछ पहिचान करी, और उसके चरनों का निश्चय धारा। और फिर कुल्ल मालिक उन पर दया भी सब से ज़्यादा, और उनकी सम्हाल और रक्षा भी ज़्यादा करेंगे, और उनकी सफ़ाई भी जल्द होगी, और रास्ता भी जल्द तै होगा ॥

१९—मध्यम जीवों की तीन क़िसमें हैं—एक तो वे जो भोग बिलास और सामान दुनिया का ज़्यादा या बढ़ के दरजे का, और अर्से तक क़ायम रहनेवाला चाहते हैं, और इस वास्ते स्वर्ग या बैकुंठ या औतारों और देवताओं के लोक का बासा चाहते हैं, और जो

कार्रवाई कि इस मतलब के हासिल होने के वास्ते मुक़र्रर है, उसको शौक़ के साथ करते हैं—दूसरे वे जीव जो ईश्वर या ब्रह्म के लोक में पहुंचने और अपने भगवंत के सन्मुख रहने की अभिलाषा करके भक्ती, या इधर से बैराग अंग लेकर अभ्यास करते हैं, पर ऐसे जीव बहुत कम हैं और इस क़िस्म का अभ्यास भी नायाब और बहुत कठिन है, और उसका साधन इस जुग में बनना मुश्किल बल्कि नामुमकिन है, सिर्फ़ संतों का तरीका अभ्यास का जीवों से बन सक्ता है। तीसरे वे जीव जो कि ईश्वर और ब्रह्म के स्वरूप और लोक का परलै महा परलै में अभाव देखकर उसके अरूप में समाने का जतन करते हैं—लेकिन वह जतन भी जैसा कि ऊपर कहा गया निहायत कठिन है, और इस ज़माने में दुरुस्ती से बन नहीं सक्ता। यह लोग पहिले ईश्वर या ब्रह्म की उपासना या भक्ती करके स्वरूप के मुक़ाम तक पहुंचते हैं, और फिर उसके लक्ष चेतन्य यानी अरूप में समाते हैं, और इसी का नाम ज्ञान है ॥

२०—इन तीनों क़िस्म के जीवों का पूरा और सच्चा उद्धार नहीं होता, यानी माया के घेर के पार नहीं जाते, क्योंकि इनको सच्चे मालिक और उसके धाम का

भेद नहीं मिला, और न इनके मन में उसकी प्रीत और प्रतीत आई। यह जीव पिछली टेक और पुराने वक़्त की जुक्तियों में बँधे रहते हैं, और संत सतगुरु और उनके उपदेश में इनको भाव बिलकुल नहीं आता। इन में से दूसरी और तीसरी क़िस्म के जीवों से, पुरानी करनी इस वक़्त में पूरे तौर पर नहीं बन पड़ेगी और इस वास्ते ईश्वर या ब्रह्म पद भी उनको हासिल नहीं होगा, जब तक कि संतों की सरन लेकर उनके जुगत की कमाई नहीं करेंगे ॥

२१—तीसरे दरजे के यानी निकृष्ट जीवों से, कोई परमार्थी कार्रवाई या जतन और जुगत, वास्ते प्राप्ती सुख और ऊंचे मुक़ाम के नहीं बन पड़ेगी। क्योंकि उनके मन में कुल्ल मालिक या ईश्वर और ब्रह्म वग़ैरा की प्रतीत साधारन होगी, और संसार की तरफ़ से चित्त हटाने की ताक़त उनकी नहीं है क्योंकि उसके भोग बिलास में वे गहरा सुख मानते हैं, और उन्हीं की चाह उठा कर दुनियां में मेहनत और मशक़्क़त करते हैं, आइंदा का फ़िक्र करना ज़रूर नहीं समझते। यह जीव निपट संसारी हैं, और संतों के सतसंग के लायक़ मुतलक़ नहीं हैं, और वे बारम्बार दुनियां में अपनी करनी के मुवाफ़िक़ जनम धरते रहेंगे ॥

२२—जो जीव कि कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल की भक्ती और सरन में आये, वे मालिक के अपनाए हुये और महा प्यारे हैं, और दूसरे दरजे के जीवों पर भी ब्रह्म का ख़ास प्यार है, और बाक़ी जीवों पर आम तौर की दया है। इसी के मुवाफ़िक़ रामायण में भी बचन है ॥

॥ चौपाई ॥

भक्ति बिहीन बिरंच किन होई। सब जीवन सम प्रिय मम सोई ॥
भक्तिवंत जो नीचहु प्रानी। प्राण से अधिक सो प्रिय मम बानी ॥

२३—खुलासा इस बचन का यह है कि मालिक को भक्ती और दीनता प्यारी है, जो कोई उसके चरनों में सच्ची प्रीत और दीनता लावेगा, वही संत सतगुरु से मिल कर निज धाम में बासा पावेगा, और संत सतगुरु उसको मौज से आपही मिल जावेंगे और सबब ऐसी मौज का यह है, कि कुल्ल मालिक आप प्रेम का अथाह भंडार है, और जीव जो उसकी अंस है वह भी प्रेम स्वरूप है, और जिस धार के वसीले से कि उनका सूत मालिक के चरनों में लगा हुआ है, वह भी चेतन्य और प्रेम की धार है, फिर जो कोई प्रेम अंग लेकर चलेगा, वही मालिक के सन्मुख पहुंचेगा। बिना प्रेम के उस रास्ते में गुज़र नहीं हो सक्ता है ॥

२४—देखो कुल्ल रचना प्रेम से प्रकट हुई और प्रेम ही के आसरे ठहरी हुई है, और इसी तरह दुनियां में भी कुल्ल जीवों को, बल्कि जानवरों को भी प्रीत और दीनता और सेवा प्यारी है। जो कोई जिसके साथ इस तौर से बर्ताव करता है वह उसका प्यारा हो जाता है, और उसकी हर तरह से सहायता और मदद करता है। फिर जो कोई जिस पद की सच्चे मन से भक्ती और सेवा करेगा, वह एक दिन उस पद में पहुंचेगा, जो भेदी से उस पद का पता और निशान और रास्ते का भेद और जुगत चलने की दरियाफ़्त करके, अपने घट में चलना शुरू करेगा। लेकिन सच्चे और कुल्ल मालिक का धाम उसी को मिलेगा, जो संत सतगुरु का सतसंग करके और उपदेश लेकर, सुरत शब्द मारग का अभ्यास करेगा, यानी शब्द के आसरे सुरत को अपने घट में निज धाम की तरफ़ चढ़ावेगा। और मालूम होवे कि घट में रास्ता चाहे किसी स्थान तक का होवे सिर्फ़ संतों की जुगत की कमाई से तै होवेगा, और कोई तरकीब से जो कोई इस समय में चलना चाहे, तो रास्ता नहीं खुलेगा और चाल नहीं चलेगी ॥

२५—जो भक्ती के क़ायदे हर जगह इकसां हैं, चाहे

जिसकी जो कोई करे, इस वास्ते हर एक को मुनासिब और लाज़िम है, कि पहिले तहक़ीक़ करे कि कौन सच्चा और कुल्ल मालिक है, तब उसकी भक्ती में क़दम रक्खे, फिर उसको जितने पद रास्ते के हैं सब मिल जावेंगे, और आखिर में धुर धाम में बासा पावेगा। लेकिन कुल्ल मालिक का भेद सिर्फ़ संत सतगुरु, या उनके प्रेमी और अभ्यासी भक्त से मालूम हो सक्ता है, सो जिसके हिरदे में सच्चा शौक़ कुल्ल मालिक के दर्शन का है, उसको संत सतगुरु अपनी मेहर से आप मिल जावेंगे, यानी उसका संजोग अपने चरनों में लगावेंगे और उसको उपदेश देकर अपनी दया से एक दिन कुल्ल मालिक के देश में पहुंचावेंगे ॥

बचन—३६

सुरत का आंखों के मुक़ाम से अंतर में ऊपर की तरफ़ सुरत शब्द मारग के अभ्यास से चलाना और चढ़ाना वास्ते सच्चे और पूरे उद्धार के निहायत ज़रूर है ॥

१—मालूम होवे कि जीव की बैठक जाग्रत के समय यानी दुनियां और देह का कारोबार करने के वक़्त

मुख्य करके आंखों में है। और इसी काले डइये और तिल को काजल की कोठरी कहा है, कि इस में बैठ कर कोई जीव साफ़ और पाक नहीं रह सक्ता, क्योंकि इस मुक़ाम पर मन और माया और इन्द्रियां और पांच दूत (काम, क्रोध, लोभ, मोह, और अहंकार) का भारी ज़ोर और शोर है। चाहे कोई कैसा ही जतन करे, पर जब तक कि सुरत इस मुक़ाम से ऊपर की तरफ़ नहीं सरकेगी, तब तक बचाव और सफ़ाई मुमकिन नहीं है। बल्कि पूरी सफ़ाई और पूरा बचाव, काल और करम और मन और माया के हाथ से उस वक़्त होवेगा, जब कि सुरत सरक कर माया के घेर के पार पहुंच जावेगी, और वह मुक़ाम सुन्न यानी संतों का दसवां द्वार है॥

२—इस वास्ते संत फ़रमाते हैं, कि जो कोई इस काजल की कोठरी से निकलना चाहे, और काल के कष्ट और कलेश से निवृति चाहे, उसको चाहिये कि संतों की जुगती यानी सुरत शब्द मारग का अभ्यास करके अपनी सुरत को आंख के मुक़ाम से आहिस्ते २ चलाना और चढ़ाना निज घर की तरफ़ शुरू करे, और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु की सरन का बल लेकर, मन और माया को हटाता हुआ

चले, तो उनकी मेहर और दया से एक दिन माया की हद्द के पार और वहां से सत्तपुरुष राधास्वामी देश में पहुंच कर, अमर और परम आनंद को प्राप्त होगा ॥

३—सुरत का आंखों के मुक़ाम से यकायक न्यारे होना आसान नहीं है, क्योंकि जब से जीव इस लोक में पैदा हुआ है, तब से अनेक बंधन जैसे माँ, बाप, स्त्री, पुत्र, कुटम्ब-परिवार, और बिरादरी और दोस्त और आश्ना और धन और माल वग़ैरे २ के इसको बाहर लग गये हैं, और अंतर में देह के अंग २ में बंध गया है, सो जब तक यह सब बंधन संत सतगुरु का सतसंग और अंतर में शब्द का अभ्यास करके ढीले न होवेंगे, तब तक सुरत का ऊपर की तरफ़ को खिंचना आसानी के साथ मुमकिन नहीं है। जैसे ग़ुब्बारे को जब आसमान में उड़ाना चाहते हैं, पहिले हवा से भरते हैं, और जिस क़द्र हवा भरती जाती है, वह ऊपर चढ़ने के वास्ते ज़ोर करता है, लेकिन जब तक कि उसकी डोरियां बंधी हुई हैं या उसको लोग पकड़े हुए हैं, तब तक ज़मीन को छोड़ करके चढ़ नहीं सक्ता। लेकिन जब वह डोरियां ढीली की जाती हैं, और फिर छोड़ दी जाती हैं, तब वह बेतकल्लुफ़ आसमान में अपनी ताक़त के मुवाफ़िक़ चढ़ता है। इसी तरह जब तक

सुरत के बंधन जो देह और दुनिया के साथ बंधे हुये हैं ढीले न होवेंगे, सुरत ऊंचे देश की तरफ़ बेतकल्लुफ़ चढ़ नहीं सकती। अलबत्ता जो कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों की प्रीत, और सब प्रीतों से ज़बर हो जावे, तो आसानी से चढ़ाई मुमकिन है॥

४—मोटे बंधन जगत के संत सतगुरु के सतसंग और भक्ती से कट जावेंगे, और झीने यानी बारीक बंधन चित्त के शब्द के अभ्यास से काटे जावेंगे, तब सुरत और मन निर्मल और निरबंध होकर अपने घर की तरफ़ चलेंगे। यह काम जल्दी का नहीं है। जैसे बंधन आहिस्ते २ ढीले होते और कटते जावेंगे, ऐसे ही आहिस्ते २ सुरत और मन ऊंचे देश की तरफ़ चलते और चढ़ते जावेंगे, और एक दिन राधास्वामी दयाल की दया और संत सतगुरु की मेहर से काम पूरा बन जावेगा॥

५—जिस क़दर बंधन जीव के दुनिया में हैं, और जिस क़दर चाहें भोग बिलास की जिसके मन में धरी हैं, उसी क़दर उसके सुरत और मन इस तरफ़ को झोका खाते हैं और तपन सहते हैं। क्योंकि दुनिया के कुल्ल कामों में थोड़ी बहुत तपन पैदा होती है, पर दुनियादारों को वह तपन सुखदाई मालूम होती है,

लेकिन अभ्यासियों की अंतर मुख कार्रवाई में बिघन डालती है। इस वास्ते परमार्थी जीव को होशियार रहना चाहिये, कि नये बंधन न बढ़ावे, और संसार में फैलाने और भरमाने वाली तरंगें न उठावे ॥

६—कुल्ल काम देह और संसार के बग़ैर तपन यानी रगड़े और गरमी के जारी नहीं हो सक्ते, और असली शीतलता रूहानी देश में है, या रूह और शब्द की धार में। सो, जो कोई अपने अंतर में उस धार से मिलने का थोड़ा बहुत जतन करेगा, वही थोड़ा बहुत शीतल होवेगा, और तपन की भी ख़बर उसी को पड़ेगी ॥

७—जैसे बिजली सब जगह और ख़ास करके बादल में मौजूद है, लेकिन जब तक प्रघट न होवे, तब तक रोशनी या कोई और कार्रवाई उसकी धार की प्रघट और जारी नहीं हो सक्ती, इसी तरह निर्मल चेतन्य शब्द स्वरूप से घट २ में मौजूद है लेकिन जब तक अभ्यास करके प्रघट न होवे, तब तक उसके नूर और प्रकाश और आनंद और शीतलता का असर, अपने अंतर में मालूम नहीं हो सक्ता, और न उसकी क़दर और महिमां समझ में आसक्ती है। इस वास्ते शब्द के प्रघट करने में जिस क़दर मेहनत और कोशिश की जावे वह मुनासिब और ज़रूरी है ॥

८—जो कि यह कारंवाई बग़ैर सतसंग और दया संत सतगुरु के जारी नहीं हो सक्ती, इस वास्ते मुनासिब है, कि सब में पहिले खोज संत सतगुरु और उनकी संगत का किया जावे ॥

९—जब २ सच्चे परमार्थी यानी प्रेमी जीव ज़्यादा इस लोक में जमा हो जाते हैं, तब संत सतगुरु भी वास्ते उनकी सम्हाल, और बढ़ाने प्रेमाभक्ती और अंतर अभ्यास के, ज़रूर इस लोक में आते हैं, और आम तौर पर सतसंग जारी फ़रमाते हैं, और प्रेमियों का संजोग अपने साथ आप अपनी मौज से लगाते हैं, यानी उनको कुछ दिक़्क़त ढूंढ़ने और तलाश करने की नहीं पड़ती है ॥

१०—जब प्रेमी जीव संत सतगुरु के सन्मुख या उनकी संगत में जाता है, तब बचन सुनते ही फ़ौरन उसके हिरदे में, प्रीत उनके चरनों की और भी कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और सुरत शब्द मारग की पैदा होती है, और उपदेश लेकर वह अभ्यास में लग जाता है, और थोड़ा बहुत रस अंतर में पाता है। यानीं जिस क़दर कमाई अगले जनम में कर आया है, उसी क़दर मन और सुरत उसके सिमट कर अंतर में चलते और चढ़ते हैं, और आइंदा को तरक़्क़ी का

रास्ता जारी हो जाता है, और प्रीत और प्रतीत और उमंग और सेवा दिन २ बढ़ती जाती है ॥

११—जो सतोगुनी जीव हैं, और वे संसार और उसके हाल को देखकर, और उस्से किसी क़दर उदास होकर, कुल्ल मालिक और उसके निज धाम का, वास्ते प्राप्ती अमर और पूरन आनंद के खोज करना चाहते हैं, उनका भी संत सतगुरु के सतसंग में मौज से संजोग लग जावेगा, और बचन महिमां और भेद के सुनकर मगन हो जावेंगे, और शौक़ के साथ उपदेश लेकर सुरत शब्द मारग के अभ्यास में लग जावेंगे, और प्रेमी जन के संग सहज में भक्ती के अंगों में बर्ताव करेंगे, और जगत के जीवों का और भी अपनी कुल मर्यादा के तोड़ने का ख़ौफ़ मन में न लाकर, संत सतगुरु और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल की भक्ती में मरदाना क़दम रक्खेंगे, और बाहर और अंतर के सतसंग का थोड़ा बहुत रस पाकर उसकी दया और मेहर के बल से बढ़ाते जावेंगे ॥

१२—लेकिन विषई और निपट संसारी जीव संतों के सतसंग में नहीं आवेंगे, और जो किसी सबब से एक दो दिन के वास्ते आ भी गये तो ठहरेंगे नहीं, बल्कि बाहर निकल कर अपनी नादानी और कमफ़हमी से

निंदा करेंगे। ऐसे जीवों के संग से प्रेमी परमार्थियों को हमेशा बचते रहना चाहिये, और उनको अपने परमार्थ और भक्ती की कार्रवाई में बिघन कारक समझ कर, उनसे नाता मुहब्बत का ढीला कर देना चाहिये ॥

१३—खुलासा यह है कि जो अमर देश और परम आनंद की प्राप्ती चाहता है, और दुख सुख और जन्म मरन और कष्ट और कलेश के चक्कर से कतई बचना चाहता है, उसको लाज़िम और ज़रूर है, कि अपने सुरत और मन को निज घर की तरफ़ आहिस्ते २ चढ़ाना शुरू करे, और यह चढ़ाई सिर्फ़ संतों के जुगत की कमाई से मुमकिन है। और कोई जतन धुरधाम में पहुंचने का सिवाय सुरत शब्द मारग के रचा नहीं गया। और संतों की मेहर और दया संग लेनी चाहिये क्योंकि बग़ैर इस के अभ्यास दुरुस्ती से नहीं बन पड़ेगा ॥

बचन-३७

दाता से दाता ही को मांगे और दात का आशिक़ न हो जावे, सिर्फ़ ज़रूरत के मुवाफ़िक़ दात मांगे ॥

१—कुल्ल जीव दुनिया में दुनिया के सामान के प्राप्ती के लिये मेहनत और मशक़्क़त कर रहे हैं, और उसके मिलने पर मगन हो जाते हैं, यानी जिस किसी के

पास दुनियां के भोग बिलास और कुटम्ब परिवार मौजूद हैं, वह अपने तईं बड़भागी और सुखी समझता है ॥

२—कोई २ जीव जो आइंदा की हालत का बाद मरने के थोड़ा बहुत यक़ीन करते हैं वे स्वर्ग और बैकुंठ या बहिश्त के सुखों की चाह उठाकर वहां बासा पाने के वास्ते जतन करते हैं। लेकिन वहां हमेशा रहना नहीं हो सक्ता है, क्योंकि वहां के बासियों की भी उमर की तादाद मुक़र्रर है, बाद उसके गुज़रने के फिर जन्मेंगे और नई देह नीचे ऊँचे देश में अपनी करनी के मुवाफ़िक़ धारन करेंगे ॥

३—कोई जीव बाद मरने के इसी लोक में वापस आकर सुख भोगने के इरादे से जतन करते हैं, और ज़ाहिर है कि इस लोक में भी हमेशा कोई नहीं रह सक्ता। जिस क़दर यहां की उमर है उसी अर्से तक सुख दुख का भोग कर सक्ता है। लेकिन उन लोगों को यह देह और देश ऐसा प्यारा लगता है, कि वह बारम्बार इसी लोक में जनम लेना चाहते हैं ॥

४—बाज़े जीव अवतारों या देवताओं की भक्ती इस नज़र से करते हैं, कि उनके लोक में बासा पावें लेकिन वह लोक भी हमेशा क़ायम नहीं रहते, और न वहां

के बासी हमेशा ठहर सक्ते हैं, अलबत्ता उमर बहुत बड़ी पा सक्ते हैं ॥

५—थोड़े जीव मुक्ती की प्राप्ती के वास्ते ईश्वर की भक्ती करते हैं, और मुक्ती से मतलब यह है, कि या तो ईश्वर के लोक में बासा पावें, या उसके नज़दीक रहें, या उसका सा रूप उनका भी हो जावे, या उसकी ज़ात यानी लक्ष स्वरूप में जो अरूप और निराकार है मिल जावें। इन जीवों का दरजा और सभी से जिनका ज़िकर ऊपर किया गया बड़ा है लेकिन ईश्वर के लोक का भी प्रलय या महाप्रलय में अभाव हो जाता है, और उस वक़्त उन जीवों का भी सिमटाव हो जावेगा, और फिर रचना में आवेंगे ॥

६—मालूम होवे कि यह सब लोक और भी अलोक पद माया की हद्द में हैं, हरचंद ब्रह्मान्डी यानी ईश्वरी माया निहायत सूक्षम और शुद्ध है, लेकिन जो रचना उसके घेर में है, वह हमेशा एक रस क़ायम नहीं रहती। इस सबब से संतों ने फ़रमाया है, कि जब तक जीव दयाल देश में (जहाँ माया का नाम और निशान भी नहीं है) न पहुंचेगा, तब तक उसका सच्चा और पूरा उद्धार नहीं होगा, और न वह अमर आनंद को प्राप्त हो सक्ता है ॥

७—संतों के भगवंत कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल हैं। जो कोई उनकी भक्ती करेगा, वह संत सतगुरु के सतसंग में शामिल होकर, और उपदेश सुरत शब्द मारग का लेकर आहिस्ते २ रास्ता तै करके, एक दिन सत्तपुरुष राधास्वामी दयाल के चरनों में (जहां माया मुतलक़ नहीं है) पहुंचेगा और तब सच्चा निःचिन्त होकर परमधाम में विश्राम पावेगा, और अमर आनंद को प्राप्त होगा ॥

८—इस पद का भेद और उसके रास्ते और मंजिलों का हाल तफ़सील के साथ, सिर्फ़ संत अथवा राधास्वामी मत में वर्णन किया है, और किसी मत में जो दुनियां में जारी हैं, इस पद का ज़िकर भी नहीं है। इस सबब से जो जीव संत सरन में आवेंगे, वेही अपने निज घर और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल का भेद पावेंगे, और जुगत चलने की दरियाफ़्त करके और एक दिन रास्ता तै करके वहां पहुंचेंगे। बग़ैर संत सतगुरु की दया और मदद के, उस धाम में कोई नहीं जा सक्ता है, और न कुल्ल मालिक का भेद पा सक्ता है ॥

९—अब संत दया करके जीवों को समझाते हैं, कि जिस क़दर रचना दयाल देश के नीचे और माया के

घेर में है, वह सब दात में दाख़िल है, जो कोई वहाँ का सामान और बासा चाहेगा, वह दात में अटका रहेगा, और सच्चे दाता से उसका मेल नहीं होगा। इस वास्ते जो जीव कि अपना सच्चा उद्धार चाहते हैं, उनको मुनासिब है, कि सत्तपुरुष राधास्वामी दयाल के चरनों में पहुंचने का इरादा दृढ़ करके, सुरत शब्द मारग का अभ्यास शुरू करें, तब उनका कारज दुरुस्त बनेगा ॥

१०—कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल से उन्हीं को मांगना चाहिये, या यह कि उनके चरनों का गहरा प्रेम जागे। तब वह संतों की जुगत के मुवाफ़िक़ सहज में रास्ता तै करके, एक दिन संत सतगुरु की दया से राधास्वामी धाम में पहुंच जावेगा ॥

११—मालूम होवे कि दात के चाहने वाले दात के आशिक़ हैं। दाता से प्रीत उनकी मतलब के वास्ते है, जब मतलब पूरा हो गया यानी दात मिल गई, तब वह प्रीत हलकी और ढीली पड़ जाती है, यानी फिर दाता से इस क़दर सरोकार नहीं रहता। लेकिन कभी २ कोई दात के चाहने वालों में से दया और बख़्शिश पाकर और दाता के आशिक़ों का संग करके आप भी उनमें मिल जाता है, और रफ़्ते २ इश्क़ पैदा

करके सच्चा प्रेमी और आशिक़ बन जाता है। बिना संत सतगुरु या प्रेमी जन के संग के यह बात हासिल नहीं हो सक्ती। इस वास्ते वही जीव बड़ भागी है, जो संत सतगुरु के वसीले से दात चाहे, और इस मतलब से उन की सेवा और सतसंग करना शुरू करे तो शायद उनकी मेहर की नज़र से बचन सुनकर उसकी चाह बदल जावे, और बजाय दात के उनसे दाताही को मांगे ॥

बचन-३८

वर्णन सबब डिगमिग हो जाने जीव का मालिक की भक्ती में और ढीले हो जाना सरन में और जतन वास्ते दूर करने उसके ॥

१—संत फ़रमाते हैं कि परमार्थी जीवों को मुनासिब और लाज़िम है, कि अपनी प्रीत और प्रतीत चरनों में कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरु के बढ़ाते रहें, और सरन को मज़बूत करते रहें और अपना अभ्यास बिरह या प्रेम अंग लेकर नित्त करते रहें ॥

२—इस कार्रवाई में अक्सर विघन पड़ जाते हैं,

यानी कभी २ प्रीत और प्रतीत रूखी फीकी और भक्ती डिगमिग हो जाती है, और कभी सरन ढीली हो जाती है ॥

३—सबब इन विघनों के यह हैं: (१) परमार्थी जीवों का मन कभी अपने हाल और चाल की तरफ़ नज़र करके, यानी अपने विकार और कसरों को देख कर, सुस्त और ढीला और निराश हो जाता है, (२) कभी दुनिया की चिंता और फ़िक्र या भोगों की तरंगों में वक़्त अभ्यास के बह जाता है, (३) कभी मालिक की क़ुदरत की अचरजी कार्यवाई यानी वारदातें देखकर या उनका ख़्याल करके डर जाता है, और उसका भेद और असली सबब न दरियाफ़्त होने से, तरह २ के वहम और संदेह उठाकर, अपनी प्रीत और प्रतीत में ख़लल डालता है, जैसे अकाल और मरी और वबा और तूफ़ान पानी और हवा का और भुचाल और लड़ाई और तरह २ के नुक़सान जान और माल वग़ैरा के ॥

४—पहिले सबब की निसबत यह कहा जाता है, कि परमार्थी जीवों को ज़रूर चाहिये कि अपने मन और इंद्रियों की चाल को निरखते रहें, और जहाँ तक मुमकिन होवे, उनको फ़िज़ूल और ना मुनासिब

और नाजायज़ ख़्याल उठाने, और उन के मुवाफ़िक़ कार्रवाई करने से रोकते रहें। और जब कभी मन या इंद्री उनकी कहन न माने और क़ाबू में न आवें, तब चरनों में संत सतगुरु और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के फ़रियाद और प्रार्थना करें, और उनकी दया का भरोसा रख कर ज़्यादा न घबरावें। बल्कि सरन का आसरा लेकर ऐसा यक़ीन करें, कि संत सतगुरु और राधास्वामी दयाल एक दिन ज़रूर अपनी दया का बल देकर मन और इंद्रियों पर क़ाबू दिलावेंगे, और अपनी हालत पर थोड़ा शरमा कर ज़्यादा दीनता के साथ अभ्यास में मदद मांगें और सरन को ज़्यादा मज़बूत करें, और किसी तरह की निराशा चित्त में न लावें यानी ऐसी समझ न धारें कि जब तक मन और इन्द्री क़ाबू में नहीं आवेंगे उद्धार नहीं होगा। क्योंकि संत सतगुरु और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल समर्थ हैं, और वे अपनी मेहर से सुरत को सब विघनों से बचा कर, सुख स्थान में पहुंचा सक्ते हैं, और मन और इन्द्रियों को भी एक छिन में मोड़ सक्ते हैं। इस वास्ते चाहिये कि अपनी कोशिश जिस क़दर मुमकिन होवे वास्ते सम्हाल मन और इंद्रियों के करते रहें, लेकिन भरोसा दया के बल का रक्खें ॥

५—दूसरे सबब की निसबत यह बयान किया जाता है, कि परमार्थी जीवों को मुनासिब है, कि दुनियां और उसके भोगों की इच्छा ज़रूरत के मुवाफ़िक़ उठावें—और फ़िज़ूल तरंगें रोकते रहें यानी जिस क़दर कि कार्यवाई निसबत अपने रोज़गार या पेशे या घर बार के कारोबार और बिरादरी के व्योहार वगैरे के ज़रूरी है उसकी बाबत ख़्याल या सोच विचार या जतन करने में, जिस क़द्र ज़रूरी और मुनासिब मालूम होवे कोई हर्ज नहीं है। लेकिन फ़िज़ूल ख़्वा-हिश दुनिया के मान बड़ाई और भोगों की उठाना या किसी से झगड़ा बखेड़ा करना, या ख़फ़ीफ़ कामों में बहुत तवज्जै और वक़्त ख़र्च करना, या दूसरों के झगड़ों और मुआमलों में दस्तअंदाज़ी करना, हमेशा बचाना चाहिए। ताकि अपना मन वक़्त कारवाई परमार्थ के बेहूदा और फ़िज़ूल तरंगें न उठावे॥

जो कोई अपने अभ्यास की हालत को जांचता रहता है, उसको मालूम पड़ेगा कि दुनियां के ख़्या-लात और तरंगें किस क़द्र बिघन डालती हैं, और असली परमार्थ की कार्यवाई से रोकती हैं—तब वह आप होशियारी के साथ कार्यवाई करेगा, और जहां तक मुमकिन होगा दुनिया के फ़िज़ूल और बे फ़ायदे ख्यालों से बचता रहेगा॥

जिस क़दर चित में संत सतगुरु और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में प्रेम और अनुराग जागता जावेगा, उसी क़दर संसार और उसके कारोबार से चित्त उदास होता जावेगा, और अंतरी बैराग मन में पैदा होता जावेगा, और तबही अभ्यास थोड़ा बहुत दुरुस्ती से बनेगा ॥

६—तीसरे सबब की निसबत सिर्फ़ इस क़दर बयान हो सक्ता है, कि जीवों की समझ ओछी और महदूद है—और इस सबब से क़ुदरत की कार्यवाई को जैसा चाहिये नहीं समझ सक्ते। इसके वास्ते नज़र गहरी और समझ पूरी दरकार है और वह बग़ैर मन और सुरत की चढ़ाई के ऊँचे देश में हासिल नहीं हो सक्ती। इस वास्ते परमार्थी जीवों को, अपने मालिक की क़ुदरत में दख़ल देना, कि फ़लाना काम या मुसीबत आसमानी या ज़मीनी, क्यों और किस वास्ते और किस सबब से वाक़ै हुई, नहीं चाहिये। अलबत्ते सख़्ती और तकलीफ़ और नुक़सान जीवों का देखकर मन डरता है, और घबराता है और दुखी भी होता है, पर हुक्म और मौज मालिक की समझ कर, ऐसे वाक़यात पर अपने चित्त को चरनों की तरफ़ से हटाना, या किसी तरह का अभाव लाना, या मन में

शक पैदा करना नहीं चाहिये बल्कि ख़ौफ़ खाकर अपने अभ्यास में, ज़्यादा होशियारी और सरन को ज़्यादा मज़बूत और दया का भरोसा पक्का करना चाहिये। क्योंकि जो कुछ हालत सख़्ती या नरमी की जीवों पर दुनियां में गुज़र रही है, वह उनके पिछले अगले और हाल के करमों का फल है, जिसका भेद कोई नहीं जानता है—सिर्फ़ उन करमों के फल को भोगते हुए जीवों को देखता है ॥

असल हाल यह है कि इस दुनियाँ में सच्चा आराम और चैन कहीं नहीं है, और जो थोड़ा बहुत दिखलाई देता है, वह भी ठहराऊ नहीं है, और जल्द दुख के साथ बदल जाता है। सच्चा सुख संत सतगुरु और राधास्वामी दयाल के चरनों में है—जिस किसी को भाग से सतसंग और चरनों में थोड़ी बहुत लगन पैदा हो जावे, उसका अलबत्ते हर एक क़िस्म की चिन्ता और तकलीफ़ और दुख से किसी क़दर बचाव हो सक्ता है—और चरनों का रस और आनंद लेकर, और सतसंग के वचनों को विचार करके थोड़ा बहुत अचिंत और बेफ़िक्र और अपने अंतर में मगन रह सक्ता है। और जो संसारियों और करमियों की हालत देख कर उसी के ख़्यालों में अपने चित्त को

फँसाता है वह अक्सर दुखी सुखी रहेगा—और कभी संत सतगुरू और राधास्वामी दयाल के चरनों में भाव और कभी अभाव लाकर, अपनी भक्ती और सरन को डावांडोल रक्खेगा, और अपने जीव के कारज के बनाव में बिघन डालता रहेगा ॥

मुनासिब तो यह है कि हर हाल में चरनों की तरफ़ ध्यान लगाता रहे, और जब २ किसी क़िसम की चिन्ता और फ़िक्र, या तकलीफ़ अपनी या पराई सतावे—तब थोड़ा ज़ोर देकर चित्त को चरनों में लगावे, तो वह किसी क़दर हलकी हो जावेगी, और अंतर में थोड़ा बहुत आराम मिलेगा ॥

७—सच्चे परमार्थी को जो कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और संत सतगुरू की सरन में आया है, लाज़िम और मुनासिब है, कि अपने मालिक यानी स्वामी और प्रीतम की मौज के साथ, जहां तक मुमकिन होवे मुवाफ़क़त करे। क्योंकि जब मालिक सर्वसमर्थ है, और सब से बड़ा और सब के ऊपर है, तो फिर उसकी मौज में कौन दख़ल दे सक्ता है—जो मुवाफ़क़त करेगा, तो भक्ती और सरन क़ायम रहेगी, और जो ना मुवाफ़क़त करेगा, तो भक्ती और सरन डिगमिग हो जावेगी ॥

८—सच्चे परमार्थी को विचार करना चाहिये कि दुनियां में सख़्ती और नरमी और मुसीबत और आराम की हालत सब जीवों पर गुज़र रही है-और सब चाहे परमार्थी हैं या संसारी उस हालत को जबरन् या समझ बूझ के साथ बरदाश्त कर रहे हैं, यानी दुनियादार रो पीट कर और समझदार ताम्मुल के साथ सबर और बरदाश्त करते हैं। और भक्त जन अपके मालिक और प्यारे की मौज समझ कर, उस को भक्ती यानी प्रीत के साथ क़बूल और मंज़ूर करते हैं-फिर जबकि मौज में किसी को दख़ल नहीं है, और वह जैसे बने तैसे माननी पड़ेगी तब अपनी भक्ती को क़ायम रखने के वास्ते जब २ जैसी मौज होवे, उसको साथ शुकर या तसलीम[1] या रज़ा के मंज़ूर करना चाहिये ॥

९—सिवाय इसके भक्ती मारग में हुकम है, कि प्रेमी अपने प्रीतम के चरनों में तन मन धन अरपन करे, और उसकी रज़ामंदी और प्रसन्नता को हर काम में मुक़द्दम रक्खे। फिर जब यह क़ायदा भक्ती का मुक़र्रर हुआ है, तब विचारो कि इसके मुवाफ़िक़ कार्रवाई करना मुनासिब है, या उसके बरख़िलाफ़,

१—क़बूल करना।

और अपनी भक्ती को क़ायम रखना और बढ़ाना मुनासिब है, कि घटाना और उसमें खलल डालना। खुलासा यह कि प्रेमी को हर हाल और हर सूरत में अपने प्रीतम की मौज और हुक्म के साथ जैसे बने तैसे, मुवाफ़क़त करना चाहिये ॥

१०—यह सही है कि जीव बहुत कमज़ोर और निर्बल हैं, और बसबब अर्से से दुनियाँ में फँसे रहने और बर्ताव करने के, उसकी मुहब्बत बहुत मज़बूत हो गई है, और उसके सामान को छोड़ना, या उससे दिल का हटाना, या उसकी हानि लाभ में दुखी सुखी न होना बहुत मुश्किल हो गया है। लेकिन सतगुरु और सतसंग की मदद, और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल की दया से भक्ती के क़ायदों के मुवाफ़िक़ बर्ताव करना आहिस्ते २ आसान हो सक्ता है और उसमें किसी क़िसम की दिक़्क़त व तकलीफ़ नहीं होगी, यानी प्रेमी जन अंतर में भक्ती अंग में बर्ताव करने से शान्ती और ताक़त पावेंगे, और बाहर से (जो वे ग्रहस्त में रहते हैं) ग्रहस्तियों के साथ जैसा उनका व्यवहार है बर्ताव करेंगे। यह ताक़त उनको संत सतगुरु और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल की दया से (जिनकी सरन में वे आये हैं) आहिस्ते २ मिलेगी। क्योंकि यह काम

जल्दी का नहीं है, यानी जैसे जीव संसार में कितने ही अर्से में संसारियों का संग कर के फँसा है, इसी तरह संत सतगुरु और प्रेमी जन का संग कर के कुछ अर्से में छूटेगा ॥

११—हर एक परमार्थी को जो संत सतगुरु और राधास्वामी दयाल की सरन में आया है लाज़िम और मुनासिब है, कि ऊपर की लिखी हुई हिदायत के मुवाफ़िक़, जहां तक बन सके कार्यवाई शुरू करे, और दया का आसरा लेकर उसको बढ़ाता जावे, ताकि भक्ती की तरक़्क़ी होती जावे। अभ्यास के वक़्त ख़ास कर और दूसरे वक़्तों में आम तौर पर, अपनी समझ-बूझ और ख़्यालों को, और भी अपने मन और इंद्रियों की चाल को, ऊपर की हिदायत के मुवाफ़िक़ सम्हालता रहे, तो कोई दिन में उसका घाट बदल जावेगा, यानी संसारी रीत के मुवाफ़िक़ बर्ताव दूर होकर भक्ती की रीत और क़ायदे के साथ, उसकी चाल ढाल और समझ बूझ बदलती जावेगी, और गुरुमुखता का दरजा हासिल होगा, और इस तरह एक दिन अपने प्रीतम का प्यारा हो जावेगा ॥

———

बचन-३९

मालिक कहता है कि जो चीज़ मेरे धाम में नहीं आ सक्ती और नहीं ठहर सक्ती उसको और उसके ख़्याल और याद को छोड़ कर आओ तब मेरे से मेला होगा, और जो चीज़ कि मेरे यहां नहीं है वह लेकर आओ, और जो चीज़ कि मुझ को अधिक प्यारी है उसके आसरे आओ ॥

१—मालूम होवे कि जैसे सुरत का उतार नीचे के देश में होता आया, तैसे ही बसबब मिलौनी माया और पांचों तत्व और तीनों गुन के अनेक धारें पैदा होती गईं, और विचित्र रचना भी चैतन्य और जड़ पदार्थों की बढ़ती गई और सुरत मन और इंद्रियों के वसीले से उनके साथ लिपटती और बंधती और फिर उसी नीचे की रचना में फँसतीं गई ॥

२—अब इस क़दर बंधन और मज़बूती के साथ फँसाव, सुरत का देह और दुनियां यानी कुटुम्ब परि-वार और भोगों और अनेक पदार्थों में हो गया है,

कि उनके छोड़ने का इरादा करने में जानसी निकलती है, और चाहे जिस क़दर उनके सबब से दुख और तकलीफ़ भी पावे, फिर भी उनका संग छोड़ना मंज़ूर नहीं करता ॥

३—सिवाय ज़ाहरी संग के इस क़दर प्रीत और बंधन साथ दुनिया और उसके पदार्थों के हो गया है, कि अंतर में हर वक़्त ख़्याल और फ़िकर उनका थोड़ा बहुत मुवाफ़िक़ हर एक की प्रीत के बना रहता है, और उन्हीं की गुनावन और याद उठा करती है। यहां तक कि जाग्रत अवस्था में अंतर और बाहर वही करतूत मन किया करता है, बल्कि स्वप्न अवस्था में भी इसी क़िसम के ख़्याल पैदा होते हैं, और वैसी ही करतूत थोड़ी या बहुत जारी रहती है ॥

४—ज़ाहिर है कि जो रचना स्थूल या निहायत स्थूल है, वह उलट कर सूक्षम रचना के मुक़ाम तक नहीं पहुंच सक्ती, यानी अपनी ही हद्द में रहेगी। इसी तरह जो धारें और क़ुव्वतें कि नीचे के देश में, मन और अंतःकर्न और इंद्रियों से पैदा हुईं, वह भी अपने हद्द और देश में कार्रवाई करती हैं, और उलट कर ऊंचे देश में नहीं पहुँच सक्तीं ॥

५—संत फ़रमाते हैं कि पिंड देश के स्वभाव और

ख़्वाहिशें और क़ुव्वतें इसी देश में छोड़ना चाहिये, यह ऊँचे देश में नहीं जा सक्ती हैं और न वहाँ इनके ठहरने की गुंजायश है। इस वास्ते सच्चे परमार्थी को जो ऊँचे देश में चढ़ कर अपने सच्चे मालिक से मिलना चाहता है मुनासिब और लाज़िम है कि इधर की रचना की मुहब्बत और चाह मन से जिस क़दर मुमकिन होवे ढीली और दूर करे, और उसके ख़्याल और याद को बिसरावे, तब मन और सुरत की चढ़ाई ऊँचे देश में मुमकिन होगी ॥

६—इसमें कुछ शक नहीं कि किसी को किसी चीज़ में ज़ाहर में बांधा नहीं है, और जब वह चाहे उस्से अलहदा हो सक्ता है, यानी उसके संग को थोड़े बहुत अर्से के वास्ते छोड़ सक्ता है, पर उसका ख़्याल और याद मन में बसी रहती है, और जब तब फुरना यानी गुनावन पैदा करती है, कि जिस्से मन अंतर में चाहे जहां होवे, उसी का संग करता है, और उसी ख़्याल के सबब से दुख सुख का भी भोग थोड़ा बहुत करना पड़ता है ॥

७—संत फ़रमाते हैं कि ऐसे दुनिया के ख़्यालों को मन से हटाना और दूर करना चाहिये, और बजाय उसके मालिक के चरनों का ख़्याल, या उसका महा

पवित्र नाम, या सुंदर स्वरूप हिरदे में बसाना चाहिये, तब इस नीचे दरजे की रचना से छुटकारा होवेगा ॥

८—बाहर से कुटम्ब परवार और भोगों और पदार्थों में, मुवाफ़िक़ ज़रूरत के बर्ताव करने से इस क़दर हर्ज नहीं होवेगा, जो उनमें गहरी प्रीत और बंधन नहीं है। यह प्रीत और बंधन संग करके सबके मन में पैदा होता है, लेकिन सच्चे परमार्थी को सतसंग की समझ बूझ और संत सतगुरु और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल की दया का बल लेकर, उस प्रीत और बंधन को हलका और ढीला करना चाहिये ॥

९—जो कोई चित्त से सतसंग करेगा और बचन और बानी सुनकर बिचारेगा, उसको दुनिया और उसके सामान की हक़ीक़त और कैफ़ियत आप ही प्रघट मालूम होती जावेगी, यानी यह सब कारख़ाना एक धोखे की जगह नज़र आवेगा और अख़ीर में दुखदाई मालूम पड़ेगा। फिर उसका मन आप उसकी तरफ़ से हटता और सरकता जावेगा, और सच्चे मालिक के चरनों में जुड़ता जावेगा ॥

१०—इस कार्रवाई के वास्ते संत सतगुरु या उनके प्रेमी जन का संग ज़रूर दरकार है, और जिसको भाग से ऐसा सतसंग मिल गया, उसको सच्चे का भेद और

महिमां मालूम होवेगी । और जिस तरकीब से कि सच्चे के चरनों में मेल पैदा होवे, और थोड़ा बहुत उसका रस और आनंद मिले, वह भी वक़्त लेने उपदेश के समझ में आवेगी, और फिर उसी के अभ्यास से दिन २ हालत भी थोड़ी बहुत बदलती जावेगी ।।

११—सच्चे सतसंग और सच्चे मालिक के दरबार में, दुनिया और उसके सामान या उसके ख़्याल और याद की गुंजायश नहीं है । इस वास्ते जो कोई वहां दख़ल चाहता है, उसको इन चीज़ों और उनके ख़्याल को छोड़ कर चलना चाहिये नहीं तो उसी देश में जहां की रचना में वह चीज़ें दाख़िल हैं अटका रहेगा, और फिर २ उलट कर उसी तरफ़ को झोका खावेगा, और ऊंचे देश की तरफ़ इस नामुनासिब भार और बोझे के सबब से न तो चल सकेगा और न वहां उसको ठहरना मिलेगा और जिस क़द्र कार्रवाई परमार्थ को इन ख़्यालों को संग लेकर की जावेगी, वह मुफ़्त बरबाद जावेगी ।।

१२—मालूम होवे कि जगत और उसके बंधनों और सामान से न्यारे होना, आसान और जल्दी का काम नहीं है, क्योंकि दुनिया की प्रीत और बंधन भी एक अर्से में, दुनियादारों का संग करके, मज़बूत हुए हैं

और पके हैं। इसी तरह कुछ अर्से तक अंतर और बाहर सतसंग करके, यह बंधन आहिस्ते २ ढीले होवेंगे, और संत सतगुरु और राधास्वामी दयाल के चरनों का प्रेम दिन २ बढ़ता जावेगा ॥

१३—जो लोग कि बग़ैर लगाने खोज सच्चे मालिक के, और जोड़ने प्रीत के उसके चरन कंवल में घरबार और रोज़गार छोड़ कर भेषधारी बन गये, उनकी अक़ल और नज़र दोनों मारी गईं यानी भेषधारी होने का इस क़दर अहंकार चित्त में समाया, कि अपने तईं जगत का बड़ा और पूज्य जानने लगे, और अपनी निहायत ओछी और मलीन हालत की ख़बर नहीं रही, फिर उसके सफ़ाई और दुरुस्ती का जतन कौन करे और किस्से पूछे। और बावजूदे कि जीवों को मरते हुए और दुख भोगते हुए हर रोज़ देखते हैं, पर अपनी मौत और दुख सुख के बचाव का फ़िक्र और सोच ज़रा भी मन में नहीं लाते। बल्कि जो कोई उनके चितावने का बचन कहे, या उनको शब्द के अंतर मुख अभ्यास की तरफ़ तवज्जह दिलावे, तो उसको मुतलक़ नहीं सुनते, और न किसी क़िस्म का अभ्यास करना मंज़ूर करते हैं, कि जिसका नतीजा यह होता है, कि बारम्बार चौरासी में भरमते हैं ॥

१४—इस वास्ते संत फ़रमाते हैं, कि जो कोई जगत से न्यारा होना चाहे, और अपने सच्चे मालिक से मिल कर, उसके दर्शन का आनंद लेना चाहे, उसको मुनासिब है कि पहिले संतों के सतसंग में जावे, और चित्त देकर के बचन सुने और बिचारे, और उपदेश लेकर नित्त सुरत शब्द योग का अभ्यास करे, तब संत सतगुरु और राधास्वामी दयाल की मेहर और दया से, कुछ अर्से में इसको अपनी हालत के बदलते जाने की ख़बर पड़ेगी, और फिर जिस क़दर प्रेम उसका संत सतगुरु और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में बढ़ता जावेगा, उसी क़दर यह माया और माया की रचना के घेर से न्यारा होकर राधास्वामी धाम की तरफ़ चलता और चढ़ता जावेगा, और रफ़्ते २ एक दिन अंतर में सब से जुदा होकर अपने सच्चे मालिक से उसके निज धाम में जा मिलेगा। बेफ़ायदा जल्दी करना इस काम में मुनासिब नहीं है। यह काम जब बनेगा तब संत सतगुरु की दया से आहिस्ते २ बनेगा, और तब मन और माया का संग और उनकी रचना के दुख सुख का चक्कर हमेशा को क़ितई छूट जावेगा ॥

१५—जिस क़दर कार्रवाई परमार्थ की संतों ने जारी

फ़रमाई है, उस सब का मतलब जीव को मन और माया के संग और उनकी रचना के घेर से बचाकर, सत्तपुर्ष राधास्वामी देश में पहुंचाने का है, ताकि जनम मरन के कष्ट और कलेश और देहियों के बंधनों से छूट कर परम आनंद को प्राप्त होवे ॥

१६—इस न्यारे हो जाने की दया और आनंद की हालत को वही शख़्स जान सक्ता है कि जिसकी सुरत जगत और माया के जाल से निकस कर और सब बंधनों को तोड़ कर, सुन्न और फिर सत्तलोक के मुक़ाम में पहुंच कर, सैर करती है। वही जीव महा बड़भागी है और वही महा दयापात्र है और वही परम भक्त है, और वही संतों के प्रताप से एक दिन संत गती को प्राप्त होता है ॥

१७—संतों ने फ़रमाया है कि मालिक को दीनता पसंद है। दीनता सच्ची ग़रज़ मंदी और अधीनता का नाम है। इस चीज़ की ज़रूरत कुल्ल परमार्थी जीवों को, जो अपने सच्चे मालिक से इस देश से चल कर और चढ़ कर मिलना चाहते हैं ज़्यादा से ज़्यादा है। जिस के हिरदे में दीनता और अधीनता, संत सतगुरु और राधास्वामी दयाल के चरनों में नहीं है, उसको एक ज़र्रह परमार्थ नहीं मिल सक्ता ॥

१८—यह दीनता और अधीनता मालिक के दरबार में नहीं है, क्योंकि वह सब से बेपरवाह और अपने स्वरूप में आप मगन है, और वही परम आनंद और परम प्रेम और महा चेतन्यता का भंडार है। इस वास्ते संत कहते हैं, कि जो कोई कि दीनता और अधीनता (जो पदार्थ कि मालिक के दरबार में नहीं हैं) इधर से लेकर चलेगा, वही दरबार में दख़ल पावेगा, और उसी को सच्चे मालिक के दर्शनों का आनंद प्राप्त होवेगा ॥

१९—दीनता और अधीनता का स्वरूप यह है, कि मालिक के दर्शनों की सच्ची चाह रखता होवे और जो संत सतगुरु हुकम करें उसके मुवाफ़िक़ कार्रवाई करे। और जो कुछ कि मालिक करे, और जैसे वह रक्खे उसमें राज़ी रहे, यानी उसकी मौज के साथ मुवाफ़क़त करे। यह बात सच्चे और पूरे परमार्थी से ही बन आवेगी ॥

२०—संत फ़रमाते हैं कि सच्चे मालिक को प्रेम प्यारा है। जो कोई प्रेम अंग लेकर सेवा, सतसंग और अभ्यास अंतर और बाहर करेगा, उस पर मालिक की मेहर और दया ज़रूर आवेगी, और काम भी उसका सुखाला बनता जावेगा, और मन और माया भी उस पर अपना ज़ोर कम चलावेंगे ॥

२१—प्रेम की महिमां बहुत भारी है। जितने बिकार हैं वे सब प्रेम से बहुत जल्द दूर हो जाते हैं। और सतसंग में प्रेमी शख़्स बहुत जल्द रल मिल जाता है, और संत सतगुरु की दया और राधास्वामी दयाल की मेहर जल्द हासिल करता है, कि जिस्से कुल्ल काम उसका आसानी के साथ बनता चला जाता है ॥

२२—कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल प्रेम का भंडार है, और कुल्ल जीव प्रेम स्वरूप हैं, और प्रेम से ही कुल्ल रचना प्रघट हुई, और प्रेम के ही आसरे ठहरी हुई है। जीवों को भी मुहब्बत करने वाला प्यारा लगता है, और मुहब्बत ही के वसीले से सब काम कर रहे हैं। इस वास्ते कुल्ल मालिक को भी प्रेम प्यारा है, और जो कोई प्रेम अंग लेकर उसकी तरफ़ चलता है, वह दया और मेहर से जल्द और आसानी के साथ मंज़िल पर पहुंच जाता है, और रास्ते के विघन आहिस्ते २ सब दूर हो जाते हैं ॥

२३—इस वास्ते सच्चे परमार्थी को चाहिये कि मालिक के चरनों में प्रीत और प्रतीत बढ़ाता रहे। जो प्रीत कि बिना प्रतीत के है उसका ऐतबार नहीं हो सक्ता, लेकिन जो प्रतीत सहित है वह दिन २ सतसंग और अभ्यास करके बढ़ती जावेगी, और एक दिन प्रीतम

से मिला कर छोड़ेगी। सच्चे प्रेम के संग हमेशा कुल्ल मालिक और संत सतगुरु की दया शामिल रहती है, और प्रेमी को हर काम में गुप्त और प्रघट मदद देती है, चाहे उसको मालूम पड़े या नहीं, और चाहे वक़्त पर उसकी समझ में आवे या नहीं, लेकिन रफ़्ते २ सब कामों की मसलहत और फ़ायदा सच्चे प्रेमी पर खुलता जावेगा, और अपने प्रीतम की मेहर और दया की प्रतीत बढ़ती जावेगी ॥

बचन-४०

सब रचना प्रेम से पैदा हुई और प्रेम से ही ठहरी हुई है, और प्रेम से ही चलना और दो का मिलना मुमकिन है—इस वास्ते हर एक जीव को मुनासिब है, कि जहां जगत में अनेक से प्रीत कर रहे हैं, कुछ थोड़ी या बहुत मालिक के चरनों में भी प्रीत करें, तो जीव का गुज़ारा हो जावेगा ॥

१—कुल्ल रचना खैंच शक्ती यानी प्रेम से पैदा हुई और इसी शक्ती के आसरे ठहरी हुई है और कुल्ल कारोबार उसके जारी हैं ॥

२—कुल्ल रचना में सब बड़े और छोटे आपस में प्रीत कर रहे हैं, यानी एक दूसरे को खैंच रहा है और प्रीत या शौक़ या मुवाफ़क़त के सबब से कुल्ल कार्रवाई रचना और जीवों के कारोबार की जारी है ॥

३—हर एक जीव की प्रीत या मुहब्बत अनेक जगह तक़सीम हो रही है, यानी मन उसका ज़र्रे २ होकर अनेक जीवों और चीज़ों में बंध रहा है, और इन्हीं बंधनों के सबब से इस दुनिया में दुख सुख का भोग करता है ॥

४—बग़ैर स्वार्थ या मतलब के कोई किसी से प्रीत नहीं करता, चाहे वह मतलब धन की प्राप्ती का होवे या मन और इन्द्रियों के रस और भोग या मान और बड़ाई या जिसको ख़ास अपना समझा है उसके पालन और पोषन और रक्षा वग़ैरे का होवे, या अपने या दूसरे के तन के आराम का या दुख और कलेश के दूर करने का होवे ॥

५—दुनिया की प्रीत ठहराऊ नहीं है, और हमेशा बदलती रहती है, यानी उसमें कमी बेशी होती रहती है, क्योंकि दोनों प्रीत करनेवाला और जिसके साथ

प्रीत की जावे क़ायम नहीं रह सके और हर वक़्त और हर रोज़ उनकी हालत बदलती रहती है, यानी बढ़ाव और घटाव और एक दिन अभाव होने की तरफ़ उनका झुकाव रहता है। इस वास्ते इस प्रीत में सुखदाई और दुखदाई अंग दोनों हैं, बल्कि दुखदाई अंग ज़्यादा है ॥

६—जब कि कुल्ल जीव ज़मीनी रचना यानी बेशुमार आदमियों और चीज़ों से जिन २ से उनका काम निकलता है प्रीत कर रहे हैं, बल्कि आसमानी और आकाशी रचना से भी, जैसे सूरज और चांद और बाज़े तारे और हवा और मेघ और सरदी और गरमी वग़ैरे से भी ख़ास प्रीत रखते हैं, क्योंकि बग़ैर इनके जीवों का गुज़ारा इस दुनिया में नहीं हो सक्ता, तो फिर कुल्ल मालिक के चरनों में जिसके सबब से हर वक़्त रूह और जान की ताज़ा धार पिंड में उतर कर तमाम देह के अंग २ की कार्रवाई कर रही है और जिस मालिक की मौजूदगी की तमाम रचना गवाही दे रही है, सब से ज़्यादा प्रीत करना या इस क़दर न बन सके तो थोड़ी बहुत प्रीत करना हर एक जीव पर किस क़दर ज़रूर और लाज़िम और फ़र्ज़ है ॥

७—सब जीवों को प्रीत करने की आदत है, सो हर

एक शख़्स ख़ूब जानता है कि कैसे प्रीत की जाती है, और कैसे उसकी तरक़्क़ी हो सक्ती है। इस क़िस्म का बर्तावा हर एक जीव अपने निहायत प्यारे रिश्तेदार और दोस्तों और कम प्यारे और दूर के रिश्तेदार और मुलाक़ातियों से हर रोज़ बर्त रहा है, यानी अनेक दरजे की प्रीत दुनिया में कर रहा है और उसी दरजे के मुवाफ़िक़ हर एक से बर्ताव करता है ॥

८—प्रीत के वर्तावे की सूरत यह है, कि एक दूसरे से अक्सर या कभी २ मिलता रहता है, और आपस में मिलकर खाते पीते हैं, या एक दूसरे को तोहफ़े भेजते हैं और ठिक ब्यौहार और तीज त्यौहार पर ज़रूर याद करके अपने मुहब्बत वालों को बुलाते हैं और जो कोई रिश्तेदार या दोस्त ग़ैरहाज़िर होवे, यानी परदेस में होवे तो उसके लड़के बालों को खाने पीने में शामिल करते हैं, और उनके पास भाजी और तोहफ़े भेजते हैं, यह बर्तावा निशान और सबूत प्रीत का समझा जाता है ॥

९—जो कोई सच्चे मालिक के चरनों में किसी दरजे की प्रीत सच्चे मन से करेगा, उसका दिल बग़ैर ऊपर की क़िसम के थोड़ा बहुत बर्तावा करने के कभी नहीं मानेगा। लेकिन जो कि सच्चा और कुल्ल मालिक गुप्त

है, और परे से परे देश में उसका धाम है, इस वास्ते जो कोई उसके साथ अपनी प्रीत को ज़ाहिर करना चाहे वह उसके बाल बच्चों के साथ बर्ताव करे ॥

१०—मालिक के सच्चे प्रेमी और भक्त प्यारे बाल बच्चे हैं, इनकी मिहमानी और ख़ातिरदारी करना गोया मालिक की सेवा करना है। और जो किसी को भाग से संत सतगुरु मिल जावें, जो कि उस मालिक के निज प्यारे और हर वक़्त उस्से मिले रहते हैं, तो उनकी सेवा चाहे जिस क़िसम की होवे, ख़ुद मालिक की सेवा है और इस कार्रवाई से मालिक के चरनों का प्रेम दिन २ बढ़ेगा और मालिक की मेहर और दया सेवा करनेवाले पर दिन २ ज़्यादा आवेगी ॥

११—जब प्रीत ज़्यादा होती है तब प्रीत करनेवाले आपस में बार २ मिलते हैं, इसी तरह जब किसी को मालिक के चरनों में ज़्यादा प्यार और प्रेम आवेगा, तब उसके मन में ज़रूर मिलने के वास्ते यानी दर्शनों की प्राप्ती के लिये तड़प और बेकली पैदा होगी। ऐसा प्रेम बग़ैर सोहबत यानी सतसंग संत सतगुरु और प्रेमी जन के किसी के मन में पैदा नहीं हो सक्ता ॥

१२—संत सतगुरु और प्रेमी जन की महिमां बहुत भारी है, जिस किसी को उनका संग भाग से मिल जावे,

उसी के दिल में उनका और सच्चे मालिक का प्रेम बस जावेगा, और दिन २ तरक़्क़ी पाकर एक दिन प्रीतम से मिला देगा ॥

१३—यह देश बेगाना है यानी मन और माया का घर है, और मृत्यु लोक कहलाता है, जहां कोई थिर यानी क़ायम नहीं रह सक्ता, और हर एक की हालत छिन २ बदलती रहती है। निज घर सुरत का ऊंचे से ऊंचे देश यानी राधास्वामी धाम में है सो जब तक सुरत पिंड देश को छोड़कर उस धाम में न पहुंचेगी तब तक कहीं उसको चैन नहीं मिलेगा ॥

१४—जब तक सुरत मुवाफ़िक़ संतो के भेद के अभ्यास करके अपने निज धाम में न पहुंचेगी, तब तक उस को पूरा चैन नहीं मिलेगा, और जनम-मरन और देह के साथ दुख सुख भोगने का चक्कर नहीं छूटेगा ॥ इस वास्ते सच्चे प्रेमी पर पिंड देश से चल कर ऊंचे देश की तरफ़ चलना और चढ़कर निज घर में पहुँचना वास्ते प्राप्ती दर्शन अपने प्रीतम के ज़रूर है। हाल और भेद रास्ते और उसकी मंज़िलों का और जुगत चलने और चढ़ने की बख़ूबी संत सत-गुर या उनके प्रेमी जन से मालूम हो सक्ती है। इस वास्ते प्रेमी को मुनासिब है, कि पहले खोज संत

सतगुर और उनकी संगत का लगावे और फिर सत-संग में पहुँच कर होशियारी से बचन सुने और समझे, और उनके चरनों में प्रीत लगावे और बढ़ावे और शब्द मारग का उपदेश और उनकी दया और मेहर का बल लेकर नित्त अपने घट में अभ्यास करे, यानी शब्द और स्वरूप के आसरे अपने मन और सुरत को निज घर की तरफ़ चलाता और चढ़ाता रहे ॥

१५—जिस क़दर चाल चलेगी और रास्ता तै होता जावेगा उसी क़दर अंतर में रस और आनंद मिलता जावेगा, और अपने प्रीतम का जलवा थोड़ा बहुत नज़र आता जावेगा, और शौक़ और प्रेम दर्शन का बढ़ता जावेगा, जो एक दिन संत सतगुर की मेहर से धुर धाम में पहुँचा देगा ॥

१६—यह उपदेश और भेद सिर्फ़ राधास्वामी मत की संगत में मिल सक्ता है, और किसी को इसकी ख़बर भी नहीं है। इस वास्ते सच्चे परमार्थी जीवों को जो अपने मालिक से मिलना चाहते हैं मुनासिब है कि राधास्वामी संगत में शामिल होकर अभ्यास शुरू करें, और प्रीत और प्रतीत चरनों में राधास्वामी दयाल के बढ़ाते जावें तो एक दिन काम पूरा हो जावेगा ॥

१७—और मालूम होवे कि दुनियां की मुहब्बत चाहे

जिसमें गहरी से गहरी होवे, नाशमान और अंत में दुखदाई है और बारम्बार संसार की तरफ़ झोका दे कर जनम मरन के चक्कर में डालनेवाली है। और सच्चे मालिक के चरनों की प्रीत दिन २ बढ़नेवाली, और रस और आनंद देनेवाली, और जनम मरन और कष्ट और कलेश से छुड़ानेवाली और परम आनंद की अमर धाम में प्राप्त करानेवाली, यानी सच्चे और कुल्ल मालिक से मिलानेवाली है। इस वास्ते सब जीवों को, चाहे औरत होवें या मर्द, लाज़िम है कि इस दुनिया में जहां अनेक तरह की प्रीत कर रहे हैं, थोड़ी बहुत प्रीत साथ परतीत के, कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के चरनों में भी लावें, और उसको संत सतगुर और प्रेमी जन के संग से बढ़ाते रहें ॥

१८—जो कोई मालिक के चरनों में प्रीत सिर्फ़ इस क़दर समझ लेकर कि कोई मालिक ज़रूर है करेगा, वह प्रीत बढ़ेगी नहीं और न उसको कुछ रस और आनंद उस प्रीत का मिलेगा, सिर्फ़ टेकियों के मुवाफ़िक़ वास्ते अदाय रसूम मुक़र्ररा के, थोड़ा बहुत निश्चय हो जावेगा कि ठिक ब्योहार और तीज त्योहार को कुछ भेंट पूजा या ख़र्च मालिक के नाम पर करे, लेकिन उमंग और प्रेम नहीं आवेगा, और न प्रेमी जन और

संत सतगुरु की क़द्र या तलाश मन में पैदा होगी, इस वास्ते वह प्रीत मामूली तौर पर जिस क़द्र कि आम लोगों को होती है बनी रहेगी, और प्रीतम से मिलने या रास्ता तै करके उसके धाम में पहुंचने का कभी ख़्याल भी दिल में नहीं गुज़रेगा, और न उसका भेद व लखाव मालूम होवेगा, फिर ऐसी प्रीत का क्या एतबार हो सक्ता है, क्योंकि ज़रा से झकोले में काल और माया के, उसके डिगमिग हो जाने का ख़ौफ़ है ॥

१९—इस वास्ते संत फ़रमाते हैं कि जो कोई मालिक के चरनों में थोड़ा बहुत प्यार लावे, उसको मुनासिब है कि पहले अपने प्रीतम को जाने और पहचाने और उसके धाम का भेद लेकर दर्शन के लिये चलना शुरू करे, तब एक रोज़ मेला होकर काम पूरा बनेगा ॥

२०—मालिक की जान पहचान से मतलब यह है कि संत सतगुर से मिलकर उसका भेद जाने, कि वह मालिक कौन है कैसा है और कहां है, और पहचान उसकी मालूम करके अपने घट में चलकर और चढ़कर उसका जलवा और निशान अपने अंतर में देखे क्योंकि जब कुल्ल मालिक सब जगह मौजूद है तो हर एक के घट में भी ज़रूर मौजूद है, तो वहां उसकी पहचान

करना चाहिये, और घट में ही पहचान मुमकिन है, बाहर जहां कि वह अनेक ग़िलाफ़ों में पोशीदा और गुप्त है, कोई उसकी पहचान नहीं कर सक्ता। अलबत्ता जब कि अपने घट में दर्शन कर लेवे, तब बाहर भी सब जगह दर्शन कर सक्ता है, नहीं तो दोनों जगह माया का तमोगुन यानी अंधेरा छाया हुआ है बिदून घट की जान पहचान के मालिक के चरनों की प्रीत का फल जैसा चाहिये नहीं मिल सक्ता है अब मुक़ाम ग़ौर का है कि वास्ते उद्धार और कल्यान जीव के किस क़दर ज़रूरत संत सतगुरु और प्रेमी जन के संग और सोहबत की है, क्योंकि बग़ैर उनके सतसंग के न तो भेद मालूम हो सक्ता है और न जुगत चलने की दरियाफ़्त हो सक्ती है, और न दया और मेहर जिसकी मदद से चलना होगा प्राप्त हो सक्ती है ॥

———

बचन-४१

मालिक कुल्ल की तरफ़ से बावजूदे- कि वह घट में मौजूद है और कभी २ बोलता भी है जीव बेपरवाह और भूले हुए हैं, जो ख़बरदार होकर कुछ भी प्रीत या नाता उसके चरनों में जोड़ें, तो उनके जीव का कारज सहज बन जावे ॥

१—कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल की महिमा और उनकी क़ुदरत की सिफ़त किसकी ताक़त है कि बर्णन कर सके, बहुत से मुआमलों में अक़्ल हैरान रहती है और कुछ समझ नहीं सक्ती ॥

२—इसी तरह उसकी मेहर और दया यानी फ़ज़ल और करम भी जीवों बल्कि कुल्ल रचना के ऊपर अपार और अनंत है कि जिसका शुकराना कोई शख़्स पूरा २ अदा नहीं कर सक्ता ॥

३—बहुत सी बख़्शिशें कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल की ऐसी हैं कि जिनकी क़दर आदमी को बिल्कुल नहीं मालूम होती, और हाल यह है कि वह बख़्शिशें

ऐसी ज़बर और भारी हैं कि उन पर कुल्ल की ज़िंदगी और देह और दुनिया की कार्रवाई का मदार है, यानी बग़ैर उनके कोई जीव एक दिन बल्कि एक दम भी ज़िंदा नहीं रह सक्ता, और न कुछ काम कर सक्ता है। जैसे सूरज की रोशनी और गरमी और पानी और हवा वग़ैरा, और देह में इन्द्रियां जो कि कुल्ल कार्रवाई के औज़ार हैं, और जिनके बग़ैर आदमी कोई काम अपना या पराया नहीं कर सक्ता ॥

४—इन चीज़ों में से इन्द्रियों की यानी आंख कान नाक ज़बान हाथ और पांव पेशाब और पाख़ाने की इंद्री की क़दर जब मालूम होती है, जब कोई शख़्स शफ़ाख़ाने और अपाहिजख़ाने और कंगालघर और कोढ़ीख़ाने वग़ैरे में जाकर बीमारों का हाल देखे, कि किस २ तरह से अंगहीन और अनेक सख़्त बीमारियों में मुब्तला और गिरफ़्तार हैं ॥

५—दुनिया में जो कोई किसी के साथ अदना और बहुत थोड़ा सलूक करता है, वह उसको नहीं भूलता, और उसके एवज़ में कुछ ख़ातिरदारी और ख़िदमत उसकी दिल से करना चाहता है, और जब मौक़ा मिले तब ही करता है। फिर कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल का किस क़दर शुकराना और उनके चरनों की ख़िद-

मत बएवज़ उन न्यामतों और बख़्शिशों के, जो वे कुल्ल जीवों पर हर रोज़ और हर दम कर रहे हैं वाजिब और फ़र्ज़ है ॥

६—फिर ख़्याल करो कि दुनिया में बड़े आदमियों जैसे राजा महाराजा और अमीर और गुनवान शख़्शों की जैसे हुनरवाले विद्यावान बुद्धिवान रूपवान यानी ख़ूबसूरत, और धनवान यानी दौलतमंद और गाने बजाने और तरह २ का अजीब तमाशा करनेवालों की किस क़द्र ख़ातिर और ख़िद्मत और उनसे मिलने के वास्ते अपना रुपया और वक़्त ख़र्च करते हैं, लेकिन कुल्ल मालिक जो कि सर्ब समर्थ और सर्ब शक्तिमान और सब बड़ों से बड़ा और महा बड़ा और महा सुन्दर है, उसके साथ मिलने और उसकी ख़िद्मत और सेवा करने की चाह किस क़द्र कम लोगों के मन में रहती है ॥

७—इसमें कुछ शक नहीं कि वह कुल्ल मालिक हर एक को नज़र नहीं आता, और न हर एक को आसानी से मिल सक्ता है, लेकिन जिस किसी के मन में सच्चा शौक़ और दर्द उसके दर्शन और सेवा का पैदा होवे उसको वह ज़रूर मिलता है, और अपनी ख़िद्मत और सेवा भी मुवाफ़िक़ ख़्वाहिश सच्चे शौक़वालों के, जिनको प्रेमी और आशिक़ और भक्त कहते हैं करा सक्ता है, इसकी शरह आगे की जावेगी ॥

८ फिर ग़ौर करने का मुक़ाम है कि दुनिया में कुल्ल काम प्रीत और शौक़ से चल रहे हैं, और सब लोग जिन २ से उनको काम पड़ता है, या कुछ उनका मतलब निकलता है, बराबर दीनता और मुहब्बत कर रहे हैं, और इस मुहब्बत में बहुत से दरजे हैं, जैसे माता पिता इस्त्री और पुत्र और धन और माल और नज़दीक और दूर के रिश्तेदार और बिरादरी और दोस्त और आश्ना और नौकर चाकर और ब्योहारी बग़ैरे २ से दरजे ब दरजे प्रीत करते हैं। फिर कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल से जो कुल्ल रचना के सच्चे माता पिता हैं, और जिनकी बराबर कोई हरदम और हर वक़्त का अंगसंगी और हितकारी और सहाई नहीं है, और जो सब तरह का सामान दुनिया में आराम और आसाइश और गुज़रान का दे रहा है, किस क़दर प्रीत और मुहब्बत और दीनता करना हर एक शख़्स पर वाजिब और लाज़िम और फ़र्ज़ है ॥

९—यह बात सही है कि कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल (जैसा कि ऊपर कहा गया) किसी को नज़र नहीं आते, लेकिन जो कोई इरादा करे वह पता और भेद उनका भेदी और उनके प्यारों से दरियाफ़्त करके, आसानी के साथ उनके चरनों में प्रीत और

मुहब्बत कर सक्ता है, क्योंकि वह जबकि सब जगह मौजूद हैं तो हरएक के घट में भी ज़रूर मौजूद और हाजिर नाज़िर हैं, वहां यानी अपने अंतर में हर एक शख़्स पता और भेद और जुगत दरियाफ़्त करके उनके चरनों में प्रीत कर सक्ता है, और उलट कर उनकी मेहर और दया को भी अपने अंतर में परख सक्ता है ॥

१०—फिर जो इस क़िस्म के शौक़ और मुहब्बत वाले लोग बहुत कम नज़र आते हैं, और बहुत से इस तरफ़ से ग़ाफ़िल और बेपरवाह और दुनिया के ऐश और लज़्ज़त और भोगों में गिरिफ़्तार दिखलाई देते हैं इसका सबब यह है कि यातो उनके दिलों में शौक़ और खोज नहीं है, और दुनिया और उसके सामान ही को बड़ा समझ कर उसी की तलाश और मुहब्बत और मिहनत में फंसे रहते हैं, या उनको कोई सच्चा भेदी और प्राप्ती वाला नहीं मिला, और न उन्होंने उसकी तलाश की क्योंकि जो कोई जिसकी तलाश दिल और जान और मिहनत के साथ करता है, वह उसको ज़रूर मिलता है ॥

११—अब समझना चाहिये कि दुनिया और उसके सामान और दुनियादारों की प्रीत करनेवाले, मुवा-

फ़िक्र अपनी ज़बर ख़्वाहिश दुनियावी के हमेशा दुनिया में फंसे रहेंगे, और बारम्बार दुनिया में पैदा होकर उसके भोगों में गिरिफ़तार रहेंगे, और जो दुख सुख और जनम मरन देह के साथ लाज़मी है वह सहते रहेंगे, क्योंकि दुनिया की प्रीत थोड़े सुख और बिशेष दुख का दाता है, और एक दिन ज़रूर टूट और छूट जावेगी, और उस वक़्त दुख भारी होवेगा। सिवाय इसके दुनिया की प्रीत कच्ची और हमेशा बदलनेवाली और कभी २ ज़रा २ सी बात पर इसी ज़िंदगी में टूट जानेवाली है, और सख़्ती और तकलीफ़ में और ख़ास कर मौत के वक़्त कुछ सहायता नहीं कर सक्ती ॥

१२—बरख़िलाफ़ इसके मालिक के चरनों की प्रीत और उसके प्यारों की मुहब्बत जो सच्ची होवे तो दिन २ बढ़नेवाली और ख़ुशी और आनन्द देनेवाली और सख़्ती और तकलीफ़ और मौत के वक़्त सहायता करनेवाली, और एक दिन देहियों के बंधन से बचाने वाली, और सुख दुख और जनम मरन के चक्कर की छुड़ानेवाली, और अमर धाम में पहुँचानेवाली, और पूरन आनन्द और अमर सुख की प्राप्ती करानेवाली है। जिस किसी के दिल में थोड़ी सी भी ऐसी प्रीत

पैदा हो जावे, वह एक दिन उसको अख़ीर दरजे पर पहुंचा कर छोड़ेगी, और फिर उसी जीव को बड़ भागी और दया और मेहर का अधिकारी समझना चाहिये। लेकिन शर्त्त यह है कि वह प्रीत प्रीतम की जान पहचान और प्रतीत के साथ होवे कि जिस्से अपने प्रीतम यानी कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल के अपने घट में हाज़िर नाज़िर होने का यक़ीन होवे, क्योंकि ग़ायबाना और बेख़बरी की प्रीत कुछ फ़ायदा नहीं दे सक्ती है ॥

१३—ग़ायबाना और बेख़बरी की प्रीत यह है कि आम दस्तूर और पुरानी रवायत यानी डुकरिया पुरान के मुवाफ़िक़ हर कोई समझता है, कि कोई मालिक इस रचना का है, और इतनी समझ लेकर मन से थोड़ा बहुत अदब और तीज त्योहार और ठिक ब्योहार पर, और जब कोई मुहताज और मंगता आजावे, तब कुछ जिन्स और नक़्द या खाना तक़-सीम करता है। लेकिन इस बात से बेख़बरी है, कि वह मालिक कौन है कैसा है और कहां है और कैसे मिले, और न इस भेद और हाल के दरियाफ़्त और तहक़ीक़ करने का खोज है और न शौक़ है। फिर ऐसी साधारन प्रीत का पूरा ऐतबार नहीं हो सक्ता

और न वह तरक़्क़ी कर सक्ती है, बल्की ज़रासे झकोले में विद्या और माया के ढीली और गुम हो जाती है। ऐसे प्रीतवान लोग दुनियांदार कहलाते हैं, उनके मन से मुख्यता यानी क़दर दुनिया और उसके सामान मिसल इस्त्री और पुत्र और मान बड़ाई और धन माल वग़ैरः की ज़्यादा रहती है, और इनके मुक़ाबले में मालिक का यक़ीन और उसकी प्रीत बहुत हलकी और कमज़ोर रहती है ॥

१४—सच्ची और रोज़ अफ़ज़ूं यानी दिन २ बढ़ने वाली प्रीत वह है, कि मालिक की जान पहिचान के साथ होवे, और यह जान पहिचान मालिक के सच्चे और पूरे प्रेमी और भेदी के सतसंग से आवेगी ॥

१५—पूरे प्रेमी और पूरे भेदी कुल्ल मालिक के संत सतगुरु हैं, कि जिन को उसका निज पुत्र या निज मुसाहब या निज कारकुन कहना चाहिये। वे अपने मालिक से कभी जुदा नहीं होते, यानी जब धुर पद में जो कि मालिक का धाम है रहें तब उसके हर वक़्त पास रहते हैं, और जब उस की मौज से देह धर कर दुनियां में आवें, तब भी उस्से जुदा नहीं होते, यानी उनकी सैर हर दो मुक़ाम यानी दुनिया और निज धाम में बराबर जारी रहती है। जैसे समुद्र

और उसकी लहर जो कि कोसों तक खुश्की में चली जाती है, और ज़ाहरा लहर रूप दिखला कर उस्से किसी क़द्र जुदा मालूम होती है, मगर असल में कभी जुदा नहीं होती, और सिल्सिला उसका बराबर समुद्र के साथ लगा रहता है, और जब सिमटती है तब वही असली रूप यानी फिर समुद्र रूप हो जाती है ॥

१६—जो किसी को संत सतगुरु न मिलें लेकिन उन के सच्चे अभ्यासी और प्यारे प्रेमी जन से मेला हो जावे, तो उनके सतसंग से भी जान पहचान और भेद और जुगत मिलने की साथ कुल्ल मालिक के दरियाफ़्त हो सक्की है, और उनकी मदद से वह शख़्स अभ्यास कर के अंतर में फ़ायदा उठा सक्ता है, और रफ़्ते २ उसका सूत भी कुल्ल मालिक के चरनों में लग जावेगा। और वह शख़्स दया और मेहर का अधिकारी हो जावेगा, कि जिस्से उसकी प्रीत और प्रतीत संत सतगुरु और कुल्ल मालिक के चरनों में दिन दिन बढ़ती जावेगी, और मौज से संत सतगुरु का भी दर्शन मिल जावेगा, और फिर उनकी दया से एक दिन कुल्ल मालिक के धाम में पहुंच कर परम आनंद को प्राप्त होगा, यानी उस के जीव का कारज बन जावेगा ॥

१७—बग़ैर संतों के सतसंग के सफ़ाई अंतर और बाहर को नहीं हो सक्की। कुल्ल जीवों के मन इस दुनिया में मलीन हैं, और सिवाय बासना भोग बिलास और मान बड़ाई और कुटम्ब परवार और धन माल के, उसके मन में कोई दूसरा ख़्याल ऐसा मज़बूत नहीं रहता है। उमर भर दुनिया के हासिल करने के लिये मिहनत और मशक्कत करते हैं, और जानते हैं कि एक दिन सब को छोड़ना पड़ेगा फिर भी कुटम्ब परवार और धनमाल और मान बड़ाई का ऐसा बंधन ज़बर और मज़बूत है, कि जिसको ढीला करते या छोड़ते (ख़ास कर परमार्थ के लिये) जान सी जाती है। यह सब बंधन संतों और उनके प्रेमी जन के सतसंग से ही ढीले हो सक्ते हैं, और बजाय उनके सच्चे और कुल्ल मालिक राधा स्वामी दयाल के चरनों की प्रीत हिरदे में पैदा हो सक्की है और आइंदे के वास्ते दुनिया की चाहें भी दूर हो सक्की हैं॥

१८—जब इस तरह मन की किसी क़दर सफ़ाई हासिल हो जावे, और कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल और उनके धाम की महिमा चित्त में बस जावे, और दुनिया और उसका सामान नाश मान और

ओछा सही २ नज़र आवे, तब उपदेश लेकर यानी जुगत निज धाम की तरफ़ चलने की दरियाफ़्त करके जो अंतर में शौक़ के साथ अभ्यास किया जावेगा तो रस और आनंद मिलेगा, और दया के परचे नज़र आवेंगे, तब प्रीत और प्रतीत दिन २ बढ़ती और पकती जावेगी, और दिन २ तरक़्क़ी होती जावेगी ॥

१६—वग़ैर सतसंग के किसी के संसे और भरम और संसार में फ़ज़ूल और ग़ैर वाजिब और बे फ़ायदा पकड़ें दूर और ढीली नहीं होवेंगी, और न चाह भोग बिलास की काटी जावेगी, और न परमार्थ और सच्चे मालिक और संत सतगुरु और उनके प्रेमीजन और सतसंग की महिमा और क़दर चित्त में समावेगी। फिर मन बदस्तूर मलीन रहेगा, और जब तक सफ़ाई न होगी, यानी दुनिया और उसके सामान की मुहब्बत और चाह कम या दूर न होवेगी, तो मालिक और उसके प्रेमी जन का प्रेम, कैसे ऐसे नापाक हिरदे में पैदा हो सक्ता और ठहर सक्ता है ॥

२०—इस वास्ते जिस किसी के मन में सच्चा दर्द और खोज सच्चे मालिक का पैदा हुआ है, उसको चाहिये कि पहिले राधास्वामी संगत में जावे, और कोई दिन सतसंग करे, तब उसको आप ख़बर पड़

जावेगी, कि जीव के कल्यान या अपने सच्चे मालिक से मिलने के वास्ते, क्या जतन और किस तरह की रहनी इख़्तियार करना चाहिये और कहां उसको ढूंढना चाहिये। बाहर जो कोई तलाश करे तो कभी नहीं मिलेगा। जिसको मिला है या मिलेगा वह घट में मिलेगा और बग़ैर सुरत शब्द मारग और संत सतगुरु की दया के घट में चलना और चढ़ना और धुर पद में पहुंचना हरगिज़ मुमकिन नहीं है। और इस वक़्त में सिवाय राधास्वामी मत और संगत के, घट का पूरा २ भेद और आसान तरीक़ा चलने का, जिसकी कमाई हर कोई इस्त्री या पुर्ष जवान और बूढ़ा सहज में कर सक्ते हैं, और कहीं या किसी दूसरे मत में मिल नहीं सक्ता॥

२१—जब किसी को सच्ची प्रीत और प्रतीत थोड़ी या बहुत सच्चे मालिक के चरनों में आवेगी तो उसका निशान यह है, कि उसके हिरदे में थोड़ी या बहुत उमंग वास्ते दर्शन और सेवा करने मालिक के ज़रूर पैदा होगी। लेकिन जो कि कुल मालिक अरूप और बिदेह हैं, तो सेवा करना और मिलना किस तरह बन सक्ता है, इसकी निसबत संतों ने जो बचन फ़रमाया है वह आगे लिखा जाता है॥

२२—जैसे बालबच्चों की ख़ातिरदारी और सेवा करने से उनके मा बाप ख़िद्मत करनेवाले से राज़ी होते हैं, और वह सेवा और मुहब्बत अपनी ही सेवा और मुहब्बत समझते हैं, और सेवा करनेवाले को फल यानी एवज़ आप देते हैं, ऐसे ही कुल्ल मालिक राधास्वामी दयाल, जो कोई उनके प्यारे संत सतगुरु और प्रेमीजन की सेवा करे और उनसे प्रीत का नाता जोड़े, उस्से वे आप राज़ी और प्रसन्न होते हैं, और वह सेवा और मुहब्बत खास अपनी सेवा और मुहब्बत मान कर उसको प्रेम और भक्ती की दौलत आहिस्ते २ बख़्शते हैं ॥

२३—संत सतगुरु को जो मालिक से हरदम मिले रहते हैं, मालिक का परम प्यारा पुत्र या खुद उसका स्वरूप समझना चाहिये, और जो सेवा उनकी की जावे, वह ख़ुद मालिक की सेवा माननी चाहिये। और जो संत सतगुरु के प्रेमी और भक्त हैं, उनको भी मालिक के प्यारे पुत्र जानना चाहिये, जो कोई उनके साथ मुहब्बत करे या उनकी किसी क़िसम की सेवा या ख़िद्मत किसी से बन आवे, उसको भी मालिक और संत सतगुरु अपनी सेवा समझ कर क़बूल और मंज़ूर फ़रमाते हैं, और उसका फल तरक़्क़ी प्रीत और प्रतीत की आप बख़्शते हैं ॥

२४—संत सतगुरु का दर्शन गोया मालिक का दर्शन है, और उनका संग मालिक का संग है, और उनकी दया और मेहर की नज़र जिस पर पड़ी गोया मालिक की मेहर उस पर हुई। वास्ते तसदीक़ और परमान इस बात के चंद कड़ियें नीचे लिखी जाती हैं ॥

क़ौल कबीर साहब

साध मिले साहब मिले अंतर रही न रेख।
मन्सा बाचा कर्मना साधू साहब एक ॥

क़ौल मौलवी रूम

मालिक का बालक गुरु पूर।
मालिक का हरदम मंज़ूर ॥
जो मालिक का चहे दीदार।
जा तू बैठ गुरू दरबार ॥
परम पुर्ष सम गुरु को जान।
बिन जिभ्या कहैं बचन सुजान ॥
हक़् ने पैग़म्बर को समझाया कि मैं।
मिल् नहीं सक्ता ज़मी असमान में ॥
ऊंचे और नीचे ठिकाने में नहीं।
अर्श कुर्सी पर भी मैं रहता नहीं ॥
दिल में भक्तों के मैं रहता हूँ सदा।
जो मुझे चाहे तो मांग उनसे तू जा ॥

क़ौल दूसरा

मस्जिदे हस्त अंदरूने औलिया।
सिज्दगाहे जुम्लहःहस्त आंजा ख़ुदा॥

अर्थ

औलियाओं का हिरदा मस्जिद है और वहीं ख़ुदा को सिज्दा करना चाहिये॥

चूंकि करदी ज़ातेमुर्शदरा क़बूल।
हम ख़ुदा दर ज़ातश आमद हम रसूल॥

अर्थ

जब्कि तूने गुरू के स्वरूप को माना तो उसमें ख़ुदा और पैग़म्बर दोनों आ गये॥

मन ख़ुदारा आश्कारादीदः अम्।
सूरते इन्सां ख़ुदारा दीदः अम्॥

अर्थ

मैंने मालिक को प्रघट इन्सान के स्वरूप में देखा॥

आफ़्ताबे मतलये अन्वार ज़ात।
रोशन अज़ माहे जबीने औलियास्त्॥

अर्थ

सूरज ब्रह्म साध के चंद्र स्वरूप से रोशन है॥

रामायन

मेरे मन प्रभु अस बिस्वासा। राम से अधिक राम कर दासा॥

क़ौल गुरू नानक

गुरु परमेश्वर एको जान। भूला काहे फिरे अजान ॥

क़ौल नाभा जी

भक्ति भक्त भगवंत गुर नाम चतुर बपु एक।
तिनके पग बंदन करत नाशें बिघन अनेक ॥

श्लोक भागवत

नाहं बसामि बैकुंठे योगिनां हृदय न च
मद्‌भक्ता यत्र गायन्ते तत्र तिष्ठामि नारद्

अर्थ

हे नारद् न मैं बैकुंठ में बस्ता हूं और न योगियों के हिरदे में निवास करता हूं लेकिन जहां मेरे भक्त मेरा गुणानुबाद् गाते हैं वहां मेरा निवास है ॥

श्लोक

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्बिश्नुर्गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुरेव परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥

अर्थ

गुरुही ब्रह्मा बिश्नु महादेव और परब्रह्म हैं ॥
इसलिये ऐसे गुरु को मेरी नमस्कार है ॥

सारबचन

सेवा कर तन मन धन अरपे।
सत्तपुर्ष सम सतगुरु थरपे ॥

२५—इस बिधि के मुवाफ़िक़ जो ऊपर लिखी गई, मालिक के साथ मिलना और उसकी सेवा करना और उसके प्यारे जन से मिलना और उनकी मुहब्बत और सेवा करना इसी देह में और इसी दुनिया में मुमकिन है। पर शर्त यह है कि सच्चा शौक़ और दर्द मन में होना चाहिये, नहीं तो दुनिया के अभागी लोग संत सतगुरु और साध गुरु और उनके प्रेमी और भक्त जन की निंद्या करते हैं, और उनसे विरोध रख कर, और अनेक तरह के बिघन प्रेमी जन के सतसंग और भक्ती की कार्रवाई में डालकर अपना भाग घटाते हैं। दुनिया में भी दस्तूर है कि जो बादशाह और महाराजे की तरफ़ से गवर्नर या नाज़िम या सूबा किसी देश में मुक़र्रर होता है तो जो कुछ उसकी नज़र या भेंट की जावे, या किसी क़िसम की ख़िदमत सरकारी किसी से बन आवे, वह भेंट और ख़िदमत बादशाह और महाराजे की समझी जाती है, और उसका फल यानी एवज़ बादशाह और महाराजे की तरफ़ से मिलता है, फिर इसी तरह संत और साध मालिक के कुंवर और नायब इस दुनिया में हैं, जिस किसी को थोड़ी या बहुत उनकी पहिचान आ जावे, वही बड़भागी है, और उसी को एक दिन मालिक के चरनों के प्रेम की दौलत मिलेगी ॥

२६—जो कि मालिक अपने बिदेह स्वरूप से घट २ में मौजूद है, तो उस स्वरूप या उसके जलवे का दर्शन भी इसी देह में संत सतगुरु की दया से मुमकिन है। यानी जब वे अपनी मेहर से सुरत शब्द मारग का उपदेश देवेंगे, और अंतर में अभ्यास करावेंगे, तब प्रेमी जन आहिस्ते २ अपने घट में सूक्षम से सूक्षम और अति सूक्षम स्वरूप होते हुए और मालिक का जलवा और प्रकाश रास्ते में देखते हुए, एक दिन निज धाम में पहुंच कर, उसका पूरा दर्शन पा सक्ते हैं। और जब तक कि दयाल देश में न पहुंचें, तब तक उनको मालिक शब्द स्वरूप और संत सतगुरु रूप से, जब तब अभ्यास की हालत में, बराबर अपनी मेहर और दया से दर्शन देता रहता है, कि जिस्से उनकी प्रीत और प्रतीत चरनों में बढ़ती जाती है, और दुनिया और उसका सामान उनकी नज़र में तुच्छ और ओछा होता जाता है॥

२७—जो कोई ऐसी समझ लेकर और सतसंग करके, मालिक की भक्ती और उसके चरनों में प्रीत करेगा, वही एक दिन महल में दख़ल पावेगा। और जो बिना पहिचान थोड़ी बहुत प्रीत और भाव करते हैं, उस प्रीत का फ़ायदा थोड़ा सा सुख दुनिया में, या ऊंचे

लोकों में मिल जावेगा, लेकिन सच्चे मालिक का दीदार हासिल नहीं होगा, और जीव का सच्चा उद्धार नहीं होगा ॥

२८—इस वास्ते कुल्ल जीवों को मुनासिब और लाज़िम है कि अपने गृहस्त में रह कर और दुनिया के सब कारोबार और रोज़गार होशियारी से करते हुये जहां सैकड़ों जगह और बहुत से आदमियों से प्रीत करते हैं, कुछ थोड़ी या बहुत मोहब्बत मालिक के चरनों में भी लावें, और यह मोहब्बत भेद और महिमां के साथ होना चाहिए, तो उनको दुनिया में भी आराम और आइंदा को सुख मिलैगा, नहीं तो आख़ीर वक़्त पर कष्ठ और कलेश सहैंगे, और काल के हाथ से बहुत दुक्ख पावेंगे जैसा कि मुर्दों की हालत और सूरत से ज़ाहिर होता है ॥

२९—यह न समझना चाहिये कि मालिक घट में मौजूद नहीं है, वह हमेशा हाज़िर और नाज़िर है बल्कि बोलता है यानी जब कोई शख़्स कोई बुरा काम या भारी पाप करना चाहता है, उस वक़्त वह उसके अंतर में बोलता है और कहता है कि यह काम न कर नहीं तो दुक्ख पावेगा, फिर चाहे यह शख़्स उस नसीहत को माने या नहीं, मालिक की दया इतने नीचे

उतर कर जीव को समझाती है, और बुरे काम से बाज़ रखना चाहती है, पर जीव ऐसे बचन को कम सुनते हैं, और उसका खोज भी नहीं लगाते कि किस मुक़ाम से उस बचन की धार आती है ॥

राधास्वामी मत की पुस्तकों का

संशोधित सूचीपत्र

पद्य (हिन्दी)

		अजिल्द	सजिल्द
१. सार बचन छंद बंद, पहला भाग		२०.००	२२.००
२ सार बचन छंद बंद, दूसरा भाग		१२.००	१४.००
३. प्रेमबानी, पहला भाग		२१.००	२४.००
४. प्रेमबानी, दूसरा भाग		२०.००	२२.००
५. प्रेमबानी, तीसरा भाग		२३.००	२६.००
६. प्रेमबानी चौथा भाग	....	१५.००	१७.५०
७ संत संग्रह पहला भाग	...	१.७५	
८. संत संग्रह, दूसरा भाग		४.५०	—
९. प्रेम प्रकाश			
१०. बिनती-प्रार्थना		२.२५	३.५०
११. नियमावली	....	२.५०	५.००

गद्य (हिन्दी)

१२. सार बचन बार्तिक	७.५०	९.५०
१३. आखिरी बचन स्वामीजी महाराज	० ५०	—
१४. प्रेमपत्र, पहला भाग	१९.००	२१.००
१५. प्रेमपत्र, दूसरा भाग	२८.००	३१.५०
१६. प्रेमपत्र, तीसरा भाग	१२.५०	१४.५०
१७. प्रेमपत्र, चौथा भाग	२६.००	२८.००
१८. प्रेमपत्र, पांचवां भाग	१०.५०	१२.५०
१९. प्रेमपत्र, छठा भाग	७.००	९.००
२०. जुगत प्रकाश	७.००	८.००
२१. सार उपदेश	२.५०	—
२२. प्रेम उपदेश	३.७५	—
२३. राधास्वामी मत सन्देश	३.५०	—
२४. राधास्वामी मत उपदेश	१.२५	—
२५. निज उपदेश	१.२५	—
२६. प्रश्नोत्तर सन्त मत	१.००	—
२७ छांटे हुए बचन महात्माओं के	१.००	—
२८. गुरु उपदेश	०.५०	—

	अजिल्द	सजिल्द
२९. बचन महाराज साहब	८.००	१०.५०
३०. बचन बाबूजी महाराज, पहला भाग	२१.००	२३.००
३१. बचन बाबूजी महाराज, दूसरा भाग	१२.५०	१४.००
३२. बचन बाबूजी महाराज, तीसरा भाग	१२.५०	१४.००
३३. बचन बाबूजी महाराज, चौथा भाग	२१.००	२४.००
३४. जीवन चरित्र, स्वामीजी महाराज	७.००	८.००
३५. जीवन चरित्र, बाबूजी महाराज	—	—
३६. शब्द कोश, संत मत बानी	—	२७.००
३७. लोक-परलोक हितकारी	४.००	—
३८. मौलाना रूम के दृष्टान्त और औलियाओं की कथाएँ	८.५०	११.००
३९. समाध पुस्तिका	—	—

बँगला

४०. R. S. Mat Sandesh	२.२०	—
४१. Prasnotter	१.६०	—
४२. सार उपदेश	२.८०	—

गुजराती

४३. राधास्वामी मत उपदेश	३.००	—
४४. राधास्वामी मत सन्देश	५.००	—
४५. सतसंगियों ने आश्वासन	२.५०	—
४६. सार बचन बार्तिक		१०.००

सिंधी

४७. राधास्वामी मतसंदेश	१.००	

अँग्रेजी

४८. राधास्वामी मत प्रकाश Radhasoami Mat Prakash	—	१०.००
४९. डिस्कोरसेज औन राधास्वामी फ़ेथ Discourses on Radhasoami Faith	—	२०.००
५०. फेल्प्स साहब के नोट्स Phelps' Notes	—	१३.००
५१. ए-सोलेस-टू-सतसंगीज A Solace to Satsangis	२.५०	—

सेक्रेटरी, राधास्वामी सतसंग,
स्वामी बाग, आगरा-२८२००५